रमज़ानुल मुबारक ता ज़िल हिज्जा (1442 हिजरी के) 4 माह के इस्लाही मौज़ूआत पर 17 बयानात

इस्लामी बयानात

(जिल्द : 3)

इस्लामी बहनों के लिए

-: पेशकश :-

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(दावते इस्लामी)

www.dawateislami.net

रमज़ानुल मुबारक ता ज़िल हिज्जा (1442 हिजरी के) 4 माह के इस्लाही मौज़ूआत पर 17 बयानात

इस्लामी बयानात

(जिल्द : 3)

इस्लामी बहनों के लिए

-: पेशकश :-

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दावते इस्लामी)

(शोबए बयानाते दावते इस्लामी)

-: नाशिर :-

मक्तबतुल मदीना, दावते इस्लामी (हिन्द)

www.dawateislami.net

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا حَبِیْبَ اللہ

नाम किताब : इस्लामी बयानात (जिल्द : 3)

सफ़ह़ात : 412

पेहली बार :

तादाद : **2100**

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दावते इस्लामी)

नाशिर : मक्तबतुल मदीना दावते इस्लामी (हिन्द)

तस्दीक़नामा

तारीख़ : 25-07-2020 ह़वाला नम्बर : 246

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ اَجْمَعِیْنَ

तस्दीक़ की जाती है कि किताब **इस्लामी बयानात (जिल्द : 3)** (मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़्रे सानी की कोशिश की गई है । मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिया इ़बारात, और फ़िक़्ही मसाइल वग़ैरा के ह़वाले से मक़्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लत़ियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं ।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल (दावते इस्लामी)

25-07-2020

www.dawateislami.net. E-mail : hindi book@dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं ।

याद दाश्त

दौराने मुत़ालअ़ा ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । إِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

“दावते इस्लामी के 10 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की 10 निय्यतें”

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ यानी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (معجم کبیر، ۶/۱۸۵، حدیث:۵۹۴۲)

मस्अला : नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

(1) हर बार ह़म्दो सलात व तअ़व्वुज़ व तस्मिया से आग़ाज़ करूंगी (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इ़बारात पढ़ लेने से इस पर अ़मल हो जाएगा)। (2) रिज़ाए इलाही के लिए इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगी। (3) ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगी। (4) क़ुरआनी आयात और अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगी। (5) जहां जहां **“सरकार”** का इस्मे मुबारक आएगा, वहां صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, जहां जहां किसी सह़ाबी का नाम आएगा, वहां رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और जहां किसी बुज़ुर्ग का नाम आएगा, तो वहां رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पढ़ूंगी। (6) रिज़ाए इलाही के लिए इ़ल्म ह़ासिल करूंगी। (7) अगर कोई बात समझ न आई, तो मदनिय्या इस्लामी बहन से पूछ लूंगी। (8) (अपने ज़ाती नुस्ख़े के) “याददाश्त” वाले सफ़ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगी। (9) दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगी। (10) किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली, तो किसी मह़रम के ज़रीए़ नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगी।

(नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास़ मुफ़ीद नहीं होता)।

www.dawateislami.net

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम** كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाह़ी कुतुब
﴾4﴿ शो'बए तख़रीज
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
﴾6﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब[1]

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अह्ले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना

---

1 .....ता दमे तह़रीर (रबीउ़ल आख़िर 1437 हिजरी) 10 शोबे मज़ीद क़ाइम हो चुके हैं : (7) फ़ैज़ाने कुरआन (8) फ़ैज़ाने ह़दीस (9) फ़ैज़ाने सह़ाबा व अह्ले बैत (10) फ़ैज़ाने सह़ाबियात व सालिह़ात (11) शोबए अमीरे अह्ले सुन्नत مُدَّظِلُّه (12) फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा (13) फ़ैज़ाने औलिया व उ़लमा (14) बयानाते दा'वते इस्लामी (15) रसाइले दा'वते इस्लामी (16) अ़रबी तराजुम। (**मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**)

अलहा़ज अल हा़फ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّحۡمٰن की गिरां माया तसानीफ़ को अ़स्रे हा़ज़िर के तक़ाज़ों के मुता़बिक़ ह़त्तल वस्अ़ सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुता़लआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **"दा'वते इस्लामी"** की तमाम मजालिस ब शुमूल **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الۡاَمِين صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

रमज़ा़नुल मुबारक 1425 हि.

इ़बादत और ता'ज़ीम में फ़र्क़

इ़बादत का मफ़्हूम बहुत वाज़ेह़ है, समझने के लिये इतना ही काफ़ी है कि किसी को इ़बादत के लाइक़ समझते हुए उस की किसी क़िस्म की ता'ज़ीम करना **"इ़बादत"** कहलाता है और अगर इ़बादत के लाइक़ न समझें तो वोह मह़ज़ **"ता'ज़ीम"** होगी इ़बादत नहीं कहलाएगी, जैसे नमाज़ में हाथ बांध कर खड़ा होना इ़बादत है लेकिन येही नमाज़ की त़रह़ हाथ बांध कर खड़ा होना उस्ताद, पीर या मां बाप के लिये हो तो मह़ज़ ता'ज़ीम है इ़बादत नहीं।

(तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 1, अल फ़ातिह़ा, तह़्तुल आयत : 4, 1 / 47)

www.dawateislami.net

पेशे लफ़्ज़

नुत़्क़ यानी बोलना और गुफ़्तगू करना इन्सान की ऐसी ख़ुसूसिय्यत है जिस की वज्ह से **अल्लाह** करीम ने इसे दूसरी मख़्लूक़ से मुमताज़ फ़रमाया है। एक इन्सान जब बहुत से इन्सानों से मुख़ात़ब होता और अपने जज़्बात व ख़यालात को बयान करता है, तो उसे ख़ित़ाबत, तक़रीर व बयान के ज़रीए़ मुमकिन है। बयान व तक़रीर दीन सिखाने और पहुंचाने के अहम ज़राएअ़ में शामिल है। कम वक़्त में कई अफ़राद तक दीन का पैग़ाम पहुंचाना तक़रीर व बयान के ज़रीए़ मुमकिन है। बयान अगर मुस्तनद (Authentic) मवाद, उ़म्दा तरतीब, बेहतरीन अल्फ़ाज़ के साथ इख़्लास के जज़्बे से मालामाल हो तो सुनने वालों के दिलों को ज़ेरो ज़बर कर डालता (यानी बदल देता) है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दावते इस्लामी के तह़त मुख़्तलिफ़ इजतिमाआ़त में बयानात का सिलसिला रहता है, इन में हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में होने वाले बयानात भी शामिल हैं। मुल्क व बैरूने मुल्क इन हज़ारों हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में लाखों इस्लामी बहनें और इस्लामी भाई शिर्कत करते हैं और हफ़्तावार इजतिमाअ़ में होने वाले बयानात से इ़ल्मे दीन ह़ासिल कर के अपनी इस्लाह़ का सामान करते हैं। हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त के बयानात अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या में **शोबए बयानाते दावते इस्लामी** के तह़त तय्यार होते हैं। अब तक इस शोबे में हफ़्तावार और दीगर इजतिमाआ़त के लिए 475 से ज़ाइद बयानात तय्यार हो चुके हैं।

दावते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा की हिदायात के मुत़ाबिक़ इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त के बयानात पहले ही किताबी सूरत में शाएअ़ कर दिये जाते हैं। इस सिलसिले में सिने 1441 हिजरी के तमाम और सिने 1442 हिजरी के पहले चार माह के बयानात उर्दू ज़बान में चार जिल्दों में बनाम **"इस्लामी बयानात (जिल्द 1 से 4)"** की सूरत में

www.dawateislami.net

शाएअ़ हो चुके हैं। इन में से हिन्दी ज़बान में पहले चार माह के बयानात जिल्द 1 की सूरत में शाएअ़ हो चुके हैं। सिने 1442 हिजरी के दूसरे चार माह के 17 बयानात का मजमूआ़ जिल्द 2 के नाम से आप के हाथों में हैं।

शाएअ़ होने वाले तमाम बयानात दरजन से ज़ाइद मराहि़ल (मुत़ालअ़ा, तलाशे मवाद, तरतीब, फ़ॉर्मेशन, शोबा ज़िम्मेदार का फ़ाइनल करना, रुक्ने शूरा ह़ाजी अबू रजब मुह़म्मद शाहिद अ़त्त़ारी और ह़ाजी अबू माजिद मुह़म्मद शाहिद अ़त्त़ारी मदनी से तन्ज़ीमी तफ़्तीश, दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के मुफ़्ती साहि़ब से शरई तफ़्तीश, मुकम्मल मवाद की तफ़्तीश, तख़रीज और तक़ाबुल, बयानात में इंगलिश अल्फ़ाज़ की ऐडींग व मजलिसे तराजिम से चेकिंग, पेज सेटअप और पेराग्राफ़िंग, आयात पेस्टिंग, फ़ाइनल प्रूफ़ रीडिंग, इस्लामी बहनों की आ़लमी मजलिसे मुशावरत से इस की चेकिंग, कोरल पर पेस्टिंग और इस के लवाज़िमात) से गुज़ार कर इशाअ़त के लिये पेश किये जाते हैं। इन बयानात पर अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के **शोबए बयानाते दावते इस्लामी** के सात इस्लामी भाइयों ने काम किया, बिल ख़ुसूस मुह़म्मद ह़ामिद सिराज अ़त्त़ारी मदनी, मुह़म्मद अ़ब्दुल जब्बार अ़त्त़ारी मदनी, मुह़म्मद जान रज़ा अ़त्त़ारी मदनी, मुह़म्मद मुन्इ़म अ़त्त़ारी मदनी, मुह़म्मद हु़सैन फ़रीदी अ़त्त़ारी, सय्यिद अ़दील ज़ाकिर चिश्ती मदनी और ह़फ़ीज़ुर्रह़मान अ़त्त़ारी मदनी (कोरल से रखें) ने काम करने की सआ़दत ह़ासिल की। **अल्लाह** पाक इन की काविशों को क़बूल फ़रमाए और दावते इस्लामी को मज़ीद तरक़्क़ी और उ़रूज नसीब फ़रमाए। आमीन

शोबा बयानाते दावते इस्लामी

(मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

25-07-2020

www.dawateislami.net

बयान नम्बर :- 1

हर मुबल्लिग़ा बयान करने से पहले कम अज़ कम तीन बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰه   وَعَلٰی اٰلِكَ وَ اَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللّٰه   وَعَلٰی اٰلِكَ وَ اَصْحٰبِكَ یَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा, **अल्लाह** करीम उस पर 10 रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर 10 मरतबा दुरूदे पाक पढ़े, **अल्लाह** करीम उस पर 100 रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर 100 मरतबा दुरूदे पाक पढ़े, **अल्लाह** करीम उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शुहदा के साथ रखेगा। (مُعْجَم اَوسَط، ۵/۲۵۲، حدیث: ۷۲۳۵)

वोह दहन जिस की हर बात वह़्ये ख़ुदा
चश्मए इ़ल्मो ह़िक्मत पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 302)

शेर की वज़ाह़त : जिस मुंह से निकलने वाली हर बात वह़ी का दरजा रखती है, इ़ल्मो ह़िक्मत के उस चश्मए फ़ैज़ पे लाखों सलाम हों।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिए पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (معجم کبیر، ۶/۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲)

मस्अला : नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नोइ़यत के एतिबार से निय्यतों में कमी व बेशी व तब्दीली की जा सकती है।

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी। टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी। ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिये जगह कुशादा करूंगी। धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी। صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوْبُوْا اِلَى اللّٰه वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिये पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी। इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी। दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी। जो कुछ बयान होगा उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल और बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगी।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! रमज़ानुल मुबारक की तीन तारीख़ को हमारे प्यारे करीम आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की लाडली शहज़ादी, फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا का विसाले ज़ाहिरी हुवा, इसी मुनासबत से आज हम ह़ज़रते सय्यिदा ख़ातूने जन्नत, फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا का ज़िक्रे ख़ैर

सुनेंगी । सब से पेहले आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की शानो अज़मत के बारे में एक वाक़िआ़ सुनती हैं : चुनान्चे,

फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا इन्सानी हूर

हज़रते ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने एक दिन नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में जन्नती फल देखने की ख़्वाहिश की तो हज़रते जिब्रीले अमीन عَلَیۡہِ السَّلَام, आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में जन्नत से दो सेब ले कर हाज़िर हो गए और अ़र्ज़ की : ऐ मुह़म्मद ! **अल्लाह** पाक फ़रमाता है : एक सेब आप खाएं और दूसरा ख़दीजा को खिलाएं फिर ह़क़्क़े ज़ौजिय्यत अदा करें, मैं तुम दोनों से फ़ातिमतुज़्ज़हरा को पैदा करूंगा । चुनान्चे, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते जिब्रीले अमीन عَلَیۡہِ السَّلَام के केहने के मुताबिक़ अ़मल किया । जब ग़ैर मुस्लिमों ने आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कहा कि हमें चांद दो टुकड़े कर के दिखाएं, उन दिनों हज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا अपनी वालिदए मोह़तरमा, हज़रते ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا के शिकमे अतहर में थीं । हज़रते ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने फ़रमाया : उस की कितनी रुस्वाई है जिस ने हमारे आक़ा मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को झुटलाया, ह़ालांकि आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सब से बेहतर रसूल और नबी हैं । तो हज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने उन के बत़ने अतहर से निदा दी : ऐ अम्मीजान ! आप ग़मज़दा न हों और न ही डरें, बेशक **अल्लाह** पाक मेरे वालिदे मोहतरम के साथ है । जब हज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की विलादत हुई तो सारी फ़ज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا के चेहरे के नूर से मुनव्वर हो गई । नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को जब जन्नत और उस की नेमतों का इश्तियाक़ होता तो हज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا का बोसा ले लेते और उन की पाकीज़ा ख़ुश्बू को

सूंघते और जब उन की पाकीज़ा मेहक सूंघते तो फ़रमाते : فَاطِمَةُ حَوْرَاءُ اِنْسِيَّةٌ फ़ाति़मा तो इन्सानी हूर है । (الروض الفائق فی المواعظ و الرقائق، ص ۲۷۴ ملخصاً)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुना आप ने कि **अल्लाह** करीम ने ह़ज़रते फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا को कैसी शानो अ़ज़मत से नवाज़ा और आप ने अपनी वालिदए मोह़तरमा के बत़्ने अक़्दस में ही अपने वालिदे गिरामी और हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सादिक़ो अमीन होने की गवाही दे दी थी, बिला शुबा येह आप की करामतों में से एक करामत थी ।

आइए ! अब आप का मुख़्तसर तआ़रुफ़ सुनती हैं : चुनान्चे,

सय्यिदा फ़ाति़मा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا का मुख़्तसर तआ़रुफ़

आप رَضِیَ اللهُ عَنْهَا का नाम "**फ़ाति़मा**", लक़ब "**ज़हरा**" और "**बतूल**" है । आप का बचपन शरीफ़ और ज़िन्दगी का हर लम्ह़ा निहायत ही पाकीज़ा था क्यूंकि आप ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और उम्मुल मोमिनीन, ह़ज़रते ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا की आग़ोशे रह़मत में तरबियत पाई । आप दिन रात अपने वालिदैन की पाकीज़ा ज़बान से पाकीज़ा अक़्वाल सुनतीं, आप निहायत इ़बादत गुज़ार, परहेज़गार और पाकबाज़ ख़ातून थीं, इस लिए आप को आ़बिदा, ज़ाहिदा और ताहिरा कहा जाता है । (सफ़ीनए नूह, हि़स्सा : दुवुम, स. 14-15, मुलख़्ख़सन) आप अख़्लाक़ो आदात, गुफ़्तारो किरदार में नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बहुत मुशाबेहत रखती थीं । (ترمذی، کتاب المناقب، باب فضل فاطمة رضی الله عنها، ۵/۴۶۶، حدیث:۳۸۹۸ملخصا) नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के तक़रीबन 5 या 6 माह बाद 3 रमज़ानुल मुबारक 11 हिजरी में आप का विसाल हुवा ।

(सफ़ीनए नूह, हि़स्सा : दुवुम, स. 54, मुलख़्ख़सन)

सय्यिदा ज़ाहिरा त़य्यिबा त़ाहिरा
जाने अह़मद की राह़त पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 309)

मुख़्तसर वज़ाह़त : यानी ख़ातूने जन्नत, ह़ज़रते फ़ाति़मतुज़्ज़ह़रा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا जन्नती औऱतों की सरदार, ख़ूबसूरत कली, पाकबाज़, त़हारत की पैकर और नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की राह़त हैं, आप पर लाखों सलाम नाज़िल हों।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की साह़िबज़ादी, ख़ातूने जन्नत, ह़ज़रते फ़ाति़मतुज़्ज़ह़रा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا पर हमारे दिलो जान कुरबान ! आप رَضِیَ اللہُ عَنْہَا को उम्मते मुस्लिमा का बेह़द दर्द था, प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुख्यारी उम्मत के लिए बाज़ अवक़ात सारी सारी रात दुआ़एं मांगती रेहतीं, अपनी सहूलत व आसाइश के लिए रब्बे काइनात की बारगाह में कभी इल्तिजा न करतीं बल्कि आप رَضِیَ اللہُ عَنْہَا सारा दिन घर का काम काज करतीं और जब रात आती तो इ़बादते इलाही के लिए खड़ी हो जातीं। चुनान्चे,

इ़बादत हो तो ऐसी !

ह़ज़रते इमामे ह़सने मुज्तबा رَضِیَ اللہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अपनी वालिदए माजिदा, ह़ज़रते फ़ाति़मतुज़्ज़ह़रा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا को देखा कि रात को मस्जिदे बैत की मेह़राब (यानी घर में नमाज़ पढ़ने की मख़्सूस जगह) में नमाज़ पढ़ती रेहतीं, यहां तक कि नमाज़े फ़ज्र का वक़्त हो जाता। मैं ने आप को मुसलमान मर्दों और औ़रतों के लिए बहुत ज़ियादा दुआ़एं करते

सुना, आप अपनी ज़ात के लिए कोई दुआ न करतीं। मैं ने अ़र्ज़ की : प्यारी अम्मीजान ! क्या वज्ह है कि आप अपने लिए कोई दुआ नहीं करतीं ? फ़रमाया : पेहले पड़ोस है फिर घर।

(मदारिजुन्नुबुव्वत, क़िस्म : पन्जुम, बाब : अव्वल, दर ज़िक्रे औलादे किराम, 2 / 461)

अ़ता कर आ़फ़ियत तू नज़्ओ़ क़ब्रो ह़श्र में या रब
वसीला फ़ातिमा ज़हरा का, कर लुत्फ़ो करम मौला

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 98)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मालूम हुवा ! ख़ातूने जन्नत, सय्यिदा फ़ातिमा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا की आ़दते मुबारका येह थी कि आप رَضِیَ اللہُ عَنْہَا उम्मत की ग़म ख़्वारी के लिए हर वक़्त इ़बादते इलाही की त़रफ़ मुतवज्जेह रेहतीं, रातों को जाग कर मुनाजात में मसरूफ़ रेहतीं, येही नहीं बल्कि **अल्लाह** पाक की इ़बादत और उस के ज़िक्रो अज़्कार से इस क़दर मह़ब्बत थी कि अपने घरेलू काम काज करने के साथ साथ यादे इलाही से कभी ग़ाफ़िल न होतीं। आइए ! अब सय्यिदा ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللہُ عَنْہَا के ज़ौक़े तिलावत और शौक़े इ़बादत के मुतअ़ल्लिक़ सुनने की सआ़दत ह़ासिल करती हैं : चुनान्चे,

खाना पकाते वक़्त भी तिलावत

अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللہُ وَجۡہَہُ الۡکَرِیۡم फ़रमाते हैं कि सय्यिदा ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللہُ عَنْہَا खाना पकाने की ह़ालत में भी क़ुरआने पाक की तिलावत जारी रखतीं। (सफ़ीनए नूह़, हि़स्सा : दुवुम, स. 35)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुना आप ने ! ख़ातूने जन्नत, सय्यिदा फ़ातिमा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا को तिलावत का किस क़दर ज़ौक़ो शौक़ था कि घरेलू मसरूफ़ियत के दौरान भी ज़बान से क़ुरआने करीम की तिलावत

जारी रखतीं । अगर हम अपने मुआ़शरे में नज़र दौड़ाएं, तो कई नादान बहनें मसरूफ़ियत के दौरान कानों में हेन्ड फ़्री (Handfree) लगा कर बड़े इन्हेमाक से गाने सुनती हुई अपने कामों में मगन रेहती हैं और साथ साथ अपनी ज़बान से भी गुनगुनाती जाती हैं । इसी त़रह़ कई नादान ख़्वातीन घर के काम काज के दौरान गाने सुनती हैं, फ़िल्में-ड्रामे देखती हैं । गोया गाने-बाजों के बिग़ैर उन के काम ही नहीं होते । फ़ी ज़माना तो गाने-बाजों की आ़दते बद बहुत बढ़ चुकी है । **ऐ काश** ! हमें भी अपने दिन रात इ़बादत में बसर करने की सआ़दत नसीब हो जाए । **ऐ काश** ! हमारा कोई लम्ह़ा फ़ुज़ूल कामों में बसर न हो । **ऐ काश** ! हमारी हर घड़ी ज़िक्रो दुरूद के सबब रह़मत भरी गुज़रे । **ऐ काश** ! गाने, बाजे सुनने और गुनगुनाने (Singing) की हमारी येह आ़दते बद निकल जाए और हम घरेलू कामों में मश्ग़ूल हों या सफ़र में हों, हर वक़्त हमारे लबों पर ज़िक्रो दुरूद और नाते रसूल जारी रहे ।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इ़बादत का जज़्बा बढ़ाने के लिए सय्यिदा ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللہُ عَنْہَا के शौक़े इ़बादत पर मज़ीद एक वाक़िआ़ मुलाह़ज़ा कीजिए : चुनान्चे,

शादी की पेहली रात भी इ़बादत

ह़ज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا की रुख़्सती के बाद ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہ और आप رَضِیَ اللہُ عَنْہَا दोनों ने अपने बिस्तर को छोड़ दिया और **अल्लाह** पाक की इ़बादत में मसरूफ़ हो गए, रात क़ियाम में, तो दिन रोज़े की ह़ालत में बसर होते रहे, यहां तक कि तीन रोज़ इसी त़रह़ गुज़र गए । चौथे दिन ह़ज़रते जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام, आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ की :

अल्लाह करीम आप عَلَيْهِ السَّلَام को सलाम भेजता है और इरशाद फ़रमाता है : उन दोनों ने तीन दिन से नींद और बिस्तर को तर्क कर रखा है और इ़बादत और रोज़ों में मसरूफ़ हैं, तुम उन के पास जाओ और उन से इरशाद फ़रमाओ कि **अल्लाह** पाक तुम्हारी वज्ह से मलाइका पर फ़ख़्र फ़रमा रहा है और तुम दोनों बरोज़े क़ियामत गुनहगारों की शफ़ाअ़त करोगे।

(اَلرَّوْضُ الْفَائِق، الثامن والاربعون فی زواج علی بفاطمة...الخ، ص۲۷۸، ملتقطاً ملخصاً)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हमें भी इन नेक हस्तियों की सीरत पर चलते हुवे ख़ूब ख़ूब इ़बादत करनी चाहिए। रमज़ानुल मुबारक के रोज़े तो हम पर फ़र्ज़ ही हैं, बिला उ़ज़्रे शरई एक रोज़ा भी छोड़ना गुनाह है। अगर मुमकिन हो तो रमज़ानुल मुबारक के बाद नफ़्ल रोज़ों की भी आ़दत बनाएं कि इस के भी बड़े फ़ज़ाइल हैं।

आइए ! इस बारे में 2 रिवायात सुनती हैं :

1. जिस ने सवाब की उम्मीद रखते हुवे एक नफ़्ल रोज़ा रखा, **अल्लाह** पाक उसे दोज़ख़ से 40 साल (के फ़ासिले तक) दूर फ़रमा देगा। (کَنْزُالْعُمّال، کتاب الصوم، قسم الاقوال، جزء۸، ۴/ ۲۵۵، حدیث: ۲۴۱۴۸)
2. जिस ने रिज़ाए इलाही के लिए एक दिन का नफ़्ल रोज़ा रखा तो **अल्लाह** पाक उस के और दोज़ख़ के दरमियान एक तेज़ रफ़्तार सुवार की पचास साला मसाफ़त का फ़ासिला फ़रमा देगा।

(کَنْزُالْعُمّال، کتاب الصوم، قسم الاقوال، جزء۸، ۴/ ۲۵۵، حدیث: ۲۴۱۴۹)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सय्यिदा ख़ातूने जन्नत के ज़ौक़े तिलावत और आप के शौक़े इ़बादत में हमारे लिए एक पैग़ाम है कि घर के काम काज करने के साथ साथ **अल्लाह** पाक की इ़बादत का ज़ौक़ो शौक़ होना चाहिए, इ़ल्मे दीन सीखने का जज़्बा होना चाहिए, नेकी की दावत को

आ़म करने का जज़्बा होना चाहिए । आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दावते इस्लामी के दीनी माह़ोल में हमारे लिए कई ऐसे मवाक़ेअ़ हैं जहां हमें इ़ल्मे दीन ह़ासिल करना मुयस्सर होता है । हम इस्लामी बहनों के हफ़्तावार इजतिमाअ़ में शिर्कत करें, तालीमे क़ुरआन ह़ासिल करने के लिए मद्रसतुल मदीना बालिग़ात में पढ़ें, ज़हे नसीब ! जामिअ़तुल मदीना लिल बनात में दाख़िले की सआ़दत मिल जाए तो क्या ही अच्छा है ! जब हम इ़ल्मे दीन की रौशनी से मालामाल होंगी तो अपनी औलाद की इस्लामी तरबियत कर सकेंगी, ख़ुद भी नमाज़ी बनेंगी, अपनी औलाद को भी नमाज़ी बनाएंगी, ख़ुद भी क़ुरआने करीम पढ़ेंगी, अपनी औलाद को भी क़ुरआने करीम पढ़ना सिखाएंगी । सय्यिदा ख़ातूने जन्नत के सदक़े **अल्लाह** पाक हमें भी शौक़े इ़बादत व ज़ौक़े तिलावत नसीब फ़रमाए ।

इ़बादत में गुज़रे मेरी ज़िन्दगानी

करम हो करम या ख़ुदा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 105)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ह़ज़रते सय्यिदा फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا की शानो अ़ज़मत का एक पेहलू येह भी है कि आप सीरतो किरदार और जिस्मानी वज़्अ़ के एतिबार से ह़ुज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की चलती फिरती तस्वीर थीं । चुनान्चे,

हम शक्ले मुस्तफ़ा और अन्दाज़े गुफ़्तगू

उम्मुल मोमिनीन, ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की साह़िबज़ादी, ह़ज़रते सय्यिदा फ़ाति़मतुज़्ज़हरा

رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से बढ़ कर किसी को आ़दातो अत़वार, सीरतो किरदार और निशस्तो बरख़ास्त में आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मुशाबहत रखने वाला नहीं देखा । (اَبُوداوُد، کتاب الادب، باب ماجاء فی القیام، ۴/۴۵۴، حدیث: ۵۲۱۷، ملتقطاً)

एक रिवायत में उम्मुल मोमिनीन, ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने अन्दाज़े गुफ़्तगू और बैठने में ह़ज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से बढ़ कर किसी और को हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस क़दर मुशाबेहत रखने वाला नहीं देखा । (اَلْاَدبُ المفرد، باب قیام الرجل لاخیہ، ص۲۵۵، حدیث: ۹۷۴)

ह़कीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जीती जागती, चलती, फिरती, बोलती तस्वीर थीं बल्कि तस्वीर सिर्फ़ शक्ल दिखाती है, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا तो सीरत व ख़स्लत (Nature) में भी हुज़ूर का नमूना थीं, क़ुदरत ने एक सांचे में येह दो सूरतें ढाली थीं, एक हमारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की, दूसरी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की ।

(मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 365)

रसूलुल्लाह की जीती जागती तस्वीर को देखा
किया नज़्ज़ारा जिन आंखों ने तफ़्सीरे नुबुव्वत का

سُبْحٰنَ اللّٰہ ! क्या शान है ख़ातूने जन्नत, सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की, कि आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا का उठना, बैठना, चलना, फिरना, ह़त्ता कि अन्दाज़े गुफ़्तगू (Way Of Talking) भी अपने वालिदे मोह़तरम, हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अन्दाज़ के मुत़ाबिक़ था । **ऐ काश !** हम अपनी ज़िन्दगी ख़ातूने जन्नत, सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की सीरते त़य्यिबा पर अ़मल करते हुवे इ़बादते इलाही में गुज़ारने वाली बन जाएं, अपने वालिदैन की आंखों की ठन्डक बन जाएं, हर एक के साथ

हुस्ने सुलूक और नर्मी व भलाई से पेश आएं, इस्लामी बहनों की तक्लीफ़ व मुसीबत में उन के काम आने वाली बन जाएं और अपने ज़ाहिर को सुन्नतों के सांचे में ढालने वाली और अपने बाति़न को ह़सद, तकब्बुर, तोहमत और बद गुमानियों वग़ैरा से बचाने वाली बन जाएं।

बद ख़साइल टलें, सीधे रस्ते चलें

कर दो आक़ा करम, ताजदारे ह़रम

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ख़ातूने जन्नत की शानो अ़ज़मत का एक पेहलू येह भी है कि आप رَضِیَ اللهُ عَنْهَا अपने बाबाजान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अदबो एह़तिराम फ़रमाया करती थीं, हुस्ने सुलूक से पेश आतीं, जब दुखी दिलों के चैन, नानाए ह़सनैन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी होती, तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ताज़ीम के लिए खड़ी हो जातीं। जैसा कि :

आमदे मुस्त़फ़ा पर इस्तिक़्बाल करना

उम्मुल मोमिनीन, ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا फ़रमाती हैं : जब ख़ातूने जन्नत, ह़ज़रते फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا, हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर होतीं, तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन के लिए खड़े हो जाते और उन का हाथ पकड़ते, उस पर बोसा देते और अपनी जगह उन को बिठाते। इसी त़रह़ जब हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, ह़ज़रते फ़ाति़मा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا के पास तशरीफ़ ले जाते, तो आप भी खड़ी हो जातीं और हाथ मुबारक को बोसा देतीं और अपनी जगह हुज़ूर को बिठा लेतीं।

(مشکاۃ، کتاب الآداب، باب المصافحۃ والمعانقۃ، ۲/۱۷۱، حدیث: ۴۶۸۹)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मालूम हुवा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا कैसे अच्छे अन्दाज़ में अपने वालिदे मोह़तरम, हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का अदबो एह़तिराम करती थीं, जभी तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी ह़ज़रते फ़ात़िमा से बे पनाह मह़ब्बत फ़रमाया करते थे ह़त्ताकि एक मौक़ेअ़ पर सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : فَاِنَّمَا اِبْنَتِیْ بَضْعَۃٌ مِنِّیْ، یَرِیْبُنِیْ مَا رَابَھَا، وَیُؤْذِیْنِیْ مَا اٰذَاھَا बेशक मेरी बेटी **फ़ात़िमा** मेरे जिगर का टुकड़ा है, जिस ने उसे बेचैन किया, उस ने मुझे बेचैन किया और जिस ने उसे तक्लीफ़ दी, उस ने मुझे तक्लीफ़ पहुंचाई । (مسلم، کتاب فضائل الصحابۃ، باب فضائل فاطمۃ، ص۱۰۲۱، حدیث:۲۳۰۷)

हमें भी चाहिए कि हम भी अपने वालिदैन को ख़ुश रखें, उन का हर जाइज़ हुक्म मानें, उन का अदबो एह़तिराम करें और उन के साथ ख़ूब अच्छे सुलूक से पेश आएं । इसी त़रह़ अपने बेटों के साथ साथ बेटियों से भी मह़ब्बत भरा सुलूक करें, उन की जाइज़ ख़्वाहिशात को पूरा करें और उन की दिलजोई करती रहें ।

मेरी आने वाली नस्लें, तेरे इ़श्क़ ही में मचलें
उन्हें नेक तू बनाना मदनी मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 429)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

ख़ातूने जन्नत और ग़रीबों की ग़म ख़्वारी

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सय्यिदा ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की शानो अ़ज़मत का एक पेहलू येह भी है कि आप हमेशा सादगी इख़्तियार फ़रमातीं, ग़रीबों के साथ ग़म ख़्वारी और मिलनसारी से पेश आतीं, आप कम खाना खातीं, जो मिलता उसे दूसरों पर कुरबान कर देतीं

और ख़ुद फ़क़्रो फ़ाक़ा की ज़िन्दगी बसर करतीं, जिस मकान में रेहतीं, वहां ज़ेबो ज़ीनत (Decoration) का नामो निशान तक न था, क़ीमती और ख़ूबसूरत बिस्तर तो दूर की बात है, वहां तो बाज़ अवक़ात आ़म बिस्तर भी आ़जिज़ी की वज्ह से इस्तिमाल न फ़रमातीं लेकिन इस के बा वुजूद आप ने अपने दरवाज़े पर आने वाले साइल को ख़ाली न लौटाया और ईसार व सख़ावत की ऐसी मिसालें क़ाइम कीं, कि जिन्हें सुन कर अ़क़्लें दंग रेह जाती हैं । चुनान्चे,

ईसार व सख़ावते फ़ातिमा

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : बनी सुलैम में से एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत मआब में आ कर गुस्ताख़ी की, तो हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से इरशाद फ़रमाया : तू आख़िरत के अ़ज़ाब से डर, दोज़ख़ से ख़ौफ़ रख, ख़ुदाए वहदहू ला शरीक की इ़बादत कर और मैं **अल्लाह** करीम का बन्दा और उस का रसूल हूं । आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुस्ने अख़्लाक़ और मुअस्सिर कलाम से मुतास्सिर हो कर वोह ग़ैर मुस्लिम उसी वक़्त मुसलमान हो गया । फिर सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तेरे पास कितना माल है ? उस ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! ख़ुदा की क़सम ! बनू सुलैम में 4 हज़ार आदमी हैं लेकिन इस क़बीले में मुझ से ज़ियादा ग़रीब व मिस्कीन कोई नहीं । आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से इरशाद फ़रमाया : तुम में से कोई ऐसा है जो इसे एक ऊंट (Camel) ख़रीद कर दे ? हज़रते साद बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अपनी ऊंटनी उन को दे दी । फिर इरशाद फ़रमाया : कौन है जो इस का सर ढांप दे ? तो अमीरुल मोमिनीन, मौला मुश्किल कुशा, हज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने अपना इमामा

उन को दे दिया। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : कौन है जो इस के खाने का इन्तेज़ाम करे ? ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ उठे और चन्द मकानों पर गए लेकिन कुछ न मिला फिर नूरे मुस्त़फ़ा, ह़ज़रते फ़ात़िमतुज़्ज़ह़रा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के मकान पर ह़ाज़िर हो कर दरवाज़ा खटखटाया। आप ने पूछा : कौन है ? अ़र्ज़ की : सलमान हूं। फ़रमाया : कैसे आए हो ? आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने सारा माजरा सुना दिया। येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا आबदीदा हो गईं और फ़रमाया : ऐ सलमान ! ख़ुदा की क़सम जिस ने मेरे बाप को रसूल बना कर भेजा ! आज तीसरा दिन है, घर में सब फ़ाक़े से हैं मगर दरवाज़े पर आए हो, ख़ाली कैसे वापस करूं ? येह चादर ले जाओ और शम्ऊ़न नामी ग़ैर मुस्लिम के पास जा कर कहो : फ़ात़िमा बिन्ते मुह़म्मद की चादर रख लो और थोड़े से जव क़र्ज़ दे दो। ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ उस चादर को ले कर उस के पास गए और सारा माजरा बयान किया। शम्ऊ़न कुछ देर उस रिदाए मुबारका को देखता रहा, उस वक़्त उस पर एक कैफ़िय्यत त़ारी हो गई और केहने लगा : ऐ सलमान ! येह वोही मुक़द्दस लोग हैं जिन की ख़बर **अल्लाह** पाक ने अपने नबी, मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को तौरैत में दी है, मैं सिद्क़े दिल से ह़ज़रते फ़ात़िमा के बाप, मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह पर ईमान लाता हूं। येह केह कर उस ने कलिमा पढ़ा और मुसलमान हो गया। इस के बाद उस ने ह़ज़रते सलमान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को जव दिए और निहायत अदबो एह़तिराम से रिदाए मुबारका वापस कर दी। ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ने शम्ऊ़न को दुआ़ए ख़ैर दी और जव पीस कर खाना तय्यार कर के ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को दे दिया। आप ने अ़र्ज़ की : इस में से कुछ घर के लिए रख लीजिए। फ़रमाया : बस राहे ख़ुदा में देने की निय्यत से मंगवाया और पकाया है, अब इस में

से लेना दुरुस्त नहीं । ह़ज़रते सलमान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ख़ाना ले कर बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो गए और तमाम क़िस्सा भी अ़र्ज़ कर दिया । आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोह रोटी नौ मुस्लिम (New Muslim) को अ़त़ा फ़रमाई और अपनी नूरे नज़र, ह़ज़रते फ़ातिमा के पास तशरीफ़ लाए, तो देखा कि भूक से उन का चेहरा ज़र्द हो रहा है और कमज़ोरी (Weakness) के आसार नुमायां हैं । आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी बेटी, फ़ातिमा को बिठा कर तसल्ली दी और दुआ़ फ़रमाई : ऐ **अल्लाह** ! फ़ातिमा तेरी बन्दी है, तू इस से राज़ी रेहना । (सफ़ीनए नूह़, ह़िस्सा : दुवुम, स. 33, मुलख़्ख़सन)

भूके रेह के ख़ुद औरों को खिला देते थे
कैसे साबिर थे मुह़म्मद के घराने वाले !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! ख़ातूने जन्नत, ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا का ईसार व सख़ावत कि ख़ुद फ़ाक़े से हैं, घर में खाने को कुछ नहीं मगर सख़ावत व ईसार का ऐसा ज़बरदस्त जज़्बा कि ग़रीब नौ मुस्लिम (New Muslim) की ह़ाजत रवाई की ख़ातिर क़र्ज़ लेने के लिए अपनी मुबारक चादर गिरवी रखवा रही हैं और जब ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने खाने में से कुछ घर के लिए रखने की अ़र्ज़ की तो फ़रमाने लगीं : मैं ने येह खाना राहे ख़ुदा में ख़ैरात करने की निय्यत से पकाया है ।

سُبْحٰنَ اللّٰہ ! एक त़रफ़ ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا का पाकीज़ा अ़मल और दूसरी त़रफ़ हमारी ह़ालत कि अगर कभी कोई ह़ाजतमन्द आ जाए, तो पेहले चार बातें सुनाती हैं और अगर कुछ दे भी दें, तो बाद में दूसरों के सामने उस को ज़लीलो रुस्वा करतीं, उस की इ़ज़्ज़त को पामाल करतीं और त़रह़ त़रह़ की बातें सुनाती हैं । याद रखिए ! जब भी किसी साइल या

ह़ाजतमन्द को कुछ देने का मौक़अ़ मिले, तो ऐसी बातें करने से बचने की कोशिश करनी चाहिए कि जिस से सामने वाले की दिल आज़ारी या उस की ज़िल्लतो रुस्वाई होती हो बल्कि **अल्लाह** करीम का शुक्र अदा करें कि **अल्लाह** पाक ने किसी ग़रीब की ह़ाजत रवाई की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई क्यूंकि **अल्लाह** की बन्दी जब किसी की ह़ाजत पूरी करती है, तो **अल्लाह** करीम उस को बे शुमार इन्आ़मात अ़ता फ़रमाता है।

आइए ! मुसलमानों की ह़ाजत रवाई करने के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुनती हैं : चुनान्चे,

ह़ाजत रवाई के फ़ज़ाइल

1. इरशाद फ़रमाया : जो मेरे किसी उम्मती की ह़ाजत पूरी करे और उस की निय्यत येह हो कि इस के ज़रीए़ उस उम्मती को ख़ुश करे, तो उस ने मुझे ख़ुश किया और जिस ने मुझे ख़ुश किया, उस ने **अल्लाह** पाक को ख़ुश किया और जिस ने **अल्लाह** पाक को ख़ुश किया, तो **अल्लाह** करीम उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।

(شعب الایمان، الثالث والخمسون من شعب الایمان۔۔ الخ، ۱۱۵/۲، حدیث: ۷۶۵۳)

2. इरशाद फ़रमाया : बन्दा जब तक अपने भाई की ह़ाजत पूरी करने में लगा रेहता है, **अल्लाह** पाक उस की ह़ाजत पूरी फ़रमाता रेहता है। (مجمع الزوائد، کتاب البر والصلة، باب فضل قضاء الحوائج، ۳۵۳/۸، حدیث: ۱۳۷۲۳)
3. इरशाद फ़रमाया : जो अपने किसी मुसलमान भाई की ह़ाजत रवाई के लिए चलता है, **अल्लाह** पाक उस के अपनी जगह वापस आने तक उस के हर क़दम पर उस के लिए सत्तर नेकियां लिखता है और उस के सत्तर गुनाहों को मिटा देता है फिर अगर उस के हाथों

वोह ह़ाजत पूरी हो गई तो वोह अपने गुनाहों से ऐसे निकल जाता है जैसे उस दिन था जिस दिन उस की मां ने उसे जना था और अगर इस दौरान उस का इन्तिक़ाल हो गया तो वोह बिग़ैर ह़िसाब जन्नत में दाख़िल होगा।

(الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلة، باب الترغیب فی قضاء حوائج۔۔۔الخ، ۳/۳۱۷، حدیث: ۴۰۲۲)

तू बे ह़िसाब बख़्श कि हैं बे शुमार जुर्म
देता हूं वासित़ा तुझे शाहे ह़िजाज़ का

(ज़ौक़े नात, स. 11)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب!　　　صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

करामते ख़ातूने जन्नत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ह़ज़रते फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا की शानो अ़ज़मत का एक पेहलू येह भी है कि **अल्लाह** पाक ने आप को बहुत सी करामात से नवाज़ा और येह ह़क़ीक़त है जो **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को राज़ी करने में अपनी ज़िन्दगी बसर करती है, तो **अल्लाह** पाक भी अपने फ़ज़्लो करम से उसे त़रह़ त़रह़ की नेमतों से नवाज़ता है। आइए ! आप رَضِیَ اللہُ عَنْہَا की एक बहुत ही बा कमाल करामत सुनती हैं : चुनान्चे,

अ़ज़ीमुश्शान दावत

एक दिन ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दावत की। जब आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللہُ عَنْہ के मकान पर रौनक़ अफ़रोज़ हुवे तो उ़स्माने ग़नी, आप

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पीछे चलते हुवे आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़दमों को गिनने लगे और अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! मेरे मां-बाप आप पर कुरबान ! मेरी तमन्ना है कि हुज़ूर के एक एक क़दम के इवज़ में आप की ताज़ीमो तकरीम के लिए एक एक गुलाम आज़ाद करूं । चुनान्चे, ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه के मकान तक जिस क़दर हुज़ूर के क़दम पड़े थे, ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी ने उतनी ही तादाद में ग़ुलामों को ख़रीद कर आज़ाद कर दिया । ह़ज़रते मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने इस दावत से मुतास्सिर हो कर ह़ज़रते सय्यिदा फ़ातिमा رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا से कहा : ऐ फ़ातिमा ! आज मेरे दीनी भाई उ़स्मान ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बड़ी ही शानदार दावत की है और हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हर हर क़दम के बदले एक ग़ुलाम आज़ाद किया है, मेरी भी तमन्ना है कि **काश** ! हम भी हुज़ूर की इसी त़रह़ शानदार दावत कर सकते । ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا ने अपने शौहरे नामदार, ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ وَجْهَهُ الْكَرِيْم के इस जज़्बे से मुतास्सिर हो कर कहा : बहुत अच्छा ! जाइए ! आप भी हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इसी क़िस्म की दावत दे आइए । हमारे घर में भी इसी क़िस्म का सारा इन्तेज़ाम हो जाएगा । चुनान्चे,

ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर दावत दे दी और शहनशाहे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने सहाबए किराम की एक कसीर जमाअ़त को साथ ले कर अपनी प्यारी बेटी के घर में तशरीफ़ फ़रमा हो गए । ह़ज़रते सय्यिदा ख़ातूने जन्नत رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا तन्हाई में तशरीफ़ ले जा कर खुदावन्दे कुद्दूस की बारगाह में सर ब सुजूद हो गईं और येह दुआ़ मांगी : या **अल्लाह** ! तेरी बन्दी फ़ातिमा ने तेरे मह़बूब और अस्ह़ाबे मह़बूब की दावत की है, तेरी बन्दी का सिर्फ़ तुझ ही पर भरोसा है,

लिहाज़ा ऐ मेरे रब ! तू आज मेरी लाज रख ले और इस दावत के खानों का तू आ़लमे ग़ैब से इन्तेज़ाम फ़रमा । येह दुआ़ मांग कर ह़ज़रते बीबी फ़ाति़मा رَضِیَ اللہُ عَنۡہَا ने हांडियों को चूल्हों पर चढ़ा दिया । **अल्लाह** करीम का दरयाए करम एकदम जोश में आ गया और उन हांडियों को जन्नत के खानों से भर दिया । ह़ज़रते बीबी फ़ाति़मा رَضِیَ اللہُ عَنۡہَا ने उन हांडियों में से खाना निकालना शुरूअ़ कर दिया और हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने सह़ाबए किराम के साथ खाना खाने से फ़ारिग़ हो गए लेकिन ख़ुदा की शान ! कि हांडियों में से खाना कुछ भी कम नहीं हुवा और सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان उन खानों की ख़ुश्बू और लज़्ज़त से ह़ैरान रेह गए । हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان को ह़ैरान देख कर फ़रमाया : क्या तुम लोग जानते हो कि येह खाना कहां से आया है ? सह़ाबए किराम ने अ़र्ज़ किया : नहीं या रसूलल्लाह ! आप صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : येह खाना **अल्लाह** पाक ने हम लोगों के लिए जन्नत से भेजा है । फिर ह़ज़रते फ़ाति़मा رَضِیَ اللہُ عَنۡہَا गोशए तन्हाई में जा कर सजदा रेज़ हो गईं और येह दुआ़ मांगने लगीं : या **अल्लाह** ! ह़ज़रते उ़स्मान ने तेरे मह़बूब के एक एक क़दम के इवज़ एक एक ग़ुलाम आज़ाद किया है लेकिन तेरी बन्दी फ़ाति़मा को इतनी इस्तिता़अ़त नहीं है, ऐ ख़ुदावन्दे आ़लम ! जहां तू ने मेरी ख़ाति़र जन्नत से खाना भेज कर मेरी लाज रख ली है, वहां तू मेरी ख़ाति़र अपने मह़बूब के उन क़दमों के बराबर जितने क़दम चल कर मेरे घर तशरीफ़ लाए हैं, अपने मह़बूब की उम्मत के गुनहगार बन्दों को जहन्नम से आज़ाद फ़रमा दे । ह़ज़रते फ़ाति़मा رَضِیَ اللہُ عَنۡہَا जूंही इस दुआ़ से फ़ारिग़ हुईं, एकदम ह़ज़रते जिब्रीले अमीन عَلَیۡہِ السَّلَام येह बिशारत ले कर बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवे कि या रसूलल्लाह ! ह़ज़रते फ़ाति़मा की दुआ़ बारगाहे इलाही में

मक़्बूल हो गई । **अल्लाह** करीम ने फ़रमाया है कि हम ने आप के हर क़दम के बदले में एक एक हज़ार गुनहगारों को जहन्नम से आज़ाद कर दिया ।

(جامعُ المُعجِزات،ص۲۵۷ملخصاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! कुरबान जाइए ! अमीरुल मोमिनीन, हज़रते उस्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ عَنْه और बिल ख़ुसूस अमीरुल मोमिनीन, अलिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللهُ عَنْه और सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا के अन्दाज़े महब्बत पर कि इन ख़ुश नसीब हज़रात ने सरकारे दो आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अनोखी दावत करने की सआदत हासिल की । सय्यिदा फ़ातिमा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا की सीरत पर रश्क आता है कि आप की ख़्वाहिश थी कि दो आलम के दाता صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे घर भी तशरीफ़ लाएं और हम भी उन की दावत करें । येही जज़्बा था कि दौलतख़ाने में कुछ न होने के बा वुजूद भी हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दावत की और फिर **अल्लाह** के फ़ज़्लो करम से सय्यिदा फ़ातिमा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا की करामत ज़ाहिर हुई और आप رَضِیَ اللهُ عَنْهَا की दुआ पर जन्नती खाने आए और हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के गुनाहगारों को जहन्नम से आज़ादी नसीब हुई । लिहाज़ा हमें चाहिए कि रिज़ाए इलाही और सवाब कमाने के लिए, एह्तिरामे मुस्लिम की निय्यत से दिलजोई के लिए वक़्तन फ़ वक़्तन अपने रिश्तेदारों की दावत करें, उन के दुख दर्द में शरीक हों, उन के साथ हमेशा तअ़ल्लुक़ क़ाइम रखें और कभी कभार पड़ोसियों को भी दावत देने का ज़ेह्न बनाएं, कोई साइल आ जाए, तो उस को भी प्यार व महब्बत से खाना खिलाएं । जैसा कि ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللهُ عَنْهَا की सीरत में येह झलक भी नज़र आती है कि अगर कई रोज़ के फ़ाक़े के बाद घर में खाना आ

जाता, तो आप رَضِیَ اللہُ عَنۡہَا उस खाने में पड़ोसियों को भी शामिल फ़रमा लिया करती थीं । आइए ! आप رَضِیَ اللہُ عَنۡہَا की पड़ोसियों के साथ ख़ैर ख़्वाही करने, आप की करामत के ज़ाहिर होने पर मुश्तमिल एक और वाक़िआ़ सुनती हैं : चुनान्चे,

बरकत वाली सीनी

एक मरतबा ज़मानए क़हूत़ में रह़मते आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भूक मह़सूस की तो बिन्ते रसूलुल्लाह, ह़ज़रते फ़ाति़मा बतूल رَضِیَ اللہُ عَنۡہَا ने सीनी (यानी धात के रोटी, सालन रखने वाले ख़्वान) में एक बोटी और दो रोटियां ईसार करते हुवे बारगाहे रिसालत में भेज दीं । हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस तोह़फ़े के साथ ह़ज़रते फ़ाति़मा की त़रफ़ तशरीफ़ ले आए और फ़रमाया : ऐ मेरी बेटी ! इधर आओ ! ह़ज़रते सय्यिदा फ़ाति़मा ने जब उस सीनी को खोला, तो आप येह देख कर ह़ैरान रेह गईं कि वोह सीनी रोटियों और बोटियों से भरी हुई थी और आप رَضِیَ اللہُ عَنۡہَا ने जान लिया कि येह खाना **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से नाज़िल हुवा है । हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : اَنّٰی لَکِ ھٰذَا؟ येह सब तुम्हारे लिए कहां से आया ? तो ह़ज़रते फ़ाति़मा ने अ़र्ज़ किया : ھُوَ مِنۡ عِنۡدِ اللہِ اِنَّ اللہَ یَرۡزُقُ مَنۡ یَّشَآءُ بِغَیۡرِ حِسَابٍ वोह **अल्लाह** के पास से है, बेशक **अल्लाह** जिस चाहे, बे गिनती दे । सरकार صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तमाम तारीफ़ें **अल्लाह** पाक के लिए जिस ने तुझे बनी इसराईल की सरदार (यानी ह़ज़रते मरयम) के मुशाबेह बनाया । फिर हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ली, ह़ज़राते ह़सन व हु़सैन और दूसरे अहले बैत رَضِیَ اللہُ عَنۡہُمۡ اَجۡمَعِیۡن को जम्अ़ फ़रमा कर सब के साथ (सीनी में से) खाना तनावुल फ़रमाया और सब

सैर हो गए फिर भी खाना उसी क़दर बाक़ी था और उस को ह़ज़रते बीबी फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ने अपने पड़ोसियों को खिलाया।

(تفسیر روح البیان، پ۳، اٰلِ عمران، تحت الاٰیۃ۳۷، ۲/ ۲۹)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान कर्दा वाक़िए़ से जहां शहज़ादिए कौनैन, ह़ज़रते फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की अ़ज़ीमुश्शान करामत ज़ाहिर हुई, वहीं येह भी मालूम हुवा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا पड़ोसियों की बहुत ज़ियादा ख़ैर ख़्वाही फ़रमाया करती थीं लेकिन आज हमारे दिलों से पड़ोसियों की ख़ैर ख़्वाही का जज़्बा निकलता जा रहा है, हम ख़ुद तो अच्छा खाती, पीती हैं, अच्छा पेहनती हैं मगर अफ़्सोस ! हमें पड़ोसियों के दुख दर्द, उन के हुक़ूक़ की अदाएगी और उन की भूक व प्यास का ज़रा भी एह़सास नहीं होता, ह़ालांकि कसीर अह़ादीसे मुबारका में पड़ोसियों के हुक़ूक़ को बयान किया गया है। चुनान्चे,

पड़ोसी के हुक़ूक़

ह़ज़रते मुआ़विया बिन ह़ैदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने बारगाहे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! आदमी पर पड़ोसी के क्या हुक़ूक़ हैं ? तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अगर वोह बीमार हो, तो उस की इ़यादत करो, मर जाए, तो उस के जनाज़े में शिर्कत करो, क़र्ज़ मांगे, तो उसे क़र्ज़ दे दो और अगर वोह ऐ़बदार हो जाए, तो उस की पर्दापोशी करो। (المعجم الکبیر، ۱۹/ ۴۱۹، حدیث: ۱۰۱۴)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! लिहाज़ा हमें भी चाहिए कि पड़ोसियों के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आएं, अगर उन्हें कोई मुसीबत पहुंचे, तो उन्हें तसल्ली देते हुवे सब्र की तल्क़ीन करें, जब उन्हें कोई ख़ुशी ह़ासिल हो तो उन्हें मुबारक बाद दें, पड़ोसी के बच्चों के साथ नर्मी व

भलाई से गुफ़्तगू करते हुवे हुस्ने अख़्लाक़ से पेश आएं, पड़ोसियों की ग़लतियों पर उन से दरगुज़र करें, वोह फ़रयाद करें तो उन की मदद करें।

नेमते अख़्लाक़ कर दीजे अ़ता
येह करम या मुस्त़फ़ा फ़रमाइए

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 517)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللهُ عَلٰی مُحَمَّد

ताज़ीमे सादात के आदाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! ताज़ीमे सादात के बारे में चन्द आदाब सुनने की सआदत ह़ासिल करती हैं।

पेहले 2 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللهُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा कीजिए :

1. फ़रमाया : जो मेरे अहले बैत में से किसी के साथ अच्छा सुलूक करेगा, मैं रोज़े क़ियामत इस का सिला (बदला) उसे अ़ता फ़रमाऊंगा। (جامع صغیر، ص۵۳۳، حدیث:۸۸۲۱)
2. फ़रमाया : जो शख़्स औलादे अ़ब्दुल मुत्त़लिब में से किसी के साथ दुन्या में नेकी (भलाई) करे, उस का सिला (बदला) देना मुझ पर लाज़िम है जब वोह रोज़े क़ियामत मुझ से मिलेगा।

(تاریخ بغداد، رقم ۵۲۲۱، عبداللہ بن محمد بن ابی کامل، ۱۰/ ۱۰۲)

❖ सादाते किराम की ताज़ीम फ़र्ज़ है और उन की तौहीन ह़राम। (कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 277) ❖ सादाते किराम की ताज़ीमो तकरीम की अस्ल वज्ह येही है कि येह ह़ज़रात, रसूले काइनात صَلَّی اللهُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जिस्मे अत़हर का टुकड़ा हैं। (सादाते किराम की अ़ज़मत, स. 7) ❖ **अल्लाह** पाक की रह़मत बन कर दुन्या में तशरीफ़ लाने वाले नबी صَلَّی اللهُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ताज़ीमो तौक़ीर में से येह भी है कि वोह तमाम चीज़ें

जो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से निस्बत रखती हैं, उन की ताज़ीम की जाए। (اَلشِّفاء، الباب الثالث فی تعظیم امرہ،فصل ومن إعظامہ...الخ، جزء:۲ ،ص۵۲) ❖ ताज़ीम के लिए न यक़ीन दरकार है और न ही किसी ख़ास सनद की ह़ाजत, लिहाज़ा जो लोग सादात केहलाते हैं, उन की ताज़ीम करनी चाहिए। (सादाते किराम की अ़ज़मत, स. 14) ❖ जो वाक़ेअ़ में सय्यिद न हो और दीदा व दानिस्ता (जानबूझ कर) सय्यिद बनता हो, वोह मल्ऊ़न (लानत किया गया) है, न उस का फ़र्ज़ क़बूल हो, न नफ़्ल। (सादाते किराम की अ़ज़मत, स. 16) ❖ अगर कोई बद मज़हब सय्यिद होने का दावा करे और उस की बद मज़हबी ह़द्दे कुफ़्र तक पहुंच चुकी हो, तो हरगिज़ उस की ताज़ीम न की जाएगी। (सादाते किराम की अ़ज़मत, स. 17) ❖ सादात की ताज़ीम हमारी शफ़ाअ़त फ़रमाने वाले आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ताज़ीम है। (फ़तावा रज़विय्या, 22 / 423, माख़ूज़न, सादाते किराम की अ़ज़मत, स. 8) ❖ उस्ताद भी सय्यिद को मारने से परहेज़ करे। (कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 284) ❖ सादाते किराम को ऐसे काम पर मुलाज़िम रखा जा सकता है जिस में ज़िल्लत न पाई जाती हो, अलबत्ता ज़िल्लत वाले कामों में उन्हें मुलाज़िम रखना जाइज़ नहीं। (सादाते किराम की अ़ज़मत, स. 12) ❖ सय्यिद की बत़ौरे सय्यिद, यानी वोह सय्यिद है इस लिए तौहीन करना **कुफ़्र** है।

(कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 276)

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की छपी हुई दो किताबें : (1) 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16** और (2) 120 सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" नीज़ इस के इ़लावा शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत के दो रसाइल "**101 मदनी फूल**" और "**163 मदनी फूल**" हदिय्यतन त़लब कीजिये और पढ़िये।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान नम्बर – 2

हर मुबल्लिग़ा बयान करने से पहले कम से कम तीन बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط

اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : مَنْ صَلّٰی عَلَیَّ فِیْ یَوْمٍ اَلْفَ مَرَّۃٍ لَمْ یَمُتْ حَتّٰی یَرٰی مَقْعَدَہٗ مِنَ الْجَنَّۃِ यानी जो मुझ पर एक दिन में एक हज़ार मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा, वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा, जब तक जन्नत में अपना मक़ाम न देख ले ।

(الترغیب والترھیب، کتاب الذکر والدعاء، الترغیب فی اکثار الصلاۃ علی النبی، ۲/ ۳۲۶، حدیث: ۲۵۹۰)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है ।

(اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر لِلطّبرانی ج۶ ص۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

मस्अला :-

नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा ।

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नोइ़यत के एतिबार से निय्यतों में कमी व बेशी व तब्दीली की जा सकती है।

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी। टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी। ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिये जगह कुशादा करूंगी। धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी। صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوبُوا اِلَى اللّٰه वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिये पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी। इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी। दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी। जो कुछ बयान होगा उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल और बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगी।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! यक़ीनन कुरआने करीम की तिलावत करना, इसे सुनना और इस पर अ़मल करना ख़ैरो बरकत और नजाते आख़िरत का सबब है मगर बद क़िस्मती से आज मुसलमानों के पास इस की तिलावत करने, इस को समझने और इस पर अ़मल करने के लिये वक़्त नहीं, बाज़ इस्लामी बहनों को रमज़ानुल मुबारक में येह सआ़दत नसीब हो जाती है और बाज़ तो रमज़ान में भी इस की तिलावत बल्कि इस की ज़ियारत से मह़रूम रहती हैं और रमज़ानुल मुबारक में **"टाइम पास"** करने के लिये अपना क़ीमती वक़्त फ़ुज़ूल बैठकों, अख़्बारात का मुत़ालआ़ करने, फ़िल्में, ड्रामे या मूसीक़ी से भरपूर प्रोग्राम देखने, सुनने, मुल्की व

सियासी ह़ालात और मेचिज़ पर तबसिरे करने और सुनने, मोबाइल या कम्प्यूटर पर गेम्ज़ खेलने में ज़ाएअ़ कर देती हैं। अगर येह अपना क़ीमती वक़्त इन फ़ुज़ूल मसरूफ़ियात में बरबाद करने के बजाए रोज़ाना कम से कम एक पारह तिलावत करने का मामूल बनाएं, तो اِنْ شَآءَ الله इस की बरकत से ढेरों नेकियां नामए आमाल में लिखी जाएं।

याद रखिये ! कुरआने करीम में ह़लाल व ह़राम के अह़काम, इब्रतों और नसीह़तों के अक़्वाल, अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और पिछली उम्मतों के वाक़िआ़त व अह़्वाल और जन्नत व दोज़ख़ के ह़ालात के साथ साथ उ़लूम के ऐसे ख़ज़ाने मौजूद हैं जो क़ियामत तक भी ख़त्म नहीं हो सकते। जैसा कि दावते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की किताब **"अ़जाइबुल कुरआन मअ़ ग़राइबुल कुरआन"** में लिखा है : कुरआने मजीद अगर्चे ज़ाहिर में 30 पारों का मजमूआ़ है लेकिन इस का बातिन करोड़ों बल्कि अरबों उ़लूमो मआ़रिफ़ का ऐसा ख़ज़ाना है जो कभी ख़त्म नहीं हो सकता।

किसी वली का मश्हूर शेर है कि :

جَمِیۡعُ الۡعِلۡمِ فِی الۡقُرۡاٰنِ لٰکِنۡ   تَقَاصَرَ عَنۡهُ اَفۡهَامُ الرِّجَالِ

तर्जमा : यानी तमाम उ़लूम कुरआन में मौजूद हैं लेकिन लोगों की अ़क़्लें उन के समझने से क़ासिर हैं।

कुरआने मजीद में सिर्फ़ उ़लूम ही का बयान नहीं बल्कि ह़क़ीक़त येह है कि कुरआने मजीद में पूरी काइनात और सारे आ़लम की हर हर चीज़ का वाज़ेह़, रौशन और तफ़्सीली बयान है, यानी आसमान के एक एक तारे, समुन्दर के एक एक क़त़रे, सब्ज़ए ज़मीन के एक एक तिन्के, रेगिस्तान के एक एक ज़र्रे, दरख़्तों के एक एक पत्ते, अ़र्श व कुर्सी के एक एक गोशे, आ़लमे काइनात के एक एक कोने, माज़ी का हर हर वाक़िआ़,

ह़ाल का हर हर मुआ़मला, मुस्तक़्बिल का हर हर ह़ादिसा कुरआने मजीद में निहायत वज़ाह़त के साथ तफ़्सीली बयान किया गया है। कुरआने मजीद तो उ़लूमो मआ़रिफ़ का वोह ख़ज़ाना है जो कभी ख़त्म ही नहीं हो सकता बल्कि क़ियामत तक उ़लमा ए किराम इस बहुत बड़े समुन्दर से हमेशा अ़जीबो ग़रीब मज़ामीन के मोती निकालते ही रहेंगे और हज़ारों लाखों किताबों के दफ़्तर तय्यार होते ही रहेंगे।

(अ़जाइबुल कुरआन मअ़ ग़राइबुल कुरआन, स. 419, 420, मुल्तक़त़न)

तो आइये ! आज हम इसी बुलन्दो बाला और अ़ज़ीमुश्शान किताब की तिलावत करने वालों के चन्द ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़त व ह़िकायात सुनती हैं ताकि हमारे अन्दर भी रब्बे करीम के इस पाकीज़ा कलाम "**कुरआने करीम**" की तिलावत का ज़ौक़ो शौक़ बेदार हो जाए। चुनान्चे,

फ़िरिश्ते तिलावत सुनने आते रहे

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना उसैद बिन हुज़ैर رَضِیَ اللہُ عَنْہ एक रात अपने घोड़े बांधने की जगह पर कुरआने करीम की तिलावत फ़रमा रहे थे कि उन का घोड़ा उछलने लगा। उन्हों ने दोबारा कुरआन की तिलावत शुरूअ़ की तो घोड़ा दोबारा उछलने लगा, तीसरी मरतबा भी ऐसा ही हुवा। ह़ज़रते सय्यिदुना उसैद बिन हुज़ैर رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : मुझे ख़त़रा हुवा कि कहीं घोड़ा (मेरे बेटे) यह़्या को कुचल न डाले, लिहाज़ा मैं घोड़े की त़रफ़ गया तो मैं ने देखा कि मेरे सर पर एक छतरी ने साया किया हुवा है जिस में चराग़ रौशन हैं फिर वोह फ़ज़ा में गुम हो कर मेरी निगाहों से ग़ाइब हो गई। सुब्ह़ के वक़्त मैं ने नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो

कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं गुज़री हुई रात अपने घोड़े बांधने की जगह में कुरआने पाक की तिलावत कर रहा था कि मेरा घोड़ा उछलने लगा, जब मैं बाहर आया तो मैं ने अपने सर पर एक छतरी को साया किये हुवे देखा जिस में चराग़ रौशन थे फिर वोह फ़ज़ा में बुलन्द होती गई यहां तक कि मेरी नज़रों से ग़ाइब हो गई । उस वक़्त (मेरा बेटा) यह्या घोड़े के क़रीब था, मुझे ख़ौफ़ महसूस हुवा कि कहीं घोड़ा उसे कुचल न डाले । येह सुन कर प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : येह फ़िरिश्ते थे जो तुम्हारी क़िराअत सुनने आए थे, अगर तुम तिलावत करते रहते, तो सुब्ह लोग इन्हें देखते और इन में से कोई पोशीदा न रहता ।

(مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین، باب نزول السکینۃ...الخ، رقم:۷۹۶، ص۳۱۱ ملتقطاً)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

तिलावत की फ़ज़ीलत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान कर्दा हिकायत से मालूम हुवा कि जिस मक़ाम पर कुरआने करीम की तिलावत की जाती है तो वहां रहमत के फ़िरिश्ते तशरीफ़ लाते हैं, उस जगह पर **अल्लाह** पाक की रहमतों की बरसात होती है, तिलावते कुरआन की बरकत से आस पास रहने वाली मख़्लूक़ को कुदरत के नज़्ज़ारे भी दिखाई देते हैं । जैसा कि आप ने सुना कि एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ तिलावत करते रहे और उन का घोड़ा फ़िरिश्तों का नज़्ज़ारा करता रहा और उन सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने भी एक रौशन चराग़ की सूरत में फ़िरिश्तों को मुलाहज़ा फ़रमाया ।

याद रखिये ! कुरआने करीम **अल्लाह** पाक का बहुत ही मुबारक कलाम है । इस का पढ़ना, पढ़ाना, सुनना, सुनाना सब सवाब के

काम हैं, न सिर्फ़ इस की तिलावत करना सवाब का काम है बल्कि इस की ज़ियारत करना भी इबादत है। जैसा कि :

हदीसे पाक में है : اَلنَّظَرُ فِی الْمُصْحَفِ عِبَادَۃٌ यानी कुरआने करीम को देखना इबादत है। (شعب الایمان، باب فی بر الوالدین، ۲/۱۸۷، حدیث: ۷۸۶۰) येही वज्ह है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वक्तन फ़ वक्तन सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को कुरआने पाक की तिलावत करने की तरग़ीब इरशाद फ़रमाई और बहुत सी अहादीसे करीमा में इस के फ़ज़ाइल भी बयान फ़रमाए।

आइये ! इस ज़िम्न में तीन अहादीसे करीमा सुनिये : चुनान्चे,

जन्नती लिबास पहनाया जाएगा

1. **इरशाद फ़रमाया :** क़ियामत के दिन कुरआने करीम पढ़ने वाला आएगा, तो कुरआन कहेगा : ऐ रब्बे करीम ! इसे जन्नत का लिबास पहना। तो उसे बुज़ुर्गी का जन्नती लिबास पहनाया जाएगा। फिर कुरआन कहेगा : ऐ रब्बे करीम ! इस में इज़ाफ़ा फ़रमा। तो उसे बुज़ुर्गी का ताज (Crown) पहनाया जाएगा। फिर कुरआन कहेगा : ऐ रब्बे करीम ! इस से राज़ी हो जा। तो **अल्लाह** पाक उस से राज़ी हो जाएगा फिर उस कुरआने करीम पढ़ने वाले से कहा जाएगा : कुरआने करीम पढ़ता जा और जन्नत के दरजात तै करता जा और हर आयत पर उसे एक नेमत अता की जाएगी।

(ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ما جاء فی من قرأ...الخ، ۴/ ۴۱۹، حدیث: ۲۹۲۴)

2. **इरशाद फ़रमाया : अल्लाह** पाक कुरआन सुनने वाले से दुन्या की मुसीबतें दूर कर देता है और कुरआन पढ़ने वाले से आख़िरत की मुसीबतें दूर कर देता है। कुरआने पाक की एक आयत सुनना, सोने

के ख़ज़ाने से भी ज़ियादा है, इस की एक आयत पढ़ना अ़र्श के नीचे मौजूद तमाम चीज़ों से अफ़्ज़ल है।

(مسند الفردوس، ۲۵۹/۵، حدیث: ۸۱۲۲)

3. इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स किताबुल्लाह का एक ह़र्फ़ पढ़ेगा, उस को एक नेकी मिलेगी जो 10 के बराबर होगी। मैं येह नहीं कहता कि الٓمّٓ एक ह़र्फ़ है बल्कि "**अलिफ़**" एक ह़र्फ़, "**लाम**" एक ह़र्फ़ और "**मीम**" एक ह़र्फ़ है।

(ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فی من قرأ... الخ، ۴/۴۱۷، حدیث: ۲۹۱۹)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान कर्दा अह़ादीसे मुबारका से मालूम हुवा कि कुरआने पाक की तिलावत करने और सुनने से दुन्यावी मुसीबतें, परेशानियां दूर होती हैं, मुसलमान तकालीफ़ (Troubles) और बलाओं से मेह़फ़ूज़ रहते हैं, कुरआने पाक की तिलावत करना दुन्यावी मालो दौलत से बेहतर है बल्कि कुरआने पाक का एक ह़र्फ़ पढ़ने पर 10 नेकियों का सवाब मिलता है। येह भी मालूम हुवा कि जो **अल्लाह** पाक के कलाम की तिलावत करती रहती हैं, उन के दिलों को सुकून व इत़मीनान नसीब हो जाता है, उन पर रह़मते इलाही की छमाछम बरसात होती है, आख़िरत में उन्हें जन्नत में दाख़िल किया जाएगा, ह़त्ताकि उन को कुरआने पाक की तिलावत करने के मुत़ाबिक़ जन्नत के दरजात त़ै करवाए जाएंगे। लिहाज़ा हमें रोज़ाना वक़्त निकाल कर ख़ुशदिली के साथ कुरआने करीम की तिलावत करने की आ़दत (Habit) बनानी चाहिये ताकि हम भी कुरआने पाक की बरकतें ह़ासिल कर सकें।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हमारी ख़ुश नसीबी है कि **अल्लाह** पाक ने हमें एक मरतबा फिर माहे रमज़ान की मदनी बहारें देखना नसीब फ़रमाई । याद रखिये ! माहे रमज़ान **"कुरआने करीम के तशरीफ़ लाने का महीना"** भी है, अगर हम इस मुबारक महीने में भी तिलावते कुरआन न कर सकीं तो कितनी बड़ी मेह़रूमी है । येही वोह मुबारक महीना है जिस में नफ़्ल का सवाब फ़र्ज़ के बराबर और फ़र्ज़ का सवाब 70 गुना बढ़ा दिया जाता है । इस मुबारक महीने की तशरीफ़ आवरी से फ़ाइदा उठाते हुवे आइये ! निय्यत कीजिये कि बिल ख़ुसूस इस मुक़द्दस महीने में कसरत के साथ तिलावते कुरआन की सआ़दत ह़ासिल करेंगी । रोज़ाना एक वक़्त मुक़र्रर कर लीजिये, मसलन इतने बजे से इतने बजे तक मैं इतनी तिलावते कुरआन की सआ़दत ह़ासिल करूंगी ।

बिलफ़र्ज़ कुरआने करीम पढ़ना नहीं आता तो मद्रसतुल मदीना बालिग़ात में दाख़िला ले कर सीखने की कोशिश कीजिये । اَلْحَمْدُ لِلّٰه मद्रसतुल मदीना बालिग़ात में बड़ी उ़म्र की इस्लामी बहनों को क़वाइ़द व मख़ारिज के साथ कुरआने पाक पढ़ना सिखाया जाता है । अगर पढ़ना जानती हैं तो दूसरों को सिखाइये, येह बहुत बड़ी नेकी है, अगर हमारी थोड़ी सी कोशिश से कोई नमाज़ पढ़ने वाली बन गई, दुरुस्त कुरआने करीम पढ़ने वाली बन गई तो **अल्लाह** पाक की रह़मत से उम्मीद है कि सवाब का बहुत बड़ा ख़ज़ाना जम्अ़ हो जाएगा । اِنْ شَآءَ اللّٰه

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

बुज़ुर्गाने दीन का शौक़े तिलावत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ عَلَيۡهِمۡ اَجۡمَعِيۡن सारी ज़िन्दगी नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रामीन पर अ़मल करते हुवे गुज़ारते हैं, येह खुश नसीब ह़ज़रात फ़राइज़ो वाजिबात की अदाएगी के साथ साथ सुन्नतों और मुस्तह़बात भी पाबन्दी से अदा करते हैं, शौक़ व मह़ब्बत से रातों को जाग कर **अल्लाह** पाक की इ़बादत करते और दिन को रोज़ा रखते हैं, येह नेक सीरत लोग न सिर्फ़ खुद कु़रआने पाक की तिलावत कसरत से करते हैं बल्कि मुसलमानों को भी कु़रआने पाक की तालीम दिया करते हैं।

आइये ! तरग़ीब के लिये बुज़ुर्गाने दीन رَحۡمَةُ اللّٰهِ عَلَيۡهِمۡ اَجۡمَعِيۡن के चन्द वाक़िआ़त सुनती हैं ताकि हमारा भी ज़ेहन (Mind) बने और हम भी उन नेक लोगों के नक़्शे क़दम पर चलते हुवे ज़ियादा से ज़ियादा तिलावते कु़रआने करीम करने वाली और दूसरी इस्लामी बहनों को पढ़ाने वाली बन जाएं। चुनान्चे,

इ़बादतो रियाज़त देख कर क़बूले इस्लाम

अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنۡه ने इब्तिदाए इस्लाम में अपने घर के सेहन में एक मस्जिद बनाई थी, जहां आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنۡه कु़रआने पाक की तिलावत करते और नमाज़ पढ़ा करते थे, लोग आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنۡه के इस ईमान अफ़रोज़ मन्ज़र को देख कर आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنۡه के आस पास जम्अ़ हो जाते, आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنۡه की तिलावते कु़रआन, इ़बादतो रियाज़त और ख़ौफ़े खुदा में रोना लोगों को बहुत मुतअस्सिर करता था, आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنۡه के इस अ़मल के सबब कई लोग इस्लाम में दाख़िल हुवे। (الرياض النضرة، ۱/۹۲)

सहाबए किराम का अन्दाज़े तिलावत

हकीमुल उम्मत, हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحۡمَةُ اللهِ عَلَيۡه फ़रमाते हैं : (अमीरुल मोमिनीन) हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡه एक रात में ख़त्मे कुरआन फ़रमाते । हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيۡهِ السَّلَام चन्द मिनट में ज़बूर ख़त्म कर लेते थे ।

(मिरआतुल मनाजीह़, 3 / 270)

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡه घोड़े पर सुवार होते वक़्त एक पाउं रिकाब में रखते और कुरआने मजीद शुरूअ़ करते और दूसरा पाउं रिकाब में रख कर घोड़े की ज़ीन पर बैठने तक एक कुरआने करीम ख़त्म कर लिया करते थे ।

(شواہد النبوۃ، رکن سادس در بیان شواھد ودلایلی...الخ، ص ۲۱۲)

वाह ! क्या बात है आ़शिक़े कुरआन की !

हज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी رَحۡمَةُ اللهِ عَلَيۡه रोज़ाना एक बार ख़त्मे कुरआने पाक फ़रमाते थे । आप رَحۡمَةُ اللهِ عَلَيۡه हमेशा दिन को रोज़ा रखते और सारी रात इबादत फ़रमाते, जिस मस्जिद से गुज़रते उस में 2 रक्अ़त (तहिय्यतुल मस्जिद) ज़रूर पढ़ते । नेमत के इज़्हार के तौर पर फ़रमाते हैं : मैं ने जामेअ़ मस्जिद के हर सुतून (Pillar) के पास कुरआने पाक का ख़त्म किया और बारगाहे इलाही में गिर्या ओ ज़ारी की है । नमाज़ और तिलावते कुरआन से आप رَحۡمَةُ اللهِ عَلَيۡه को ख़ुसूसी महब्बत थी, आप رَحۡمَةُ اللهِ عَلَيۡه पर ऐसा करम हुवा कि रश्क आता है । चुनान्चे, मन्क़ूल है : जब भी लोग आप رَحۡمَةُ اللهِ عَلَيۡه के मज़ारे मुबारक के क़रीब से गुज़रते तो क़ब्रे अन्वर से तिलावते कुरआन की आवाज़ आ रही होती ।

(حلیۃ الاولیاء، ۲/ ۳۶۴-۳۶۶، ملخصاً)

कुरआन की तिलावत करने में मुक़ाबला

हज़रते सय्यिदुना शैख़ बहाउद्दीन ज़करिय्या मुल्तानी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने एक (मरतबा) रात के वक़्त अपने दोस्तों से इरशाद फ़रमाया : तुम में कोई ऐसा शख़्स है जो आज की रात दो रक्अ़त नमाज़ अदा करे और एक रक्अ़त में मुकम्मल कुरआने पाक की तिलावत करे ? वहां मौजूद हाज़िरीन में से किसी को हिम्मत न हुई । सय्यिदुना शैख़ बहाउद्दीन ज़करिय्या رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه खुद खड़े हुवे और 2 रक्अ़त नमाज़ शुरूअ़ कर दी । पहली रक्अ़त में पूरा कुरआने करीम और 4 पारे मजीद तिलावत फ़रमाएं और दूसरी रक्अ़त में सूरए इख़्लास पढ़ी और नमाज़ मुकम्मल कर ली ।

(فواد الفوائد مترجم، پانچویں مجلس، ص۱۲ ملخصاً)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि **अल्लाह** पाक के नेक बन्दे किस क़दर शौक़ व मह़ब्बत से दिन-रात रब्बे करीम का कलाम पढ़ते रहते थे, **अल्लाह** पाक के कलाम से इस क़दर मह़ब्बत थी कि कुछ ही देर में पूरे कुरआने पाक की तिलावत फ़रमा लिया करते थे मगर अफ़्सोस ! आज हमारी अक्सरिय्यत कुरआने पाक की तालीम से ना वाक़िफ़ है, बाज़ तो ऐसी भी हैं कि जिन को कुरआने पाक देख कर पढ़ना भी नहीं आता और जिन को पढ़ना आता है, वोह भी सालों साल तक कुरआने पाक खोल कर नहीं देखतीं, कई कई महीने (Months) गुज़र जाते हैं मगर हमारे घर तिलावत की बरकत से मह़रूम रहते हैं । आइये ! हम भी निय्यत करती हैं कि आज से इन अह़ादीसे मुबारका पर अ़मल करते हुवे, इन नेक सीरत लोगों की अदाओं को अपनाते हुवे हम खुद भी कुरआने पाक पढ़ेंगी और दूसरी इस्लामी बहनों को भी कुरआने पाक पढ़ने की तरग़ीब दिलाएंगी ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! दावते इस्लामी आशिक़ाने रसूल की वोह दीनी तह्‌रीक है जिस के मदनी मक़्सद में फ़ैज़ाने कुरआन को आ़म करने की तरग़ीब शामिल है, वोह मदनी मक़्सद क्या है ? आइये ! हम भी दोहरा लेती हैं :

"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَ اللّٰه"

ज़िन्दगी के हर मोड़ पर कुरआने करीम मुसलमान के साथ है, कुरआने करीम की रेहनुमाई के बिग़ैर कोई मन्ज़िल तक कैसे पहुंच सकता है ? कुरआने करीम की तालीम को भूल कर काम्याबी की उम्मीद कैसे रखी जा सकती है ? कुरआने करीम हिदायत का मर्कज़ है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه आशिक़ाने रसूल की दीनी तह्‌रीक दावते इस्लामी मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ से तालीमे कुरआन को आ़म करने की कोशिश कर रही है। तालीमे कुरआन को आ़म करने के लिये एक अन्दाज़ येह भी है कि दुन्या के मुख़्तलिफ़ ममालिक में अक्सर घरों के अन्दर तक़रीबन रोज़ाना हज़ारों मदारिस बनाम **"मद्रसतुल मदीना बालिग़ात"** भी लगाए जाते हैं, मद्रसतुल मदीना बालिग़ात में पढ़ने वालियों की तादाद तक़रीबन 63 हज़ार से ज़ाइद है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! कुरआने अ़ज़ीम वोह मुबारक किताब है जिस में **अल्लाह** पाक ने बहुत से अह़कामात इरशाद फ़रमाए हैं, इन में बाज़ अह़काम वोह हैं जिन पर मुसलमानों को अ़मल करने, मसलन नमाज़ पढ़ने, ज़कात अदा करने, रमज़ानुल मुबारक के रोज़े रखने, ताक़त होने की सूरत में ह़ज अदा करने, वालिदैन के हुक़ूक़ (Rights) अदा करने और उन के साथ अच्छा सुलूक करने, औ़रतों को शरई पर्दा करने, इस्लामी बहनों को सलाम करने, उन के साथ नर्मी इख़्तियार करने

का हुक्म दिया गया जब कि चोरी करने, बदकारी करने, सूद खाने, शराब पीने, झूट बोलने, नाजाइज़ लेन देन करने, बिला वज्ह किसी पर ग़ुस्सा करने, किसी को बुरे अल्क़ाबात से पुकारने के इ़लावा मज़ीद बहुत से बुरे कामों से बचने का भी हुक्म दिया गया है । अल ग़रज़ ! इस पाकीज़ा किताब यानी कुरआने करीम में उन तमाम चीज़ों का बयान मौजूद है जिन पर अ़मल करने की बरकत से मुसलमानों को न सिर्फ़ दुन्या में फ़ाइदा पहुंचता है बल्कि اِنْ شَآءَ الله आख़िरत में भी इस का ख़ूब सवाब मिलेगा । लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम इन अह़कामात पर ख़ुशदिली के साथ पाबन्दी से अ़मल करें ताकि हमारी दुन्या ओ आख़िरत बेहतरीन हो जाए ।

पारह 8, सूरतुल अन्आ़म की आयत नम्बर 155 में इरशादे बारी है :

وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوْهُ وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۱۵۵﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : *और येह बरकत वाली किताब है जिसे हम ने नाज़िल किया है तो तुम इस की पैरवी करो और परहेज़गार बनो ताकि तुम पर रह़म किया जाए ।*

उम्मत पर कु़रआने करीम का ह़क़

बयान कर्दा आयते मुक़द्दसा के तह़त "**तफ़्सीरे सिरात़ुल जिनान**" जिल्द 3, सफ़ह़ा नम्बर 247 पर लिखा है : इस (आयत) से मालूम हुवा ! उम्मत पर कुरआने मजीद का एक ह़क़ येह (भी) है कि वोह इस मुबारक किताब की पैरवी करें और इस के अह़काम की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करने से बचें । अफ़्सोस ! फ़ी ज़माना कुरआने करीम पर अ़मल (करने) के एतिबार से मुसलमानों का ह़ाल इन्तिहाई ख़राब है, आज मुसलमानों ने इस किताब की रोज़ाना तिलावत करने के बजाए इसे घरों में जुज़्दान व ग़िलाफ़ की ज़ीनत बना कर और दुकानों पर कारोबार में बरकत के लिये रखा हुवा

है और तिलावत करने वाले भी सह़ीह़ त़रीक़े से तिलावत करते हैं और न येह समझने की कोशिश करते हैं कि उन के **अल्लाह** करीम ने इस किताब में उन के लिये क्या फ़रमाया है ? तारीख़ गवाह है कि जब तक मुसलमानों ने इस मुक़द्दस किताब को बहुत अ़ज़ीज़ समझा, इस के क़वानीन (Rules) और अह़कामात पर सख़्ती से अ़मल पैरा रहे, तब तक दुन्या भर में उन की शौकत का डंका बजता रहा और ग़ैरों के दिल मुसलमानों का नाम सुन कर दहलते रहे और जब से मुसलमानों ने कुरआने अ़ज़ीम के अह़काम पर अ़मल छोड़ रखा है तब से वोह दुन्या भर में ज़लीलो ख़्वार हो रहे और ग़ैरों के मोह़ताज बन कर रह गए हैं।

(सिरातुल जिनान, 3 / 247, मुलख़्ख़सन)

अह़कामे कुरआन पर अ़मल की तरग़ीब

ह़ज़रते अ़ल्लामा इस्माईल ह़क़्क़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक की किताबों का मक़्सद उन के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ अ़मल करना है, न येह कि सिर्फ़ ज़बान से तरतीब के साथ उन की तिलावत करना। इस की मिसाल येह है कि जब कोई बादशाह अपनी सल्त़नत के किसी हुक्मरान की त़रफ़ कोई ख़त़ भेजे और उस में हुक्म दे कि फ़ुलां फ़ुलां शहर में उस के लिये एक मह़ल तामीर कर दिया जाए और जब वोह ख़त़ उस हुक्मरान तक पहुंचे तो वोह उस में दिये गए हुक्म के मुत़ाबिक़ मह़ल तामीर न करे, अलबत्ता उस ख़त़ को रोज़ाना पढ़ता रहे, तो जब बादशाह वहां पहुंचेगा और मह़ल न पाएगा तो ज़ाहिर है कि वोह हुक्मरान सज़ा (Punishment) का ह़क़दार होगा क्यूंकि उस ने बादशाह का हुक्म पढ़ने के बा वुजूद उस पर अ़मल नहीं किया तो कुरआन में भी **अल्लाह** पाक ने अपने बन्दों को हुक्म दिया है कि वोह दीन के अरकान जैसे नमाज़ और रोज़ा वग़ैरा अदा करें। बन्दे फ़क़त़ कुरआने करीम की तिलावत करते

रहें और **अल्लाह** पाक के हुक्म पर अ़मल न करें तो उन का सिर्फ़ कुरआने करीम की तिलावत करते रहना ह़क़ीक़ी त़ौर पर फ़ाइदे मन्द नहीं।

(روح البیان، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۱۲۴، ۱/ ۱۵۵، ملخصاً)

तिलावते कुरआन का हुक्म और कुरआने मजीद के तक़ाज़े

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जिस त़रह़ हमें कुरआने पाक की तिलावत करने का हुक्म दिया गया और तरग़ीब के लिये अह़ादीसे मुबारका में इस के कसीर फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं, इसी त़रह़ हमें इस के अह़कामात पर अ़मल करने का भी हुक्म दिया गया है। जो कुरआने पाक में बयान कर्दा अह़कामात पर अ़मल नहीं करतीं उन के लिये अ़ज़ाबात की सख़्त वईदें भी आई हैं। हमें चाहिये कि कुरआने पाक की तिलावत के साथ साथ तर्जमए कुरआन, कन्ज़ुल ईमान और इस के साथ तफ़्सीर सिरातुल जिनान / ख़ज़ाइनुल इरफ़ान या नूरुल इरफ़ान का मुत़ालआ़ (Study) भी करें क्यूंकि कुरआने करीम में ग़ौरो फ़िक्र करना और इसे समझना आला दरजे की इबादत है। जैसा कि :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक आयत समझ कर और ग़ौरो फ़िक्र कर के पढ़ना, बिग़ैर ग़ौरो फ़िक्र किये पूरा कुरआन पढ़ने से बेहतर है।

(احیاء العلوم، کتاب التفکر، بیان مجاری الفکر، ۵/ ۱۷۰)

कुरआन पर अ़मल न करने की सज़ा

बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن से मन्क़ूल है : बाज़ अवक़ात बन्दा एक सूरत शुरूअ़ करता है तो उसे पूरी पढ़ लेने तक फ़िरिश्ते उस के लिये रह़मत की दुआ़ करते हैं। कभी बन्दा एक सूरत शुरूअ़ करता है तो उसे पूरी पढ़ लेने तक फ़िरिश्ते उस पर लानत भेजते हैं। अ़र्ज़ की गई :

येह कैसे ? फ़रमाया : जब वोह इस के ह़लाल को ह़लाल और ह़राम को ह़राम जानता है, तो फ़िरिश्ते उस के लिये रह़मत की दुआ़ करते हैं, वरना लानत भेजते हैं। (احیاء العلوم، کتاب آداب تلاوۃ القرآن، ۱/۳۶۵)

अल्लाह पाक हमें कुरआने करीम के अह़काम पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, हमें क़ब्रो ह़श्र के अ़ज़ाब से मेह़फ़ूज़ रखे, दीनो दुन्या में आ़फ़ियत और करम वाला मुआ़मला फ़रमाए, कुरआने करीम को हमारे लिये ज़रीअ़ए नजात बनाए और इस की बरकत से हमें अपनी रिज़ा अ़ता फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाह की रिज़ा के लिए तिलावत करना

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जो नेक अ़मल करें वोह **अल्लाह** पाक की रिज़ा व खुशनूदी ह़ासिल करने के लिये करें। क्यूंकि नेक अ़मल अगर लोगों को दिखाने और अपनी वाह वाह कराने के लिये किया हो तो इस का कोई फ़ाइदा नहीं। बल्कि उलटा नुक़्सान ही है कि दिखावा करने वाली को अ़ज़ाब दिया जाएगा। लिहाज़ा जब भी तिलावते कुरआने मजीद करें **अल्लाह** पाक की रिज़ा ह़ासिल करने और उस का कुर्ब पाने के लिये करें। आइए ! इस पर एक ह़िकायत सुनती हैं : चुनान्चे,

छुप कर तिलावत करने वाले बुज़ुर्ग

ह़ज़रते अबू अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते अबुल ह़सन मुह़म्मद बिन अस्लम तूसी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ अपनी नेकियां छुपाने का बे ह़द ख़याल फ़रमाते यहां तक कि एक बार फ़रमाने लगे : अगर मेरा बस चले तो मैं किरामन कातिबीन (आमाल लिखने वाले दोनों बुज़ुर्ग फ़िरिश्तों)

से भी छुप कर इबादत करूं। रावी केहते हैं : मैं बीस बरस से ज़ियादा अ़र्सा आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की सोह़बत में रहा मगर जुम्अ़तुल मुबारक के इलावा कभी आप को दो रकअ़त नफ़्ल भी पढ़ते नहीं देख सका। आप पानी का कूज़ा ले कर अपने कमरए ख़ास में तशरीफ़ ले जाते और अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर लेते थे। मैं कभी भी न जान सका कि आप कमरे में क्या करते हैं, यहां तक कि एक दिन आप का मुन्ना ज़ोर ज़ोर से रोने लगा। उस की अम्मीजान चुप करवाने की कोशिश कर रही थीं। मैं ने कहा : मुन्ना आख़िर इस क़दर क्यूं रो रहा है? बीबी साहिबा ने फ़रमाया : इस के अब्बू इस कमरे में दाख़िल हो कर तिलावते कुरआन करते हैं और रोते हैं तो येह भी उन की आवाज़ सुन कर रोने लगता है। शैख़ अबू अ़ब्दुल्लाह फ़रमाते हैं : ह़ज़रते अबुल ह़सन तूसी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه नेकियां छुपाने की इस क़दर सई फ़रमाते थे कि अपने उस कमरए ख़ास से इबादत करने के बाद बाहर निकलने से पेहले अपना मुंह धो कर आंखों में सुर्मा लगा लेते ताकि चेहरा और आंखें देख कर किसी को अन्दाज़ा न होने पाए कि येह रोए थे। (حلیۃ الاولیاء ج۹ ص۲۵۴)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अगर हम कुरआने मजीद की तिलावत करना अपना मामूल बना लेंगी तो हमारी देखा देखी में हमारे बच्चों में भी तिलावते कुरआन का शौक़ो ज़ौक़ पैदा होगा। और वोह भी बड़े हो कर कुरआने मजीद पढ़ेंगे और इस की तालीमात पर अ़मल करेंगे। इस लिए कि बच्चों की आ़दत है कि वोह बड़ों को जो काम करता देखते हैं वोह भी उसे करने लग जाते हैं। क्या ही खुश नसीबी की बात है कि

वोह हमें इबादतो रियाज़त और कुरआन की तिलावत और इस पर अ़मल करता देखें। हमारे बुज़ुर्गों की माएं इस क़दर तिलावत किया करतीं थीं कि ह़ालते ह़म्ल में भी इसे तर्क नहीं करतीं थीं, जिस का फ़ाइदा इन के पेट में मौजूद बच्चे को भी होता था। आइये ! एक ह़िकायत सुनती हैं : चुनान्चे,

मां के पेट में 15 पारे ह़िफ़्ज़ कर लिए

ह़ज़रते ख़्वाजा कुत़्बुल ह़क़्के वद्दीन बख़्तियार काकी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की उ़म्र जिस दिन चार बरस चार महीने चार दिन की हुई "**तकरीबे बिस्मिल्लाह**" मुक़र्रर हुई, लोग बुलाए गए। ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ भी तशरीफ़ फ़रमा हुवे। बिस्मिल्लाह पढ़ाना चाही मगर इल्हाम हुवा कि ठेहरो ! ह़मीदुद्दीन नागोरी आता है वोह पढ़ाएगा। इधर नागोर में क़ाज़ी ह़मीदुद्दीन साह़िब رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ को इल्हाम हुवा कि जल्द जा मेरे एक बन्दे को "बिस्मिल्लाह" पढ़ा। क़ाज़ी साह़िब फ़ौरन तशरीफ़ लाए और आप से फ़रमाया : साह़िबज़ादे पढ़िये ! بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ आप ने पढ़ा : اَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ और शुरूअ़ से ले कर पन्दरह पारे ह़िफ़्ज़ (मुंह पे) सुना दिये। ह़ज़रत क़ाज़ी साह़िब और ख़्वाजा साह़िब ने फ़रमाया : साह़िबज़ादे आगे पढ़िये ! फ़रमाया : मैं ने अपनी मां के शिकम (पेट) में इतने ही सुने थे और इसी क़दर उन (यानी अम्मी जान) को याद थे, वोह मुझे भी याद हो गए। (मल्फ़ूज़ाते आला ह़ज़रत, स. 481)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! कुरआने मजीद को समझ कर पढ़ने से दिलों को सुरूर और सुकून मिलता है। इस में ज़िक्रकर्दा ज़मीनो आस्मान, समुन्दर व दरिया, सूरज व चांद, सितारों व सय्यारों, बेह़रो बर, चरिन्दो परिन्द, नबातात व जमादात, खेत व खलयान, शजरो ह़जर,

रेगिस्तान व पहाड़, सर्दी व गर्मी और रातो दिन की तख़्लीक़ो पैदाइश में ग़ौरो फ़िक्र करने से ऐसे ऐसे इन्केशाफ़ात और राज़ व असरार मालूम होते हैं कि अक़्ले इन्सानी दंग रह जाती है, रूह़ मसरूर हो जाती है, बात़िन शादाब हो जाता है, दिल मुनव्वर हो जाता है, चेहरा रौशन हो जाता है, आंखों से आंसू जारी हो जाते हैं, **अल्लाह** वाह़िदो यकता की क़ुदरते कामिला और रह़मते आ़म्मा पर मज़ीद यक़ीन पुख़्ता हो जाता है और चन्द लम्ह़ों के लिये इन्सान अपने आप को मादूम (यानी ग़ैर मौजूद) समझ कर **अल्लाह** पाक की ज़ात ही को मौजूद समझता है। लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम कुरआने मजीद को ग़ौरो फ़िक्र और समझ कर पढ़ें । कुरआने मजीद जहां हमें हिदायत देता है, हमारी दीनी उलझनों को ह़ल करता है वहीं इस के ज़रीए़ हम अपनी ह़ाजतें भी पूरी कर सकतीं हैं। चुनान्चे,

कु़रआन से ह़ाजत पूरी होना

मुफ़्ती अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जिस मक़्सद के लिए एक मजलिस में सजदे की सब (यानी 14) आयतें पढ़ कर सजदे करे **अल्लाह** पाक उस का मक़्सद पूरा फ़रमा देगा। ख़्वाह एक एक आयत पढ़ कर इस का सजदा करता जाए या सब को पढ़ कर आख़िर में 14 सजदे कर ले। (बहारे शरीअ़त जिल्द, 1 ह़िस्सा 4 स. 738)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! कुरआने पाक को बेहतर त़रीक़े से समझने, इस के अह़कामात के बारे में जानने के लिए तफ़्सीर "**सिरात़ुल जिनान**" से रोज़ाना तर्जमा ओ तफ़्सीर सुनने या सुनाने या फिर इनफ़िरादी त़ौर पर पढ़ने की आ़दत बनाइये और सवाब का ढेरों ख़ज़ाना समेटिये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

तिलावत करने के मदनी फूल

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे तिलावत करने के चन्द मदनी फूल बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करती हूं :

पहले 2 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा कीजिये :

1. फ़रमाया : कुरआन पढ़ो क्यूंकि वोह क़ियामत के दिन अपने पढ़ने वालों के लिये शफ़ाअ़त करने वाला हो कर आएगा।

(مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرہا، باب فضل قراءۃ القرآن وسورۃ البقرۃ، ص ۳۱۴، حدیث: ۱۸۷۴)

2. फ़रमाया : मेरी उम्मत की अफ़्ज़ल इ़बादत **"तिलावते कुरआन"** है।

(شعب الایمان للبیہقی، باب فی تعظیم القرآن، فصل فی ادمان تلاوتہ، دون اللفظ تلاوۃ ۲/۳۵۴، حدیث: ۲۰۲۲)

❖ कुरआने पाक को अच्छी आवाज़ से और ठहर ठहर कर पढ़ना सुन्नत है। (इह़याउल उ़लूम, 1 / 843) ❖ मुस्तह़ब येह है कि बा वुज़ू क़िब्ले की जानिब रुख़ कर के अच्छे कपड़े पहन कर तिलावत करे। (बहारे शरीअ़त, जिल्द 1, ह़िस्सा 3, स. 550) ❖ तिलावत के शुरूअ़ में "اَعُوْذُ" पढ़ना मुस्तह़ब है और सूरत की इब्तिदा में "بِسْمِ اللّٰہ" पढ़ना सुन्नत है, वरना मुस्तह़ब है। (सिरातुल जिनान, 1 / 21) ❖ कुरआने करीम देख कर पढ़ना, ज़बानी पढ़ने से अफ़्ज़ल है। (सिरातुल जिनान, 1 / 21) ❖ कुरआने पाक देख कर तिलावत करने पर दो हज़ार नेकियां लिखी जाती हैं और ज़बानी (यानी बिग़ैर देखे) पढ़ने पर एक हज़ार। (کنزالعمال، کتاب الاذکار، قسم الاقوال، الباب فی تلاوۃالقرآن الخ، رقم: ۲۳۰۱، ۱/۲۶۰ ملخصاً) ❖ कुरआने करीम की तिलावत के वक़्त रोना मुस्तह़ब है। (सिरातुल जिनान, 5 / 526) ❖ तीन दिन से कम में कुरआने करीम ख़त्म न करे बल्कि कम अज़ कम तीन दिन या सात दिन या चालीस दिन में कुरआने करीम ख़त्म करे ताकि मआ़नी ओ मत़ालिब को

समझ कर तिलावत करे। (अ़जाइबुल कु़रआन, स. 238) ❖ तरतील के साथ इत्मीनान से और ठहर ठहर कर तिलावत करे। (अ़जाइबुल कु़रआन, स. 238) ❖ तिलावत के लिये सब से अफ़्ज़ल वक़्त साल भर में रमज़ान शरीफ़ के आख़िरी दस अय्याम और ज़ुल हि़ज्जा के इब्तिदाई दस दिन हैं।

(अ़जाइबुल कु़रआन, स. 239)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की छपी हुई दो किताबें : (1) 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त, हि़स्सा 16** और (2) 120 सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" नीज़ इस के इ़लावा शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत के दो रसाइल "**101 मदनी फूल**" और "**163 मदनी फूल**" हदिय्यतन त़लब कीजिये और पढ़िये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान नम्बर – 3

हर मुबल्लिग़ा बयान करने से पहले कम से कम तीन बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط

اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللّٰه وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

उम्मुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदा आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْهَا से रिवायत है : आक़ा करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है : مَنْ صَلّٰى عَلَیَّ یَوْمَ الْجُمُعَةِ كَانَتْ شَفَاعَةٌ لَّهٗ عِنْدِیْ یَوْمَ الْقِیَامَةِ यानी जो शख़्स जुम्आ़ के दिन मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा तो क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त मेरे ज़िम्मए करम पर होगी ।

(کنز العمال، کتاب الاذکار، قسم الأقوال، الباب السادس فی الصلاۃ...الخ، الجزء ۱، ۱/ ۲۵۵، حدیث: ۲۲۳۶)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : **نِیَّةُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ** मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है ।

(اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر لِلطّبرانی ج ۶ ص ۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

मस्अला :-

नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा ।

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नोइ़यत के एतिबार से निय्यतों में कमी व बेशी व तब्दीली की जा सकती है।

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी। टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी। ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिये जगह कुशादा करूंगी। धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी। صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا الله، تُوْبُوْا اِلَى الله वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिये पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी। इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी। दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी। जो कुछ बयान होगा उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल और बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगी।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! रमज़ानुल मुबारक का महीना जारी ओ सारी है। इस मुबारक महीने की 17 तारीख़ को उम्मुल मोमिनीन, ज़ौजए रसूले करीम, ह़बीबए ह़बीबे ख़ुदा, ह़ज़रते सय्यिदा आ़इशा सिद्दीक़ा, आ़लिमा, मुफ़्तिया, मुफ़स्सिरा, मुह़द्दिसा, फ़क़ीहा, आ़बिदा, ज़ाहिदा, त़य्यिबा, त़ाहिरा, अ़फ़ीफ़ा ह़ज़रते सय्यिदा आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا का यौमे विसाल है। आइये ! इसी मुनासबत से आज हम आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की शानो अ़ज़मत, औसाफ़ व कमालात और सीरते त़य्यिबा के चन्द रौशन पहलूओं के बारे में सुनने की सआ़दत ह़ासिल करती हैं :

पहले आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا का मुख़्तसर तआ़रुफ़ सुनती हैं : चुनान्चे,

तआरुफ़े उम्मुल मोमिनीन, सय्यिदा आइशा सिद्दीक़ा

हज़रते सय्यिदा आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا उम्मुल मोमिनीन (यानी मोमिनों की मां) हैं, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا का नाम **"आइशा"**, कुन्यत **"उम्मे अ़ब्दुल्लाह"**, वालिदा का नाम **"उम्मे रूमान"** और वालिद अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना **"अबू बक्र सिद्दीक़"** رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ हैं।

(مدارج النبوت،قسم پنجم،باب دوم،ذکر ازواج...الخ،۲/۴۶۸ملخصاً)

17 रमज़ानुल मुबारक 57 या 58 हिजरी में मदीने पाक में आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ने दुन्या से पर्दा फ़रमाया। हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की वसिय्यत के मुताबिक़ रात में लोगों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا को जन्नतुल बक़ीअ़ में दूसरी अज़्वाजे मुतह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُنَّ के पहलू में दफ़्न किया।

(شرح الزرقانی،الفصل الثالث فی ذکر ازواجہ الطاھرات...الخ،عائشۃ ام المؤمنین، ۴/۳۹۲)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बिला शुबा तमाम उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُنَّ اَجْمَعِیْن मक़ामो मर्तबे और बहुत सी ख़ुसूसिय्यात में दीगर औ़रतों से बुलन्द हैं, सब की सब आला दरजे की वलिय्यात हैं, निहायत बेहतरीन ख़ूबियों से आरास्ता, इ़ल्मो अ़मल की ह़क़ीक़ी आईना दार और उम्मत की माएं हैं मगर इन मुबारक हस्तियों में उम्मुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदा आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की ज़ाते मुक़द्दसा की है़सिय्यत एक रौशन सूरज की त़रह़ है। निगाहे मुस्त़फ़ा की बदौलत आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ज़माने की आ़लिमा, मुफ़्तिया, मुहद्दिसा और मुफ़स्सिरा कहलाईं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا वोह ख़ुश क़िस्मत ख़ातून हैं जिन्हें रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के वक़्त भी आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक सोह़बत से फ़ैज़ पाने का शरफ़ ह़ासिल हुवा। चुनान्चे,

ख़ुसूसी रफ़ाक़त व कु़र्बते मुस्तफ़ा

उम्मुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदा आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا (नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दुन्यावी ज़िन्दगी के आख़िरी लम्ह़ात की कैफ़िय्यात बयान करते हुवे) फ़रमाती हैं : (जब मिज़ाजे रसूल शिद्दते मरज़ की वज्ह से तक्लीफ़ मह़सूस कर रहा था, उस वक़्त) मेरे पास मेरे भाई ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللہُ عَنْہ आए, उन के हाथ में मिस्वाक थी। नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन की त़रफ़ देखने लगे। मैं जानती थी कि नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मिस्वाक पसन्द फ़रमाते हैं। लिहाज़ा मैं ने अ़र्ज़ की : क्या आप के लिये मिस्वाक ले लूं ? नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सरे मुबारक से "हां" का इशारा फ़रमाया, तो मैं ने ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللہُ عَنْہ से मिस्वाक ले ली, वोह नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सख़्त मह़सूस हुई। मैं ने अ़र्ज़ की : क्या मैं इसे नर्म कर दूं ? तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सर के इशारे से फ़रमाया : हां ! मैं ने मिस्वाक (चबा कर) नर्म की। नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने पानी (Water) का एक पियाला था। नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस में दस्ते अक़्दस दाख़िल करते और अपने चेहरए अन्वर पर लगा कर फ़रमाते : لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہُ، اِنَّ لِلْمَوْتِ سَکَرَاتٍ यानी **अल्लाह** पाक के इलावा कोई माबूद नहीं, बेशक मौत के लिये सख़्तियां हैं। फिर अपना दस्ते अक़्दस बुलन्द कर के अ़र्ज़ करने लगे : فِی الرَّفِیْقِ الْاَعْلٰی यानी अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की जमाअ़त में। यहां तक कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल हो गया।

(بخاری، کتاب المغازی، باب مرض النبی ووفاتہ، ۳/۱۵۷، حدیث: ۴۴۴۹ ملتقطا)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि उम्मुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदा आइशा सिद्दीक़ा, त़य्यिबा, त़ाहिरा, अ़फ़ीफ़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا का

मक़ाम बारगाहे रिसालत में किस क़दर बुलन्दो बाला है जिन्हें नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰه عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की न सिर्फ़ ज़ाहिरी ज़िन्दगी में ख़ास क़ुर्ब नसीब हुवा बल्कि विसाले ज़ाहिरी के वक़्त भी ख़ुसूसी क़ुर्बत पाने का एज़ाज़ (Honour) भी आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا ही के हिस्से में आया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! हबीबए हबीबे ख़ुदा, उम्मुल मोमिनीन, हज़रते सय्यिदा आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا ने सारी ज़िन्दगी इस एहसान व शुक्र को याद रखा और नेमत के इज़्हार के लिये अपनी इस इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत को बयान भी फ़रमाया। चुनान्चे,

उम्मुल मोमिनीन की चन्द फ़ज़ीलतें

उम्मुल मोमिनीन, हज़रते सय्यिदा आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا फ़रमाती हैं : मुझे आक़ा करीम صَلَّى اللّٰه عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात رِضْوَانُ اللّٰهِ عَلَيْهِنَّ اَجْمَعِيْن पर आठ फ़ज़ीलतें अ़ता की गई हैं। अ़र्ज़ की गई : ऐ उम्मुल मोमिनीन ! वोह आठ फ़ज़ीलतें कौन कौन सी हैं ? इरशाद फ़रमाया : (1) नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे इ़लावा कभी किसी कुंवारी औ़रत से निकाह़ नहीं फ़रमाया। (2) मेरे इ़लावा अज़्वाजे मुत़ह्हरात رِضْوَانُ اللّٰهِ عَلَيْهِنَّ اَجْمَعِيْن में से कोई भी ऐसी नहीं जिस के मां-बाप दोनों हिजरत करने वाले हों। (3) **अल्लाह** पाक ने मेरी पाक दामनी का बयान आसमान से (क़ुरआने करीम में) नाज़िल फ़रमाया। (4) (निकाह़ से पहले) ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام एक रेशमी कपड़े में मेरी सूरत ला कर बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ की : इन से निकाह़ कर लीजिये क्यूंकि येह आप की ज़ौजा हैं। (5) रसूले करीम صَلَّى اللّٰه عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर वह़्य उतरने के वक़्त आप صَلَّى اللّٰه عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे पास तशरीफ़ फ़रमा होते, मेरे इ़लावा किसी दूसरी ज़ौजए मोह़्तरमा के पास नबिय्ये करीम

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर वह्‌य का नुज़ूल नहीं हुवा । (6) नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सरे अन्वर मेरे सीने और ह़ल्क़ के दरमियान था और इसी ह़ालत में आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का विसाल हुवा । (7) आक़ा करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरी बारी के दिन विसाल फ़रमाया । (8) नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर मेरे घर में बनाई गई ।

(सीरते मुस्त़फ़ा, स. 659, 660 मुलख़्ख़सन)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! क़ुरबान जाइये ! ह़बीबए ह़बीबे खु़दा, उम्मुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदा आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ عَنْهَا की शानो अ़ज़मत पर ! यक़ीनन येह शरफ़ भी आप رَضِىَ اللهُ عَنْهَا के लिये कम न था कि आप رَضِىَ اللهُ عَنْهَا को नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ौजा और क़ियामत तक आने वाले मोमिनों की मां होने के मुक़द्दस शरफ़ से सरफ़राज़ होने की सआ़दत मिली, रब्बे करीम ने आप رَضِىَ اللهُ عَنْهَا पर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दीगर अज़्वाजे मुत़ह्हरात से ज़ियादा इन्आ़मो इकराम की बारिशें फ़रमाईं । बहर ह़ाल आप رَضِىَ اللهُ عَنْهَا की शानो अ़ज़मत का समुन्दर इतना गहरा है जिस की गहराई में उतरने वाले को हमेशा क़ीमती मोती (Pearls) ही मिला करते हैं ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ह़क़ व सच बयान करने वाली मुबारक ज़बान से आप رَضِىَ اللهُ عَنْهَا के फ़ज़ाइलो मनाक़िब को बड़े ही शानदार अन्दाज़ में बयान फ़रमाया है । आइये ! उम्मुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा, त़य्यिबा, त़ाहिरा, अ़फ़ीफ़ा رَضِىَ اللهُ عَنْهَا की शानो अ़ज़मत पर मुश्तमिल 4 अह़ादीसे मुबारका सुनिये । चुनान्चे,

शाने आइशा ब ज़बाने हबीबे किब्रिया

1. मदनी आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मोमिनीन, हज़रते सय्यिदा आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا के बारे में सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से इरशाद फ़रमाया : तुम अपना दो तिहाई दीन इस हुमैरा (यानी हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا) से हासिल कर लो।

(تفسیر کبیر، پ۳۰، القدر، تحت الآیۃ:۱۱، ۳/۲۳۲)

2. नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सय्यिदा फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا से फ़रमाया : ऐ फ़ातिमा ! क्या तुम उस से महब्बत नहीं करोगी जिस से मैं महब्बत करता हूं ? सय्यिदा फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا ने अर्ज़ की : क्यूं नहीं ! इस पर प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आइशा (رَضِیَ اللهُ عَنْهَا) से महब्बत रखो। (مسلم، کتاب فضائل الصحابۃ، باب فی فضل عائشۃ، ص۱۰۱۷، حدیث: ۲۴۴۲ ملتقطاً)

3. प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी लाडली शहज़ादी हज़रते सय्यिदा फ़ातिमा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا को मुख़ातब कर के इरशाद फ़रमाया : रब्बे काबा की क़सम ! तुम्हारे वालिद को आइशा (رَضِیَ اللهُ عَنْهَا) बहुत ज़ियादा प्यारी हैं।

(ابو داود، کتاب الادب، باب فی الانتصار، ۴/۳۵۹، حدیث:۴۸۹۸)

4. नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आइशा (رَضِیَ اللهُ عَنْهَا) की फ़ज़ीलत औरतों पर ऐसी है जैसे सरीद की फ़ज़ीलत तमाम खानों पर है।

(بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب قولہ تعالٰی: اِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ...الخ، ۲/۴۵۴، حدیث:۳۴۳۳)

हकीमुल उम्मत, हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान कर्दा आख़िरी हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : सरीद यानी रोटी, शोरबा, बोटियां एक जान (यानी मिक्स) की हुई बेहतरीन गिज़ा

है, सारी ग़िज़ाओं से अफ़्ज़ल (ग़िज़ा है) कि वोह ज़ूद हज़्म (यानी जल्द हज़्म होने वाली), निहायत ही मुक़व्वी (यानी ताक़त देने वाली), बहुत मज़ेदार, चबाने से बे नियाज़ (और) बहुत सिफ़ात की जामेअ़ (यानी कई ख़ूबियों वाली) ग़िज़ा है, ऐसे ही ह़ज़रते आइशा (رَضِیَ اللہُ عَنْہَا) सूरत, सीरत, इ़ल्म, अ़मल, फ़साह़त (यानी ख़ुश बयानी), फ़त़ानत (यानी अ़क़्लमन्दी), ज़कावत (यानी ज़ेहन की तेज़ी), अ़क़्ल (और) हुज़ूर (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की मह़बूबिय्यत वग़ैरा हज़ारहा (यानी हज़ारों) सिफ़ात (यानी ख़ूबियों) की जामेअ़ हैं । ह़क़ येह है कि आप رَضِیَ اللہُ عَنْہَا सारी औ़रतों ह़त्ता कि ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا से भी अफ़्ज़ल हैं । आप رَضِیَ اللہُ عَنْہَا बहुत अह़ादीस की जामेअ़ (यानी जम्अ़ करने वाली), उ़लूमे कुरआनिय्या (यानी कुरआने करीम के उ़लूमो फ़ुनून) की माहिर बीबी हैं ।

(मिरआतुल मनाजीह़, 8 / 501, मुलख़्ख़सन)

मुफ़्ती साह़िब رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ एक मक़ाम पर फ़रमाते हैं : जनाब (ह़ज़रते सय्यिदा) आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا के फ़ज़ाइल रेत के ज़र्रों, आसमान के तारों (Stars) की त़रह़ बे शुमार हैं । आप (رَضِیَ اللہُ عَنْہَا) रब्बे करीम का तोह़फ़ा हैं जो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अ़त़ा हुई, आप رَضِیَ اللہُ عَنْہَا की इ़स्मतो इ़फ़्फ़त की गवाही खुद रब्बे करीम ने कुरआने मजीद में सूरए नूर में दी, ह़ालांकि जनाबे मरयम (رَضِیَ اللہُ عَنْہَا) और यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام की इ़स्मत (यानी पाक दामनी) की गवाही बच्चे से दिलवाई गई, उम्मत को तयम्मुम की आसानी आप رَضِیَ اللہُ عَنْہَا के सदक़े से मिली, हुज़ूर (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का विसाल आप (رَضِیَ اللہُ عَنْہَا) के सीने पर हुवा, हुज़ूर (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की आख़िरी आराम गाह आप (رَضِیَ اللہُ عَنْہَا) का हुजरा है, आप (رَضِیَ اللہُ عَنْہَا) का लुआ़ब हुज़ूर (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के साथ विसाल के वक़्त जम्अ़ हुवा, आप (رَضِیَ اللہُ عَنْہَا) के बिस्तर में वह़्य आती थी, आप (رَضِیَ اللہُ عَنْہَا) खुद सिद्दीक़ा (यानी निहायत सच्ची ख़ातून)

हैं और सिद्दीक़ (यानी इन्तिहाई सच्चे इन्सान, यानी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) की बेटी हैं।

(मिरआतुल मनाजीह़, 8 / 502)

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه अशआ़र की सूरत में शाने आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا बयान करते हुवे लिखते हैं :

आप के दौलत कदा में दौलते दारैन है *उस ज़मीं पर फिर न क्यूं क़ुरबां हो अ़र्शे बरीं*

आप सिद्दीक़ा पिदरे सिद्दीक़ और शौहर नबी *मैका व सुसराल आला आप ख़ुद हैं बेहतरीं*

(रसाइले नईमिया, दीवाने सालिक, स. 13)

मुख़्तसर वज़ाह़त : यानी आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के आ़लीशान आस्ताने में दुन्या ओ आख़िरत की दौलत मौजूद है यानी नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आराम फ़रमा है तो फिर अ़र्शे आज़म भी उस मुक़द्दस ज़मीन पर निसार क्यूं न हो ? आप न सिर्फ़ सिद्दीक़ा यानी निहायत सच्ची ख़ातून है बल्कि सिद्दीक़ यानी निहायत सच्चे इन्सान की शहज़ादी है और आप को नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजियत का शरफ़ मिला, आप का मैका व सुसराल दोनों ही निहायत बुलन्द मरतबा हैं बल्कि आप ख़ुद भी एक बेहतरीन ख़ातून हैं।

किताब "फ़ैज़ाने आ़इशा सिद्दीक़ा" का तआ़रुफ़

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदा आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की सीरत के बारे में मज़ीद मालूमात के लिये दावते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की किताब "**फ़ैज़ाने आ़इशा सिद्दीक़ा**" का मुत़ालआ़ करना इन्तिहाई मुफ़ीद है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ इस किताब में उम्मुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदा आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا

की इल्मी शानो शौकत का बयान है, इस किताब में आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के फ़रामीन और ज़ौक़े इबादत का बयान है, इस किताब में आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की सख़ावत और इश्क़े रसूल वग़ैरा अ़ज़ीम ख़ूबियों का बयान है, इस किताब में आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की इनफ़िरादिय्यत, उमूरे ख़ानादारी, फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم पर अ़मल का बयान है, इस किताब में आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की फ़साहत, गिर्या ओ ज़ारी, तवाज़ोअ़ व इन्किसारी और बहुत से मदनी फूलों को बयान किया गया है । इस किताब के मज़ामीन 215 किताबों से लिये गए हैं, आज ही इस किताब को मक्तबतुल मदीना के स्टॉल से हदिय्यतन त़लब फ़रमा कर ख़ुद भी इस का मुत़ालआ़ फ़रमाइये, दूसरी इस्लामी बहनों को भी इस की तरग़ीब दिलाइये ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदा आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا का अन्दाज़े सख़ावत व ईसार

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मोमिनीन, सय्यिदा आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا सख़ावत व ईसार के मदनी जज़्बे से भी माला माल थीं, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की सख़ावत व ईसार का येह आ़लम था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا अपनी ज़रूरिय्यात की चीज़ें भी राहे ख़ुदा में ख़ैरात कर दिया करतीं और अपने लिये कुछ भी बचा कर न रखती थीं । आइये ! उम्मुल मोमिनीन, सय्यिदा आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की सख़ावत व ईसार पर मुश्तमिल एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ सुनिये और राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का जज़्बा अपने अन्दर बेदार कीजिये । चुनान्चे,

एक लाख दिरहम ख़ैरात कर दिये !

हज़रते सय्यिदा उम्मे दुर्रा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं : मैं हज़रते

सय्यिदा आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ عَنۡہَا के पास मौजूद थी, उस वक़्त एक लाख दिरहम कहीं से आप رَضِیَ اللہُ عَنۡہَا के पास आए, आप رَضِیَ اللہُ عَنۡہَا ने उसी वक़्त उन सब दिरहमों को लोगों में तक़्सीम कर दिया और एक दिरहम भी घर में बाक़ी नहीं छोड़ा। उस दिन मैं और वोह रोज़े से थीं। मैं ने अ़र्ज़ की : आप ने सब दिरहमों को तक़्सीम कर दिया और एक दिरहम भी बाक़ी नहीं रखा कि गोश्त ख़रीद कर रोज़ा इफ़्तार कर लेतीं ? इरशाद फ़रमाया : तुम ने अगर मुझ से पहले कहा होता तो मैं एक दिरहम का गोश्त मंगवा लेती। (شرح زرقانی علی المواہب، حضرت عائشۃ ام المؤمنین، ۴/۳۸۹-۳۹۲)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ह़बीबए ह़बीबे ख़ुदा, उम्मुल मोमिनीन, सय्यिदा आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ عَنۡہَا का शुमार **अल्लाह** पाक की उन मुक़र्रब तरीन वलिय्यात में होता है जिन की सारी ज़िन्दगी इ़बादतो रियाज़त में गुज़री। اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ जिस त़रह़ रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पांचों नमाज़ों के इ़लावा नमाज़े इश्राक़, नमाज़े चाश्त, तहिय्यतुल वुज़ू, सलातुल अव्वाबीन वग़ैरा नवाफ़िल अदा फ़रमाते थे, रातों को उठ उठ कर नमाज़ें अदा फ़रमाते थे, तमाम उ़म्र नमाज़े तहज्जुद के पाबन्द रहे, इसी त़रह़ उम्मुल मोमिनीन, सय्यिदा आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ عَنۡہَا भी घर के काम काज और प्यारे नबी صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत गुज़ारी के साथ साथ पाबन्दी के साथ नमाज़े तहज्जुद और नमाज़े चाश्त की अदाएगी का भी एहतेमाम फ़रमाया करती थीं। चुनान्चे,

नमाज़े तहज्जुद की पाबन्दी

दावते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की किताब "**सीरते मुस्त़फ़ा**" के सफ़ह़ा नम्बर 660 पर लिखा है : इ़बादत में भी आप رَضِیَ اللہُ عَنۡہَا का रुत्बा बहुत ही बुलन्द है। आप رَضِیَ اللہُ عَنۡہَا के भतीजे,

हज़रते सय्यिदुना इमाम क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ عَنْھُم का बयान है : हज़रते सय्यिदा आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ عَنْھَا रोज़ाना पाबन्दी के साथ नमाज़े तहज्जुद पढ़ती थीं और अक्सर रोज़े से रहा करती थीं । (सीरते मुस्त़फ़ा, स. 660, मुलख़्ख़सन)

नमाज़े चाश्त से महब्बत

आप رَضِیَ اللہُ عَنْھَا नमाज़े चाश्त की आठ रक्अ़तें पढ़ती थीं फिर फ़रमातीं : अगर मेरे मां–बाप उठा भी दिये जाएं तब भी मैं येह रक्अ़तें न छोडूं । (مؤطا امام مالک، کتاب قصر الصلاۃ فی السفر، باب صلاۃ الضحی، ص ۱۵۳، حدیث: ۳۶۲)

ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ बयान कर्दा दूसरी ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : यानी अगर इश्राक़ के वक़्त मुझे ख़बर मिले कि मेरे वालिदैन ज़िन्दा हो कर आ गए हैं, तो मैं उन की मुलाक़ात के लिये येह नफ़्ल न छोडूं बल्कि पहले येह नफ़्ल पढ़ूं फिर उन की क़दम बोसी करूं (यानी उन के क़दम चूमूं) ।

(मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 299)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

سُبْحٰنَ اللہ ! उम्मुल मोमिनीन, सय्यिदा आइशा सिद्दीक़ा, आबिदा, ज़ाहिदा رَضِیَ اللہُ عَنْھَا का नफ़्ल इबादात का जज़्बा मरह़बा ! ज़रा ग़ौर फ़रमाइये ! जिन की शान कुरआने करीम में बयान हुई, जिन के फ़ज़ाइलो कमालात को अह़ादीसे मुबारका में बयान किया गया, जो अपने वक़्त की आ़लिमा, मुफ़्तिया, फ़क़ीहा, मोहद्दिसा और मुफ़स्सिरा कहलाईं, बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن ने जिन की शानो अ़ज़मत के डंके बजाए, फ़राइज़ तो फ़राइज़, तहज्जुद और चाश्त के नवाफ़िल को छोड़ना भी उन्हें गवारा न था मगर आज ह़ालत येह है कि नफ़्ल नमाज़ तो दूर की बात है, हम से तो फ़र्ज़ नमाज़ें भी अदा नहीं की जातीं ।

आह ! हमें क्या हो गया है ? हम क्यूं इ़बादात से जी चुराने लगी हैं ? क्यूं रब्बे करीम और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अह़कामात पर अ़मल करने में सुस्ती का शिकार हैं ? क्यूं नफ़्ल इ़बादात का जज़्बा ख़त्म होता जा रहा है ? क्यूं रोज़ों के मुआ़मले में ह़ीले बहानों से काम लेती हैं ? आख़िर क्यूं हम **अल्लाह** पाक की ख़ुफ़्या तदबीर से नहीं डरतीं ? क्या हमें मग़्फ़िरत का परवाना मिल चुका है ? क्या हमारा आमाल नामा नेकियों (Virtues) से भरपूर है ? क्या हमें नेकियों की ह़ाजत नहीं रही ? क्या हमें इस बात का मुकम्मल यक़ीन हो चुका है कि हम दुन्या से ईमान सलामत ले कर जाएंगी ? क्या हम नज़्अ़ की सख़्तियों को बरदाश्त कर पाएंगी ? क्या शरीअ़त की ना फ़रमानी कर के अन्धेरी क़ब्र में आराम पा सकेंगी ? क्या हम क़ब्र व मेह़शर के सुवालात में काम्याबी से हम किनार हो पाएंगी ?

यक़ीनन ! हम में से किसी को भी येह मालूम नहीं ! लिहाज़ा इस मुख़्तसर सी ज़िन्दगी को ग़नीमत जानते हुवे इस की क़द्र करनी चाहिये, ख़ुश फ़ेहमी के जाल से निकल कर फ़राइज़ो वाजिबात की पाबन्दी के साथ साथ नफ़्ल इ़बादात की अदाएगी भी करनी चाहिये । अपने आप को फ़राइज़ो वाजिबात और नफ़्ल इ़बादात का आ़दी बनाने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के अ़त़ाकर्दा **“63 नेक आमाल”** पर अ़मल करते हुवे रोज़ाना मुह़ासबा करना इन्तिहाई मुफ़ीद अ़मल है । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! इस के मुत़ाबिक़ अ़मल करने की बरकत से हम न सिर्फ़ फ़राइज़ो वाजिबात बल्कि कई सुन्नतों और मुस्तह़बात पर भी आसानी से अ़मल कर सकती हैं ।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बिलाशुबा नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को रब्बे करीम ने बे शुमार इख़्तियारात अ़ता फ़रमा कर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मालिको मुख़्तार बनाया है। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चाहते तो इन्तेहाई शाहाना ज़िन्दगी गुज़ार सकते थे और अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰه عَنْهُنَّ اَجْمَعِيْن को दुन्या की तमाम राह़तें और आसाइशें फ़राहम कर सकते थे, लेकिन आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सारी ज़िन्दगी सादगी, फ़क़्र और तवक्कुल व क़नाअ़त को अपनाए रखा, तो फिर येह कैसे मुमकिन है कि आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सोह़बते बा बरकत से फ़ैज़याब होने वालों और वालियों में इन ख़ूबियों का फ़ैज़ान जारी न हो, اَلْحَمْدُلِلّٰه अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰه عَنْهُنَّ बिल ख़ुसूस उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا का शुमार भी उन शख़्सिय्यात में होता है, जिन्हें रब्बे करीम ने अपने मह़बूबे अ़ज़ीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े में तवक्कुल व क़नाअ़त की नेमत से सरफ़राज़ फ़रमाया था। आइए ! आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا के तवक्कुल व क़नाअ़त की एक बेहतरीन झलक मुलाह़ज़ा फ़रमाइए, चुनान्चे,

सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا का मक़ामे तवक्कुल

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे लिए दुआ़ फ़रमाइए कि **अल्लाह** पाक जन्नत में मुझे आप की अज़्वाजे मुत़ह्हरात में से रखे। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम इस रुतबे की तमन्ना रखती हो तो तुम्हें चाहिए कि कल के लिए खाना बचा कर न रखो और जब तक किसी कपड़े (Cloth)

में पैवन्द लग सकता है तब तक उसे बेकार न समझो । उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہ عَنْھَا फ़क्र को मालदारी पर तरजीह़ देने की इस नसीह़त पर इतनी अ़मल पैरा रहीं कि (ज़िन्दगी भर) कभी आज का खाना कल के लिए बचा कर न रखा ।

(مدارج النبوت،قسم پنجم،باب دوم،ذکر ازواج مطہرات...الخ، ۲/۴۷۲-۴۷۳)

क्यूं न हो रुतबा तुम्हारा अहले ईमां में बड़ा

सब तो हैं मोमिन मगर हैं आप उम्मुल मोमिनीन

(रसाइले नईमिया, दीवाने सालिक, स. 31)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुना आप ने ! हमारी प्यारी अम्मीजान ह़ज़रते सय्यिदा आ़इशा सिद्दीक़ा, त़य्यिबा, त़ाहिरा, अ़फ़ीफ़ा رَضِیَ اللہُ عَنْھَا इत़ाअ़ते रसूल, फ़क्रो फ़ाक़ा, ज़ोहदो क़नाअ़त और तवक्कुल के किस क़दर बुलन्द दरजे पर फ़ाइज़ थीं । बिलाशुबा येह सब सोह़बते मुस्त़फ़ा और तालीमाते मुस्त़फ़ा ही की बरकतें थीं कि आप सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم की इस उ़म्दा नसीह़त पर दिलो जान से अ़मल पैरा रहीं और कभी आज का खाना अगले दिन के लिये बचा कर न रखा । आज हम भी मह़ब्बते रसूल का दावा तो करती हैं मगर हमारा **अल्लाह** पाक की ज़ात पर तवक्कुल कमज़ोर पड़ता जा रहा है । शायद येही वज्ह है कि आज हमारे मुआ़शरे में हर त़रफ़ मेहंगाई का तूफ़ान बरपा है, दूध और खाने पीने की दीगर चीज़ों में मिलावट आ़म है, रमज़ान व ग़ैरे रमज़ान में चीज़ों की क़ीमतें बढ़ा कर लूट मार का बाज़ार गर्म कर के मुसलमानों को नुक़्सान पहुंचाने का सिलसिला जारी है, राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के मुआ़मले में सुस्ती का मुज़ाहरा किया जा रहा है, अल ग़रज़ आज हमारा मुआ़शरा बद क़िस्मती से तेज़ी के साथ गुनाहों की दलदल में धंसता चला जा रहा है । लेहाज़ा आ़फ़ियत इसी में है कि हम हर नेक व जाइज़ काम में

अल्लाह पाक की ज़ात पर भरोसा करने की आदत बनाएं। याद रखिए ! **अल्लाह** पाक की ज़ात पर तवक्कुल यानी भरोसा करने को आला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़र्ज़े ऐन क़रार दिया है, चुनान्चे, आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** करीम पर तवक्कुल (भरोसा) करना फ़र्ज़े ऐन है।

(फ़ज़ाइले दुआ, स. 287)

اَلْحَمْدُلِلّٰه तवक्कुल ईमान की रूह़ है। तवक्कुल बन्दे को **अल्लाह** पाक के क़रीब कर देता है। तवक्कुल मुश्किलात और परेशानियों में बन्दे को इस्तिक़ामत के साथ उन के मुक़ाबले की क़ुव्वत (Power) फ़राहम करता है। तवक्कुल मुसीबतों में इन्सान की उम्मीदें जगाने का बाइस बनता है। आइए ! अब तवक्कुल का मफ़्हूम भी सुन लेती हैं कि तवक्कुल से मुराद क्या है, चुनान्चे,

तवक्कुल का माना व मफ़्हूम

तफ़्सीर "सिरातुल जिनान" जिल्द 3 सफ़ह़ा नम्बर 520 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : तवक्कुल का येह माना नहीं कि इन्सान अपने आप को और अपनी कोशिशों को बेकार और फ़ुज़ूल समझ कर छोड़ दे जैसा कि बाज़ जाहिल कहते हैं। बल्कि तवक्कुल येह है कि इन्सान ज़ाहिरी अस्बाब को इख़्तियार करे लेकिन दिल से इन अस्बाब पर भरोसा न करे बल्कि **अल्लाह** पाक की मदद उस की ताईद और उस की ह़िमायत पर भरोसा करे।

(تفسیر کبیر، پ۴، اٰل عمران، تحت الآیۃ: ۱۵۹، ۳/۴۱۰)

इस बात की ताईद इस ह़दीसे पाक से भी होती है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : "एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं (अपनी) ऊंटनी को बांध कर तवक्कुल

करूं या उसे खुला छोड़ कर तवक्कुल करूं ? इरशाद फ़रमाया : उसे बांधो और तवक्कुल करो । (ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، ۶۰-باب، ۲۳۲/۴، حدیث: ۲۵۲۵)

आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : तवक्कुल तर्के अस्बाब का नाम नहीं बल्कि अस्बाब पर एतिमाद का तर्क (एतिमाद न करना) तवक्कुल है । (फ़तावा रज़विय्या, 24/ 379 मुलख़्ख़सन) यानी अस्बाब को छोड़ देना तवक्कुल नहीं बल्कि अस्बाब पर एतिमाद न करने और रब्बे करीम की ज़ात पर एतिमाद करने का नाम तवक्कुल है ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہا की सीरत का एक रौशन बाब येह भी है कि आप जिस त़रह़ फ़र्ज़ रोज़ों की पाबन्द थीं इसी त़रह़ आप नफ़्ल रोज़े भी कसरत से रखा करती थीं, गर्मी चाहे कितनी ही शदीद होती मगर आप गर्मी की परवा किये बिग़ैर रिज़ाए इलाही पाने के लिए इन्तिहाई गर्म मोसिम में भी न सिर्फ़ रोज़ा रख लेतीं बल्कि इस्तिक़ामत के साथ इसे पूरा भी फ़रमाती थीं ।

आइये बत़ौरे तरग़ीब एक वाक़िआ़ सुनिये और नफ़्ल रोज़े रखने की निय्यत कीजिये, चुनान्चे

गर्मी की शिद्दत में भी रोज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र رَضِیَ اللہُ عَنْہُما अ़रफ़े के दिन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा, आ़बिदा, ज़ाहिदा رَضِیَ اللہُ عَنْہا के पास तशरीफ़ लाए तो आप رَضِیَ اللہُ عَنْہا रोज़े से थीं और (गर्मी की शिद्दत के बाइस) आप رَضِیَ اللہُ عَنْہا पर पानी का छिड़काव किया जा रहा था । ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللہُ عَنْہُ ने आप رَضِیَ اللہُ عَنْہا से अ़र्ज़ की : इफ़्त़ार

कर लीजिये । आप رَضِیَ اللہُ عَنْہا ने फ़रमाया : क्या मैं इफ़्त़ार कर लूं ? ह़ालांकि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है कि "बेशक अ़रफ़े के दिन का रोज़ा एक साल पहले के गुनाहों का कफ़्फ़ारा है ।" (مسند احمد، مسند عائشہ رضی اللہ عنہا، ۹/۴۴۸، حدیث: ۲۵۰۲۴)

नाज़ बरदारी तुम्हारी क्यूं न फ़रमावे ख़ुदा

नाज़नीने ह़क़ नबी हैं तुम नबी की नाज़नीन

(रसाइले नई़मिया, दीवाने सालिक, स. 32)

मुख़्तसर वज़ाह़त : यानी रब्बे करीम, उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہا के नाज़ क्यूं न उठाए कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** करीम के लाडले हैं और आप رَضِیَ اللہُ عَنْہا नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की लाडली हैं ।

سُبْحٰنَ اللہ उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आ़इशा सिद्दीक़ा, आ़बिदा, ज़ाहिदा رَضِیَ اللہُ عَنْہا के नफ़्ल रोज़ों का मदनी जज़्बा और आप رَضِیَ اللہُ عَنْہا की इस्तिक़ामत मरह़बा ! शदीद गर्मियों का मौसिम है और गर्मी की ह़रारत के सबब आप رَضِیَ اللہُ عَنْہا पर पानी का छिड़काव किया जा रहा है मगर क़ुरबान जाइये ! इस के बा वुजूद आप رَضِیَ اللہُ عَنْہا ने रोज़े को पूरा फ़रमाया । ऐ काश ! नफ़्ल रोज़ों का येह मदनी जज़्बा हमें भी नसीब हो जाए और हम भी सर्दी व गर्मी की परवा किये बिग़ैर रिज़ाए इलाही के लिये नफ़्ल रोज़े रखने वाली बन जाएं । اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! रमज़ानुल मुबारक का महीना जारी ओ सारी है, इस के बाद शव्वालुल मुकर्रम की आमद आमद है । ख़ुश नसीब मुसलमान इस महीने में बिल ख़ुसूस एहतिमाम के साथ 6 रोज़े रखने की सआ़दत ह़ासिल करते और उस की बरकतें पाते हैं । आइये ! हम

भी ईद (यानी शव्वालुल मुकर्रम) के 6 रोज़ों के फ़ज़ाइल सुनती हैं ताकि हमें भी येह रोज़े रखने और इन की बरकतों से फ़ैज़याब होने की सआदत नसीब हो, चुनान्चे

शश ईद के रोज़ों के फ़ज़ाइल

1. इरशाद फ़रमाया : जिस ने रमज़ान के रोज़े रखे फिर छे (6) दिन शव्वाल में रखे तो गुनाहों से ऐसे निकल गया जैसे आज ही मां के पेट से पैदा हुवा है। (مجمع الزوائد، کتاب الصیام، باب فیمن صام ... الخ، ۳/۴۲۵، حدیث: ۵۱۰۲)

2. इरशाद फ़रमाया : जिस ने रमज़ान के रोज़े रखे फिर इन के बाद छे (6) शव्वाल में रखे तो ऐसा है जैसे दह्र (यानी उम्र भर) का रोज़ा रखा। (مسلم، کتاب الصیام، باب استحباب صوم ... الخ، ص ۵۹۲، حدیث: ۲۷۵۸)

3. इरशाद फ़रमाया : जिस ने ईदुल फ़ित्र के बाद (शव्वाल में) छे (6) रोज़े रख लिये तो उस ने पूरे साल के रोज़े रखे कि जो एक नेकी लाएगा उसे दस (10) मिलेंगी।

(ابن ماجہ، کتاب الصیام، باب الصیام ستۃ ایام ... الخ، ۲/۳۳۳، حدیث: ۱۷۱۵)

ख़लीले मिल्लत हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद ख़लील ख़ान क़ादिरी बरकाती رَحْمَۃُ اللہ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : येह रोज़े ईद के बाद लगातार रखे जाएं तब भी मुज़ाएक़ा नहीं और बेहतर येह है कि मुतफ़र्रिक़ (यानी नाग़ा-गेप कर के) रखे जाएं यानी हर हफ़्ते में दो (2) रोज़े और ईदुल फ़ित्र के दूसरे रोज़ एक रोज़ा रख ले और पूरे माह में रखे तो और भी मुनासिब (*Suitable*) मालूम होता है। (सुन्नी बिहिश्ती ज़ेवर, स. 347) अल ग़रज़ ईदुल फ़ित्र का दिन छोड़ कर सारे महीने में जब चाहें शश ईद के रोज़े रख सकती हैं। लिहाज़ा तमाम इस्लामी बहनें येह निय्यत कीजिये कि अगर ज़िन्दगी सलामत रही तो शश ईद के रोज़े रख कर इन की बरकतें हासिल करेंगी। اِنْ شَآءَ اللہ

सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہُ का उ़र्स मुबारक

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इसी माह यानी रमज़ानुल मुबारक की 21 तारीख़ को अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہُ का उ़र्स मुबारक मनाया जाता है।

आइये ! इन का मुख़्तसर ज़िक्रे ख़ैर भी सुनती हैं : चुनान्चे,

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہُ का नाम "अ़ली बिन अबी त़ालिब" और कुन्यत "अबुल ह़सन" भी है और "अबू तुराब" भी। आप रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा अबू त़ालिब के साहिबज़ादे हैं। आप की वालिदए मोह़तरमा का इस्मे गिरामी "फ़ातिमा बिन्ते असद बिन हाशिम" है। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہُ की ज़ाते मुबारका बचपन ही से सरकार صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नूरे नज़र थी। आप हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की परवरिश में रहे, आप की बहुत सी ख़ुसूसिय्यात (Qualities) में से एक ख़ुसूसिय्यत येह भी है कि आप सरकारे दो जहां صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचाज़ाद भाई होने के साथ साथ नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से येह ख़ुश ख़बरी भी पाने वाले हैं कि ऐ अ़ली ! तुम दुन्या ओ आख़िरत में मेरे भाई हो। (ترمذی، کتاب المناقب، باب۲۰،۵/۴۰۱، حدیث:۳۷۴۱) चुनान्चे

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब मदीनए त़य्यिबा में उख़ुव्वत यानी भाईचारा क़ाइम फ़रमाया तो ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہُ रोते हुवे बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) आप ने सारे सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के दरमियान भाईचारा क़ाइम फ़रमाया मगर मुझे किसी का भाई न बनाया, हुज़ूरे अकरम,

नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَنْتَ اَخِیْ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَۃِ (ऐ अ़ली) तुम दुन्या में भी मेरे भाई हो और आख़िरत में भी मेरे भाई हो।

(ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب علی بن ابی طالب، ۵/۴۰۱، حدیث: ۳۷۴۱)

इसी त़रह़ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : مَنْ کُنْتُ مَوْلَاہُ فَعَلِیٌّ مَوْلَاہُ जिस का मैं मौला हूं उस का अ़ली मौला (यानी आक़ा) है। (ترمذی، ۵/۳۹۸، حدیث ۳۷۳۳)

जिस किसी का मैं हूं मौला उस के मौला हैं अ़ली
है येह क़ौले मुस्त़फ़ा मौला अ़ली मुश्किल कुशा

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 521)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अपने दिलों में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ की शानो अ़ज़मत बिठाने, उन के नक़्से क़दम पर चलने और उन की सीरत का मुत़ालआ़ करने के लिये मक्तबतुल मदीना का शाएअ़ कर्दा रिसाला ''करामाते शेरे ख़ुदा'' का मुत़ालआ़ करना बेह़द मुफ़ीद रहेगा। इस रिसाले में ❀ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से सादिर होने वाली बहुत सी करामतों का तज़किरा ❀ आप के इ़ल्मी व अ़मली फ़ज़ाइल का बयान ❀ आप से मह़ब्बत करने का इन्आ़म और आप से बुग़्ज़ रखने का अन्जाम ❀ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की शानो अ़ज़मत के बारे में अहम मालूमात का बयान ❀ ग़ैरुल्लाह से मदद मांगने के मुतअ़ल्लिक़ सुवालात के जवाबात वग़ैरा बयान किये गए हैं लिहाज़ा आज ही इस रिसाले को मक्तबतुल मदीना के बस्ते से हदिय्यतन त़लब फ़रमा कर ख़ुद भी इस का मुत़ालआ़ फ़रमाइये, दूसरी इस्लामी बहनों को भी इस की तरग़ीब दिलाइये

और ह़स्बे तौफ़ीक़ ज़ियादा तादाद में ह़ासिल फ़रमा कर तक़्सीमे रसाइल की निय्यत फ़रमा लीजिये ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआदत ह़ासिल करती हूं :

ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा ।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، الفصل الثانی، ۱/۵۵، حدیث: ۱۷۵)

खाना खाने की सुन्नतें और आदाब

आइये ! मक्तबतुल मदीना की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" से खाना खाने की सुन्नतें और आदाब सुनती हैं :

❖ हर खाने से पहले अपने हाथ पहोंचों तक धो लीजिये । आक़ा करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो येह पसन्द करे कि **अल्लाह** पाक उस के घर में बरकत ज़ियादा करे तो उसे चाहिये कि जब खाना ह़ाज़िर किया जाए तो वुज़ू करे और जब उठाया जाए तब भी वुज़ू करे । (ابن ماجہ، کتاب الاطعمہ، باب الوضوء عند الطعام، حدیث۳۲۶۰، ج۴، ص۹) ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ लिखते हैं : इस (यानी खाने के वुज़ू) के माना हैं : हाथ व मुंह की सफ़ाई करना कि हाथ धोना, कुल्ली कर लेना । (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 32) ❖ खाने से पहले जूते उतार लीजिये । ❖ खाने से पहले بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم पढ़ लीजिये । ❖ अगर खाने के शुरूअ़ में بِسْمِ اللّٰہ पढ़ना भूल जाएं, तो याद आने पर

بِسْمِ اللهِ اَوَّلَهٗ وَاٰخِرَهٗ पढ़ लीजिये। ❖ खाने से पहले येह दुआ पढ़ ली जाए तो अगर खाने में ज़हर भी होगा तो اِنْ شَآءَ الله असर नहीं करेगा। दुआ येह है : بِسْمِ اللهِ الَّذِىْ لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَىْءٌ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ يَاحَىُّ يَاقَيُّوْمُ (यानी **अल्लाह** पाक के नाम से शुरूअ़ करती हूं जिस के नाम की बरकत से ज़मीनो आसमान की कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती, ऐ हमेशा से ज़िन्दा व क़ाइम रहने वाले)। (فردوس الاخبار، حدیث:۱۹۵۵، ۱/ ۲۷۴) ❖ सीधे हाथ से खाइये। ❖ अपने सामने से खाइये। ❖ खाने में किसी क़िस्म का ऐ़ब न लगाइये, मसलन येह न कहिये कि मज़ेदार नहीं, कच्चा रह गया है, फीका रह गया क्यूंकि खाने में ऐ़ब निकालना मक्रूह व ख़िलाफ़े सुन्नत है बल्कि जी चाहे तो खा लीजिये, वरना हाथ रोक लीजिये। ❖ आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : खाने में ऐ़ब निकालना अपने घर पर भी न चाहिये, मक्रूह व ख़िलाफ़े सुन्नत है। (ह़ुज़ूरे पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की) आ़दते करीमा येह थी कि पसन्द आया तो तनावुल फ़रमाया, वरना नहीं और पराए (दूसरे के) घर ऐ़ब निकालना तो (इस में) मुसलमानों की दिल शिकनी है और कमाले ह़िर्स व बे मुरव्वती पर दलील (भी) है।

तरह़ तरह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की छपी हुई दो किताबें (1) **बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16** (312 सफ़ह़ात) (2) 120 सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" नीज़ इस के इ़लावा अमीरे अहले सुन्नत के दो रिसाले "**101 मदनी फूल**" और "**163 मदनी फूल**" हदिय्यतन त़लब कीजिये और पढ़िये।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

बयान नम्बर – 4

हर मुबल्लिग़ा बयान करने से पहले कम अज़ कम तीन बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللّٰه وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : क़ियामत के दिन लोगों में सब से ज़ियादा मेरे क़रीब वोह शख़्स होगा जो सब से ज़ियादा मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता होगा।

(ترمذی، کتاب الوتر، باب ماجاء فی فضل الصلاۃ...الخ، ۲/۲۷، حدیث: ۴۸۴)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : **نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِه** मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیْر لِلطَّبَرانی ج ۶ ص ۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

मस्अला :-

नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नोइ़यत के एतिबार से निय्यतों में कमी व बेशी व तब्दीली की जा सकती है।

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी। टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ाति़र जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी। ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिये जगह कुशादा करूंगी। धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी। صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوْبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिये पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी। इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी। दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी। जो कुछ बयान होगा उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल और बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगी।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! यक़ीनन हर अ़क़्लमन्द इन्सान इस बात को अच्छी त़रह़ जानता है कि सफ़ाई इन्सान के वक़ार (Dignity) में इज़ाफ़ा करती है जब कि गन्दगी इन्सान की इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत को घटा देती है। दीने इस्लाम ने जहां इन्सान को कुफ़्रो शिर्क की गन्दगियों से पाक कर के इ़ज़्ज़त व बुलन्दी अ़त़ा की है, वहीं ज़ाहिरी पाकीज़गी और सफ़ाई की आला तालीमात के ज़रीए इन्सानिय्यत का वक़ार बुलन्द फ़रमाया है। बहर ह़ाल बदन की पाकीज़गी हो या लिबास की सुथराई या मकान और साज़ो सामान की बेहतरी, अल ग़रज़ ! हर हर चीज़ को साफ़ सुथरा रखने की

दीने इस्लाम में तालीम और तरग़ीब दी गई है। चुनान्चे, पारह 2, सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 222 में इरशादे बारी है :

اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ التَّوَّابِیْنَ وَ یُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِیْنَ ﴿۲۲۲﴾ (پ۲، البقرۃ، ۲۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक अल्लाह बहुत तौबा करने वालों से महब्बत फ़रमाता है और ख़ूब साफ़ सुथरे रहने वालों को पसन्द फ़रमाता है।

इसी त़रह़ अह़ादीसे करीमा में भी सफ़ाई की अहम्मिय्यत को वाज़ेह़ किया गया है। आइये ! इस बारे में 2 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुनिये। चुनान्चे,

सफ़ाई की अहम्मिय्यत पर अह़ादीसे मुबारका

1. **इरशाद फ़रमाया :** اَلطُّهُوْرُ نِصْفُ الْاِیْمَانِ यानी सफ़ाई आधा ईमान है।

(ترمذی، کتاب الدعوات، باب۹۲، حدیث : ۳۵۳۰، ۵/ ۳۰۸)

2. **इरशाद फ़रमाया :** बेशक इस्लाम साफ़ सुथरा (दीन) है, तो तुम भी पाकीज़गी ह़ासिल किया करो क्यूंकि जन्नत में साफ़ सुथरा रहने वाला ही दाख़िल होगा।

(کنز العمال، حرف الطاء، کتاب الطہارۃ، قسم الأقوال، الباب الاول فی فضل الطہارۃ مطلقاً، الجزء۹، ۵/ ۱۲۳، حدیث: ۲۵۹۹۶)

लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम अपने आप को हर त़रह़ की गन्दगी और मैल कुचैल से पाको साफ़ रखने की भरपूर कोशिश करें और ऐसी तदाबीर इख़्तियार करें जिन को अपनाने से हम इस मक़्सद को पाने में काम्याबी से हम कनार हो सकें। अपने आप को साफ़ सुथरा रखने और अपनी सिह़्ह़त को बर क़रार रखने के लिये बा वुज़ू रहना बिला शुबा एक बेहतरीन अ़मल है। रीढ़ की हड्डी (Back Bone) और ह़राम मग़्ज़ जिस्म के कितने हुस्सास और अहम तरीन ह़िस्से हैं इस का अन्दाज़ा हर

अ़क्लमन्द इस्लामी बहन इन्सान अच्छी त़रह़ लगा सकती है। फ़िज़्योलोजी (Physiology) की तह्क़ीक़ के मुत़ाबिक़ जब तक ह़राम मग़्ज़ (Spinal Cord) मह़फ़ूज़ रहेगा, जिस्म का आसाबी निज़ाम दुरुस्त रहेगा, अगर इस में किसी क़िस्म की ख़राबी वाक़ेअ़ हो जाए, तो इन्सान ज़िन्दगी भर के लिये मोह़ताज हो कर रह जाता है। इसी त़रह़ मायूसी और नफ़्सियाती अमराज़ भी हमारे मुआ़शरे में इन्तिहाई तेज़ी के साथ फैलते चले जा रहे हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه वुज़ू एक ऐसा बेहतरीन अ़मल है जो रीढ़ की हड्डी (Back Bone), ह़राम मग़्ज़ की ख़राबी, मायूसी, नफ़्सियाती अमराज़ और फ़ालिज जैसी कई बीमारियों से तह़फ़्फ़ुज़ फ़राहम करता है, जदीद साइन्सी तह्क़ीक़ात इस का मुंह बोलता सुबूत हैं। आइये ! जदीद साइन्सी तह्क़ीक़ात की रौशनी में आज़ा ए वुज़ू को धोने के चन्द तिब्बी फ़ाइदे सुनती हैं। चुनान्चे,

वुज़ू की ह़िक्मत के सबब क़बूले इस्लाम

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले **"वुज़ू और साइन्स"** के सफ़ह़ा नम्बर 1 और 2 पर तह़रीर फ़रमाते हैं कि एक साह़िब का बयान है : मैं ने बेल्जियम की यूनीवर्सिटी के एक ग़ैर मुस्लिम त़ालिबे इ़ल्म (Student) को इस्लाम की दावत दी। उस ने सुवाल किया : वुज़ू में क्या क्या साइन्सी ह़िक्मतें हैं ? मैं ला जवाब हो गया। उस को एक आ़लिम साह़िब के पास ले गया लेकिन उन को भी इस की मालूमात न थीं, यहां तक कि साइन्सी मालूमात रखने वाले एक शख़्स ने उस को वुज़ू की काफ़ी ख़ूबियां बताईं मगर गरदन के मस्ह़ की ह़िक्मत बताने से वोह भी आ़जिज़ रहा। वोह ग़ैर मुस्लिम नौजवान चला गया। कुछ अ़र्से के बाद आया और कहने लगा :

हमारे प्रोफ़ेसर ने दौराने लेक्चर बताया : अगर गरदन की पुश्त और अत्राफ़ पर रोज़ाना पानी के चन्द क़त्रे लगा दिये जाएं, तो रीढ़ की हड्डी और ह़राम मग़्ज़ की ख़राबी से पैदा होने वाले अमराज़ से तह़फ़्फ़ुज़ ह़ासिल हो जाता है। येह सुन कर वुज़ू में गरदन के मस्ह़ की ह़िक्मत मेरी समझ में आ गई, लिहाज़ा मैं मुसलमान होना चाहता हूं ! और वोह मुसलमान हो गया। (वुज़ू और साइन्स, स. 1-2)

जर्मनी का सेमीनार

दुन्या के मुख़्तलिफ़ ममालिक में मायूसी का मरज़ तरक़्क़ी पर है, दिमाग़ फ़ेल हो रहे हैं, पागलों की तादाद में इज़ाफ़ा होता जा रहा है, नफ़्सियाती अमराज़ के माहिरीन के यहां मरीज़ों की कसरत है। मग़रिबी जर्मनी के डिप्लोमा होल्डर एक फ़िज़्योथेरापिस्ट का कहना है : मग़रिबी जर्मनी में एक सेमीनार हुवा जिस का मौज़ूअ़ था **"मायूसी (Depression) का इलाज अद्विय्यात के इलावा और किन किन त़रीक़ों से मुमकिन है।"** एक डॉक्टर ने अपने मक़ाले में येह ह़ैरत अंगेज़ इन्किशाफ़ किया कि मैं ने मायूसी के चन्द मरीज़ों के रोज़ाना पांच बार मुंह धुलाए, कुछ अ़र्से बाद ही उन की बीमारी कम हो गई फिर ऐसे ही मरीज़ों के दूसरे ग्रूप के रोज़ाना पांच बार हाथ, मुंह और पाउं धुलवाए, तो मरज़ में बहुत कमी आ गई। येही डॉक्टर अपने मक़ाले के आख़िर में एतिराफ़ (Accept) करता है : मुसलमानों में मायूसी का मरज़ कम पाया जाता है क्यूंकि वोह दिन में कई मरतबा हाथ, मुंह और पाउं धोते (यानी वुज़ू करते) हैं। (वुज़ू और साइन्स, स. 2-3)

वुज़ू और हाई ब्लड प्रेशर

एक हार्ट स्पेशलिस्ट का बड़े एतिमाद के साथ कहना है : हाई ब्लड प्रेशर के मरीज़ को वुज़ू करवाओ फिर उस का ब्लड प्रेशर चेक करो,

लाज़िमन कम होगा । एक मुसलमान माहिरे नफ़्सियात का क़ौल है : नफ़्सियाती अमराज़ का बेहतरीन इलाज वुज़ू (Ablution) है । मग़रिबी माहिरीन, नफ़्सियाती मरीज़ों को वुज़ू की त़रह़ रोज़ाना कई बार बदन पर पानी लगवाते हैं । (वुज़ू और साइन्स, स. 3)

वुज़ू और फ़ालिज

वुज़ू में जो तरतीब वार आज़ा धोए जाते हैं, येह भी ह़िक्मत से ख़ाली नहीं । पहले हाथ पानी में डालने से जिस्म का आसाबी निज़ाम बेदार हो जाता है और फिर आहिस्ता आहिस्ता चेहरे और दिमाग़ की रगों की त़रफ़ इस के असरात पहुंचते हैं । वुज़ू में पहले हाथ धोने फिर कुल्ली करने फिर नाक में पानी डालने फिर चेहरा और दीगर आज़ा धोने की तरतीब फ़ालिज को रोकने के लिये मुफ़ीद है । अगर चेहरा धोने और मस्ह़ करने से आग़ाज़ किया जाए तो बदन कई बीमारियों में मुब्तला हो सकता है । (वुज़ू और साइन्स, स. 3)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि वुज़ू में कैसे कैसे ख़त़रनाक अमराज़ का इ़लाज और बीमारियों से शिफ़ा रखी गई है कि आज की साइन्स (Science) भी इस के तिब्बी फ़ाइदों को बयान कर रही है । लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम हमेशा बा वुज़ू रहने की आ़दत बनाएं ताकि इस की बरकत से हमें भी दुन्या और आख़िरत के बहुत से फ़ाइदे नसीब हो जाएं ।

याद रहे ! हमेशा बा वुज़ू रहना मुस्तह़ब और इस्लाम की सुन्नत है । (फ़तावा रज़विय्या, 1 / 702, मुलख़्ख़सन) ह़दीसे पाक में भी हमेशा बा वुज़ू रहने की तरग़ीब व फ़ज़ीलत मौजूद है । चुनान्चे,

हर वक़्त बा वुज़ू रहने की फ़ज़ीलत

हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से फ़रमाया : बेटा ! अगर तुम हमेशा बा वुज़ू रहने की त़ाक़त रखो, तो ऐसा ही करो ! क्यूंकि मौत का फ़िरिश्ता जिस बन्दे की रूह़ वुज़ू की ह़ालत में निकाले तो उस के लिये शहादत लिख दी जाती है।

(شُعَبُ الْاِیمان، ۳/۲۹، حدیث: ۲۷۸۳)

बाज़ आ़रिफ़ीन (رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) ने फ़रमाया : जो हमेशा बा वुज़ू रहे, **अल्लाह** पाक उसे इन फ़ज़ीलतों से मुशर्रफ़ फ़रमाए : (1) मलाइका (फ़िरिश्ते) उस की सोहबत में रग़बत करें। (2) क़लम उस की नेकियां लिखता रहे। (3) उस के आज़ा तस्बीह़ (यानी रब्बे करीम की पाकी बयान) करें। (4) जब सोए (तो) **अल्लाह** करीम कुछ फ़िरिश्ते भेजे कि जिन्नो इन्स (जिन्नों और इन्सानों) के शर (यानी बुराई) से उस की ह़िफ़ाज़त करें। (5) सकराते मौत (मौत की सख़्तियां) उस पर आसान हों। (6) जब तक बा वुज़ू हो, अमाने इलाही में रहे।

ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : बाज़ सूफ़िया (رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) फ़रमाते हैं : पाक कपड़ों में रहना, पाक बिस्तर पर सोना (और) हमेशा बा वुज़ू रहना दिल की सफ़ाई का ज़रीआ़ है। (मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 468)

दावते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की किताब **"ह़ाफ़िज़ा कैसे मज़बूत़ हो ?"** सफ़ह़ा नम्बर 95 और 96 पर है : हर वक़्त बा वुज़ू रहने की आ़दत डालिये कि बा वुज़ू रहने से जहां दीगर बे शुमार फ़वाइदो बरकात ह़ासिल होते हैं, वहीं अपने आप को दूसरों से घटिया समझने वाली बीमारी से भी नजात मिलती है।

(ह़ाफ़िज़ा कैसे मज़बूत़ हो ?, स. 95-96, मुलख़्ख़सन)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बा वुज़ू रहने की आ़दत बनाने और इस पर इस्तिक़ामत पाने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुवे नेक आमाल का रिसाला पुर करना भी है। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **"63 नेक आमाल"** नामी अपने इस रिसाले में दिन का अक्सर ह़िस्सा बा वुज़ू रहने की तरग़ीब पर मुश्तमिल एक नेक अ़मल भी शामिल फ़रमाया है। चुनान्चे, नेक अ़मल नम्बर 32 है **:** क्या आज आप दिन का अक्सर ह़िस्सा बा वुज़ू रहीं ?

अल्लाह करीम हमें रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुवे नेक आमाल का रिसाला पुर करने और दिन का अक्सर ह़िस्सा बा वुज़ू रह कर इस की बरकतें लूटने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उ़मूमन हम रोज़ाना ही नमाज़ों और दीगर इ़बादात से पहले वुज़ू करने की सआ़दत ह़ासिल करती होंगी मगर शायद हम ने कभी इस बात पर ग़ौर नहीं किया होगा कि आख़िर वुज़ू की इब्तिदा हाथ धोने से ही क्यूं की जाती है ? तो याद रखिये ! उ़मूमन हम दिन भर में इन की मदद से अपने कई काम काज करती हैं जिस के सबब हमारे हाथों में कई क़िस्म के ख़त़रनाक जरासीम (Germs) लग जाते हैं, अगर इन्हें साफ़ सुथरा न रखा जाए, तो हाथों में लगे जरासीम हमारे मेदे में जा सकते हैं। वुज़ू करते वक़्त निय्यत करने और **बिस्मिल्लाह शरीफ़** पढ़ने के बाद सब से पहले दोनों हाथों को पहुंचों तक तीन तीन बार धो लिया जाता है, इस अ़मल की बरकत से हमें सुन्नत पर अ़मल करने का

सवाब भी मिल जाता है और बहुत सी बीमारियों और जरासीम से भी हमारी हिफ़ाज़त हो जाती है। चुनान्चे,

हाथ धोने की हिक्मतें

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ अपने रिसाले **"वुज़ू और साइन्स"** के सफ़ह़ा नम्बर 10 पर तह़रीर फ़रमाते हैं : मुख़्तलिफ़ चीज़ों में हाथ डालते रहने से हाथों में मुख़्तलिफ़ कीमियाई अज्ज़ा और जरासीम लग जाते हैं, अगर सारा दिन न धोएं तो जल्द ही हाथ इन जिल्दी अमराज़ में मुब्तला हो सकते हैं, मसलन हाथों के गर्मी दाने, जिल्दी सोज़िश यानी खाल की सूजन, ऐगज़ीमा, फफूंदी (यानी वोह जरासीम जो किसी चीज़ पर काई की त़रह़ जम जाते हैं) की बीमारियां, जिल्द की रंगत तब्दील हो जाना वग़ैरा। जब हम हाथ धोते हैं तो उंगलियों के पोरों से शुआ़एं (Rays) निकल कर एक ऐसा दाइरा बनाती हैं जिस से हमारा अन्दरूनी बर्क़ी निज़ाम मुतह़र्रिक (Active) हो जाता है और हाथों में ख़ूब सूरती पैदा हो जाती है और हाथ इन चीज़ों से होने वाले इन्फ़ेक्शन (Infection) से मह़फ़ूज़ हो जाते हैं। (वुज़ू और साइन्स, स. 10, मुलख़्ख़सन)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मिस्वाक भी वुज़ू की एक ऐसी बेहतरीन सुन्नत है जो कई हिक्मतों से भरपूर है और इस में दुन्या और आख़िरत के बहुत से फ़ाइदे छुपे हैं। अहले इ़ल्म ह़ज़रात ने तो इस के कई फ़ज़ाइल व फ़वाइद कुतुब में बयान फ़रमाए ही हैं मगर जदीद साइन्स ने मिस्वाक पर तह़क़ीक़ कर के इस के बारे में ऐसे ऐसे इन्किशाफ़ात किये हैं कि सुन कर अ़क़्लें ह़ैरान रह जाएं। आइये ! हम भी मिस्वाक के दुन्यावी और उख़रवी चन्द फ़ाइदे (Benefits) सुनती हैं। चुनान्चे,

मिस्वाक की 25 बरकतें

हज़रते अ़ल्लामा सय्यिद अह़मद त़ह़त़ावी ह़नफ़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नक़्ल फ़रमाते हैं : ❖ मिस्वाक शरीफ़ को लाज़िम कर लो, इस से ग़फ़्लत न करो, इसे हमेशा करते रहो क्यूंकि इस में अल्लाह करीम की रिज़ा है। ❖ हमेशा मिस्वाक करते रहने से रोज़ी में आसानी और बरकत रहती है। ❖ दर्दे सर दूर होता है। ❖ बल्ग़म को दूर करती है। ❖ नज़र को तेज़ करती है। ❖ मेदे को दुरुस्त रखती है। ❖ जिस्म को तवानाई बख़्शती है। ❖ याद रखने की कुव्वत को तेज़ करती और अ़क़्ल को बढ़ाती है। ❖ दिल को पाक करती है। ❖ नेकियों में इज़ाफ़ा हो जाता है। ❖ फ़िरिश्ते खुश होते हैं। ❖ मिस्वाक, शैत़ान को नाराज़ कर देती है। ❖ खाना हज़्म करती है। ❖ बुढ़ापा देर में आता है। ❖ पीठ को मज़बूत़ करती है। ❖ बदन को अल्लाह पाक की इत़ाअ़त के लिये कुव्वत देती है। ❖ मौत के वक़्त आसानी और कलिमए शहादत याद दिलाती है। ❖ क़ियामत में नामए आमाल सीधे हाथ में दिलाती है। ❖ पुल सिरात़ से बिजली (Light) की त़रह तेज़ी से गुज़ार देगी। ❖ मिस्वाक करने वाले की इमदाद की जाती है। ❖ क़ब्र में आराम व सुकून पाता है। ❖ उस के लिये जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। ❖ दुन्या से पाक साफ़ हो कर रुख़्सत होता है। ❖ सब से बढ़ कर फ़ाइदा येह है कि इस में अल्लाह पाक की रिज़ा है।

(मिस्वाक शरीफ़ के फ़ज़ाइल, स. 19, حاشیۃ طحطاوی، کتاب الطھارۃ، ص۶۹ ملخصاً)

साइन्सी एतिबार से मिस्वाक के तिब्बी फ़ाइदे

अमरीका की एक मश्हूर कम्पनी की तह़क़ीक़ात के मुताबिक़ : ❖ मिस्वाक में नुक़्सान देने वाले बेक्टेरिया को ख़त्म करने

की सलाहि़य्यत किसी भी दूसरे त़रीके़ की निस्बत 20 फ़ीसद ज़ियादा है। ❖ स्वीडन के साइन्स दानों की एक तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ मिस्वाक के रेशे बेक्टेरिया को छूए बिगै़र बराहे रास्त ख़त्म कर देते हैं और दांतों को कई बीमारियों से बचाते हैं। ❖ यू.ऐस.नेश्नल लाइब्रेरी ऑफ़ मेडीसिन की शाएअ़ शुदा तह़क़ीक़ में येह बताया गया है कि अगर मिस्वाक को सही़ह़ त़ौर पर इस्तिमाल किया जाए तो येह दांतों, मुंह की सफ़ाई और मसूढ़ों की सिह़ह़त का बेहतरीन ज़रीआ़ है। ❖ एक तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ जो लोग मिस्वाक के आ़दी हैं, उन के मसूढ़ों से ख़ून (Blood) आने की शिकायात बहुत कम होती हैं। ❖ अमरीका में दांतों के बारे में होने वाली एक निशस्त में बताया गया है कि मिस्वाक में ऐसे माद्दे होते हैं जो दांतों को कमज़ोरी से बचाते हैं, वोह तमाम दवाएं जो दांतों की सफ़ाई में इस्तिमाल होती हैं, उन में सब से ज़ियादा फ़ाइदा देने वाली मिस्वाक है। ❖ मिस्वाक दांतों पर जमी हुई मैल की तेह को ख़त्म करती है। ❖ मिस्वाक दांतों को टूट फूट से बचाती है। ❖ दाइमी नज़्ला व ज़ुकाम के ऐसे मरीज़ जिन का बल्ग़म न निकलता हो, जब वोह मिस्वाक करते हैं, तो बल्ग़म निकलने लगता है और यूं मरीज़ का दिमाग़ हल्का होना शुरूअ़ हो जाता है। ❖ तजरिबे और तह़क़ीक़ से येह बात साबित हुई है कि दाइमी नज़्ले के लिये मिस्वाक बेहतरीन इलाज है।

(मिस्वाक शरीफ़ के फ़ज़ाइल, स. 7-8)

मेदे की तेज़ाबिय्यत और मुंह के छालों का इलाज

मुंह के बाज़ क़िस्म के छाले मेदे की गर्मी और तेज़ाबिय्यत की वज्ह से होते हैं, उन में एक क़िस्म ऐसी भी है जिस के जरासीम फैलते हैं। इस के लिये ताज़ा मिस्वाक मुंह में मलें और उस का बनने वाला थूक भी

ख़ूब मलें, اِنْ شَآءَ اللّٰہ मरज़ दूर हो जाएगा। बाज़ लोग शिकायत करते हैं कि दांत पीले पड़ गए हैं या दांतों से सफ़ेदी का अस्तर (Enamel) उतर गया है। ऐसे लोगों के लिये मिस्वाक के नए रेशे मुफ़ीद हैं, दांतों का पीला पन ख़त्म करने के लिये भी फ़ाइदे मन्द हैं। मिस्वाक मुंह की बदबू को दूर और मुंह के जरासीम का ख़ातिमा करती है, जिस से इन्सान बे शुमार अमराज़ से बच सकता है। (मिस्वाक शरीफ़ के फ़ज़ाइल, स. 8-9)

कैन्सर से हिफ़ाज़त

एक सर्वे के मुताबिक़ अगर दुन्या में 100 मरीज़ कैन्सर के हों तो उन में 5 फ़ीसद मुसलमान होंगे, यानी मुसलमानों में कैन्सर के कम होने की एक वज्ह मिस्वाक भी है क्यूंकि मुंह के अन्दर जो जरासीम टूथपेस्ट से बच जाते हैं, वोह मिस्वाक के बारीक रेशों की मदद से मर जाते हैं, जिस की वज्ह से मुसलमान मुंह और मेदे के कैन्सर से महफ़ूज़ रहते हैं।

गले के दर्द और गरदन की सूजन का तिब्बी इलाज

एक शख़्स के गले और गरदन में दर्द और गरदन में सूजन भी थी, गले के मरज़ की वज्ह से उस की आवाज़ भी ख़राब थी, गरदन के दर्द और सूजन के बाइस उस का सर भी चकराने लगा था जिस से उस का हाफ़िज़ा कमज़ोर (Weak) हो चुका था। येह शख़्स डॉक्टरों के ज़ेरे इलाज रहा मगर सब बे फ़ाइदा साबित हुवा। किसी ने उसे मिस्वाक करने का मश्वरा दिया, तो वोह बा क़ाइदा मिस्वाक करने लगा, इसी के साथ साथ मिस्वाक के दो टुक्ड़े कर के पानी में उबालता और उस पानी से ग़रारे करता, इस के इलावा जहां सूजन थी, वहां कुछ दवा भी लगाता रहा। येह इलाज बड़ा मुफ़ीद साबित हुवा। जब तह्क़ीक़ की गई, तो उस के थाईरोईड ग्लेन्ड मुतअस्सिर थे जिस का असर सारे जिस्म पर हुवा था,

(اَلْحَمْدُ لِلّٰہ) मिस्वाक वाले इलाज (की बरकत) से उस की येह बीमारी दूर हो गई और वोह तन्दुरुस्त हो गया।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि मिस्वाक शरीफ़ की बरकत से मिस्वाक करने वालियों को किस क़दर फ़ज़ाइलो बरकात नसीब होते हैं और उन्हें कैसे कैसे फ़ाइदे समेटने की सआदत मिलती है। तो अगर हम भी बा वुज़ू रहने और मिस्वाक करने वाली इस अज़ीम सुन्नत की आदत बना लें तो यक़ीनन येह फ़ज़ाइलो बरकात और फ़ाइदे हमें भी नसीब हो जाएंगे। اِنْ شَآءَ اللہ

आइये ! निय्यत करती हैं कि आज से दिन का अक्सर हिस्सा बा वुज़ू रहेंगी, اِنْ شَآءَ اللہ । मिस्वाक की प्यारी प्यारी सुन्नत ज़िन्दा करेंगी, اِنْ شَآءَ اللہ । दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएंगी, اِنْ شَآءَ اللہ और इन कामों पर इस्तिक़ामत पाने के लिये आशिक़ाने रसूल की दीनी तहरीक दावते इस्लामी के दीनी माहोल से वाबस्ता रह कर अपनी मसरूफ़िय्यात में से कुछ न कुछ वक़्त (Time) ज़ैली हल्क़े के 8 दीनी कामों के लिये भी निकालेंगी। اِنْ شَآءَ اللہ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हम वुज़ू के तिब्बी फ़वाइद के बारे में सुन रही थीं। याद रहे ! मुंह हमारे बदन का एक ऐसा क़ीमती हिस्सा है जिस के कई फ़वाइद हैं, मसलन मुंह के ज़रीए हम खाना, पानी, दवाएं और दीगर कई चीज़ें खाती, पीती हैं, इसी मुंह से तिलावते क़ुरआन भी करती हैं, हम्द व नात और मन्क़बत भी पढ़ती हैं, सलाम व कलाम भी इसी मुंह से करती हैं, इस के इलावा कई काम इसी मुंह के ज़रीए सर अन्जाम देती हैं। लिहाज़ा येह तमाम चीज़ें हम से इस बात का तक़ाज़ा (Demand) करती हैं कि हम अपने मुंह को साफ़ सुथरा रखें।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ दौराने वुज़ू कुल्ली और ग़रारे करने की बरकत से मुंह भी पाको साफ़ रहता है और बहुत सी बीमारियों से भी हिफ़ाज़त हो जाती है।

आइये ! कुल्ली और ग़रारे करने के चन्द तिब्बी फ़वाइद सुनती हैं : चुनान्चे,

कुल्ली और ग़रारे करने के तिब्बी फ़वाइद

हवा के ज़रीए़ बे शुमार ख़त़रनाक जरासीम और ग़िज़ा के अज्ज़ा मुंह और दांतों में थूक के साथ चिपक जाते हैं, अगर वुज़ू में मिस्वाक और कुल्लियों के ज़रीए़ मुंह की बेहतरीन सफ़ाई न की जाए तो कई ख़त़रनाक अमराज़ पैदा हो सकते हैं, मसलन (1) एइड्ज़ : इस की इब्तिदाई अ़लामात में मुंह का पकना भी शामिल है। (2) मुंह के किनारों का फटना। (3) मुंह में फफूंदी की बीमारियां और छाले वग़ैरा। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ वुज़ू करते हुवे कुल्ली करने से इन ख़त़रनाक अमराज़ से तह़फ़्फ़ुज़ ह़ासिल हो जाता है। कुल्ली से एक तो पानी का ज़ाइक़ा और बू का पता चल जाता है कि जो पानी इस्तिमाल किया जा रहा है वोह सिह़्ह़त के लिये नुक़्सान देने वाला तो नहीं ! इसी त़रह़ रोज़ा न हो तो कुल्ली के साथ ग़रग़रा करना भी सुन्नत है और पाबन्दी के साथ ग़रग़रे करने वाली कव्वे (Pharynx) बढ़ने, गले में मौजूद टॉन्सिल्ज़ के इन्फ़ेक्शन और गले के बहुत सारे अमराज़ ह़त्ता कि गले के कैन्सर से भी मह़फ़ूज़ रहती है।

नाक में पानी डालने के तिब्बी फ़वाइद

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! दौराने वुज़ू नाक में पानी डालना तिब्बी एतिबार से बहुत मुफ़ीद है और येह अ़मल कई बीमारियों से मह़फ़ूज़ रखता है क्यूंकि हम सारा दिन नाक के ज़रीए़ सांस लेती हैं जिस के सबब सांस के ज़रीए़ नाक में धुवां, गर्दो ग़ुबार और त़रह़ त़रह़ के

जरासीम चले जाते हैं। दिन भर में वुज़ू करते हुवे तक़रीबन 15 मरतबा नाक में पानी डालने से येह जरासीम और धुवें से होने वाली ख़तरनाक बीमारियों से बचाव मुमकिन हो जाता है। इसी त़रह़ फेफड़ों को ऐसी हवा की ज़रूरत होती है जो जरासीम और धुवें से पाक हो और उस में 80 फ़ीसद तरी भी हो, ऐसी हवा फ़राहम करने के लिये **अल्लाह** पाक ने हमें नाक की नेमत से नवाज़ा है। वुज़ू करते हुवे नाक में पानी डालने की बरकत से हम बे शुमार अमराज़ से मह़फ़ूज़ हो जाती हैं, दाइमी नज़्ला और नाक के ज़ख़्म के मरीज़ों के लिये वुज़ू की त़रह़ नाक में पानी चढ़ाना बेह़द मुफ़ीद है। पानी से इलाज के माहिरीन के नज़दीक नाक में पानी डालना नज़र को तेज़ करता है।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उ़मूमन बाज़ इस्लामी बहनें अपने चेहरे (Face) की ख़ूब सूरती व तरो ताज़गी बढ़ाने और कील, मुहासों से जान छुड़ाने के लिये चेहरे पर मुख़्तलिफ़ टोटके व नुस्ख़े आज़माती और महंगी महंगी क्रीमें लगाती हैं ताकि चेहरे पर मस्नूई चमक दमक आ जाए। याद रखिये ! टोटके व नुस्ख़े आज़माने और महंगी क्रीमें लगाने के बाद चेहरा वक़्ती तौ़र पर तो चमकदार हो जाता है मगर बाद में इन के सबब चेहरे पर झुर्रियां, दाने, कील, मुहासे और अ़जीबो ग़रीब दाग़ निकल आते हैं जो सख़्त तक्लीफ़ का सबब बनते हैं और इन के सबब चेहरा ख़ूब सूरत होने के बजाए बद सूरत हो जाता है। चेहरे की ख़ूब सूरती को चार चांद लगाने और इसे तरो ताज़गी बख़्शने के लिये वुज़ू एक बेहतरीन नुस्ख़ा है क्यूंकि वुज़ू में तीन बार चेहरा धोया जाता है जिस के सबब न सिर्फ़ चेहरे की रौनक़ में इज़ाफ़ा हो जाता है बल्कि इस की बरकत से दीगर बहुत से तिब्बी फ़वाइद भी ह़ासिल होते हैं। आइये ! वुज़ू में चेहरा धोने के चन्द तिब्बी फ़वाइद के बारे में सुनिये और बा वुज़ू रहने की आ़दत बना कर इस की बरकतें ह़ासिल कीजिये। चुनान्चे,

चेहरा धोने के तिब्बी फ़्वाइद

वुज़ू के दौरान चेहरे पर तीन बार हाथ फेरने से न सिर्फ़ दिमाग़ सुकून महसूस करता है बल्कि चेहरे पर चमक और जिल्द में नर्मी पैदा हो जाती है, धुवां, मिट्टी वग़ैरा साफ़ हो कर चेहरा रौनक़, कशिश और दबदबे वाला हो जाता है, आंखों के हिस्सों को तसल्ली पहुंचती है और आंखें ख़ूब सूरत हो जाती हैं। एक यूरोपियन डॉक्टर ने मक़ाला लिखा जिस का नाम था "**आई वॉटर हेल्थ** (**Eye Water Health**)" जिस में उस ने इस बात पर ज़ोर दिया है कि अपनी आंखों को दिन में बार बार धोते रहो, वरना तुम्हें ख़त़रनाक बीमारियों से वासित़ा पड़ सकता है, दिन में कई बार चेहरा धोने से मुंह पर कील, मुहासे नहीं निकलते या कम निकलते हैं। चीनी माहिरीन की तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ चेहरा धोने से पेट में छोटी आंत, सीना और बड़ी आंत वग़ैरा पर भी अच्छे असरात पड़ते हैं जिस की बरकत से आंखों की बीमारी, चक्कर आना, कमज़ोरी, दांतों की कमज़ोरी, सर दर्द, थकावट और घबराहट वग़ैरा में वाज़ेह़ कमी होती है, वुज़ू के दौरान चेहरा धोने से भंवें पानी से तर हो जाती हैं और मेडीकल उसूल के मुत़ाबिक़ भंवें तर करने से आंखों के एक ऐसे मरज़ के इमकानात (Chances) ख़त्म हो जाते हैं जो इन्सान को आंखों की रौशनी से मह़रूम कर सकता है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

सर का मस्ह़ करने और पाउं धोने के तिब्बी फ़्वाइद

सर इन्सान के तमाम आज़ा से ज़ियादा अहम्मिय्यत रखता है, तमाम आज़ा के कामों का तअ़ल्लुक़ दिमाग़ से होता है। सर और गरदन के दरमियान "**ह़ब्लुल वरीद**" होती है, जिसे शह रग भी कहा जाता है, इस का तअ़ल्लुक़ रीढ़ की हड्डी, ह़राम मग़ज़ और जिस्म के तमाम तर जोड़ों

से होता है। सर और गरदन का मस्ह़ करने से रीढ़ की हड्डी और ह़राम मग़्ज़ की ख़राबी से पैदा होने वाले अमराज़ से ह़िफ़ाज़त ह़ासिल होती है।

इसी त़रह़ इन्सानी जिस्म में सब से ज़ियादा धूल, मिट्टी से आलूदा होने वाली चीज़ पाउं हैं। इन्फ़ेक्शन सब से पहले पाउं की उंगलियों के दरमियाने ह़िस्से में शुरूअ़ होता है और शूगर के मरीज़ों को पाउं का इन्फ़ेक्शन ज़ियादा होता है। पैर के तल्वों का हथेलियों की त़रह़ तमाम आसाब, ख़ास त़ौर पर तमाम ग़ुदूद से तअ़ल्लुक़ रहता है, लिहाज़ा पाउं धोने की बरकत से भूक की कमी, तेज़ बुख़ार, लंगड़ी का दर्द जो कि चड्डे से ले कर पाउं के टख़्ने तक पहुंचता है, नक्सीर, यरक़ान, जोड़ों के दर्द, बवासीर, चक्कर, क़ब्ज़, सांस फूलने वग़ैरा से आराम रहता है।

(मुख़्तलिफ़ वेबसाइट्स से माख़ूज़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

वुज़ू करने में क्या निय्यत करें ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! वुज़ू के तिब्बी फ़वाइद सुन कर उम्मीद है कि हमारा बा वुज़ू रहने का ज़ेह्न बना होगा मगर याद रखिये ! फ़न्ने तिब यक़ीनी नहीं, साइन्सी तह़क़ीक़ात भी फ़ाइनल नहीं होतीं, बदलती रहती हैं। हां ! **अल्लाह** पाक और रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अह़कामात अटल हैं, वोह नहीं बदलेंगे। हमें सुन्नतों पर अ़मल तिब्बी फ़वाइद पाने के लिये नहीं, सिर्फ़ व सिर्फ़ रिज़ाए इलाही की ख़ातिर करना चाहिये। लिहाज़ा इस लिये वुज़ू करना कि मेरा ब्लड प्रेशर नोर्मल हो जाए या मैं ताज़ा दम हो जाऊं या डाइटिंग के लिये रोज़ा रखना ताकि भूक के फ़वाइद ह़ासिल हों, सफ़रे मदीना इस लिये करना कि आबो हवा भी तब्दील हो जाएगी, घर के काम काज से भी कुछ दिन सुकून मिलेगा या

दीनी मुत़ालआ़ (Study) इस लिये करना कि मेरा टाइम पास हो जाएगा, तो इस त़रह़ की निय्यतों से आमाल करने वालियों को सवाब नहीं मिलेगा । अगर हम अ़मल अल्लाह पाक को ख़ुश करने के लिये करेंगी, तो सवाब भी मिलेगा और ज़िमनन इस के फ़वाइद भी ह़ासिल हो जाएंगे । लिहाज़ा ज़ाहिरी और बात़िनी आदाब को मद्दे नज़र रखते हुवे वुज़ू भी अल्लाह करीम की रिज़ा ही के लिये करना चाहिये ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अगर्चे वुज़ू की बरकत से हम ज़ाहिरी पाकीज़गी का एहतिमाम करने में कामयाब हो जाती हैं मगर इस से ज़ियादा हमें अपने बात़िन यानी दिल को गुनाहों की गन्दगियों से पाको साफ़ रखने की बेह़द ज़रूरत है । लिहाज़ा जिस त़रह़ वुज़ू करने से हम ज़ाहिर को गुनाहों से पाक कर लेती हैं, इसी त़रह़ तौबा ओ इस्तिग़फ़ार के ज़रीए़ जब अपने बात़िन को साफ़ कर के रब्बे करीम की बारगाह में झुकेंगी तो और भी ज़ियादा बरकतें नसीब होंगी ।

तसव्वुफ़ का अ़ज़ीम मदनी नुस्ख़ा

दावते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की किताब **"इह़याउल उ़लूम"** जिल्द अव्वल के सफ़ह़ा नम्बर 425 पर हुज्जतुल इस्लाम, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه दिल की सफ़ाई की अहम्मिय्यत को उजागर करते हुवे फ़रमाते हैं : जब वुज़ू से फ़ारिग़ हो और नमाज़ की त़रफ़ मुतवज्जेह हो, तो दिल में येह ख़याल होना चाहिये कि मैं ने अपने ज़ाहिर को तो पाक कर लिया, लिहाज़ा अब दिल को पाक किये बिग़ैर बारगाहे इलाही में मुनाजात करने से ह़या करना चाहिये कि इसे तो अल्लाह पाक मुलाह़ज़ा फ़रमाता है और येह बात

यक़ीनी है कि दिल की पाकीज़गी तौबा से ह़ासिल होती है। दिल का बुरे अख़्लाक़ से दूर और अच्छे अख़्लाक़ से आरास्ता होना ज़रूरी है। तो जो सिर्फ़ ज़ाहिरी पाकीज़गी की ह़द तक मह़दूद रहता है, वोह उस शख़्स की त़रह़ है जिस ने बादशाह को घर में आने की दावत देने का इरादा किया और अन्दरूनी ह़िस्से को गन्दगियों से आलूदा छोड़ कर बाहिरी ह़िस्से पर चूना करने में मश्ग़ूल हो गया तो ऐसा शख़्स बादशाह के ग़ैज़ो ग़ज़ब का किस क़दर ह़क़दार है! **अल्लाह** पाक बेहतर जानता है।

(احیاء العلوم، کتاب اسرار الطہارۃ، ۱/ ۱۸۵)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

पानी में इसराफ़ से बचने के मदनी फूल

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो! आइये! पानी में इसराफ़ से बचने के बारे में चन्द मदनी फूल सुनने की सआदत ह़ासिल करती हैं:

पहले 2 **फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुनिये:

1. **फ़रमाया**: वुज़ू में बहुत सा पानी बहाने में कुछ भलाई नहीं और वोह काम शैत़ान की त़रफ़ से है। (کَنْزُ الْعُمّال، ۹/ ۱۴۴، حدیث: ۲۶۲۵۵)
2. मदनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को वुज़ू करते देखा, तो **फ़रमाया**: इसराफ़ न कर! इसराफ़ न कर!

(ابن ماجہ، کتاب الطہارۃ و سننہا، باب ما جاء فی القصد فی الوضوء۔۔۔ الخ، ۱/ ۲۵۴، حدیث: ۴۲۴)

❖ अगर वक़्फ़ के पानी से वुज़ू किया तो ज़ियादा ख़र्च करना बिल इत्तिफ़ाक़ ह़राम है। (वुज़ू का त़रीक़ा, स. 42) ❖ बाज़ लोग चुल्लू लेने में पानी ऐसा डालते हैं कि उबल (उभरा) जाता है, ह़ालांकि जो गिरा बेकार

गया, इस से एहतियात् चाहिये । (वुज़ू का त़रीक़ा, स. 42) ❖ आज तक जितना भी इसराफ़ किया है, उस से तौबा कर के आइन्दा बचने की भरपूर कोशिश कीजिये । ❖ वुज़ू करते वक़्त नल एहतियात् से खोलिये, दौराने वुज़ू मुमकिना सूरत में एक हाथ नल के दस्ते पर रखिये और ज़रूरत पूरी होने पर बार बार नल बन्द करती रहिये । ❖ मिस्वाक, कुल्ली, ग़रग़रा, नाक की सफ़ाई और हाथ, पाउं की उंगलियों का ख़िलाल और मस्ह़ करते वक़्त एक भी क़त़रा न टपकता हो यूं अच्छी त़रह़ नल बन्द करने की आ़दत बनाइये । ❖ इस्तिमाल के बाद ऐसी साबून दानी में साबून (Soap) रखिये जिस में पानी बिल्कुल न रुके। ❖ नल से क़त़रे टपकते रहते हों तो फ़ौरन इस का ह़ल निकालिये, वरना पानी ज़ाएअ़ होता रहेगा। ❖ खाना खाने, चाय या कोई मश्रूब पीने, फल काटने वग़ैरा मुआ़मलात में ख़ूब एहतियात् फ़रमाइये ताकि हर दाना, ग़िज़ाई ज़र्रा और हर क़त़रा इस्तिमाल हो जाए। (वुज़ू का त़रीक़ा, स. 45, 46, 47)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ दो किताबें (1) 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16** और (2) 120 सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" नीज़ इस के इ़लावा शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत के दो रसाइल "**101 मदनी फूल**" और "**163 मदनी फूल**" हदिय्यतन त़लब कीजिये और पढ़िये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान नम्बर – 5

हर मुबल्लिग़ा बयान करने से पहले कम अज़ कम तीन बार पढ़ ले

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ ط
اَمَّا بَعۡدُ! فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ط بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡکَ یَا رَسُوۡلَ اللّٰہ   وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصۡحٰبِکَ یَا حَبِیۡبَ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡکَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ   وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصۡحٰبِکَ یَا نُوۡرَ اللّٰہ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

आक़ा करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जो मुझ पर एक दिन में एक हज़ार मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा, वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक जन्नत में अपना मक़ाम न देख ले।

(الترغیب والترھیب، کتاب الذکر والدعاء، الترغیب فی اکثار الصلاۃ علی النبی، ۲/ ۳۲۶، حدیث: ۲۵۹۰)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(اَلمُعجمُ الکبیر لِلطّبرانی ج۶ ص۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

मस्अला :-

नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नोइ़यत के एतिबार से निय्यतों में कमी व बेशी व तब्दीली की जा सकती है।

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी। टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी। ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिये जगह कुशादा करूंगी। धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी। صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا الله، تُوبُوا اِلَى الله वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिये पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी। इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी। दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी। जो कुछ बयान होगा उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल और बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगी।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! क़ुरआनो अह़ादीस में कई मक़ामात पर इ़ल्मे दीन के फ़ज़ाइल को बयान किया गया है जब कि बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की किताबें भी इ़ल्मे दीन के फ़ज़ाइल से माला माल हैं। आइये ! हम भी इ़ल्मे दीन के फ़ज़ाइलो बरकात और दिलचस्प वाक़िआ़त व ह़िकायात सुनती हैं : चुनान्चे,

सह़ाबिये रसूल का शौक़े इ़ल्म

दावते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के रिसाले **"इ़ल्मो ह़िक्मत के 125 मदनी फूल"** के सफ़ह़ा नम्बर 11 पर लिखा है : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا फ़रमाते हैं :

रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी वफ़ात के वक़्त मैं कम उ़म्र था। अपने एक हम उ़म्र अन्सारी लड़के से मैं ने कहा : चलो ! अस्ह़ाबे रसूल رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ اَجْمَعِيْن से इ़ल्म ह़ासिल कर लें क्यूंकि अभी वोह बहुत हैं। अन्सारी ने जवाब दिया : इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه) ! तुम भी अ़जीब आदमी हो ! इतने अस्ह़ाब (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) की मौजूदगी में लोगों को भला तुम्हारी क्या ज़रूरत पड़ेगी ! इस पर मैं ने अन्सारी लड़के को छोड़ दिया और ख़ुद इ़ल्म ह़ासिल करने लग गया। कई मरतबा ऐसा हुवा कि मालूम होता फ़ुलां सह़ाबी के पास फ़ुलां ह़दीस है, तो मैं उस के घर दौड़ा जाता, अगर वोह आराम कर रहे होते, तो मैं अपनी चादर का तक्या बना कर उन के दरवाज़े पर पड़ा रहता और गर्म हवा मेरे चेहरे को जलाती रहती। जब वोह सह़ाबी बाहर आते और मुझे इस ह़ाल में पाते, तो मुतास्सिर हो कर कहते : रसूले अन्वर, बेकसों के यावर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा के बेटे ! आप क्या चाहते हैं ? मैं कहता : सुना है आप, सरवरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़ुलां ह़दीस रिवायत करते हैं, उसी की त़लब में ह़ाज़िर हुवा हूं। वोह कहते : आप ने किसी को भेज दिया होता और मैं ख़ुद चला आता। मैं जवाब देता : नहीं ! इस काम के लिये ख़ुद मुझे ही आना चाहिये था। इस के बाद येह हुवा कि जब अस्ह़ाबे रसूल رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ اَجْمَعِيْن विसाल कर गए, तो वोही अन्सारी देखता कि लोगों को मेरी कैसी ज़रूरत है और ह़सरत से कहता : इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه) ! तुम मुझ से ज़ियादा अ़क़्लमन्द थे।

(سنن دارمي، ١/١٥٠، حديث: ٥٧٠)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इल्मे दीन के फ़ज़ाइल की तो क्या ही बात है कि कुरआने करीम में कई मक़ामात पर इल्म और उ़लमा के फ़ज़ाइल बयान हुवे हैं। चुनान्चे, पारह 3, सूरए आले इमरान की आयत नम्बर 18 में इरशाद होता है :

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَۙ وَ الْمَلٰٓىٕكَةُ وَ اُولُوا الْعِلْمِ قَآىٕمًۢا بِالْقِسْطِؕ (پ۳،ال عمران:۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और ***अल्लाह*** *ने गवाही दी कि उस के सिवा कोई माबूद नहीं और फ़िरिश्तों ने और आ़लिमों ने इन्साफ़ से क़ाइम हो कर।*

आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के वालिदे मोह़तरम, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती नक़ी अ़ली ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : आयते करीमा से इल्म की तीन फ़ज़ीलतें साबित होती हैं : **पहली** येह कि **अल्लाह** पाक ने उ़लमा का ज़िक्र अपने और फ़िरिश्तों के साथ फ़रमाया है। **दूसरी** येह कि उ़लमा को भी फ़िरिश्तों की त़रह़ अपनी वह़दानिय्यत (यानी एक होने) का गवाह बनाया और उन की गवाही को भी अपने माबूदे बरह़क़ (ह़क़ीक़ी माबूद) होने की दलील क़रार दिया। **तीसरी** येह कि उन (उ़लमा) की गवाही भी फ़िरिश्तों की गवाही की त़रह़ मोतबर ठहराई।

(फ़ैज़ाने इल्म व उ़लमा, स. 9, मुलख़्ख़सन)

इसी त़रह़ कुरआने पाक में एक और मक़ाम पर अहले इल्म की शानो अ़ज़मत इस त़रह़ बयान की गई है :

يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْۙ وَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍؕ (پ۲۸،المجادلة:۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ***अल्लाह*** *तुम में से ईमान वालों के और उन के दरजात बुलन्द फ़रमाता है जिन्हें इल्म दिया गया।*

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا ने फ़रमाया : उ़लमा ए किराम, आ़म मोमिनीन से सात सौ दरजे बुलन्द होंगे, हर दो दरजों के दरमियान पांच सौ साल का फ़ासिला है।

(قُوْتُ القلوب، الفصل الاول الحادی والثلاثون، کتاب العلم وتفضیلہ، بیان آخر فی فضل العلم۔۔۔الخ، ۱/۲۴۱)

अह़ादीसे मुबारका में इल्मे दीन के फ़ज़ाइल

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! कुरआने पाक के इ़लावा कसीर अह़ादीसे करीमा में भी इ़ल्मे दीन के ढेरों फ़ज़ाइल बयान हुवे हैं। आइये ! उन में से तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुनिये और अपने दिल में इ़ल्मे दीन की अहम्मिय्यत उजागर कीजिये। चुनान्चे,

1. **इरशाद फ़रमाया :** जो इ़ल्मे (दीन) की त़लब के लिये घर से निकले तो जब तक वापस न हो, **अल्लाह** पाक की राह में है।

(ترمذی، کتاب العلم، باب فضل طلب العلم، ۴/۲۹۴، حدیث: ۲۶۵۶)

2. **इरशाद फ़रमाया :** जो कोई **अल्लाह** पाक के फ़राइज़ के तअ़ल्लुक़ से एक या दो या तीन या चार या पांच कलिमात सीखे और उसे अच्छी त़रह़ याद कर ले और फिर लोगों को सिखाए तो वोह जन्नत में दाखि़ल होगा। (الترغیب والترہیب، ۱/۵۴، حدیث: ۲۰)

3. **इरशाद फ़रमाया : अल्लाह** पाक क़ियामत के दिन बन्दों को उठाएगा फिर उ़लमा को अलग कर के उन से फ़रमाएगा : ऐ उ़लमा की जमाअ़त ! मैं तुम्हें जानता हूं, इसी लिये तुम्हें अपनी त़रफ़ से इ़ल्म अ़त़ा किया था और तुम्हें इस लिये इ़ल्म नहीं दिया था कि तुम्हें अ़ज़ाब में मुब्तला करूंगा, जाओ ! मैं ने तुम्हें बख़्श दिया।

(جامع بیان العلم وفضلہ، ص۶۹، حدیث: ۲۱۱)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान कर्दा अहादीसे करीमा से मालूम हुवा ! इल्मे दीन हासिल करना **अल्लाह** पाक की रिज़ा हासिल करने, बख़्शिश व नजात का ज़रीआ और जन्नत में दाख़िले का सबब है।

सदरुश्शरीआ, बदरुत्तरीक़ा, हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं : इल्म ऐसी चीज़ नहीं जिस की फ़ज़ीलत और ख़ूबियों के बयान करने की हाजत हो, सारी दुन्या ही जानती है कि इल्म बहुत बेहतर चीज़ है, इस का हासिल करना बुलन्दी की अलामत है, येही वोह चीज़ है जिस से इन्सानी ज़िन्दगी कामयाब और खुश गवार होती है और इसी से दुन्या ओ आख़िरत बेहतर हो जाती है। (इस इल्म से) वोह इल्म मुराद है जो क़ुरआनो हदीस से हासिल हो कि येही वोह इल्म है जिस से दुन्या ओ आख़िरत दोनों संवरती हैं, येही इल्म नजात का ज़रीआ है, इसी की क़ुरआनो हदीस में तारीफ़ें आई हैं और इसी की तालीम की तरफ़ तवज्जोह दिलाई गई है।

(बहारे शरीअत, 3 / 618, मुलख़्ख़सन)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इल्म अम्बिया ए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की मीरास है, इल्म क़ुर्बते इलाही का रास्ता है, इल्म हिदायत का रास्ता दिखाता है, इल्म गुनाहों से बचने का ज़रीआ है, इल्म ख़ौफ़े ख़ुदा को बेदार करने का अज़ीम नुस्ख़ा है, इल्म दुन्या ओ आख़िरत में इज़्ज़त पाने का सबब है, इल्म मुर्दा दिलों को ज़िन्दा करता है, इल्म ईमान की हिफ़ाज़त करता है, इल्म बे शुमार ख़ूबियों से आरास्ता है, इल्म में लज़्ज़त भी है, सुकून भी, लिहाज़ा अक़्लमन्द वोही है जो इल्मे दीन हासिल करने में मशग़ूल हो कर नजाते आख़िरत का सामान कर जाए।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अफ़्सोस ! अब हमारे दिलों से इल्मे दीन की क़द्र ख़त्म होती जा रही है, हमारे मुआशरे की अक्सरिय्यत न तो खुद इल्मे दीन सीखने की तरफ़ रागिब होती है और न ही अपनी

औलाद को इ़ल्मे दीन सिखाती है। अपने बच्चों के रौशन मुस्तक़्बिल के लिये ख़ूब दुन्यवी उ़लूमो फ़ुनून तो सिखाए जाते हैं मगर दीनी तालीम दिलवा कर अपनी और अपने बच्चों की आख़िरत बेहतर बनाने की त़रफ़ तवज्जोह नहीं की जाती। बच्चा अगर ज़हीन हो तो उसे डॉक्टर, इन्जीनियर, प्रोफ़ेसर, कम्प्यूटर प्रोग्रामर बनाने की ख़्वाहिशें अंगड़ाई लेने लगती हैं, अगर वोह ज़ेह्नी त़ौर पर कमज़ोर, शरारती या माज़ूर हो तो जान छुड़ाने के लिये उसे किसी दारुल उ़लूम, जामिआ़ या मद्रसे में दाख़िल करवा दिया जाता है जब कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن बचपन ही से अपनी औलाद को इ़ल्मे दीन सिखाते यहां तक कि बड़े बड़े बादशाह भी अपनी औलाद को इ़ल्मे दीन के ज़ेवर से आरास्ता करते क्यूंकि वोह ख़ुद इ़ल्म और उ़लमा की क़द्र करने वाले होते हैं। चुनान्चे,

इ़ल्म के क़द्रदान ख़लीफ़ा

ख़लीफ़ा हारून रशीद बहुत नेक और इ़ल्म की क़द्र जानने वाले बादशाह थे। एक बार (अपने बेटे) मामून रशीद की तालीम के लिये ह़ज़रते इमाम किसाई (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) से अ़र्ज़ की। तो आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : मैं यहां पढ़ाने न आऊंगा ! शहज़ादा मेरे ही मकान पर आ जाया करे। हारून रशीद ने अ़र्ज़ की : वोह वहीं ह़ाज़िर हो जाया करेगा मगर उस का सबक़ पहले हो जाए। फ़रमाया : येह भी न होगा बल्कि जो पहले आएगा उस का सबक़ पहले होगा। बहर ह़ाल मामून रशीद ने पढ़ना शुरूअ़ किया, इत्तेफ़ाक़ से एक रोज़ ख़लीफ़ा हारून रशीद गुज़रे, देखा कि इमाम किसाई (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) अपने पाउं धो रहे हैं और उन का बेटा मामून रशीद पानी डाल रहा है। बादशाह ग़ज़बनाक हो कर घोड़े से उतरे और मामून रशीद को कोड़ा मार कर कहा : बे अदब ! ख़ुदा ने दो हाथ किस लिये दिये हैं ? एक हाथ से पानी डाल और दूसरे हाथ से इन का पाउं धो !

(मल्फ़ूज़ाते आला ह़ज़रत, स. 144, मुलख़्ख़सन)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللهُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ख़लीफ़ा हारून रशीद न सिर्फ़ उ़लमा व फ़ुक़हा ए किराम की ताज़ीम किया करते बल्कि मुल्की मुआ़मलात और अपने दीगर दीनी व दुन्यवी मुआ़मलात में भी उ़लमा व फ़ुक़हा ए किराम की राए को तरजीह़ देते, उन की बात को ह़र्फ़े आख़िर समझते, आख़िरत की बेहतरी के लिये उन से नसीह़त त़लब करते, बसा अवक़ात नसीह़त ह़ासिल करने उ़लमा के दरवाज़े तक ख़ुद ह़ाज़िर होते, अगर उ़लमा ए किराम दरबार में तशरीफ़ ले आते तो बादशाह वाली शानो शौकत और रोबो दबदबे की परवा किये बिग़ैर उन के एह़तिराम में खड़े हो जाया करते थे। जैसा कि :

मल्फ़ूज़ाते आला ह़ज़रत में है : हारून रशीद के दरबार में जब कोई आ़लिम तशरीफ़ लाते, बादशाह उन की ताज़ीम के लिये खड़ा हो जाता। एक बार दरबारियों ने अ़र्ज़ की : या अमीरल मोमिनीन ! बादशाहत का रोब जाता है। जवाब दिया : अगर उ़लमा ए दीन की ताज़ीम से बादशाहत का रोब जाता है तो जाने ही के क़ाबिल है।

(मल्फ़ूज़ाते आला ह़ज़रत, स. 145, बित्तग़य्युर)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़रा सोचिये ! आख़िर क्या वज्ह थी जो हारून रशीद जैसे अ़ज़ीम बादशाह ने अपने बेटे को ह़ज़रते इमाम किसाई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की बारगाह में इ़ल्मे दीन सीखने के लिये भेज दिया और ख़ुद भी उ़लमा ए किराम की इस क़दर ताज़ीम कर रहे हैं ? यक़ीनन इस की वज्ह येह थी कि वोह उ़लमा ए किराम के मक़ामो मर्तबे और मुआ़शरे में इन की ज़रूरत व अहम्मिय्यत को अच्छी त़रह़ समझते थे और इस बात को अच्छी त़रह़ जानते थे कि गुल्शने इस्लाम को आबाद रखने में इन **अल्लाह** वालों का अहम किरदार है।

इसी त़रह़ अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपनी औलाद की तालीमो तरबिय्यत का निहायत

उ़म्दा इन्तिज़ाम किया कि बुलन्द मर्तबे वाले मुह़द्दिस, ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ बिन कैसान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه जो खुद इन के भी उस्ताद थे, उन्हें अपनी औलाद का उस्ताद मुक़र्रर फ़रमाया। (التحفة اللطيفة في تاريخ المدينة الشريفة، ١/٢٣٣)

हुज्जतुल इस्लाम, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के वालिदे मोह़तरम के बारे में मन्क़ूल है : वोह खुद अगर्चे पढ़े लिखे न थे लेकिन इ़ल्मे दीन की अहम्मिय्यत का एह़सास रखने वाले थे, उन की दिली ख़्वाहिश थी कि दोनों साहि़बज़ादे मुह़म्मद ग़ज़ाली और अह़मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمَا इ़ल्मे शरीअ़त और इ़ल्मे त़रीक़त के ज़ेवर से आरास्ता हों। इसी मक़्सद के लिये उन्हों ने अपने साहि़बज़ादों की तालीमो तरबिय्यत के लिये कुछ मालो अस्बाब भी जम्अ़ कर रखा था जो इन दोनों सआ़दत मन्द बेटों के इ़ल्म ह़ासिल करने के ज़माने में इन्हें बहुत काम आया। (اتحاف السادة، مقدمة الكتاب، ١/٩ ملخصاً)

इसी त़रह़ हमारे ग़ौसे पाक ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बचपन में ही अपनी वालिदए मोह़तरमा की इजाज़त से इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के लिये बग़दाद पहुंचे थे।

(بهجة الاسرار، ذكر طريقه، ص١٦٧ ملخصا)

आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه भी बचपन ही से इ़ल्मे दीन सीखते रहे यहां तक कि साढ़े चार साल की नन्ही सी उ़म्र में ही क़ुरआने करीम नाज़िरा मुकम्मल पढ़ने की नेमत से फ़ैज़याब हुवे और सिर्फ़ तेरह साल, दस माह, चार दिन की उ़म्र में तमाम राइज शुदा उ़लूम अपने वालिदे माजिद, ह़ज़रते मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से ह़ासिल कर के आ़लिमे दीन बन गये। (फ़ैज़ाने आला ह़ज़रत, स. 85, 91)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान कर्दा वाक़िआ़त से मालूम हुवा ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن अपनी औलाद को बचपन ही से इ़ल्मे दीन सिखाने में मश्ग़ूल कर दिया करते थे। हमें भी अपनी

औलाद की दीनी तरबिय्यत करते हुवे उन्हें इल्मे दीन सिखाने की कोशिश करनी चाहिये । अपनी औलाद की सुन्नतों के मुताबिक़ तरबिय्यत करना इस लिये भी बहुत ज़रूरी है ताकि उन्हें नेक बना कर उस दोज़ख़ से बचाया जा सके जिस का ईंधन आदमी और पथ्थर हैं । **अल्लाह** करीम पारह 28, सूरतुत्तह़रीम की आयत नम्बर 6 में इरशाद फ़रमाता है :

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓىٕكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَاۤ اَمَرَهُمْ وَ يَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۞

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : *ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं, उस पर सख़्ती करने वाले त़ाक़तवर फ़िरिश्ते मुक़र्रर हैं जो* ***अल्लाह*** *के हुक्म की ना फ़रमानी नहीं करते और वोही करते हैं जो उन्हें हुक्म दिया जाता है ।*

सदरुल अफ़ाज़िल, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुफ़्ती मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه **"ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** में आयते मुबारका के इस हि़स्से (يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا) के तह़त फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी इख़्तियार कर के, इबादतें बजा ला कर, गुनाहों से बाज़ रह कर और घर वालों को नेकी की हिदायत और बदी (बुराई) से मुमानअ़त (मन्अ़) कर के उन्हें इल्मो अदब सिखा कर (अपने आप को और अपने घर वालों को आग से बचाओ !)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! वालिदैन को चाहिये कि अपनी ज़िम्मेदारी का एह़सास करते हुवे अपनी औलाद की दीनी तरबिय्यत का ख़याल रखें, उन्हें नमाज़, रोज़े का पाबन्द बनाएं और फ़राइज़ो वाजिबात,

ह़लालो ह़राम और बन्दों के हुक़ूक़ वग़ैरा के शरई अह़कामात से भी उन्हें आगाह करने का इन्तेज़ाम करें। इस का बेहतरीन ज़रीआ़ येह है कि अपने बच्चों को इ़ल्मे दीन सिखाने के लिये दर्से निज़ामी (यानी आ़लिम कोर्स) करवा दिया जाए ताकि हमारे बच्चे इ़ल्मे दीन सीख कर दूसरों को सिखाएं और हमारी उख़रवी नजात का सामान बन सकें।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه इस मक़्सद की तक्मील के लिये आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दावते इस्लामी के जामिआ़तुल मदीना (यानी दारुल उ़लूम) क़ाइम हैं। जामिआ़तुल मदीना में त़लबा ओ त़ालिबात को नूरे इ़ल्म से मुनव्वर करने के साथ साथ तक़्वा ओ परहेज़गारी के अन्वार से दिलों को रौशन करने के लिये अख़्लाक़ी तरबिय्यत भी की जाती है।

जामिअ़तुल मदीना (लिल बनात) की मुदर्रिसात व त़ालिबात (यानी पढ़ाने वाली मदनिया इस्लामी बहनें और त़ालिबात) दावते इस्लामी के मुख़्तलिफ़ शोबाजात में होने वाले दीनी कामों में ह़िस्सा लेने की सआ़दत ह़ासिल करती हैं। इस्लामी बहनों की आ़लमी मजलिसे मुशावरत के तह़त इस्लामी बहनों के 8 दीनी कामों में अ़मली त़ौर पर शामिल हो कर नेकी की दावत की धूमें मचाने की कोशिश करती हैं।

(फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 589, मुल्तक़त़न)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّد

शैत़ानी वस्वसे और इन का इलाज

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने की बरकत से न सिर्फ़ **अल्लाह** पाक राज़ी होता है बल्कि रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा भी ह़ासिल होती है। लिहाज़ा आप भी हिम्मत कीजिये और अपनी औलाद को आ़शिक़ाने रसूल

की दीनी तह़रीक दावते इस्लामी के तह़्त क़ाइम जामिअ़तुल मदीना में दाख़िल करवा कर ख़ुश नसीबों की फ़ेहरिस्त में अपना और अपनी औलाद का नाम दाख़िल करवाइये। अपने बच्चों को इ़ल्मे दीन से मह़रूम कर के दुन्यवी तालीम दिलवाने का मक़्सद ज़ियादा से ज़ियादा दुन्यवी माल ह़ासिल करना होता है और बद क़िस्मती से बाज़ वालिदैन येह समझते हैं कि अगर हमारी औलाद दीनी तालीम की त़रफ़ माइल हुई, तो مَعَاذَاللہ उस का मुस्तक़्बिल ख़त़रे में पड़ जाएगा ! येह घर कैसे बसाएगा ? और किस त़रह़ उसे चलाएगा ? चन्द हज़ार रुपयों में अपनी ख़्वाहिशात को कैसे पूरा कर सकेगा ? अल ग़रज़ ! इस त़रह़ के बे शुमार शैत़ानी वस्वसे आते हैं जिस के सबब बाज़ लोग अपने बच्चों को मुस्तक़िल त़ौर पर दीनी तालीम दिलवाने से मह़रूम रह जाते हैं। ऐसे वालिदैन की ख़िदमत में अ़र्ज़ है कि एक मुसलमान जब भी कोई अच्छा काम करे, उस का मक़्सद दुन्या ह़ासिल करने के बजाए **अल्लाह** करीम की रिज़ा ह़ासिल करना हो और ख़ास कर इ़ल्मे दीन सीखने के मुआ़मले में तो ख़ालिस रिज़ाए इलाही की ही निय्यत होनी चाहिये, जहां तक मालो दौलत का तअ़ल्लुक़ है तो येह बात **अल्लाह** करीम के करम से बहुत दूर है कि वोह अपने दीन की तालीम ह़ासिल करने वाले को अकेला छोड़ दे, ऐसा कैसे हो सकता है ? ह़दीसे पाक में है : जो इ़ल्मे दीन ह़ासिल करेगा, **अल्लाह** पाक उस की मुश्किलात को आसान फ़रमा देगा और उसे वहां से रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाएगा, जहां उस का गुमान भी न होगा।

(جامع بیانِ العلم و فضلہ، باب جامع فی فضل العلم، ص ۶۶،حدیث: ۱۹۸)

आइये ! इस ज़िम्न में एक वाक़िआ़ सुनिये : चुनान्चे,

बादशाह ने खुद हाथ धुलाए

एक मरतबा ख़लीफ़ा हारून रशीद ने ह़ज़रते अबू मुआ़विया अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ की दावत की। वोह आंखों से माज़ूर थे, खाने के वक़्त जब हाथ धोने के लिये लोटा और हाथ मुंह धोने का बरतन लाया गया, तो (ख़लीफ़ा हारून रशीद ने) बरतन ख़िदमत गार को दिया, खुद लोटा ले कर ह़ज़रते अबू मुआ़विया अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ के हाथ धुलाए और कहा : क्या आप जानते हैं कि कौन आप के हाथों पर पानी डाल रहा है ? फ़रमाया : नहीं ! बादशाह ने अ़र्ज़ की : हारून। (तो ह़ज़रते अबू मुआ़विया رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने उन्हें दुआ़ देते हुवे) कहा : जैसी आप ने इ़ल्म की इ़ज़्ज़त की, ऐसी **अल्लाह** पाक आप की इ़ज़्ज़त करे। हारून रशीद ने कहा : इसी दुआ़ को ह़ासिल करने के लिये मैं ने येह सब किया था।

(मल्फ़ूज़ाते आला ह़ज़रत, स. 145, मुलख़्ख़सन)

इमामे आज़म رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ की निगाहे बसीरत

इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी अबू यूसुफ़ याक़ूब बिन इब्राहीम رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ के बारे में मन्क़ूल है कि बचपन में आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ के सर से वालिद का साया उठ गया था, वालिदा ने घर चलाने के लिये उन्हें एक धोबी के पास बिठा दिया। एक बार येह ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आज़म رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ की मजलिस में जा पहुंचे, वहां की बातें उन्हें इस क़दर पसन्द आईं कि येह धोबी को छोड़ कर वहीं बैठना शुरूअ़ हो गए। वालिदा को जब पता चलता, वोह उन्हें उठातीं और धोबी के पास ले जातीं। जब मुआ़मला बढ़ा, तो उन की वालिदा ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आज़म رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ से कहा : इस बच्चे की परवरिश करने वाला कोई नहीं, मैं ने इसे धोबी के पास बिठाया था ताकि कुछ कमा कर ला सके मगर आप ने

इसे बिगाड़ कर रख दिया है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आज़म رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : ऐ ख़ुश क़िस्मत ! इसे इल्म की दौलत ह़ासिल करने दे ! वोह दिन दूर नहीं जब येह बादामों वाला देसी घी का ह़ल्वा और उ़म्दा फ़ालूदा खाएगा। येह बात सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की वालिदा बहुत नाराज़ हुईं, कहने लगीं : (आप हम से मज़ाक़ करते हैं ! भला) हम जैसे ग़रीब लोग बादामों और देसी घी का ह़ल्वा कैसे खा सकते हैं ? बहर ह़ाल ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ इस्तेक़ामत के साथ इल्मे दीन ह़ासिल करते रहे, यहां तक कि वोह वक़्त आया जब क़ाज़ी का मन्सब इन के ह़वाले कर दिया गया। एक दफ़्आ़ ख़लीफ़ा ने इन की दावत की, दौराने दावत ख़लीफ़ा ने बादामों वाला देसी घी का ह़ल्वा और उ़म्दा फ़ालूदा इन की त़रफ़ बढ़ाते हुवे कहा : ऐ इमाम ! येह ह़ल्वा खाइये ! रोज़ रोज़ ऐसा ह़ल्वा तय्यार करवाना हमारे लिये आसान नहीं। येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ को ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आज़म رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की बात याद आई, तो वोह मुस्कुराने लगे। ख़लीफ़ा के पूछने पर फ़रमाया : मेरे उस्तादे मोह़तरम, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने सालों पहले मेरी वालिदा से फ़रमाया था कि तुम्हारा येह बेटा बादामों वाला देसी घी का ह़ल्वा और फ़ालूदा खाएगा, आज मेरे उस्तादे मोह़तरम का फ़रमान पूरा हो गया। फिर उन्हों ने अपने बचपन का सारा वाक़िआ़ ख़लीफ़ा को सुनाया, तो वोह बहुत तअ़ज्जुब करने लगे और कहा : बेशक इल्म ज़रूर फ़ाइदा देता और दीनो दुन्या में बुलन्दी दिलवाता है।

(عیون الحکایات، الحکایۃ الثانیۃ عشرۃ بعد الثلاثمائۃ، ص۲۷۸ ملخصاً)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान कर्दा हिकायत से हमें 2 फ़ाइदे मालूम हुवे : (1) औलिया ए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن, **अल्लाह** पाक की अ़ता से आइन्दा पेश आने वाले वाक़िआ़त को पहले ही जान लिया करते हैं । (2) इ़ल्मे दीन दुन्या ओ आख़िरत में काम्याबी ओ कामरानी का बाइ़स है, यहां तक कि बड़े बड़े दुन्यादारों को वोह मक़ामो मर्तबा नहीं मिलता जो इ़ल्म के शैदाइयों को ह़ासिल हो जाता है । लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि इ़ल्मे दीन ख़ुद भी सीखें और अपनी औलाद की दीनी तरबिय्यत के लिये उन्हें भी दीन का इ़ल्म सिखाएं ।

याद रखिये ! मरने के बाद नेक आमाल के इ़लावा दीगर चीज़ें कुछ काम नहीं आएंगी, येह मालो दौलत, बैंक बेलन्स, आ़लीशान बंगले, दुन्यवी मक़ामो मर्तबा सब यहीं रह जाएगा, क़ब्र में इन में से कुछ भी साथ न जाएगा । नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब इन्सान फ़ौत हो जाता है, तो उस के आमाल का सिलसिला ख़त्म हो जाता है, सिवाए तीन आमाल के : (1) सदक़ए जारिया (2) ऐसा इ़ल्म जिस से फ़ाइदा उठाया जाए और (3) नेक औलाद जो उस के लिये दुआ़ करती है ।

(مسلم، کتاب الوصیۃ، باب ما یلحق الانسان من الثواب بعد وفاتہ، ص ۸۸۶، حدیث: ۱۶۳۱)

फ़ुक़्दाने इ़ल्म (यानी इ़ल्म ना होने) का नुक़्सान

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मालूम हुवा ! सदक़ए जारिया, इ़ल्मे दीन को फैलाना और नेक औलाद ऐसे आमाल हैं कि मरने के बाद भी इन का सवाब पहुंचता रहता है, लिहाज़ा अपने बच्चों को दीनी तालीम दिलवाने के लिये कमर बस्ता हो जाइये और उन्हें जामिअ़तुल मदीना में दाख़िल करवाइये । फ़ी ज़माना बुराइयों में सब से बड़ी बुराई जेहालत है

जो मुआ़शरे की दीगर बुराइयों में सरे फ़ेहरिस्त है। घर बार का मुआ़मला हो, निकाह़ का हो या औलाद की अच्छी तरबिय्यत का, ग़रज़ ! क्या **अल्लाह** पाक के हुक़ूक़ और क्या बन्दों के हुक़ूक़ ? ज़िन्दगी के हर शोबे में जहां भी जिस अन्दाज़ से भी ख़राबियां पाई जा रही हैं, अगर हम सन्जीदगी से इस के बारे में ग़ौर करें, तो येह बात हम पर वाज़ेह़ हो जाएगी कि इस का बुन्यादी सबब इल्मे दीन से दूरी है। इल्मे दीन न होने और दुरुस्त रेहनुमाई से मह़रूमी के बाइ़स न सिर्फ़ मुआ़मलात व अख़्लाक़िय्यात बल्कि अ़क़ाइद व इ़बादात तक में त़रह़ त़रह़ की बुराइयां और ख़राबियां निहायत तेज़ी के साथ बढ़ती जा रही हैं जिन को रोकने के लिये सिर्फ़ इ़ल्मे दीन ह़ासिल कर लेना ही काफ़ी नहीं बल्कि अपने इ़ल्म पर अ़मल करना और इस के ज़रीए़ दूसरी इस्लामी बहनों की इस्लाह़ की कोशिश करना भी ज़रूरी है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने हमें अपनी और दूसरों की इस्लाह़ की कोशिश में मगन रहने का ज़ेह्न देते हुवे येह मदनी मक़्सद अ़त़ा फ़रमाया है कि **''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَ الله''**

आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की इ़ल्म दोस्ती और इ़ल्मे दीन आ़म करने की तड़प के नतीजे में आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दावते इस्लामी के तह़त मुल्क व बैरूने मुल्क में सैंकड़ों जामिआ़तुल मदीना (लिल बनीन व लिल बनात) का क़ियाम अ़मल में लाया जा चुका है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

इल्म सीखने के मदनी फूल

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइये ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे इल्म सीखने के बारे में चन्द मदनी फूल सुनने की सआ़दत ह़ासिल करती हैं।

पहले 2 **फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा कीजिये :

1 इरशाद फ़रमाया : जो इल्म की तलाश करने के लिये किसी रास्ते पर चले, **अल्लाह** पाक उस के लिये जन्नत का रास्ता आसान फ़रमा देता है।

(مسلم، کتاب الذکر والدعاء، باب فضل الاجتماع...الخ، ص۱۱۱۰، حدیث:۲۸۵۳)

2 फ़रमाया : जो इल्म की त़लब में घर से निकले, फ़िरिश्ते उस के इस अ़मल से ख़ुश हो कर उस के लिये अपने पर बिछा देते हैं।

(طبرانی کبیر، ۸/۵۵، حدیث:۷۳۵۰)

❖ इल्म ह़ासिल करना भी बेहतरीन नेकी का काम है। ❖ इल्म ह़ासिल करने के लिये सुवाल करना यक़ीनन बाइसे फ़ज़ीलत है लेकिन सुवाल करने के आदाब का लिह़ाज़ करना भी ज़रूरी है। (फ़ैज़ाने दाता अ़ली हजवेरी, स. 13) ❖ इल्म ख़ज़ाना है और सुवाल करना इस की चाबी है। (فردوس الاخبار، ۲/۸۰، حدیث:۴۰۱۱) ❖ इल्म सीखने के लिये सुवाल पूछने से शर्माना नहीं चाहिये। (आराबी के सुवालात और अ़रबी आक़ा के जवाबात, स. 8) ❖ ऐसे सुवालात करने से भी बचा जाए जिस का दुन्यावी या उख़रवी फ़ाइदा न हो। (आराबी के सुवालात और अ़रबी आक़ा के जवाबात, स. 9) ❖ इल्म में ज़ियादती तलाश से और वाक़िफ़िय्यत सुवाल से होती है, तो जिस का तुम्हें इल्म नहीं उस के बारे में जानो और जो कुछ जानते हो उस पर अ़मल करो। (جامع بیان العلم وفضلہ، ۱/۱۲۲، حدیث:۴۰۲) ❖ तह़सीले इल्म के लिये बेहतरीन वक़्त इब्तिदाई जवानी, वक़्ते सह़र और मग़रिब व इशा के दरमियान का वक़्त है।

तृरह तृरह की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ दो किताबें (1) 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त, हिस़्सा 16** और (2) 120 सफ़ह़ात की किताब ‘‘**सुन्नतें और आदाब**’’ नीज़ इस के इलावा शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत के दो रसाइल ‘‘**101 मदनी फूल**’’ और ‘‘**163 मदनी फूल**’’ हदिय्यतन त़लब कीजिये और पढ़िये।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान नम्बर – 6

हर मुबल्लिग़ा बयान करने से पहले कम अज़ कम तीन बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْن ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने राह़त निशान है : जो लोग किसी ऐसी मजलिस में बैठते हैं जिस में न तो वोह अल्लाह पाक का ज़िक्र करते हैं और न ही अपने नबी (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक पढ़ते हैं, तो (क़ियामत के दिन) वोह मजलिस उन के लिये ह़सरत का बाइ़स होगी। पस अल्लाह पाक चाहे, तो उन्हें अ़ज़ाब दे और चाहे, तो बख़्श दे। (ترمذی، کتاب الدعوات، باب فی القوم یجلسون ولا یذکرون اللہ، ۵/۲۴۷، حدیث:۳۳۹۱)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیْر لِلطَّبْرَانِی ج ۶ ص ۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

मस्अला :-

नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नोइयत के एतिबार से निय्यतों में कमी व बेशी व तब्दीली की जा सकती है।

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी। टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी। ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिये जगह कुशादा करूंगी। धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी। صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا الله، تُوْبُوْا اِلَى الله वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिये पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी। इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी। दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी। जो कुछ बयान होगा उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल और बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगी।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! 10 शव्वालुल मुकर्रम आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की विलादते मुबारक का दिन है। اَلْحَمْدُ لِله आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه वोह अ़ज़ीम हस्ती हैं जो इबादत, तक़्वा ओ परहेज़गारी, इश्क़े रसूल, आ़जिज़ी ओ इन्केसारी और इल्मो अ़मल के ह़क़ीक़ी पैकर थे। اِنْ شَآءَ الله आज के इस हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में हम बरकत व रह़मत ह़ासिल करने के लिये **आला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **के आला किरदार** की चन्द झल्कियां और ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़त सुनने की सआ़दत ह़ासिल करेंगी।

आइये ! पहले एक नसीह़त आमोज़ वाक़िआ़ सुनिये : चुनान्चे,

तकब्बुर से आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ना गवारी

ख़लीफ़ए आला ह़ज़रत, मौलाना सय्यिद अय्यूब अ़ली रज़वी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का बयान है : एक साह़िब आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा करते और आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه भी कभी कभी उन के यहां तशरीफ़ ले जाया करते थे। एक मरतबा हुज़ूर (आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) उन के यहां तशरीफ़ फ़रमा थे कि उन के मह़ल्ले का एक बेचारा ग़रीब मुसलमान टूटी हुई पुरानी चारपाई पर जो सेह़न (Courtyard) के किनारे पड़ी थी, झिजकते हुवे बैठा ही था कि साह़िबे ख़ाना ने निहायत कड़वे तेवरों (यानी ग़ुस्से वाली नज़रों) से उस की त़रफ़ देखना शुरूअ़ किया, यहां तक कि वोह नदामत (यानी शर्मिन्दगी) से सर झुकाए उठ कर चला गया। आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को साह़िबे ख़ाना के इस मग़रूराना अन्दाज़ से सख़्त तक्लीफ़ पहुंची मगर कुछ फ़रमाया नहीं। कुछ दिनों बाद वोह आप (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) के यहां आए। आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपनी चारपाई पर जगह दी, वोह बैठे ही थे कि इतने में करीम बख़्श नामी ह़ज्जाम (Barber) हुज़ूर (आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की दाढ़ी) का ख़त़ बनाने के लिये आए, वोह इस फ़िक्र में थे कि कहां बैठूं ? आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : भाई करीम बख़्श ! क्यूं खड़े हो ? मुसलमान आपस में भाई भाई हैं और उन साह़िब के बराबर में बैठने का इशारा फ़रमाया। वोह बैठ गए फिर उन साह़िब के ग़ुस्से की येह कैफ़िय्यत थी कि जैसे सांप फुंकारें मारता है, वोह फ़ौरन उठ कर चले गए फिर कभी न आए। (ह़याते आला ह़ज़रत, स. 105, मुलख़्ख़सन)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने अ़मली त़ौर पर हमें बता दिया कि कोई इस्लामी बहन चाहे कितनी ही अमीरो कबीर हो, दुन्यवी इ़ज़्ज़त व मर्तबे वाली हो या किसी आला ख़ानदान से तअ़ल्लुक़ रखती हो, उसे हरगिज़ हरगिज़ येह ह़क़ नहीं पहुंचता कि किसी इस्लामी बहन को अपने से मामूली जाने, लोगों के सामने ज़लील करे बल्कि एक मुसलमान होने की ह़ैसिय्यत से हर इस्लामी बहन के साथ अच्छा सुलूक करना, आने वाली का दिल ख़ुश करने के लिये मुस्कुरा कर मिलना, उसे इ़ज़्ज़त के साथ बिठाना और इस्लामी बहनों में बराबरी क़ाइम रखना इस्लाम की रौशन तालीमात का ह़िस्सा है मगर अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस ! आज हम इस्लामी तालीमात को छोड़ कर न जाने किस त़रफ़ चल पड़ी हैं ? और अपनी क़ौम (Nation), ज़बान (Language) और नसब (Caste) के सबब फ़ख़्र करती और ख़ुद को दूसरों से अफ़्ज़लो आला जानती हैं, ह़ालांकि **अल्लाह** पाक के नज़्दीक वोही मुसलमान ज़ियादा इ़ज़्ज़त व मर्तबे वाला है जो तक़्वा ओ परहेज़गारी में दूसरों से ज़ियादा हो। चुनान्चे, पारह 26, सूरतुल हु़जुरात की आयत नम्बर 13 में इरशाद होता है :

اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِیْمٌ خَبِیْرٌ ﴿۱۳﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : *बेशक **अल्लाह** के यहां तुम में ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला वोह है जो तुम में ज़ियादा परहेज़गार है, बेशक **अल्लाह** जानने वाला ख़बरदार है।*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हमारा मुआ़शरा इन्तेहाई तेज़ी के साथ तबाही व बरबादी की त़रफ़ बढ़ रहा है, जिसे देखो वोह अपने ख़ानदान और क़ौम को अफ़्ज़ल समझते हुवे फ़ख़्र करती और दूसरी

बिरादरी वालियों को घटिया समझने लगी है, जिस की वज्ह से आपस में नफ़रतें और दुश्मनियां जड़ पकड़ती जा रही हैं, बसा अवक़ात येह दुश्मनियां और लड़ाई, झगड़े, मार धाड़ से बढ़ कर क़त्लो ग़ारत गरी तक पहुंच जाती हैं जब कि प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! तुम्हारा रब्बे करीम एक है और तुम्हारे वालिद एक हैं । सुन लो ! किसी अ़रबी को अ़जमी (ग़ैरे अ़रबी) पर, किसी अ़जमी (ग़ैरे अ़रबी) को अ़रबी पर, किसी गोरे को काले पर और किसी काले को गोरे पर कोई फ़ज़ीलत ह़ासिल नहीं, अलबत्ता जो परहेज़गार है वोह दूसरों से अफ़्ज़ल है, बेशक **अल्लाह** पाक की बारगाह में तुम में से ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला वोह है जो तुम में ज़ियादा परहेज़गार है ।

(شعب الایمان، باب فی حفظ اللسان، فصل فی حفظ اللسان عن الفخر بالاباء، ۴/۲۸۹، حدیث: ۵۱۳۷)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का एक कारनामा येह भी है कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उम्मत की आसानी और ख़ैर ख़्वाही के जज़्बे के तह़त इ़ल्म को फैलाने के लिये निहायत उ़म्दा और ज़बरदस्त तर्जमए कुरआन **"कन्ज़ुल ईमान"** को ज़बानी लिखवा दिया, जिस को उ़लमा ए किराम ने बिल्कुल शरीअ़त के मुत़ाबिक़ पाया ।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बेशक कुरआने पाक **अल्लाह** करीम के अह़कामात के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने का त़रीक़ा बताने वाली एक मुकम्मल किताब है, कुरआने करीम दुन्या में रहने वाले मुसलमानों के लिये हिदायत ह़ासिल करने का बेहतरीन ज़रीआ़ है मगर कुरआन के अल्फ़ाज़ के मआ़नी और इस में मौजूद **अल्लाह** पाक के अह़कामात को जानने के लिये इस का तर्जमा पढ़ना-सुनना भी इन्तिहाई ज़रूरी है । اَلْحَمْدُ لِلّٰه कुरआने करीम के मौजूदा तमाम उर्दू तर्जमों में सब से बेहतरीन

उर्दू तर्जमा तर्जमए कुरआन "**कन्ज़ुल ईमान**" है। लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम अपनी मसरूफ़ ज़िन्दगी में से कुछ वक़्त निकाल कर कुरआने पाक की तिलावत करने का मामूल बनाएं।

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه तर्जमा व तफ़्सीर के साथ रोज़ाना तिलावते कुरआन करने के लिये इस्लामी बहनों के लिये **नेक अ़मल** नम्बर 5 में फ़रमाते हैं : क्या आज आप ने कन्ज़ुल ईमान से कम अज़ कम तीन आयात (मअ़ तर्जमा व तफ़्सीर) तिलावत करने या सुनने की सआ़दत ह़ासिल की ? अगर हम इस नेक अ़मल पर रोज़ाना अ़मल करें, तो कुरआने करीम की तिलावत की बरकत से हमारे घरों में ख़ैरो बरकत होती रहेगी, तर्जमा व तफ़्सीर के साथ पढ़ने की बरकत से इल्मे दीन में इज़ाफ़ा होगा, कुरआने करीम को समझने में आसानी होगी, मालूमात का ख़ज़ाना ह़ासिल होगा। मक्तबतुल मदीना से जारी होने वाली अ़ज़ीमुश्शान तफ़्सीर बनाम "**सिरात़ुल जिनान**" का भी मुत़ालआ़ कीजिये, इस तफ़्सीर में भी बहुत अच्छे अन्दाज़ से मालूमात का ख़ज़ाना उम्मते मुस्लिमा तक पहुंचाने की कोशिश की गई है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه और ईसारे मुस्लिमीन

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के आला किरदार की एक दलील येह भी है कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपनी मह़बूब और पसन्दीदा चीज़ें भी दूसरों को पेश कर दिया करते थे। आइये ! इस बारे में आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की सीरत का एक दिलचस्प वाक़िआ़ सुनिये : चुनान्चे,

छत्री ह़ाजत मन्द को अ़त़ा फ़रमा दी

मौसिमे बरसात में बाज़ अवक़ात मस्जिद की ह़ाज़िरी दौराने बारिश हुवा करती थी। ह़ाजी किफ़ायतुल्लाह साह़िब رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने इस तक्लीफ़ को मेह़सूस करते हुवे एक छत्री (Umbrella) ख़रीद कर नज़्र (यानी तोह़्फ़े में पेश) की और अपने ही पास रख ली। जब आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ काशानए अक़्दस से तशरीफ़ लाते, तो ह़ाजी साह़िब छत्री लगा कर मस्जिद तक ले जाते। अभी कुछ ही दिन गुज़रे थे कि एक ह़ाजत मन्द ने छत्री का सुवाल किया, आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने फ़ौरन वोह छत्री ह़ाजी साह़िब رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ से ले कर उस ह़ाजत मन्द को अ़त़ा फ़रमा दी।

(ह़याते आला ह़ज़रत, स. 118)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि हमारे आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ में ईसार व सख़ावत का कैसा जज़्बा था ! जो ज़रूरत के बा वुजूद अपनी चीज़ें दूसरों को दे दिया करते थे। आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ को अच्छी त़रह़ मालूम था कि इस्लाम हमें हमदर्दी करने का दर्स देता है, ख़ैर ख़्वाही का दर्स देता है, इसी लिये आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने ख़ैर ख़्वाही करते हुवे खुशी खुशी अपनी ज़ात पर दूसरे मुसलमान को तरजीह़ दी।

ह़दीसे पाक में है **:** जो शख़्स किसी चीज़ की ख़्वाहिश रखता हो फिर उस ख़्वाहिश को रोक कर अपने ऊपर (दूसरे को) तरजीह़ दे, तो **अल्लाह** पाक उसे बख़्श देता है। (جمع الجوامع،حرف الھمزہ،۳/۳۸۴،حدیث:۹۵۷۲)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़तवा नवेसी मअ़ "फ़तावा रज़विय्या" का तआ़रुफ़

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने अपनी मेह़नत व कोशिश से दीन की ऐसी बे मिसाल इ़ल्मी ख़िदमात सर

अन्जाम दीं कि आज तक आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के कारनामों की धूम मची हुई है । इन्ही कारनामों में से एक बेहतरीन और ज़बरदस्त इल्मी कारनामा **''फ़तावा रज़विय्या''** की 30 जिल्दें हैं, जिस में तक़रीबन 22000 सफ़ह़ात, 6847 सुवालात के जवाबात और 206 रसाइल हैं जब कि हज़ारों मसाइल भी दरमियान में बयान हुवे हैं ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه **''फ़तावा रज़विय्या''** कुरआने करीम, ह़दीसे रसूल, इजमाअ़ और फुक़हा ए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के जुज़्इय्यात से आरास्ता हर क़िस्म के मसाइल का ऐसा ख़ूब सूरत गुलदस्ता है जो रहती दुन्या तक के लोगों के दिलों और फ़िक्रों को अपनी महकी महकी ख़ुश्बूओं से महकाता और आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के बुलन्द दरजों में मज़ीद इज़ाफ़े का सबब बनता रहेगा । اِنْ شَآءَ الله

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه और हुक़ूक़ुल इबाद !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के आला किरदार का अन्दाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **अल्लाह** पाक के हुक़ूक़ की अदाएगी के साथ साथ बन्दों के हुक़ूक़ के बारे में भी बहुत हुस्सास थे क्यूंकि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को मालूम था कि बन्दों के हुक़ूक़ का मुआ़मला **अल्लाह** करीम के हुक़ूक़ से भी ज़ियादा नाज़ुक है । आइये ! बन्दों के हुक़ूक़ का एह़सास करने के बारे में आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का दिलचस्प वाक़िआ़ सुनिये और आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की सीरत पर अ़मल करने की निय्यत कीजिये । चुनान्चे,

बच्चे से मुआ़फ़ी मांगी

एक मरतबा आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बरेली शरीफ़ की मस्जिद में एतिकाफ़ में बैठे थे। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इफ़्त़ार के बाद खाना न खाते बल्कि सिर्फ़ पान खाते थे जब कि सह़री के वक़्त घर से सिर्फ़ एक छोटे से पियाले में फ़ीरीनी (Custard) (यानी एक क़िस्म की खीर जो दूध, चीनी और चावलों के आटे से बनती है) वोह और एक पियाली में चटनी आया करती थी, वोह नोश फ़रमाया करते थे। एक दिन शाम को पान नहीं आए और आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की येह पुख़्ता आ़दत थी कि खाने की कोई चीज़ त़लब नहीं फ़रमाते थे। चुनान्चे, ख़ामोश रहे लेकिन त़बीअ़त में ना गवारी ज़रूर पैदा हुई। मग़रिब से तक़रीबन 2 घन्टे बाद एक बच्चा पान लाया। आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उसे एक थप्पड़ मार कर फ़रमाया : इतनी देर में लाया ? लेकिन बाद में आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को ख़याल आया कि इस बेचारे का तो कोई क़ुसूर न था ! क़ुसूर तो देर से भेजने वाले का था। चुनान्चे, सह़री के बाद उस बच्चे को बुलवाया जो शाम को पान देर में लाया था और फ़रमाया : शाम को मैं ने ग़लत़ी की जो तुम्हारे थप्पड़ मारा, देर से भेजने वाले का क़ुसूर था, लिहाज़ा तुम मेरे सर पर थप्पड़ मारो ! और टोपी उतार कर इसरार फ़रमाते रहे। एतिकाफ़ में बैठे लोग येह सुन कर परेशान हो गए, वोह बच्चा भी बहुत परेशान हो कर कांपने लगा। उस ने हाथ जोड़ कर अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! मैं ने मुआ़फ़ किया। फ़रमाया : तुम ना बालिग़ हो, तुम्हें मुआ़फ़ करने का ह़क़ नहीं ! तुम थप्पड़ मारो ! मगर वोह मारने की हिम्मत न कर सका। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपना बोक्स (Box) मंगवा कर मुठ्ठी भर पैसे निकाले और वोह पैसे दिखा कर फ़रमाया : मैं तुम को येह दूंगा, तुम थप्पड़ मारो ! मगर बेचारा येही कहता रहा : हुज़ूर !

मैं ने मुआफ़ किया। आख़िरे कार आला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उस का हाथ पकड़ कर बहुत से थप्पड़ अपने सरे मुबारक पर लगाए और फिर उस को पैसे दे कर रुख़्सत कर दिया। (हयाते आला हज़रत, 1 / 107, मुलख़्ख़सन)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि आला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपने चाहने वालों को अ़मली तौ़र पर येह बता दिया कि चाहे कोई कितने ही बड़े मन्सब (Post) पर फ़ाइज़ क्यूं न हो ! अगर उस से किसी का दिल दुख जाए, तो उसे मुआ़फ़ी मांगने में हरगिज़ शर्म मह़सूस नहीं करनी चाहिये क्यूंकि हुक़ूक़ुल इबाद का मुआ़मला इन्तिहाई नाज़ुक है, इस की वज्ह से बहुत से गुनाहों में मुब्तला होने का अन्देशा है, जो दुन्यावी और उख़रवी नुक़्सानात का बाइ़स बन सकते हैं, मसलन बन्दों के हुक़ूक़ अदा न करने से हम कबीरा गुनाह में मुब्तला हो सकती हैं और येही दिल दुखाने, ह़सद करने, दिल में दुश्मनी रखने और दुश्मनियां करने जैसे कई गुनाहों पर उभार सकती है। इन गुनाहों में पड़ने के सबब ग़ीबतों, चुग़लियों, तोह्मतों, बद गुमानियों और कई कबीरा गुनाहों का दरवाज़ा भी खुल जाता है। जिन के हुक़ूक़ ज़ाएअ़ किये, उन्हें राज़ी करने के लिये क़ियामत के दिन अपनी नेकियां भी देनी पड़ सकती हैं और नेकियां न होने की सूरत में उन लोगों के गुनाहों का बोझ उठा कर जन्नत से मह़रूम हो कर इब्रतनाक अन्जाम से वासित़ा पड़ सकता है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه और शफ़्क़त व ख़ैर ख़्वाही

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की सीरते मुबारका का एक पहलू येह भी है कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه दुआ़ मांगते वक़्त अपने रिश्तेदारों, दोस्तों, मह़ब्बतो अ़क़ीदत रखने वालों, मुरीदों और

दीगर मुसलमानों के लिये दुआ़ करने का ख़ुसूसी एहतिमाम फ़रमाते थे। आइये ! इस की चन्द मिसालें मुलाह़ज़ा कीजिये :

दुआ़ के लिये फ़ेहरिस्त बनाई

(1) आला ह़ज़रत رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ नमाज़े फ़ज्र के बाद अपने अवरादो वज़ाइफ़ के आख़िर में इन सब के लिये नाम ले कर दुआ़ फ़रमाया करते थे। लोग इस बात की आरज़ू रखते थे कि उन के नाम भी इस फ़ेह्‌रिस्त में शामिल हो जाएं।

सब के लिये दुआ़ करता हूं

(2) ह़ज़रते सय्यिद अय्यूब अ़ली رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : एक दिन मैं बहुत परेशान था, दुआ़ का त़ालिब हुवा, तो आला ह़ज़रत رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ ने दुआ़ फ़रमाई और साथ ही मुझे और मेरे भाई सय्यिद क़नाअ़त अ़ली से इरशाद फ़रमाया : तुम दोनों का नाम भी मैं ने दुआ़ की फ़ेहरिस्त में शामिल कर लिया है जो आहिस्ता आहिस्ता बहुत लम्बी हो गई है, येह तमाम नाम मुझे याद हैं, रोज़ाना सब के लिये नाम ले कर दुआ़ करता हूं। (फ़ैज़ाने आला ह़ज़रत, स. 180, मुलख़्ख़सन)

मां-बाप, उस्ताद और तमाम मुसलमानों के लिये दुआ़ की अहम्मिय्यत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हमें भी आला ह़ज़रत رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ की सीरत अपनाते हुवे न सिर्फ़ अपने लिये बल्कि अपने मां-बाप और तमाम मुसलमानों के लिये भी दुआ़ करनी चाहिये। ह़ज़रते सय्यिदुना अबुश्शैख़ अस्बहानी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ से रिवायत की। हम से ज़िक्र किया गया है : जो शख़्स मुसलमान मर्दों और औ़रतों के लिये भलाई की दुआ़ करता है, क़ियामत के दिन जब उन की मजलिसों पर गुज़रेगा, एक कहने वाला कहेगा : येह वोह

है जो तुम्हारे लिये दुन्या में भलाई की दुआ़ करता था। पस वोह उस की शफ़ाअ़त करेंगे और बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ कर के उसे जन्नत में ले जाएंगे। (फ़ज़ाइले दुआ़, स. 86, मुलख़्ख़सन)

कुरआने करीम में मुसलमानों के लिये दुआ़ करने के बारे में **अल्लाह** पाक इरशाद फ़रमाता है :

وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : *और ऐ ह़बीब! अपने ख़ास गुलामों और आ़म मुसलमान मर्दों और औ़रतों के गुनाहों की मुआ़फ़ी मांगो।*

(پ٢٦، محمد: ١٩)

ह़दीस में है : रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّمَ ने एक शख़्स को اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ (यानी ऐ **अल्लाह** पाक! मेरी मग़फ़िरत फ़रमा) कहते सुना। फ़रमाया : अगर सब मुसलमानों को दुआ़ में शामिल करता तो तेरी दुआ़ मक़्बूल होती।

(ردّ المحتار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، آداب الصلاۃ، مطلب: فی الدعاء بغیر العربیۃ، ٢/٢٨٦)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की मह़ब्बते आला ह़ज़रत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का शुमार आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से सच्ची मह़ब्बत करने वालों में होता है, जिन्हें आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की शख़्सिय्यत और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के इ़ल्मी कारनामों ने बहुत मुतअस्सिर किया है। येही वज्ह है कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ, इमामे अहले सुन्नत, आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की तालीमात के मुत़ाबिक़ दीने मतीन की इन्तिहाई शानदार अन्दाज़ में ख़िदमात सर अन्जाम दे रहे हैं जिस का वाज़ेह़ सुबूत आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की तासीर भरी तह़रीरें, सुन्नतों भरे बयानात और इ़ल्मो ह़िक्मत से भरपूर मदनी मुज़ाकरे हैं जो तर्जमए कुरआन कन्ज़ुल ईमान, फ़तावा रज़विय्या के

जुज़इय्यात और ह़दाइके़ बख़्शिश के रिक़्क़त व सोज़ से भरपूर अश्आ़र से ख़ुश्बूदार होते हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ इसी अ़क़ीदतो मह़ब्बत का सदक़ा है कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने अपनी ज़िन्दगी का पहला रिसाला आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की सीरत के बारे में लिखा जिस का नाम **''तज़किरए इमाम अह़मद रज़ा''** रखा और येह 25 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सिने 1393 हि. को **''यौमे रज़ा''** के मौके़अ़ पर जारी किया गया।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से अ़क़ीदत का अन्दाज़ा इस बात से भी अच्छी त़रह़ लगाया जा सकता है कि आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ अपने मदनी मुज़ाकरों में लोगों को आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के त़रीके़ पर क़ाइम रहने और इमामे अहले सुन्नत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की कोई बात समझ न आने की सूरत में इख़्तेलाफ़ न करने की ताकीद फ़रमाते हैं। जैसा कि :

एक बार आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने इरशाद फ़रमाया : आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के अक़ूल (यानी फ़रमान) पर हमारी उ़क़ूल (यानी अ़क़्लें) कुरबान ! आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ का (हर) अक़ूल हमें क़बूल (है)। एक मरतबा इरशाद फ़रमाया : आला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ जो कि **अल्लाह** पाक के वली, सच्चे आ़शिके़ रसूल और हमारे मुत्तफ़िक़ा बुज़ुर्ग हैं, इन की अ़क़ीदत को दिल की गहराई के अन्दर संभाल कर रखना बेह़द ज़रूरी (Necessary) है।

नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : اَلْبَرَکَۃُ مَعَ اَکَابِرِکُمْ बरकत तुम्हारे बुज़ुर्गों के साथ है।
(مستدرک، کتاب الایمان،۱/ ۲۳۸،حدیث:۲۱۸) आप में से अगर किसी का मेरे आक़ा आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से इख़्तेलाफ़ का मामूली सा भी ज़ेह्न बनना शुरूअ़ हो जाए, तो समझ लीजिये مَعَاذَ اللّٰہ आप की बरबादी के दिन शुरूअ़ हो गए, लिहाज़ा फ़ौरन होशयार हो जाइये और इख़्तिलाफ़ के

ख़याल को ह़र्फ़े ग़लत़ की त़रह़ दिमाग़ से मिटा दीजिये। फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ में आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ का बयान कर्दा कोई मस्अला बिलफ़र्ज़ आप का ज़ेह्न क़बूल न करे, तब भी उस के बारे में अ़क़्ल के घोड़े मत दौड़ाइये बल्कि न समझ पाने को अपनी अ़क़्ल ही की कोताही (Lackness) तसव्वुर कीजिये।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ और ख़ुद्दारी !

ह़ज़रते मौलाना सय्यिद अय्यूब अ़ली साह़िब رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ का बयान है : एक साह़िब ने (आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की बारगाह में) बदायूनी पेड़ों (यानी मिठाई) की हांडी पेश की। आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने (उन से) फ़रमाया : कैसे तक्लीफ़ फ़रमाई ? उन्हों ने कहा : सलाम करने के लिये ह़ाज़िर हुवा हूं। आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ सलाम का जवाब दे कर कुछ देर ख़ामोश रहे और फिर पूछा : कोई काम है ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : कुछ नहीं ! हुज़ूर ! सिर्फ़ मिज़ाज पूछने के लिये आया था। इरशाद फ़रमाया : इनायत व नवाज़िश। और काफ़ी देर ख़ामोश रहने के बाद फिर आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने मुख़ात़ब हो कर फ़रमाया : कुछ फ़रमाइयेगा ? उन्हों ने फिर नफ़ी में जवाब दिया। इस के बाद आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने वोह शीरीनी मकान में भिजवा दी। अब वोह साह़िब थोड़ी देर बाद एक तावीज़ की दरख़ास्त करते हैं। आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने तो आप से तीन बार पूछा था मगर आप ने कुछ नहीं बताया, अच्छा तशरीफ़ रखिये। और अपने भान्जे अ़ली अह़मद ख़ान साह़िब (जो तावीज़ दिया करते थे) के पास से तावीज़ मंगा कर उन साह़िब को अ़त़ा फ़रमाया और साथ ही ह़ाजी किफ़ायतुल्लाह साह़िब رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ का इशारा पाते ही मकान से वोह मिठाई की हांडी मंगवा कर

सामने रख दी। आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने वोह मिठाई इन अल्फ़ाज़ के साथ वापस फ़रमा दी कि **"इस हांडी को साथ लेते जाइये ! मेरे यहां तावीज़ बिक्ता नहीं है।"** उन्हों ने बहुत कुछ माज़ेरत की मगर क़बूल न फ़रमाया, बिल आख़िर बेचारे अपनी मिठाई वापस लेते गए।

(ह़याते आला ह़ज़रत, स. 92, मुलख़्ख़सन)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान कर्दा वाक़िए़ से मालूम हुवा ! आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه सिर्फ़ रिज़ाए इलाही के लिये दीनी कामों में मख़्लूक़े ख़ुदा की मदद फ़रमाया करते थे और इस काम के बदले किसी भी क़िस्म का नज़राना (हदिया) क़बूल नहीं फ़रमाते थे। लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम भी रिज़ाए इलाही के लिये ह़ाजत मन्द इस्लामी बहनों की मदद व ख़ैर ख़्वाही करें, उन के काम आएं और उन की ज़रूरतों को ह़त्तल इमकान पूरा करने की भरपूर कोशिश किया करें। मख़्लूक़े ख़ुदा की ख़ैर ख़्वाही और हमदर्दी का जज़्बा اَلْحَمْدُ لِلّٰه फ़ैज़ाने आला ह़ज़रत से माला माल आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दावते इस्लामी के दीनी माहो़ल में घोल घोल कर पिलाया जाता है। लिहाज़ा आप भी इस दीनी माहो़ल से मज़बूत़ी के साथ वाबस्ता रहिये और दावते इस्लामी के साथ ख़िदमते दीन के कामों में मश्ग़ूल हो कर अपनी क़ब्रो आख़िरत संवारिये।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की सीरत का एक रौशन बाब येह भी है कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه कसीर मसरूफ़िय्यात के बा वुजूद जमाअ़त से नमाज़ पढ़ा करते थे, ह़त्ता कि बीमारी की ह़ालत में भी आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नमाज़ की जमाअ़त तक भी नहीं छोड़ते थे। हमें चूंकि जमाअ़त से नमाज़ पढ़ने की इजाज़त नहीं है, तो हमें अपने घर में नमाज़ की पाबन्दी करनी चाहिये और अपने मह़ारिम को जमाअ़त से नमाज़ पढ़ने की तरग़ीब दिलानी चाहिये।

आइये ! आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की जमाअ़त की पाबन्दी के ह़वाले से ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ सुनिये और अपने मह़ारिम को जमाअ़त से नमाज़ पढ़ने की तरग़ीब दिलाने की निय्यत कीजिये : चुनान्चे,

आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه और नमाज़े बा जमाअ़त की पाबन्दी

आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के पाउं का अंगूठा पक गया था, उन के ख़ास जर्राह़ (Surgeon) (यानी ज़ख़्मों और फोड़े फुन्सियों का इ़लाज करने वाले डॉक्टर) ने उस अंगूठे का ऑप्रेशन किया। पट्टी (Bandage) बांधने के बाद उन्हों ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! अगर ह़रकत न करेंगे, तो येह ज़ख़्म दस–बारह रोज़ में ठीक हो जाएगा, वरना ज़ियादा वक़्त लगेगा। वोह येह कह कर चले गए। येह कैसे मुमकिन हो सकता है कि मस्जिद की ह़ाज़िरी और जमाअ़त की पाबन्दी छोड़ दी जाए। जब ज़ोहर का वक़्त आया, तो आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने वुज़ू किया, खड़े न हो सकते थे, तो बैठ कर बाहर दरवाज़े तक आ गए, लोगों ने कुर्सी पर बिठा कर मस्जिद में पहुंचा दिया और उसी वक़्त मह़ल्ले और ख़ानदान वालों ने येह तै़ किया कि हर अज़ान के बाद हम सब में से चार मज़बूत़ आदमी कुर्सी ले कर ह़ाज़िर हो जाया करेंगे और पलंग से ही कुर्सी पर बिठा कर मस्जिद की मेह़राब के क़रीब बिठा दिया करेंगे। येह सिलसिला तक़रीबन एक माह तक बड़ी पाबन्दी से चलता रहा, जब ज़ख़्म अच्छा हो गया और आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه खुद चलने के क़ाबिल हो गए, तो येह सिलसिला ख़त्म हुवा। आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की नमाज़ तो नमाज़, जमाअ़त का छोड़ना भी बिला उ़ज़्रे शरई शायद किसी साह़िब को याद न होगा।

(फ़ैज़ाने आला ह़ज़रत, स. 136, मुलख़्ख़सन)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

फ़िक्रे आला ह़ज़रत और दावते इस्लामी

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दावते इस्लामी इ़ल्मे दीन को फैलाने और दीने मतीन की ख़िदमत करने में आला ह़ज़रत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के तह़रीर कर्दा रौशन उसूलों पर अ़मल करने की कोशिश कर रही है । आइये ! वोह उसूल और उन की रौशनी में आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दावते इस्लामी की मुख़्तसरन दीनी ख़िदमात मुलाह़ज़ा कीजिये ।

(1) **फ़रमाने आला ह़ज़रत :** अ़ज़ीमुश्शान मदारिस खोले जाएं, जिन में तालीम का बा क़ाइ़दा सिलसिला हो ।

(2) **फ़रमाने आला ह़ज़रत :** उ़म्दा कारकर्दगी पर मुदर्रिसों (मोअ़ल्लिमात) को भारी तनख़्वाहें दी जाएं ताकि जान तोड़ कर कोशिश करें ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه इस उसूल पर अ़मल करते हुवे आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दावते इस्लामी जामिअ़तुल मदीना और मदारिसुल मदीना की मोअ़ल्लिमात को माहाना बेहतरीन तनख़्वाह पेश करने के साथ साथ बोनस और मुक़र्ररा छुट्टियां न करने की सूरत में हर छे महीने बाद इन छुट्टियों की रक़म भी पेश करती है । सिर्फ़ येही नहीं बल्कि मुमताज़, बेहतर और मुनासिब दरजा बन्दी के एतिबार से सालाना इज़ाफ़ा भी किया जाता और तै़ शुदा मुद्दत के ह़िसाब से ग्रेड और तनख़्वाह में भी इज़ाफ़ा किया जाता है । इस के इ़लावा मजलिसे ति़ब्बी इ़लाज के तह़त मोअ़ल्लिमात को फ़्री मेडीकल की सहूलत भी फ़राहम की जाती है ।

(3) **फ़रमाने आला ह़ज़रत :** मज़हबी अख़्बार शाएअ़ हों और वक़्तन फ़-वक़्तन हर क़िस्म के ह़िमायते मज़हब में मज़ामीन तमाम मुल्क में ब क़ीमत व बिला क़ीमत रोज़ाना या कम अज़ कम हफ़्तावार पहुंचाते रहें ।

(फ़तावा रज़विय्या, 29 / 599, मुलख़्ख़सन)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ दावते इस्लामी **"मदनी चैनल"** और **"आई-टी"** के ज़रीए इलेक्ट्रोनिक मीडिया जब कि दीगर कुतुबो रसाइल छापने के साथ साथ **"माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"** की इशाअ़त की सूरत में प्रिन्ट मीडिया के ज़रीए **"फ़िक्रे रज़ा"** को आ़म करने में मसरूफ़ है।

अल्लाह करीम, आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ के तुफ़ैल आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक **"दावते इस्लामी"** को मज़ीद तरक़्क़ियां अ़ता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

मुत़ालआ़ करने के मदनी फूल

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइये ! मुत़ालआ़ करने के बारे में चन्द मदनी फूल सुनने की सआ़दत ह़ासिल करती हैं।

पहले 2 **फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा कीजिये :

1. **इरशाद फ़रमाया :** बेशक इ़ल्म सीखने से आता है।

(کنز العمال، ۱۰/۱۰۴، حدیث: ۲۹۲۵۲)

2. **इरशाद फ़रमाया :** दुन्या लानती है। **अल्लाह** पाक के ज़िक्र, उस के दोस्त और दीनी इ़ल्म पढ़ने और पढ़ाने वाले के इ़लावा इस की हर चीज़ भी लानती है। (ترمذی، کتاب الزہد، ۴/۱۴۴، حدیث: ۲۳۲۹)

❖ मुत़ालआ़ ईमान की मज़बूती का बाइ़स है। (मुत़ालआ़ किया, क्यूं और कैसे ?, स. 16) ❖ मुत़ालआ़ करने से इ़ल्म बढ़ता है। (मुत़ालआ़ किया, क्यूं और कैसे ?, स. 17) ❖ मुत़ालआ़ रब्बे करीम की पहचान का ज़रीआ़ है। (मुत़ालआ़ किया, क्यूं और कैसे ?, स. 18) ❖ मुत़ालआ़ करने से काइनात में ग़ौरो फ़िक्र करने का ज़ेह्न बनता है। (मुत़ालआ़ किया, क्यूं और कैसे ?, स. 18) ❖ मुत़ालआ़ करने से अ़क़्ल में इज़ाफ़ा होता है। (मुत़ालआ़ किया, क्यूं और कैसे ?, स. 19)

❖ मुत़ालआ़ इन्सान की दीनी व दुन्यावी दोनों तरक़्क़ियों का सबब बनता है । (मुत़ालआ़ किया, क्यूं और कैसे ?, स. 19) ❖ मुत़ालआ़ त़बीअ़त में चुस्ती, निगाहों में तेज़ी और ज़ेह्नो दिमाग़ को ताज़गी अ़त़ा करता है । (मुत़ालआ़ किया, क्यूं और कैसे ?, स. 19, मुलख़्ख़सन) ❖ ऐसी कुतुब, रसाइल और अख़्बारात से हमेशा दूर रहिये जो ईमान के लिये ज़ह्रे क़ातिल, ह़या ख़त्म करने और अख़्लाक़ तबाह करने वाले हों । (मुत़ालआ़ किया, क्यूं और कैसे ?, स. 29) ❖ अपने बुज़ुर्गों के ह़ालात जानने और उन की पैरवी करने के लिये उन की सीरत पर मुश्तमिल कुतुब का मुत़ालआ़ भी ज़रूरी है । (मुत़ालआ़ किया, क्यूं और कैसे ?, स. 33) ❖ इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब तुम कोई इ़ल्म ह़ासिल करने लगो या मुत़ालआ़ करना चाहो, तो बेहतर है कि तुम्हारा इ़ल्म व मुत़ालआ़ नफ़्स को पाक करने और दिल की इस्लाह़ का बाइ़स हो । (मुत़ालआ़ किया, क्यूं और कैसे ?, स. 32) ❖ क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा के लिये जहां और दवाएं इस्तिमाल और वज़ाइफ़ किये जाते हैं, वहीं एक दवा "**मुत़ालआ़**" भी है । (मुत़ालआ़ किया, क्यूं और कैसे ?, स. 36) ❖ कोशिश कीजिये कि किताब हर वक़्त साथ रहे कि जहां मौक़अ़ मिले कुछ न कुछ मुत़ालआ़ कर लिया जाए और किताब की सोह़बत भी मिले । (मुत़ालआ़ किया, क्यूं और कैसे ?, स. 36) ❖ मुत़ालआ़ करने के बाद तमाम मुत़ालए़ को इब्तिदा से इन्तिहा तक सरसरी नज़र से देखा जाए और उस का एक ख़ुलासा अपने ज़ेह्न में नक़्श कर लिया जाए । (मुत़ालआ़ किया, क्यूं और कैसे ?, स. 112) ❖ अपना एह़तिसाब करना भी फ़ाइदए मन्द है कि मुझे इस मुत़ालए़ से क्या ह़ासिल हुवा ? और कौन सा मवाद ज़ेह्न नशीन हुवा और कौन सा नहीं ? (मुत़ालआ़ किया, क्यूं और कैसे ?, स. 112) ❖ किसी बात को याद करने के लिये आंखें बन्द कर के याद दाश्त पर ज़ोर देना मुफ़ीद है ।

(मुत़ालआ़ किया, क्यूं और कैसे ?, स. 117) ❖ जो मुत़ालआ़ करें, उसे अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ अपने बच्चों, इस्लामी बहनों और मह़ारिम रिश्तेदारों से बयान करें, इस त़रह़ भी मालूमात का ज़ख़ीरा काफ़ी मुद्दत तक दिमाग़ में मेह़फ़ूज़ रहेगा। ❖ जो कुछ पढ़ें, उस की दोहराई (Repeat) करती रहें। (मुत़ालआ़ किया, क्यूं और कैसे ?, स. 112) ❖ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मदनी मुज़ाकरों में इ़ल्मे दीन के रंग बिरंगे मदनी फूल इरशाद फ़रमाते हैं, इन मदनी मुज़ाकरों की बरकत से अपने इ़ल्म पर अ़मल करने, इसे दूसरों तक पहुंचाने और मज़ीद मुत़ालआ़ करने का जज़्बा पैदा होता है। (मुत़ालआ़ किया, क्यूं और कैसे ?, स. 115)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो किताबें (1) 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16** और (2) 120 सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" नीज़ इस के इ़लावा शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत के दो रसाइल "**101 मदनी फूल**" और "**163 मदनी फूल**" हदिय्यतन त़लब कीजिये और पढ़िये।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान नम्बर – 7

हर मुबल्लिग़ा बयान करने से पहले कम अज़ कम तीन बार पढ़ ले

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ ط

اَمَّا بَعۡدُ! فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ط بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡكَ یَا رَسُوۡلَ اللّٰہ   وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصۡحٰبِكَ یَا حَبِیۡبَ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡكَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ   وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصۡحٰبِكَ یَا نُوۡرَ اللّٰہ

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम जहां भी रहो मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ा करो क्यूंकि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंच जाता है। (معجمِ کبیر، ۳/۸۲، رقم: ۲۷۲۹)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب!   صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(اَلْمُعجمُ الکبیر لِلطّبرانی ج ٦ ص ١٨٥ حدیث ٥٩٤٢)

मस्अला :-

नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नोइय्यत के एतिबार से निय्यतों में कमी व बेशी व तब्दीली की जा सकती है।

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी । टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी । ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिये जगह कुशादा करूंगी । धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी । صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوبُوا اِلَى اللّٰه वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिये पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी । इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी । दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी । जो कुछ बयान होगा उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल और बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगी ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मुह़द्दिसीने किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن वोह मुक़द्दस हस्तियां हैं जिन की शानो अ़ज़मत और मक़ामो मर्तबा बहुत ही बुलन्दो बाला है । इन ह़ज़रात ने इश्क़े रसूल के जज़्बे से सरशार हो कर अपनी सारी ज़िन्दगी ह़दीसे पाक की तरवीजो इशाअ़त में गुज़ार दी । इन बुज़ुर्ग हस्तियों में जो मक़ामो मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को नसीब हुवा, वोह अपनी मिसाल आप है । चूंकि शव्वालुल मुकर्रम के मुबारक महीने में आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पैदाइश हुई थी और इसी महीने में आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का उ़र्स मुबारक भी है, लिहाज़ा इसी मुनासबत से आज हम मशहूर मुह़द्दिस, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का मुख़्तसर तआ़रुफ़ और आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पाकीज़ा सीरत के मुख़्तलिफ़ पहलूओं के बारे में सुनने की सआ़दत ह़ासिल करेंगी ।

आइये ! पहले ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के ज़ौक़े इ़बादत पर मुश्तमिल एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ सुन कर अपने अन्दर ज़ौक़े इ़बादत को बेदार करने की कोशिश करती हैं : चुनान्चे,

इमाम बुख़ारी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ का ज़ौक़े इबादत

एक मरतबा मश्हूर मुह़द्दिस, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ को आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ के बाज़ शागिर्दों ने दावत दी तो आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ तशरीफ़ ले गए। जब नमाज़े ज़ोहर का वक़्त हुवा तो आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ ने नमाज़ पढ़ी फिर नवाफ़िल शुरूअ़ फ़रमा दिये। जब फ़ारिग़ हुवे तो क़मीस का एक किनारा उठाते हुवे किसी से कहा : देखो ! मेरी क़मीस के अन्दर क्या चीज़ है ? देखा तो एक ज़हरीला कीड़ा था जिस ने 16 या 17 मक़ामात पर डंक मारा था, जिस के सबब आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ का जिस्मे मुबारक सूज चुका था। लोगों ने कहा : जब इस ने पहला डंक मारा था तो आप उसी वक़्त नमाज़ से बाहर क्यूं न हुवे ? फ़रमाया : मैं ने एक सूरत शुरूअ़ कर रखी थी, दिल ने चाहा कि वोह पूरी हो जाए (तो फिर सलाम फेरूंगा)। (تاریخ بغداد، ۲/ ۱۳)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इमाम बुख़ारी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ चूंकि मुह़द्दिस थे, मुह़द्दिस किसे कहते हैं आइये सुनती हैं : चुनान्चे,

मुह़द्दिस की तारीफ़

जो अह़ादीसे नबवी में मसरूफ़ व मश्ग़ूल हो, उसे "**मुह़द्दिस**" कहा जाता है। (نزھۃ النظر فی توضیح نخبۃ الفکر، ص۴۱)

विलादत व सिलसिलए नसब

मश्हूर मुह़द्दिस, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ की विलादत मश्हूर शहर "**बुख़ारा**" में 13 शव्वाल सिने 194 (हिजरी) बरोज़ जुमुआ़ बाद नमाज़े अ़स्र हुई। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ का नाम "**मुह़म्मद**" और कुन्यत "**अबू अ़ब्दुल्लाह**" है। आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ का सिलसिलए नसब येह है : मुह़म्मद बिन इस्माईल

बिन इब्राहीम बिन मुग़ीरा । ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ के पर दादा **"मुग़ीरा"** खेतीबाड़ी करने वाले और ग़ैरे ख़ुदा की इबादत करने वाले थे लेकिन बाद में ह़ाकिमे बुख़ारा **"यमान जुफ़ी"** के हाथ पर इस्लाम लाए । ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ ने तक़रीबन 62 साल की उ़म्र पाई और (यकुम शव्वाल) सिने 256 हिजरी बरोज़ हफ़्ता ईदुल फ़ित्र की रात बीमारी की ह़ालत में विसाले ज़ाहिरी फ़रमाया ।

(ارشاد الساری،ترجمۃ الامام بخاری، ۱/۵۵-۵۶ ملتقطاً ,اشعۃ اللمعات، ۱/۹-۱۳ملتقطاً)

अल्क़ाबात

"अमीरुल मोमिनीन फ़िल ह़दीस", **"ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस"**, **"मुह़द्दिस"**, **"मुफ़्ती"**, **"ह़िबरुल इस्लाम"** वग़ैरा आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ के मश्हूर अल्क़ाबात हैं ।

आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ के असातिज़ा की तादाद

(ह़ज़रते सय्यिदुना) इमाम बुख़ारी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ के असातिज़ए किराम की तादाद 1080 है । (नुज़्हतुल क़ारी, 1 / 119)

आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ के शागिर्दों की तादाद

आला ह़ज़रत رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : (ह़ज़रते सय्यिदुना) इमाम बुख़ारी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ ने इन्तिक़ाल फ़रमाया (तो) 90,000 शागिर्द मुह़द्दिस (यानी इ़ल्मे ह़दीस के जानने वाले) छोड़े । (मल्फ़ूज़ाते आला ह़ज़रत, स. 238)

वालिदे मोह़्तरम का मुख़्तसर तआ़रुफ़

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ के वालिदे माजिद ज़बरदस्त आ़लिमे दीन थे । आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ, इमाम बुख़ारी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ के उस्ताज़, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ की सोह़बत में रहते थे, आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ रिवायत फ़रमाने वाले और इ़ल्मे ह़दीस के जानने वाले थे, आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह

बिन मुबारक, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمَا, इन के शागिर्दों और उस ज़माने के इ़ल्मे ह़दीस जानने वालों से रिवायत करते थे, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की दुआ़एं बहुत ज़ियादा मक़्बूल होती थीं, ऐसे कि बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ करते कि "मेरी सब दुआ़एं दुन्या ही में न क़बूल कर ले, कुछ आख़िरत के लिये रहने दे।" ह़लाल खाने के ऐसे पाबन्द थे कि ह़राम तो ह़राम, मश्कूक चीज़ों से भी बचते थे, ह़त्ता कि विसाले ज़ाहिरी के वक़्त फ़रमाया : मेरे पास जितना भी माल है, उस में एक दिरहम भी शको शुब्हे वाला नहीं है।

(नुज़्हतुल क़ारी, 1 / 107, मुलख़्ख़सन, ارشاد الساری، ترجمۃ الامام بخاری، ۱/۵۵)

इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की बीनाई लौट आई

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अभी छोटी उ़म्र के थे कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के वालिदे माजिद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का इन्तेक़ाल हो गया और फिर परवरिश की तमाम तर ज़िम्मेदारियां आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की वालिदए माजिदा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا ने संभालीं। बचपन शरीफ़ में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की आंखों की रौशनी जाती रही, वालिदए माजिदा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا इस सदमे से रोती रहतीं और गिड़गिड़ा कर दुआ़ मांगा करतीं। एक रात सोते में क़िस्मत का सितारा चमक उठा, दिल की आंखें खुल गईं, ख़्वाब में देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام तशरीफ़ लाए हैं और फ़रमा रहे हैं कि आप अपने बेटे की आंखों की रौशनी की वापसी के लिये दुआ़एं मांगती रहती हो, मुबारक हो ! कि आप की दुआ़ क़बूल हो चुकी है, **अल्लाह** पाक ने आप के बेटे की आंखों की रौशनी बह़ाल फ़रमा दी है। जब सुब्ह़ हुई, तो देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की आंखें (Eyes) रौशन हो चुकी थीं।

(تفہیم البخاری، ۱/۴ ملخصاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि **अल्लाह** करीम ने मां की दुआ़ में कैसी तासीर रखी है कि मां जब अपनी औलाद के ह़क़ में दुआ़ करती है तो रब्बे करीम उस के उठे हुवे हाथों की लाज रखता और औलाद के ह़क़ में उस की दुआ़ क़बूल फ़रमाता है । اَلْحَمْدُ لِلّٰه मां वोह मेहरबान हस्ती है जो औलाद के लिये रो रो कर दुआ़एं करती है, मां की दुआ़ जन्नत में ले जाती है, मां की दुआ़ रब्बे करीम का फ़रमां बरदार बनाती है, मां की दुआ़ बुराइयों से बचाती है, मां की दुआ़ औलाद को मक़ामे विलायत तक पहुंचा देती है, मां की दुआ़ औलाद की क़िस्मत संवार देती है, मां की दुआ़ औलाद के ह़क़ में क़बूल होती है, मां की दुआ़ कामयाबियां दिलाती है, मां की दुआ़ रह़मत उतरने का सबब है, मां की दुआ़ गुनाहों की मुआ़फ़ी का ज़रीआ़ है, मां की दुआ़ की बरकत से रब्बे करीम औलाद से मुसीबतों और आज़माइशों को टाल देता है ।

अल्लाह करीम हमें अपनी मां की ख़िदमत करने, उन की फ़रमां बरदारी करने, उन्हें राज़ी रखने और उन से दुआ़एं लेने वाले काम करने की तौफ़ीक़ व सआ़दत नसीब फ़रमाए । اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अगर हम मुह़द्दिसीने किराम رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की सीरते मुबारका का जाइज़ा लें, तो उन की पाकीज़ा सीरत में हमें येह मदनी फूल जगमगाता हुवा दिखाई देगा कि इन ह़ज़रात ने इ़ल्मे ह़दीस ह़ासिल करने और अह़ादीसे रसूल का फ़ैज़ान आ़म करने की ख़ात़िर अपना सब कुछ क़ुरबान कर दिया, ह़त्ता कि इस राह में अपने घर बार को ख़ैर आबाद कह कर दूर दराज़ मुल्कों और शहरों का सफ़र तै़ कर के इ़ल्मे ह़दीस ह़ासिल किया ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه हज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه चूंकि यादगारे अस्लाफ़ थे, लिहाज़ा आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने मुहद्दिसीने किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के नक़्शे क़दम पर चलते हुवे इसी मक़्सद की ख़ातिर अपना वत़न छोड़ा, दूर दराज़ शहरों का सफ़र इख़्तियार फ़रमाया और इन्तेहाई कम उ़म्र में ही मैदाने ह़दीस में अपनी सलाह़िय्यतों का भरपूर इस्तेमाल किया। आइये ! ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के शौक़े इ़ल्म की चन्द झल्कियां मुलाह़ज़ा कीजिये : चुनान्चे,

ज़मानए तालीम

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه जब दस साल के हुवे तो इब्तिदाई और ज़रूरी तालीम ह़ासिल कर चुके थे, **अल्लाह** पाक ने आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के दिल में इ़ल्मे ह़दीस ह़ासिल करने का शौक़ पैदा किया, तो आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने "**बुख़ारा**" में (इ़ल्मे ह़दीस ह़ासिल करने के लिये एक मद्रसे में) दाख़िला ले लिया, इ़ल्मे ह़दीस इन्तेहाई मेह़नत से ह़ासिल किया। 16 साल की उ़म्र में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपने बड़े भाई और वालिदा के साथ ह़ज करने के लिये मक्के मदीने में ह़ाज़िर हुवे, वालिदा और भाई तो ह़ज से फ़ारिग़ होने के बाद वापस वत़न आ गए मगर आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मज़ीद इ़ल्म ह़ासिल करने के लिये वहीं रहे और 18 साल की उ़म्र में आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने वहीं पर ही एक किताब "**क़ज़ाया अस्सह़ाबा वत्ताबेईन**" तस्नीफ़ फ़रमाई।

(तज़्किरतुल मुह़द्दिसीन, स. 172, मुलख़्ख़सन, ارشاد الساری،ترجمۃ الامام بخاری،۱/ ۵۲ ملخصًا)

ह़ुसूले इ़ल्म के लिये सफ़र

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने 6 साल ह़िजाज़े मुक़द्दस (यानी अ़रब शरीफ़ का वोह ह़िस्सा जिस में मक्कए पाक, मदीनए

पाक और ताइफ़ के अलाक़े शामिल हैं) में रह कर ख़ूब इल्मे दीन हासिल किया। इल्मे दीन हासिल करने के लिये आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने कई सफ़र इख़्तियार फ़रमाए : 2 मरतबा शाम, मिस्र और जज़ीरा, 4 मरतबा बसरा और कई दफ़्आ (इराक़ के शहर) कूफ़ा और बग़दाद भी तशरीफ़ ले गए।

(سیر اعلام النبلاء، ابو عبد اللہ البخاری۔۔۔ الخ، ذکر حفظہ۔۔ الخ، ۱۰/۲۸۵ ملخصاً)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! **अल्लाह** पाक अपने बन्दों को जिन नेमतों से नवाज़ता है, उन में से एक **"याद रखने वाली कुव्वत"** की नेमत भी है, जिस के ज़रीए इन्सान दुन्या भर की मालूमात को अपने दिमाग़ की मेमोरी (Memory) में आसानी से मेहफ़ूज़ कर लेने पर कुदरत पा लेता है और इस से भरपूर फ़ाइदा उठाता है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ हज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ का शुमार भी उन्ही ख़ुश नसीबों में होता है जिन्हें **अल्लाह** पाक ने याद रखने वाली कुव्वत की नेमत से सरफ़राज़ फ़रमाया था। आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने बारगाहे इलाही से मिलने वाली इस शानदार नेमत और बे मिसाल ज़हानत के ज़रीए हज़ारों अहादीसे मुबारका को अपने दिलो दिमाग़ में मेहफ़ूज़ कर लिया था। आइये ! हज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की याद रखने वाली कुव्वत की चन्द दिल नशीन झल्कियां सुनती हैं : चुनान्चे,

एक हज़ार अहादीस ज़बानी बयान फ़रमा दीं !

एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ (ख़ुरासान के एक मश्हूर शहर) **"बल्ख़"** तशरीफ़ ले गए। लोगों ने आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ से हदीस सुनाने की फ़रमाइश की तो आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने एक हज़ार अहादीसे मुबारका ज़बानी बयान फ़रमा दीं।

(سیر اعلام النبلاء، ابو عبد اللہ البخاری۔۔۔ الخ، ۱۰/۲۸۹)

कम वक़्त में ज़ियादा अह़ादीस याद करना

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अबी ह़ातिम और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ाशिद बिन इस्माईल رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہِمَا बयान करते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ छोटी उ़म्र में हमारे साथ ह़दीस के लिये शहर "**बसरा**" के उ़लमा ए किराम की ख़िदमत में ह़ाज़िर होते थे, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ के इलावा हम तमाम साथी अह़ादीस को मेह़फ़ूज़ करने के लिये तह़रीर कर लेते थे । 16 दिन गुज़र जाने के बाद एक रोज़ हम ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ को डांटा कि तुम ने अह़ादीस मेह़फ़ूज़ न कर के इतने दिनों की मेह़नत ज़ाएअ़ कर दी । येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने हम से कहा : अच्छा तुम अपने तह़रीरी सफ़ह़ात ले आओ ! चुनान्चे हम अपने अपने सफ़ह़ात ले आए । ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने अह़ादीस सुनानी शुरूअ़ कर दीं, यहां तक कि उन्हों ने 15000 से ज़ियादा अह़ादीस बयान कर डालीं, जिन्हें सुन कर हमें यूं गुमान होता था कि गोया हमें येह रिवायात ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने ही लिखवाई हैं ।

(ارشادالساری،ترجمۃ الامام بخاری،۱/۵۹)

सत्तर हज़ार ह़दीसों के ह़ाफ़िज़

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन मुजाहिद رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सलाम رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे, तो ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सलाम رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन मुजाहिद رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ से फ़रमाया : अगर आप कुछ देर पहले आ जाते, तो मैं आप को वोह बच्चा दिखाता जिस को सत्तर हज़ार ह़दीसें याद हैं । येह ह़ैरत में मुब्तला करने वाली बात सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ के दिल में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी

رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ से मुलाक़ात का शौक़ पैदा हुवा। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सलाम رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ की बारगाह से फ़ारिग़ होने के बाद ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन मुजाहिद رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ को तलाश करना शुरूअ़ कर दिया। जब (ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ से) मुलाक़ात हुई, तो ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन मुजाहिद رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ ने इरशाद फ़रमाया : क्या सत्तर हज़ार अह़ादीस को याद करने वाले आप ही हैं ? येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ ने अ़र्ज़ की : जी हां ! मुझे तो इस से भी ज़ियादा अह़ादीस याद हैं और जिन सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان और ताबेईन से मैं ह़दीस रिवायत करता हूं, उन में से अक्सर की तारीख़े पैदाइश, रिहाइश और तारीख़े विसाल को भी मैं जानता हूं।

(ارشاد الساری،ترجمۃ الامام البخاری،۱/۵۹)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

سُبۡحٰنَ اللّٰہ ! आप ने सुना कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ का ह़ाफ़िज़ा कितना शानदार था ! आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ ने बचपन ही में न सिर्फ़ सत्तर हज़ार से ज़ाइद अह़ादीसे करीमा को याद फ़रमा लिया बल्कि उन ह़दीसों को रिवायत करने वाले अक्सर बुज़ुर्गों की तारीख़े पैदाइश, रिहाइश और तारीख़े विसाल को भी याद कर लिया। बिला शुबा येह **अल्लाह** पाक के ख़ास फ़ज़्लो एह़सान और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ुसूसी फ़ैज़ान का कमाल था कि लोग आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ की याद रखने वाली क़ुव्वत की तारीफ़ किया करते थे जब कि आज हमारे ह़ाफ़िज़े कमज़ोर (Weak) होते जा रहे हैं, हमें तो गुज़रे हुवे कल की मामूली बातें भी याद नहीं रहतीं, ईसवी महीने और उन की तारीख़ें तो याद रहती हैं मगर अफ़्सोस ! क़मरी यानी चांद के महीनों और

उन की तारीख़ों से बे ख़बर रहती हैं, चीज़ों के ह़िसाब किताब में अक्सर परेशानी का शिकार हो जाती हैं, नमाज़ों की रक्अ़त के बारे में शुकूको शुब्हात में मुब्तला हो जाती हैं कि कितनी पढ़ लीं और कितनी बाक़ी रह गईं ? किसी किताब या रिसाले को कई कई बार पढ़ लेने के बा वुजूद भी उस के मज़ामीन या मसाइल हमारे दिलो दिमाग़ में मेह़फ़ूज़ नहीं हो पाते । बहर ह़ाल अगर हम अपने ह़ाफ़िज़े को मज़बूत़ बनाना चाहती हैं, भूलने की बीमारी से नजात पाना चाहती हैं, ह़ाफ़िज़े को मज़बूत़ बनाने के त़रीक़े जानना चाहती हैं और भूलने की बीमारी पैदा करने वाले अस्बाब के बारे में मालूमात ह़ासिल करना चाहती हैं, तो इस के लिये मक्तबतुल मदीना की प्रिन्टेड किताब **"ह़ाफ़िज़ा कैसे मज़बूत़ हो ?"** का मुत़ालआ़ फ़रमाइये ।

ह़ाफ़िज़ा मज़बूत़ करने का आसान वज़ीफ़ा

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इस दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत नक़्ल फ़रमाते हैं कि अगर किसी शख़्स को निस्यान यानी भूल जाने की बीमारी हो, तो वोह मग़रिब और इशा के दरमियान इस दुरूदे पाक को कसरत से पढ़े, اِنْ شَآءَ الله ह़ाफ़िज़ा क़वी हो जाएगा :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْكَامِلِ وَعَلٰى اٰلِهٖ كَمَا لَا نِهَايَةَ لِكَمَالِكَ وَعَدَدَ كَمَالِهٖ

(मदनी पंजसूरह, स. 169)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उ़मूमन देखा गया है कि जब कोई अपने किसी कारनामे के सबब मश्हूर हो जाए, तो वोह अपने आप को **"कुछ"** समझने लगती है, दूसरों को ह़क़ारत की नज़र से देखती है, अपने काम काज अपने हाथों से करने में शर्म और ज़िल्लत मेह़सूस करती है, दुन्यवी ह़िर्स व लालच और मज़ीद शोहरत का भूत उस पर सुवार हो जाता

है और वोह दुन्यवी लज़्ज़ात में डूब कर फ़िक्रे आख़िरत से ग़ाफ़िल हो जाती है लेकिन कुरबान जाइये ! ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه पर ! लाखों ह़दीसें याद कर लेने के बा वुजूद ग़ुरूर व तकब्बुर को कभी अपने क़रीब भी भटकने न दिया, आ़जिज़ी व इन्केसारी का दामन थामे रखा, अ़मली तौ़र पर सादगी अपनाई और दौराने त़ालिबे इ़ल्मी से ही ज़ोह्दो क़नाअ़त को इख़्तियार फ़रमा लिया। चुनान्चे,

इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की आ़जिज़ी व इन्केसारी

आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के ख़ुसूसी शागिर्द मुह़म्मद बिन ह़ातिम वर्राक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान करते हैं : एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बुख़ारा के क़रीब मुसाफ़िरों के ठहरने का मकान बना रहे थे, ख़िदमत करने वाले और अ़क़ीदत मन्द ह़ज़रात भी आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के साथ थे मगर इस के बा वुजूद आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपने हाथों से ईंटें उठा उठा कर दीवार में लगा रहे थे। मैं ने आगे बढ़ कर कहा : आप रहने दीजिये, येह ईंटें मैं लगा देता हूं। इरशाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन येह अ़मल मुझे फ़ाइदा देगा। (ارشاد الساری، ترجمۃ الامام بخاری، ۱/۲۵)

सूखी रोटी तनावुल फ़रमाते

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने त़लबे इ़ल्म के दौरान बसा अवक़ात सूखी घास खा कर भी वक़्त गुज़ारा, कभी कभार एक दिन में आ़म तौ़र पर सिर्फ़ दो या तीन बादाम खाया करते थे। एक मरतबा बीमार पड़ गए, ह़कीमों ने बतलाया कि सूखी रोटी खा खा कर इन की अंतड़ियां सूख चुकी हैं। उस वक़्त आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने बताया कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه 40 साल (Forty Years) से ख़ुश्क रोटी खा रहे हैं और इस अ़र्से में सालन को बिल्कुल भी हाथ नहीं लगाया।

(तज़्किरतुल मुह़द्दिसीन, स. 182)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि **अल्लाह** वालों में इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने का कैसा ज़बरदस्त मदनी जज़्बा हुवा करता था जो सालन के बिग़ैर सूखी रोटी खा कर भी इन्तेहाई ज़ौको शौक़ के साथ इ़ल्मे दीन सीखने में मश्ग़ूल रहा करते थे जब कि आज हमारा मुआ़शरा दुन्यवी उ़लूमो फ़ुनून की डिग्रियों और माल जम्अ़ करने की ख़ा़तिर दिन रात मसरूफ़े अ़मल दिखाई देता है मगर दीनी मदारिस व जामिआ़त में बेहतरीन और मुफ़्त सहूलिय्यात के बा वुजूद पढ़ने वालों की तादाद इन्तेहाई कम नज़र आती है और ह़ाल येह है कि बहुत से लोग शरीअ़त के बुन्यादी फ़राइज़ व वाजिबात से ग़ाफ़िल नज़र आते हैं।

इ़ल्मे दीन सीखना सिर्फ़ किसी एक ख़ास गिरोह का काम नहीं बल्कि अपनी ज़रूरत के मुता़बिक़ इ़ल्म सीखना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है लेकिन निहायत अफ़्सोस की बात है कि आज मुसलमानों की एक बड़ी तादाद इ़ल्मे दीन से दूर नज़र आती है। नमाज़ियों को देखें, तो चालीस चालीस साल नमाज़ पढ़ने के बा वुजूद ह़ाल येह है कि किसी को वुज़ू करना नहीं आता, तो किसी को ग़ुस्ल का त़रीक़ा मालूम नहीं, कोई नमाज़ के फ़राइज़ को सह़ीह़ त़रीक़े से अदा नहीं करती, तो कोई वाजिबात नहीं जानती, किसी की क़िराअत दुरुस्त नहीं, तो किसी का सजदा ग़लत़ है। येही ह़ाल दीगर इ़बादात का है, ख़ुसूसन जिन इस्लामी बहनों ने ह़ज किया हो, उन को मालूम है कि ह़ज में किस क़दर ग़लति़यां की जाती हैं, इन में अक्सरिय्यत उन ख़्वातीन की होती है जो येह कहती नज़र आती हैं कि बस ह़ज के लिये चले जाएं ! जो कुछ लोग कर रहे होंगे वोही हम भी कर लेंगे। जब इ़बादात का येह ह़ाल है, तो दीगर फ़र्ज़ उ़लूम का ह़ाल क्या होगा ? यूंही ह़सद, बुग़्ज़, कीना, तकब्बुर, ग़ीबत, चुग़ली, बोहतान और न जाने कितने ऐसे उमूर हैं जिन के बारे में जानना फ़र्ज़ है लेकिन एक तादाद को इन की तारीफ़ें बल्कि इन की फ़र्ज़िय्यत तक का इ़ल्म नहीं होता। येह वोह चीज़ें हैं जिन का गुनाह होना उ़मूमन लोगों को मालूम होता है और

वोह चीज़ें जिन के बारे में बिल्कुल बे ख़बर हैं जैसे मद्रसा और दीगर बहुत सी चीज़ें ऐसी हैं जिन के बारे में लोगों को येह तक मालूम नहीं कि इन के कुछ मसाइल भी हैं, बस हर त़रफ़ एक अ़जीब सी कैफ़िय्यत है, ऐसी सूरत में हमें चाहिये कि ख़ुद भी इ़ल्मे दीन सीखें और दूसरों को भी इ़ल्मे दीन सीखने की तरग़ीब दिलाएं । अगर तमाम वालिदैन अपनी औलाद को, तमाम मोअ़ल्लिमात अपनी त़ालिबात को इ़ल्मे दीन की त़रफ़ लगा दें, तो कुछ ही अ़र्से में हर त़रफ़ इ़ल्मे दीन का दौर दौरा हो जाएगा और लोगों के मुआ़मलात ख़ुद बख़ुद शरीअ़त के मुत़ाबिक़ होते जाएंगे ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

अह़ादीसे मुबारका की ताज़ीम

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का शुमार बा कमाल हस्तियों में होता है जो अदब व ताज़ीम के पैकर और सच्चे आ़शिक़े रसूल थे । आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अदब व ताज़ीम का दामन थाम कर इ़श्क़े मुस्त़फ़ा के गहरे समुन्दर में डूब कर लाखों अह़ादीसे करीमा में से "**सह़ीह़ बुख़ारी**" की सूरत में सह़ीह़ तरीन अह़ादीसे मुबारका का क़ीमती ख़ज़ाना जम्अ़ कर के उम्मते सरकार को अ़त़ा फ़रमाया । आइये ! इस मुबारक किताब की शानो अ़ज़मत सुनिये और झूमिये : चुनान्चे,

इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का ह़दीस लिखने का अन्दाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं :

اَلْحَمْدُ لِلّٰه मैं ने "**सह़ीह़ बुख़ारी**" में तक़रीबन छे हज़ार अह़ादीस ज़िक्र की हैं । हर ह़दीस को लिखने से पहले ग़ुस्ल करता, दो रक्अ़त नफ़्ल नमाज़ अदा करता और इस्तिख़ारा करता, जब किसी ह़दीस की सिह़ह़त पर दिल जमता, तो उसे किताब में शामिल कर लेता ।

(هدى السارى، مقدمة، ١/١٠, नुज़्हतुल क़ारी, स. 130)

छे लाख ह़दीसों के ह़ाफ़िज़

एक और मक़ाम पर फ़रमाते हैं : मुझे छे लाख ह़दीसें याद हैं, जिन में से चुन चुन कर 16 साल में, मैं ने इस जामेअ़ (सह़ीह़ बुख़ारी) को लिखा है, मैं ने इसे अपने और **अल्लाह** पाक के दरमियान दलील बनाया है। (مقدمہ فتح الباری،ص۱۰)

मैं ने अपनी इस किताब में सिर्फ़ सह़ीह़ अह़ादीस दाख़िल की हैं और जिन ह़दीसों को मैं ने इस ख़याल से कि किताब बहुत लम्बी न हो जाए, छोड़ दिया, वोह इस से बहुत ज़ियादा हैं। (नुज़्हतुल क़ारी, स. 130)

आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने दीगर भी कई किताबें (मसलन अत्तारीख़ुल कबीर, अत्तारीख़ुल औसत़, अत्तारीख़ुस्सग़ीर, किताबुज़्ज़ुअ़फ़ा, ख़ल्क़े अफ़्आ़लुल इ़बाद, अल मुस्नदुल कबीर, किताबुल अ़लल, अल अदबुल मुफ़रद वग़ैरा) लिखी हैं मगर सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का वोह अ़ज़ीम कारनामा है जिस ने न सिर्फ़ अ़वामो ख़वास में मक़्बूलिय्यत की मेराज पाई बल्कि बारगाहे रिसालत से भी इसे मक़्बूलिय्यत का एज़ाज़ अ़त़ा हुवा, यूं कि रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसे अपनी त़रफ़ मन्सूब करते हुवे **"मेरी किताब"** फ़रमाया। चुनान्चे,

बारगाहे रिसालत में सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ की मक़्बूलिय्यत

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ज़ैद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं एक मरतबा मक्के शरीफ़ में मक़ामे इब्राहीम और ह़जरे अस्वद के दरमियान सो रहा था कि मेरा नसीब जागा और ख़्वाब देखा कि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमा रहे हैं : ऐ अबू ज़ैद ! किताबे शाफ़ेई का दर्स कब तक दोगे ? हमारी किताब का दर्स क्यूं नहीं देते ? आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरी जान आप (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर क़ुरबान ! आप (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की

किताब कौन सी है ? मदनी आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मुह़म्मद बिन इस्माईल की किताब "**बुख़ारी**" ।

(बोस्तानुल मुह़द्दिसीन, स. 275, मुलख़्ख़सन)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ग़ौर फ़रमाइये ! जिस किताब को रसूले पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पसन्द फ़रमाएं और उसे अपनी त़रफ़ मन्सूब फ़रमाएं, तो अन्दाज़ा लगाइये कि उसे पढ़ने, सुनने और उस का ख़त्म करने वालियों को इस की कैसी कैसी बरकतें नसीब होंगी । आइये ! तरग़ीब के लिये ख़त्मे बुख़ारी की चन्द बरकतें मुलाह़ज़ा कीजिये : चुनान्चे,

ख़त्मे बुख़ारी के फ़वाइद

(बाज़) आ़रिफ़ीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن से मन्क़ूल है : अगर किसी मुश्किल में सह़ीह़ बुख़ारी को पढ़ा जाए, तो वोह मुश्किल ह़ल हो जाती है और जिस किश्ती (Boat) में सह़ीह़ बुख़ारी हो, वोह ग़र्क़ नहीं होती । ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ख़ुश्क साली में सह़ीह़ बुख़ारी पढ़ने से बारिश हो जाती है । (तज़किरतुल मुह़द्दिसीन, स. 198) मश्हूर मुह़द्दिस, ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : सख़्ती के वक़्त, दुश्मन के ख़ौफ़, मरज़ की सख़्ती और दीगर बलाओं में इस किताब का पढ़ना इलाज का काम देता है, अक्सर इस का तजरिबा हो चुका है । (बोस्तानुल मुह़द्दिसीन, स. 274, मुलख़्ख़सन)

ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बादे क़ुरआन शरीफ़ सह़ीह़ तर किताब "**बुख़ारी शरीफ़**" मानी गई है । मुसीबतों में ख़त्मे बुख़ारी किया जाता है, जिस की बरकत और **अल्लाह** पाक के फ़ज़्ल से मुसीबतें टल जाती हैं ।

(मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 11, मुलख़्ख़सन)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! रमज़ानुल मुबारक के बाद शव्वालुल मुकर्रम की आमद आमद है। ख़ुश नसीब मुसलमान इस महीने में एहतिमाम के साथ ईदुल फ़ित्र के बाद 6 रोज़े रखने की सआदत ह़ासिल करते और इस की बरकतें पाते हैं। आइये ! हम भी शश ईद के रोज़ों के फ़ज़ाइल सुनती हैं ताकि हमें भी येह रोज़े रखने और इन की बरकतों से फ़ैज़याब होने की सआदत नसीब हो : चुनान्चे,

शव्वाल के 6 रोज़ों के फ़ज़ाइल

1. **इरशाद फ़रमाया :** जिस ने रमज़ान के रोज़े रखे फिर छे दिन शव्वाल में रखे, तो गुनाहों से ऐसे निकल गया, जैसे आज ही मां के पेट से पैदा हुवा है।

(مجمع الزوائد، کتاب الصیام، باب فیمن صام...الخ، ۳/۴۲۵، حدیث: ۵۱۰۲)

2. **इरशाद फ़रमाया :** जिस ने रमज़ान के रोज़े रखे फिर इन के बाद छे शव्वाल में रखे, तो ऐसा है जैसे उम्र भर का रोज़ा रखा।

(مسلم، کتاب الصیام، باب استحباب صوم...الخ، ص ۵۹۲، حدیث: ۲۷۵۸)

3. **इरशाद फ़रमाया :** जिस ने ईदुल फ़ित्र के बाद (शव्वाल में) छे रोज़े रख लिये, तो उस ने पूरे साल के रोज़े रखे कि जो एक नेकी लाएगा, उसे दस मिलेंगी।

(ابن ماجه، کتاب الصیام، باب الصیام ستة ایام...الخ، ۲/۳۳۳، حدیث: ۱۷۱۵)

ख़लीले मिल्लत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद ख़लील ख़ान क़ादिरी बरकाती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : येह रोज़े ईद के बाद मुसल्सल रखे जाएं तब भी ह़रज नहीं और बेहतर येह है कि हर हफ़्ते में दो रोज़े और ईदुल फ़ित्र के दूसरे रोज़ एक रोज़ा रख ले और पूरे माह में रखे, तो और भी मुनासिब मालूम होता है। (सुन्नी बिहिश्ती ज़ेवर, स. 347, मुलख़्ख़सन) अल ग़रज़ ! ईदुल फ़ित्र का दिन छोड़ कर सारे महीने में जब चाहें शश ईद के रोज़े रख सकती हैं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ह़दीसे पाक के बारे में मदनी फूल

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द मदनी फूल बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करती हूं । शहनशाहे नबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की, उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की, वोह जन्नत में मेरे साथ होगा । आइये ! ह़दीसे पाक के बारे में चन्द मदनी फूल सुनने की सआ़दत ह़ासिल करती हैं :

पहले 2 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा कीजिये :

1. **फ़रमाया :** जो शख़्स दीनी मुआ़मलात के बारे में चालीस ह़दीसें याद कर के मेरी उम्मत तक पहुंचा देगा, **अल्लाह** पाक (क़ियामत के दिन) उस को इस शान के साथ उठाएगा कि वोह फ़क़ीह होगा, मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा और उस के लिये गवाही दूंगा । (مشکاۃ المصابیح، کتاب العلم، الفصل الثالث، ۱/۶۸، حدیث:۲۵۸)
2. **फ़रमाया : अल्लाह** पाक उस को तरो ताज़ा रखे जो मेरी ह़दीस को सुने, याद रखे और दूसरों तक पहुंचाए । (ترمذی، ۴/۲۹۸، حدیث:۲۶۶۵)

❖ हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ौल, फ़ेल, ह़ाल और तक़रीर को **ह़दीस** कहतें हैं ।

❖ इस इ़ल्म को ह़ासिल करना फ़र्ज़े किफ़ाया है अगर सारी उम्मत में इस का आ़लिम न पाया जाए तो सारी उम्मत गुनहगार होगी ।

❖ क़ुरआने मजीद की त़रह़ ह़दीसे रसूल صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी अह़कामे शरीअ़त का बुन्यादी मआख़िज़ है ।

❖ ह़दीस की रहनुमाई के बग़ैर अह़कामे इलाही की तफ़्सीलात जानना और आयाते क़ुरआनी का मनशा व मुराद समझना मुमकिन नहीं।

❖ क़ुरआने मजीद के बाद अह़कामे शरीअ़त की दलील बनने में ह़दीस ही का ज़रीआ़ है।

❖ क़ुरआने मजीद व ह़दीस दोनों ही दीने इस्लाम की मर्कज़ी बुन्याद और अह़कामें शर्अ़ की मज़बूत़ दलीलें हैं।

❖ बग़ैर अह़ादीसे रसूल पर ईमान लाए हुवे न कोई क़ुरआन के मआ़नी व मत़ालिब को कमा ह़क़्क़ुहू समझ सकता है न दीने इस्लाम पर अ़मल कर सकता है।

❖ इस्लाम में कलामुल्लाह (यानी क़ुरआने करीम) के बाद कलामे रसूलिल्लाह (यानी ह़दीस) का दरजा है। (मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 2)

❖ हर इन्सान पर ह़ुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام की इत़ाअ़त फ़र्ज़ है और येह इत़ाअ़त बिग़ैर ह़दीस व सुन्नत जाने ना मुमकिन है। (मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 9)

❖ अह़ादीस से इन्कार के बाद क़ुरआन पर ईमान का दावा बात़िल मह़ज़ है। (नुज़्हतुल क़ारी, 1 / 36)

❖ जब तक येह मालूम न हो जाए कि येह वाक़ेई ह़दीसे मुबारक है, उस वक़्त तक बयान न करें। (फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आज़म, 2 / 451)

❖ आक़ा عَلَيْهِ السَّلَام का फ़रमान है : जब तक तुम्हें यक़ीनी इ़ल्म न हो, मेरी त़रफ़ से ह़दीस बयान करने से बचो ! जिस ने जान बूझ कर मेरी त़रफ़ झूट मन्सूब किया, उसे चाहिये कि वोह अपना ठिकाना दोज़ख़ में बना ले।

(ترمذی، کتاب تفسیر القرآن عن رسول اللہ، باب ماجاء فی الذی ۔۔۔ الخ، ۴/۴۳۹، حدیث: ۲۹۶۰)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

बयान नम्बर :- 8

हर मुबल्लिग़ा बयान करने से पहले कम अज़ कम तीन बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط

اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ   وَعَلٰی اٰلِكَ وَ اَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ   وَعَلٰی اٰلِكَ وَ اَصْحٰبِكَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जिस ने दिन और रात में मेरी त़रफ़ शौक़ो मह़ब्बत की वज्ह से तीन तीन मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा, **अल्लाह** पाक पर ह़क़ है कि वोह उस के उस दिन और उस रात के गुनाह बख़्श दे । (مُعْجَم کبیر، ۱۸/۳۶۲، حدیث:۹۲۸)

काबे के बदरुद्दुजा तुम पे करोड़ों दुरूद

त़यबा के शम्सुद्दुह़ा तुम पे करोड़ों दुरूद

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 264)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइये ! **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : ''نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ'' मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है । (معجم کبیر،۶/۱۸۵،حدیث:۵۹۴۲)

मस्अला : नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा ।

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नोइ़यत के एतिबार से निय्यतों में कमी व बेशी व तब्दीली की जा सकती है।

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी। टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी। ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिये जगह कुशादा करूंगी। धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी। صَلُّوا عَلَى الْحَبِیْب، اُذْکُرُوا اللّٰہ، تُوبُوا اِلَی اللّٰہِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिये पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी। इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी। दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी। जो कुछ बयान होगा उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल और बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगी।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ब कसरत रोने वाला ह़ाजी

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ अपनी मायानाज़ तस्नीफ़ "**आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात**" के सफ़ह़ा नम्बर 118 पर तह़रीर फ़रमाते हैं : ह़ज़रते मुख़व्वल رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते बुहैम इजली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने मुझ से फ़रमाया : मेरा ह़ज का इरादा है, किसी

को मेरा रफ़ीक़े सफ़र बना दीजिये। चुनान्चे, मैं ने अपने एक पड़ोसी को उन के साथ सफ़रे मदीना पर आमादा कर लिया। दूसरे दिन मेरा पड़ोसी मेरे पास आया और कहने लगा : मैं ह़ज़रते बुहैम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के साथ नहीं जा सकता। मैं ने ह़ैरत से कहा : ख़ुदा की क़सम ! मैं ने कूफ़ा भर में उन जैसा बा अख़्लाक़ आदमी नहीं देखा, आख़िर क्या वज्ह है कि तुम उन की हमराही से ख़ुद को मह़रूम कर रहे हो ? वोह बोला : मैं ने सुना है कि वोह अक्सर रोते रहते हैं, इस लिये उन के साथ मेरा सफ़र ख़ुश गवार नहीं रहेगा। मैं ने उस को समझाया कि वोह बहुत अच्छे बुज़ुर्ग हैं, उन की सोह़बत तुम्हारे लिये बहुत फ़ाइदा बख़्श होगी। वोह मान गया। जब सफ़र के लिये ऊंटों पर समान लादा जाने लगा, तो ह़ज़रते बुहैम इजली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه एक दीवार के क़रीब बैठ कर रोने में मशग़ूल हो गये, ह़त्ता कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की दाढ़ी मुबारक और सीना अश्कों से तर हो गया और आंसू ज़मीन पर टप टप गिरने लगे। मेरे पड़ोसी ने घबरा कर मुझ से कहा : अभी तो सफ़र की शुरूआ़त है और इन का येह ह़ाल है, ख़ुदा जाने आगे क्या आ़लम होगा ! मैं ने इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे कहा : घबराइये नहीं ! सफ़र का मुआ़मला है, हो सकता है बाल बच्चों की जुदाई में रो रहे हों और आगे चल कर क़रार आ जाए। ह़ज़रते बुहैम इजली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने येह बात सुन ली और फ़रमाया : वल्लाह (**अल्लाह** पाक की क़सम) ! ऐसी बात नहीं ! इस सफ़र के सबब मुझे **सफ़रे आख़िरत** याद आ गया। येह फ़रमाते ही चीख़ें मार मार कर रोने लगे। पड़ोसी ने फिर परेशानी के आ़लम में मुझ से कहा : मैं इन के हमराह कैसे रेह सकूंगा ? हां ! इन का सफ़र ह़ज़रते दावूद त़ाई और सलाम अबुल अह़वस رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمَا के साथ होना चाहिये क्यूंकि येह दोनों ह़ज़रात भी बहुत रोते हैं, उन के साथ इन की

तरकीब ख़ूब रहेगी और मिल कर ख़ूब रोया करेंगे। मैं ने फिर पड़ोसी की हिम्मत बन्धाई, आख़िरे कार वोह इन के साथ सफ़रे मदीना पर रवाना हो गया। ह़ज़रते मुख़व्वल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब ह़ज से उन की वापसी हुई, तो मैं अपने पड़ोसी ह़ाजी के पास गया। उस ने बताया : **अल्लाह** करीम आप को जज़ाए ख़ैर दे, मैं ने उन जैसा आदमी कहीं नहीं देखा, ह़ालांकि मैं मालदार था फिर भी ग़रीब होने के बा वुजूद वोह मुझ पर ख़ूब ख़र्च करते थे, बूढ़े होने के बा वुजूद (नफ़्ल) रोज़े रखते और मेरी बेह़द ख़िदमत किया करते थे। मैं ने कहा : आप तो उन के रोने के सबब परेशान होते थे, अब क्या ज़ेह्न है ? कहा : पहले पहल मैं बल्कि दीगर क़ाफ़िले वाले भी इन के रोने की कसरत से घबरा जाते थे मगर आहिस्ता आहिस्ता इन की सोह़बत की बरकत से हम पर भी रिक़्क़त त़ारी होने लगी और इन के साथ हम सब भी मिल कर रोते थे। ह़ज़रते मुख़व्वल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه कहते हैं : इस के बाद मैं, ह़ज़रते बुहैम इजली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और अपने पड़ोसी ह़ाजी के बारे में दरयाफ़्त किया। तो फ़रमाया : बहुत अच्छा रफ़ीक़ (साथी) था, ज़िक्रुल्लाह और कुरआने करीम की तिलावत की कसरत करता था और उस के आंसू बहुत जल्द बह जाया करते थे। **अल्लाह** पाक तुम को जज़ाए ख़ैर अ़त़ा फ़रमाए। (البحر العميق، ۱/ ۳۰۰ ملخّصًا)

रोने वाली आंखें मांगो, रोना सब का काम नहीं
ज़िक्रे मह़ब्बत आ़म है लेकिन सोज़े मह़ब्बत आ़म नहीं

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान कर्दा ह़िकायत से हमें कई मुफ़ीद बातें सीखने को मिलीं, मसलन : ❖ बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن हर वक़्त यादे इलाही में अश्कबार रहा करते थे, रिक़्क़तो सोज़ उन पर त़ारी

रहता था, जब उन्हें मालूम होता कि उन्हें भी **अल्लाह** पाक की बारगाह से बुलावा आया है तो येह ख़ुश ख़बरी सुन कर उन की गिर्या ओ ज़ारी में मज़ीद इज़ाफ़ा हो जाता और उन्हें सफ़रे आख़िरत की याद तड़पाने लगती । ❖ येह ह़ज़रात सफ़रे मदीना के दौरान जहां मुख़्तलिफ़ इबादात का सिलसिला जारी रखते, वहीं येह ख़ूबी भी उन के वुजूद का ह़िस्सा होती कि ब ज़ाहिर बदनी और माली लिह़ाज़ से कमज़ोर होने के बा वुजूद भी **अल्लाह** पाक के मुक़द्दस घर के मेहमानों (Guests) की ख़ैर ख़्वाही में कोई कमी बाक़ी न रखते । **ऐ काश** ! यादे इलाही में आंसू बहाने, फ़िक्रे आख़िरत में तड़पने और नफ़्ल रोज़े रखने का येह मदनी जज़्बा हमें भी नसीब हो जाए । ❖ इस ह़िकायत से येह दर्स भी मिला कि जब कभी क़िस्मत का सितारा चमके, सफ़रे ह़ज व ज़ियारते मदीना का सुनहरी मौक़अ़ मुयस्सर आए, तो इस मुबारक सफ़र में हमें ऐसी सोह़बत इख़्तियार करनी चाहिये जिस की बरकत से अ़मल का जज़्बा बढ़े, सफ़र के आदाब पूरी त़रह़ बजा लाने में मदद मिले, नर्म हो जाए, दर्दे मदीना मिले, दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा व फ़िक्रे आख़िरत बेदार हो, त़बीअ़त नफ़्ल इबादात बजा लाने की त़रफ़ माइल हो और तिलावते क़ुरआन का ज़ौक़ो शौक़ नसीब हो ।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अह़ादीसे करीमा में अच्छे लोगों की सोह़बत इख़्तियार करने की तरग़ीब इरशाद फ़रमाई गई है । आइये ! इस बारे में 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा कीजिये : चुनान्चे,

अच्छी सोह़बत इख़्तियार करने की तरग़ीब

1. इरशाद फ़रमाया : बड़ों के पास बैठा करो, उ़लमा से बातें पूछा करो और ह़िक्मत वालों से मेल जोल रखो । (معجم کبیر، ۲۲/۱۲۵، حدیث: ۳۲۴)

2. इरशाद फ़रमाया : अच्छा साथी वोह है कि जब तू ख़ुदा को याद करे तो वोह तेरी मदद करे और जब तू भूले तो वोह तुझे याद दिलाए। (رسائل ابن ابی الدنیا، کتاب الاخوان، باب من امر بصحبتہ۔۔۔الخ، ۸/ ۱۶۱، حدیث: ۴۲)

3. इरशाद फ़रमाया : अच्छा हम नशीन वोह है कि उसे देखने से तुम्हें ख़ुदा याद आए, उस की गुफ़्तगू से तुम्हारे अ़मल में ज़ियादती हो और उस का अ़मल तुम्हें आख़िरत की याद दिलाए।

(جامع صغیر، ص ۲۴۷، حدیث: ۴۰۶۳)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बैतुल्लाह शरीफ़ का ह़ज करना वोह अ़ज़ीम और उ़म्दा इबादत है कि आ़शिक़ाते रसूल इस इबादत को बजा लाने के लिये गिड़गिड़ा कर दुआ़एं मांगती हैं, दूसरों से दुआ़एं करवाती हैं, इस मक़्सद के हुसूल की ख़ाति़र बीसियां (कमेटियां) डालती हैं, अपनी ह़लाल रक़म से कुछ न कुछ अलग से जम्अ़ करती है फिर मख़्सूस रक़म जम्अ़ हो जाने के बाद फ़रीज़ए ह़ज की अदाएगी के लिये इस उम्मीद पर दरख़ास्तें (*Applications*) जम्अ़ करवाती हैं कि اِنْ شَآءَ اللہ अब की बार उन का नाम भी क़ुरआ़ अन्दाज़ी में निकलेगा और वोह भी ह़ज की सआ़दत पा कर वहां के दिलरुबा नज़्ज़ारों से अपनी आंखें ठन्डी करेंगी, मक़ामाते मुक़द्दसा पर जा कर, रो रो कर अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी मांगेगी, अपना ह़ाले दिल सुनाएंगी और दुन्या ओ आख़िरत की भलाइयां त़लब करेंगी फिर जिस का नाम क़ुरआ़ अन्दाज़ी में निकल आता है तो उस की ख़ुशी की इन्तिहा नहीं रहती क्यूंकि कुछ ही दिनों बाद वोह ख़्वाब में नहीं बल्कि ह़क़ीक़त में उस शहरे मह़बूब यानी मक्का शरीफ़ की ह़ुदूद में दाख़िल हो

जाएगी जिस की शानो अ़ज़मत कुरआने करीम में बयान हुई है । चुनान्चे, पारह 1, सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 126 में इरशाद होता है :

وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا (پ۱، البقرۃ:۱۲۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जब अ़र्ज़ की इब्राहीम ने कि ऐ रब मेरे ! इस शह्र को अमान वाला कर दे ।*

पारह 30, सूरतुल बलद की आयत नम्बर 1 और 2 में इरशादे बारी है :

لَاۤ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِۙ(۱) وَ اَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِۙ(۲) (پ۳۰، البلد:۱،۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जब अ़र्ज़ की इब्राहीम ने कि ऐ रब मेरे ! इस शह्र को अमान वाला कर दे ।*

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मुफ़स्सिरीने किराम का इस बात पर इजमाअ़ (इत्तेफ़ाक़) है कि इस आयते मुबारका में **अल्लाह** पाक ने जिस शह्र की क़सम ज़िक्र फ़रमाई है, वोह मक्का शरीफ़ है । इसी आयते मुबारका की त़रफ़ इशारा करते हुवे अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते उ़मर फ़ारूके़ आज़म رَضِیَ اللہُ عَنْہ, नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जनाब में यूं अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे मां-बाप आप पर फ़िदा हों ! आप की फ़ज़ीलत **अल्लाह** पाक के यहां इतनी बुलन्द है कि आप की ह़याते मुबारका की ही **अल्लाह** करीम ने क़सम ज़िक्र फ़रमाई है, न कि दूसरे अम्बिया ए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की और आप का मक़ामो मर्तबा उस के यहां इतना बुलन्द है कि उस ने لَاۤ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِۙ(۱) के ज़रीए़ आप के मुबारक क़दमों की ख़ाक की क़सम ज़िक्र फ़रमाई है ।

(फ़तावा रज़विय्या, 5 / 556, شرح زرقانی علی المواھب، الفصل الخامس۔۔۔ الخ، ۸/ ۴۹۳)

आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ अपने मश्हूरे ज़माना नातिया दीवान "**ह़दाइक़े बख़्शिश**" में लिखते हैं :

वोह ख़ुदा ने है मर्तबा तुझ को दिया न किसी को मिले, न किसी को मिला
कि कलामे मजीद ने खाई शहा तेरे शह्‌रो कलामो बक़ा की क़सम

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 80)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जिस त़रह़ क़ुरआने करीम मक्का शरीफ़ की शानो अ़ज़मत की गवाही दे रहा है, इसी त़रह़ मुख़्तलिफ़ अह़ादीसे मुबारका में भी मक्का शरीफ़ के अ़ज़ीमुश्शान फ़ज़ाइल को बयान किया गया है। आइये ! हम भी वोह फ़ज़ाइल सुनें ताकि हमारे दिलो दिमाग़ में भी इस मुक़द्दस शह्‌र की शानो अ़ज़मत मज़ीद उजागर हो जाए। चुनान्चे,

मक्के मदीने की ख़ुसूसिय्यत

❖ इरशाद फ़रमाया : لَا يَدْخُلُ الدَّجَّالُ مَكَّةَ وَلَا الْمَدِيْنَةَ मक्के शरीफ़ और मदीने शरीफ़ में दज्जाल दाख़िल नहीं हो सकेगा।

(مسند امام احمد، مسند السيدة رضی اللہ عنہا، ۱۰/۸۵، حدیث: ۲۶۱۰۶)

या रब हमें मक्के की फ़ज़ाओं में बुला ले
और ख़ानए काबा का करें जम के नज़ारा
जो हिज्रे मदीना में तड़पते हैं शबो रोज़
कर लें कभी त़यबा का शहा ! वोह भी नज़ारा

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 170)

मक्के की गर्मी पर सब्र की फ़ज़ीलत

❖ इरशाद फ़रमाया : مَنْ صَبَرَ عَلٰى حَرِّ مَكَّةَ سَاعَةً مِّنْ نَهَارٍ تَبَاعَدَتْ مِنْهُ النَّارُ जो शख़्स दिन के कुछ वक़्त मक्के शरीफ़ की गर्मी पर सब्र करे, जहन्नम की आग उस से दूर हो जाती है। (اخبار مكة، ۲/۳۱۱، حدیث: ۱۵۶۵)

इम्तिहां दरपेश हो राहे मदीना में अगर
सब्र कर, तू सब्र कर, हां ! सब्र कर, बस सब्र कर

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 687)

मक्के मदीने में मरने की फ़ज़ीलत

❖ इरशाद फ़रमाया : जिस शख़्स की ह़ज या उ़मरह करने की निय्यत थी और इसी ह़ालत में उसे ह़रमैन, यानी मक्के या मदीने में मौत आ गई, तो **अल्लाह** पाक उसे बरोज़े क़ियामत इस त़रह़ उठाएगा कि उस पर न ह़िसाब होगा, न अ़ज़ाब । एक दूसरी रिवायत में है : بُعِثَ مِنَ الْاٰمِنِيْنَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ वोह बरोज़े क़ियामत अम्न वाले लोगों में उठाया जाएगा ।

(مصنف عبد الرزاق، کتاب الاشربة و الظروف، باب سکنی المدینة، ۹/۱۷۴، حدیث: ۱۷۴۷۹)

बेहतरीन ज़मीन

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़दी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा कि आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मक़ामे ह़ज़्वरा के पास अपनी ऊंटनी पर बैठे फ़रमा रहे थे : **अल्लाह** पाक की क़सम ! तू **अल्लाह** की ज़मीन में बेहतरीन ज़मीन है और **अल्लाह** की तमाम ज़मीन में मुझे ज़ियादा प्यारी है । ख़ुदा पाक की क़सम ! अगर मुझे इस जगह से न निकाला जाता, तो मैं हरगिज़ न निकलता ।

(ابن ماجه، کتاب المناسك، باب فضل مكة، ۳/۵۱۸، حدیث: ۳۱۰۸)

शारेह़े बुख़ारी, मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : येह इरशाद हिजरत के वक़्त का है, उस वक़्त तक मदीनए पाक ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुशर्रफ़ नहीं हुवा था,

उस वक़्त तक मक्का शरीफ़ पूरी सरज़मीन से अफ़्ज़ल था मगर जब हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीनए पाक तशरीफ़ लाए, तो येह शरफ़ इसे (मदीना शरीफ़ को) ह़ासिल हो गया। (नुज़्हतुल क़ारी, 2 / 711)

मक्तबतुल मदीना की किताब **"मल्फ़ूज़ाते आला ह़ज़रत"** सफ़ह़ा 236 पर है, **अ़र्ज़ :** हुज़ूर ! मदीनए त़य्यिबा में एक नमाज़ पचास हज़ार का सवाब रखती है और मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में एक लाख का, इस से मक्कए मुअ़ज़्ज़मा का अफ़्ज़ल होना समझा जाता है ? **इरशाद :** जम्हूर ह़नफ़िय्या (यानी अक्सर ह़नफ़ी उ़लमा) का येह ही मस्लक है और इमाम मालिक رَحۡمَۃُ اللهِ عَلَيۡه के नज़्दीक मदीना अफ़्ज़ल और येही मज़्हब अमीरुल मोमिनीन, फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللهُ عَنۡه का है। एक सहाबी (رَضِیَ اللهُ عَنۡه) ने कहा : मक्कए मुअ़ज़्ज़मा अफ़्ज़ल है। (फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللهُ عَنۡه ने) फ़रमाया : क्या तुम कहते हो कि मक्का, मदीने से अफ़्ज़ल है ! उन्हों ने कहा : वल्लाह ! बैतुल्लाह व ह़रमुल्लाह। फ़रमाया : मैं बैतुल्लाह और ह़रमुल्लाह (के बारे) में कुछ नहीं कहता, क्या तुम कहते हो कि मक्का, मदीने से अफ़्ज़ल है ? उन्हों ने कहा : बख़ुदा ख़ानए ख़ुदा और ह़रमे ख़ुदा। फ़रमाया : मैं ख़ानए ख़ुदा व ह़रमे ख़ुदा (के बारे) में कुछ नहीं कहता, क्या तुम कहते हो कि मक्का, मदीने से अफ़्ज़ल है ? (موطّا امام مالك، كتاب الجامع، باب ماجاء فى امر المدينة، ٢/٣٩٦، حديث: ١٧٠٠) वोह (सहाबी) वोही कहते रहे और अमीरुल मोमिनीन (رَضِیَ اللهُ عَنۡه) येही फ़रमाते रहे और येही मेरा (यानी आला ह़ज़रत का) मस्लक है। सह़ीह़ ह़दीस में है, नबी صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : اَلۡمَدِيۡنَةُ خَيۡرٌ لَّهُمۡ لَوۡ كَانُوۡا يَعۡلَمُوۡنَ मदीना उन के लिये बेहतर है अगर वोह जानें।

(بخاری، کتاب فضائل المدينة، باب من رغب عن المدينة، ١/ ٦١٨، حديث: ١٨٧٥)

दूसरी ह़दीस नस्से सरीह़ है कि फ़रमाया : اَلْمَدِيْنَةُ خَيْرٌ مِّنْ مَّكَّةَ मदीनए पाक, मक्के शरीफ़ से अफ़्ज़ल है। (مُعْجَم كبير، ۲۸۸/۴،حديث:۴۴۵۰)

मक्के से इस लिये भी अफ़्ज़ल हुवा मदीना

ह़िस्से में इस के आया मीठे नबी का रौज़ा

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 320)

हुर्मत वाला शह्‌र

रसूले अकरम صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! इस शह्‌र को उसी दिन से **अल्लाह** पाक ने ह़रम बना दिया है, जिस दिन आसमान व ज़मीन पैदा किये, लिहाज़ा येह क़ियामत तक **अल्लाह** पाक के ह़राम फ़रमाने से ह़राम (यानी हुर्मत वाला) है।

(ابن ماجة، كتاب المناسك، باب فضل مكة، ۳/ ۵۱۹، حديث : ۳۱۰۹)

ठन्डी ठन्डी हवा ह़रम की है

*बारिश **अल्लाह** के करम की है*

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 140)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुना आप ने ! **अल्लाह** पाक ने मक्कए मुकर्रमा को कैसी अ़ज़ीमुश्शान ख़ुसूसिय्यातो बरकात से नवाज़ा है, लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम दुन्यावी उल्झनों में उल्झे रहने के बजाए ह़रमैने त़य्यिबैन की ह़ाज़िरी के लिये कोशिशें जारी रखें, इस के लिये **अल्लाह** पाक की बारगाह में रो रो कर दुआ़एं मांगें, वालिदैन और **अल्लाह** पाक के मक़्बूल बन्दों की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर उन से दुआ़एं करवाएं, इस उम्मीद पर कि कभी तो बाबे करम खुलेगा, कभी तो हमारा भी बुलावा

आ जाएगा और कभी तो हमारा नाम भी ह़ाजियों की फ़ेह्‌रिस्त (List) में शामिल होगा।

ह़ाजियों के बन रहे हैं क़ाफ़िले फिर या नबी
फिर नज़र में फिर गए ह़ज के मनाज़िर या नबी !
कर रहे हैं जाने वाले ह़ज की अब तय्यारियां
रह न जाऊं मैं कहीं कर दो करम फिर या नबी !

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 376)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ह़रमैने शरीफ़ैन की ह़ाज़िरी की तड़प अपने अन्दर पैदा करने के लिये बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की सीरत का मुत़ालआ़ करना बेह़द मुफ़ीद है, येह ह़ज़रात मक्के, मदीने की सरज़मीन से सच्ची अ़क़ीदत व मह़ब्बत फ़रमाया करते थे, इन मक़ामात से इन की मह़ब्बत का अन्दाज़ा इस बात से लगाइये कि बाज़ बुज़ुर्गों का येह मामूल था कि वोह किसी और मुल्क या शह्‌र के रिहाइशी होने के बा वुजूद भी मक्कए पाक के फ़ुयूज़ो बरकात ह़ासिल करने की ग़रज़ से ज़िन्दगी (Life) का कसीर ह़िस्सा शह्‌रे मह़बूब की ख़ुश्बूदार, ख़ुश गवार फ़ज़ाओं में सांसे लेते गुज़ारा करते और हर साल इस्तिक़ामत के साथ बैतुल्लाह शरीफ़ के ह़ज की सआ़दत से भी फ़ैज़याब होते। चुनान्चे,

मुझे ह़रम शरीफ़ में ले चलो

मक्तबतुल मदीना की किताब **"मल्फ़ूज़ाते आला ह़ज़रत"** के सफ़ह़ा 198 पर है : (क़ुत़्बे मक्कए मुकर्रमा) ह़ज़रते मौलाना अ़ब्दुल ह़क़ इलाहाबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه हिन्द के बाशिन्दे और जलीलुल क़द्र आ़लिमे दीन थे, चालीस साल से ज़ाइद मक्के शरीफ़ में रिहाइश इख़्तियार किये रहे, हर

साल ज़रूर ह़ज करते। एक साल ज़मानए ह़ज में आप बहुत बीमार हो कर बिस्तर पर पड़े थे, ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम की नवीं तारीख़ को अपने शागिर्दों से कहा : मुझे ह़रम शरीफ़ में ले चलो ! कई अफ़राद उठा कर लाए और काबतुल्लाह के सामने बिठा दिया। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने ज़मज़म शरीफ़ मंगा कर पिया और दुआ़ की : इलाही ! ह़ज से मह़रूम न रख। उसी वक़्त मौला पाक ने ऐसी क़ुव्वत (Energy) अ़ता फ़रमाई कि उठ कर अपने पाउं से अ़रफ़ात शरीफ़ गए और ह़ज अदा किया।

(मल्फ़ूज़ाते आला ह़ज़रत, स. 198, मुलख़्ख़सन)

दिखा हर बरस तू ह़रम की बहारें   तू मक्का मदीना दिखा या इलाही
शरफ़ हर बरस ह़ज का पाऊं ख़ुदाया   चले त़यबा फिर क़ाफ़िला या इलाही

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 100)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللهُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! سُبْحٰنَ الله ! सुना आप ने ! क़ुत़्बे मक्कए मुकर्रमा, ह़ज़रते मौलाना अ़ब्दुल ह़क़ इलाहाबादी मुहाजिरे मक्की رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **अल्लाह** करीम के किस क़दर ज़बरदस्त वली थे, बा वुजूद येह कि इन्तिहाई बीमार है, बिस्तर पर तशरीफ़ फ़रमा हैं, चलने फिरने से आ़जिज़ हैं और कमज़ोरी (Weakness) ह़द से ज़ियादा बढ़ चुकी है मगर चूंकि उन का जोश व जज़्बा पहाड़ से भी ज़ियादा पुख़्ता था, ह़ज की सआ़दत ह़ासिल करने की तड़प भी अपने उ़रूज पर थी, गोया कि उन की बस येही धुन थी कि :

हर साल या इलाही मुझे ह़ज नसीब हो
जब तक जियूं मैं आ़लमे ना पाएदार में

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 274)

लिहाज़ा जैसे ही आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को ह़रमे काबा में ले जाया गया, तो वहां पहुंचते ही आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने ज़मज़म शरीफ़ पी कर रब्बे करीम की बारगाह में अपनी तड़प का इज़्हार कर दिया, बस फिर क्या था, बाबे करम खुला, दरयाए रह़मत जोश में आया, इन्तेज़ार की घड़ियां ख़त्म हुईं और **अल्लाह** पाक के करम से उन्हें ऐसी कुव्वत नसीब हुई कि ख़ुद अपने पाउं पर चल कर अ़रफ़ात भी तशरीफ़ ले गए और ह़ज की सआ़दत पाने में भी कामयाब हो गए।

*तू ने मुझ को ह़ज पे बुलाया — या **अल्लाह** मेरी झोली भर दे*
*गिर्दे काबा ख़ूब फिराया — या **अल्लाह** मेरी झोली भर दे*
*मैदाने अ़रफ़ात दिखाया — या **अल्लाह** मेरी झोली भर दे*
*बख़्श दे हर ह़ाजी को ख़ुदाया — या **अल्लाह** मेरी झोली भर दे*

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 121)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान कर्दा ह़िकायत से येह भी मालूम हुवा कि आबे ज़मज़म वोह बा बरकत पानी है जिसे पी कर दुआ़ मांगने से दुआ़ मक्बूल होती है। ह़दीसे पाक में क़बूलिय्यते दुआ़ के इलावा आबे ज़मज़म के और भी फ़वाइदो समरात बयान किये गए हैं। जैसा कि :

बरकाते आबे ज़मज़म

नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : आबे ज़मज़म हर उस मक़्सद के लिये है, जिस मक़्सद के लिये इसे पिया जाए, अगर तुम इसे शिफ़ा की ग़रज़ से पियोगे तो **अल्लाह** पाक तुम्हें शिफ़ा देगा, अगर तुम इसे पनाह ह़ासिल करने के लिये पियोगे तो **अल्लाह** करीम तुम्हें पनाह अ़त़ा फ़रमाएगा, अगर तुम इसे अपनी प्यास बुझाने के लिये पियोगे तो **अल्लाह** पाक तुम्हारी प्यास बुझा देगा। (इस ह़दीसे पाक

के रावी बयान करते हैं कि) ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا जब आबे ज़मज़म पीते तो येह दुआ़ मांगते : اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَسۡئَلُكَ عِلۡمًا نَافِعًا وَّرِزۡقًا وَّاسِعًا وَّشِفَاءً مِّنۡ کُلِّ دَاءٍ ऐ **अल्लाह** करीम ! मैं तुझ से नफ़्अ़ देने वाला इ़ल्म, कुशादा रिज़्क़ और हर बीमारी से शिफ़ा का सुवाल करता हूं।

(مستدرک، کتاب المناسک، باب ماءزمزم لماشرب لہ، ۲/ ۱۳۲، حدیث: ۱۷۸۲)

आइये ! ज़मज़म शरीफ़ की ह़ैरत अंगेज़ बरकत पर मुश्तमिल एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ सुनिये और झूमिये : चुनान्चे,

ज़मज़म से इ़लाज हो गया

ह़म्ज़ा बिन वासिल अपने वालिदे गिरामी से नक़्ल करते हैं : ह़रमे मोह़तरम में एक आदमी ने सत्तू खाए, उस में सूई (*Needle*) थी जो कि ह़ल्क़ में चुभ गई और उस की जान पर बन गई, लाख जतन (कोशिश) करने के बा वुजूद आराम न हुवा। उस ने कराहते हुवे कहा : मेरा आख़िरी इ़लाज ज़मज़म है, मुझे आबे ज़मज़म पिलाओ, اِنۡ شَآءَ اللّٰہ मैं ठीक हो जाऊंगा। चुनान्चे, उसे आबे ज़मज़म पिलाया गया, اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ आबे ज़मज़म शरीफ़ की बरकत से उसे सिह़्ह़त मिल गई। रावी कहते हैं : मेरे वालिद साह़िब ने उस आदमी को कई दिन बाद ह़रम शरीफ़ में देखा कि वोह पुर सुकून और मुकम्मल सिह़्ह़तयाब है। (شفاء الغرام، الباب العشرون، ۱/ ۳۳۸ملخصاً)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! शह्‌रे मक्का को सिर्फ़ येही एक शरफ़ ह़ासिल होता तो भी इस की शानो अ़ज़मत के लिये काफ़ी था कि इस मुबारक सरज़मीन पर बैतुल्लाह शरीफ़ जल्वागर है मगर क़ुरबान जाइये ! कि इस के इ़लावा भी इस पुरनूर शह्‌र के फ़ज़ाइल व ख़ुसूसिय्यात इस क़दर ज़ियादा हैं कि दिल चाहता है, बस बयान करती और सुनती चली

जाएं क्यूंकि इस मुक़द्दस शहर (Holy City) में जगह जगह प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के प्यारे सहाबए किराम رَضِىَ اللهُ عَنْهُم से निस्बत रखने वाली मुक़द्दस व यादगार मसाजिद, कुंवें, ग़ारें, तामीरात और मज़ारात वग़ैरा मौजूद हैं।

आइये ! हुसूले बरकत और नुज़ूले रहमत के लिये मक्के शरीफ़ की चन्द खुसूसिय्यात के बारे में सुनिये और अपने दिल में इस पाकीज़ा शहर की अज़मत मज़ीद बढ़ाने का सामान कीजिये : चुनान्चे,

मक्के शरीफ़ की चन्द खुसूसिय्यात

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी किताब "**आशिक़ाने रसूल की 130 हिकायात**" में मक्के शरीफ़ की दिल नशीन खुसूसिय्यात बयान करते हुवे तहरीर फ़रमाते हैं : ❖ नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मक्के शरीफ़ में पैदा हुवे। ❖ प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दीने इस्लाम की तब्लीग़ का आग़ाज़ यहीं से फ़रमाया। ❖ यहीं काबा शरीफ़ है, इसी का तवाफ़ किया जाता है और नमाज़ में दुन्या भर से इसी तरफ़ मुंह किया जाता है। ❖ मस्जिदुल हराम शरीफ़ यहीं पर है, जिस में एक नमाज़ का सवाब एक लाख नमाज़ों के बराबर है। ❖ आबे ज़मज़म का कुंवां। ❖ हजरे अस्वद। ❖ मक़ामे इब्राहीम और ❖ सफ़ा, मरवह यहीं हैं। ❖ मीक़ात के बाहर से आने वाले बिग़ैर एहराम के मक्के में दाख़िल नहीं हो सकते। ❖ दुन्या भर से मुसलमान हज की सआदत पाने के लिये यहीं हाज़िर होते हैं। ❖ जो इस शहरे मुक़द्दस में दाख़िल हो जाए, अम्न पाने वाला होगा। ❖ दिन का कुछ वक़्त यहां की गर्मी पर सब्र कर लेने वाले को जहन्नम की आग से दूर किया जाता है। ❖ यहां ग़ारे हिरा है, जहां मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर पहली वही नाज़िल हुई।

❖ यहां पर हर मौसिम के फल (Fruits) मिलते हैं। ❖ मेराजुन्नबी और ❖ चांद के दो टुकड़े होने के मोजिज़ात इस शह्‌र में ज़ाहिर हुवे। ❖ दुन्या का सब से पेहला पहाड़ **जबले अबी कुबैस** यहीं वाक़ेअ़ है। ❖ प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यहां अपनी ह़याते ज़ाहिरी के 53 बरस गुज़ारे। ❖ ह़ज़रते इमाम मह्‌दी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه का ज़ुहूर मक्के शरीफ़ में ही होगा। (आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात, स. 200, मुलख़्ख़सन)

मक्के की ह़सीं शाम की देखूं मैं बहारें

फिर देखूं मदीने की शहा सुब्ह़े दिल आरा

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 170)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

मक्के शरीफ़ के बा बरकत मक़ामात

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! याद रखिए ! शह्‌रे मह़बूब यानी मक्के शरीफ़ में फ़ज़ीलत व बरकत वाले बहुत से मक़ामात मौजूद हैं। आइये ! चन्द बा बरकत मक़ामात का तज़किरा सुनती हैं : चुनान्चे,

मस्जिदे जिइर्राना

मस्जिदे जिइर्राना : मक्के शरीफ़ से जानिबे त़ाइफ़ तक़रीबन 26 किलोमीटर पर वाक़ेअ़ है। फ़त्ह़े मक्का के बाद त़ाइफ़ शरीफ़ फ़त्ह़ कर के वापसी पर हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यहां से उ़मरे का एह़राम ज़ेबे तन फ़रमाया था। यूसुफ़ बिन मालिक رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मक़ामे जिइर्राना से 300 अम्बिया ए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उ़मरे का एह़राम बांधा है। सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (मक़ामे) जिइर्राना पर अपना

अ़सा मुबारक गाड़ा जिस से पानी का चश्मा उबला जो निहायत ठन्डा और मीठा था । (بلد الامین، ص۲۲۱، ملخصا)

मश्हूर है कि इस जगह पर कुंवां है । अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ताइफ़ से वापसी पर यहां क़ियाम (Stay) किया और यहीं माले ग़नीमत भी तक़्सीम फ़रमाया । आप صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने 28 शव्वालुल मुकर्रम को यहां से उ़मरे का एह़राम बांधा था । (بلد الامین، ص ۲۲۰، ۲۲۱) इस जगह की निस्बत कुरैश की एक औ़रत की त़रफ़ है जिस का लक़ब **"जिइर्राना"** था । (بلد الامین، ص۱۳۷)

अ़वाम इस मक़ाम को **"बड़ा उ़मरह"** बोलते हैं । येह निहायत ही पुरसोज़ मक़ाम है । जैसा कि :

100 से ज़ाइद बार दीदारे मुस्त़फ़ा

मश्हूर मुह़द्दिस, ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ **"अख़्बारुल अख़्यार"** में नक़्ल करते हैं : मेरे पीरो मुर्शिद, ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब मुत्तक़ी رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ ने मुझे ताकीद फ़रमाई है कि मौक़अ़ मिलने पर जिइर्राना से ज़रूर उ़मरे का एह़राम बांधना, येह ऐसा मुतबर्रक (यानी बरकत वाला) मक़ाम है कि मैं ने यहां एक रात के मुख़्तसर से ह़िस्से के अन्दर सौ से ज़ाइद बार मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़्वाब में दीदार किया है, اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحۡسَانِہٖ ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब मुत्तक़ी رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ का मामूल था कि उ़मरे का एह़राम बांधने के लिये रोज़ा रख कर पैदल जिइर्राना जाया करते थे ।

(आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात, स. 232, 233 मुलख़्ख़सन, اخبار الاخیار، ص۲۷۸ ملخصاً)

कभी तो मुझे ख़्वाब में मरे मौला
हो दीदारे माहे अ़रब या इलाही

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 108)

मस्जिदे तन्ईम

मस्जिदुल ह़राम से तक़रीबन 7 किलोमीटर पर ह़ुदूदे ह़रम से बाहर मक़ामे तन्ईम पर येह आ़लीशान मस्जिद वाक़ेअ़ है, इसे "**मस्जिदे आ़इशा**" भी कहते हैं। ख़ुश नसीब ज़ाइरीने किराम यहां से उ़मरे का एह़राम बांधते हैं। अ़वाम इस मक़ाम को "**छोटा उ़मरह**" बोलते हैं।

मस्जिदे तन्ईम की तामीरात

तन्ई़म के इस तारीख़ी मक़ाम पर सब से पेहले मुह़म्मद बिन अ़ली शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने मस्जिद तामीर की फिर अबुल अ़ब्बास अमीरे मक्का ने कुब्बा (यानी गुम्बद) बनवाया, बाद अज़ां एक बूढ़ी ख़ातून ने ख़ूबसूरत मस्जिद बनवाई। (بلدالامین ص۱۳۸،۱۳۹)

जो मुसलमां ख़ानए काबा का करते हैं त़वाफ़
उन को भी और सारे ही सजदा गुज़ारों को सलाम

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 609)

विलादत गाहे सरवरे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

ह़ज़रते अ़ल्लामा क़ुत़्बुद्दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत गाह पर दुआ़ क़बूल होती है। (بلدالامین ص۲۰۱) यहां पहुंचने का आसान त़रीक़ा येह है कि आप कोहे मरवह के किसी भी क़रीबी दरवाज़े से बाहर आ जाइये, सामने नमाज़ियों के लिये बहुत बड़ा इह़ात़ा बना हुवा है, इह़ात़े के उस पार येह मकाने आ़लीशान अपने जल्वे लुटा रहा है, اِنْ شَآءَ الله दूर ही से नज़र आ जाएगा। ख़लीफ़ा हारून रशीद

رَحۡمَةُ اللّٰہِ عَلَیۡه की वालिदए मोह़तरमा رَحۡمَةُ اللّٰہِ عَلَیۡھَا ने यहां मस्जिद तामीर करवाई थी। आज कल इस मकाने अ़ज़्मत निशान की जगह लाइब्रेरी (Library) क़ाइम है और इस पर येह बोर्ड लगा हुवा है : **"मक्तबतु मक्कतल मुकर्रमा।"** (आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात, स. 237)

मक्के में उन की जाए विलादत पे या ख़ुदा
फिर चश्मे अश्कबार जमाना नसीब हो

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 90)

ग़ारे ह़िरा

ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ज़ुहूरे रिसालत से पहले ग़ारे ह़िरा में ज़िक्रो फ़िक्र में मश्ग़ूल रहे हैं। येह क़िब्ला रुख़ वाक़ेअ़ है। सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर पेहली वह़ी इसी ग़ार में उतरी जो कि اِقۡرَاۡ بِاسۡمِ رَبِّکَ الَّذِیۡ خَلَقَ ۚ﴿۱﴾ से مَا لَمۡ یَعۡلَمۡ ؕ﴿۵﴾ तक पांच आयतें हैं। येह ग़ार मुबारक मस्जिदुल ह़राम से जानिबे मश्रिक़ तक़रीबन तीन मील पर वाक़ेअ़ **"जबले ह़िरा"** पर है। इस मुबारक पहाड़ को **"जबले नूर"** भी कहते हैं। ग़ारे ह़िरा, ग़ारे सौर से अफ़्ज़ल है क्यूंकि ग़ारे सौर ने तीन दिन (Three Days) तक सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दम चूमे जबकि ग़ारे ह़िरा रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बते बा बरकत से ज़ियादा अ़र्सा मुशर्रफ़ हुवा। (आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात, स. 241)

फिर अ़रब की ह़सीं वादियां हों　　काश ! मक्के की शादाबियां हों
मुझ को दीदारे सौरो ह़िरा की　　मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 128)

ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا का मकान

मक्के मदीने के सुल्तान صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब तक मक्कए मुकर्रमा में रहे, ह़ज़रते ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا के मकाने आ़लीशान में सुकूनत पज़ीर रहे। शहज़ादए अ़ज़ीम, इब्राहीम رَضِیَ اللہُ عَنْہ के इलावा तमाम औलाद ब शुमूल शहज़ादिये कौनैन, बीबी फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا की यहीं विलादत हुई। जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ने बारहा इस मकाने आ़लीशान के अन्दर बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िरी दी, हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कसरत से नुज़ूले वह़ी इसी में हुवा। मस्जिदे ह़राम के बाद मक्कए पाक में इस से बढ़ कर अफ़्ज़ल कोई मक़ाम नहीं, सद करोड़ बल्कि अरबों खरबों अफ़्सोस ! अब इस मकाने वाला शान के निशान तक मिटा दिये गए हैं और लोगों के चलने के लिये यहां हमवार फ़र्श बना दिया गया है। मरवह की पहाड़ी के क़रीब वाक़ेअ़ बाबुल मरवह से निकल कर बाईं त़रफ़ (Left Side) ह़सरत भरी निगाहों से सिर्फ़ इस मकाने अ़र्श निशान की फ़ज़ाओं की ज़ियारत कर लीजिये। (आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात, स. 240)

ऐ ख़दीजा ! आप के घर की फ़ज़ाओं को सलाम
ठन्डी ठन्डी दिलकुशा मेहकी हवाओं को सलाम

जबले अबू क़ुबैस

जबले अबू क़ुबैस दुन्या का सब से पहला पहाड़ है जो मस्जिदुल ह़राम के बाहर सफ़ा व मरवह के क़रीब वाक़ेअ़ है। इस पहाड़ पर दुआ़ क़बूल होती है, अहले मक्का क़ह़त़साली के मौक़ेअ़ पर इस पर आ कर दुआ़ मांगते थे। ह़दीसे पाक में है कि ह़जरे अस्वद जन्नत से यहीं नाज़िल हुवा था। (الترغیب والترہیب، کتاب الحج، باب الترغیب فی الطواف۔۔۔الخ،۲/۱۲۵،حدیث: ۲۰) इस पहाड़ को

"अल अमीन" भी कहा गया है कि तूफ़ाने नूह़ में ह़जरे अस्वद इस पहाड़ (Mountain) पर ब ह़िफ़ाज़त तशरीफ़ फ़रमा रहा। एक रिवायत के मुताबिक़ काबे शरीफ़ की तामीर के मौक़अ़ पर इस पहाड़ ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को पुकार कर अ़र्ज़ की : ह़जरे अस्वद इधर है। (بلدالامین، ص۲۰۴ ملخصاً) मन्क़ूल है : हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसी पहाड़ पर जल्वा अफ़रोज़ हो कर चांद के दो टुक्ड़े फ़रमाए थे। चूंकि मक्का शरीफ़ पहाड़ों के दरमियान घिरा हुवा है। चुनान्चे, इस पर से चांद देखा जाता था। पहली (दूसरी और तीसरी) रात के चांद को **हिलाल** कहते हैं, लिहाज़ा इस जगह पर बतौरे यादगार **"मस्जिदे हिलाल"** तामीर की गई। बाज़ लोग इसे **"मस्जिदे बिलाल** رَضِیَ اللهُ عَنْه**"** कहते हैं।

(आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात, स. 238, मुलख़्ख़सन)

जबले नूरो जबले सौर और उन के ग़ारों को सलाम
नूर बरसाते पहाड़ों की क़ितारों को सलाम

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 608)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत, चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करती हूं। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की, उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की, वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنة، ۱/۵۵، حدیث:۱۷۵)

सुन्नतें आ़म करें, दीन का हम काम करें
नेक हो जाएं मुसलमान मदीने वाले

सफ़र करने की सुन्नतें और आदाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइये ! सफ़र करने की कुछ सुन्नतें और आदाब सुनने की सआ़दत ह़ासिल करती हैं : ❖ जब सफ़र करना हो तो बेहतर येह है कि पीर, जुमेरात या हफ़्ते को करे । (फ़तावा रज़विय्या, 23 / 400, मुलख़्ख़सन) ❖ औ़रत को बिग़ैर शौहर या मह़रम को साथ लिये सफ़र को जाना ह़राम है, इस में कुछ ह़ज की ख़ुसूसिय्यत नहीं, कहीं एक दिन के रास्ते पर बिग़ैर शौहर या मह़रम जाएगी तो गुनाहगार होगी । (फ़तावा रज़विय्या, 10 / 657) ❖ औ़रत को बिग़ैर मह़रम के तीन दिन या ज़ियादा की राह जाना नाजाइज़ है बल्कि एक दिन की राह जाना भी । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 4, 1 / 752) ❖ सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जुबैर बिन मुत़इम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ को सफ़र में अपने सब रुफ़क़ा से ज़ियादा ख़ुश ह़ाल रहने के लिये रवानगी से पहले येह विर्द पढ़ने की तल्क़ीन फ़रमाई : (1) सूरए काफ़िरून (2) सूरए नस्र (3) सूरए इख़्लास (4) सूरए फ़लक़ (5) सूरए नास । हर सूरत एक एक बार और हर एक की इब्तिदा में بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم और सब से आख़िर में भी एक बार **बिस्मिल्लाह** पूरी पढ़ लीजिये (इस त़रह़ सूरतें पांच होंगी और **बिस्मिल्लाह** शरीफ़ छे बार) । जुबैर बिन मुत़इम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ फ़रमाते हैं : मैं यूं तो साह़िबे माल था मगर जब सफ़र करता तो (सब रुफ़क़ा से) बदह़ाल हो जाता, जब से येह सूरतें सफ़र से क़ब्ल हमेशा पढ़नी शुरूअ़ कीं, इन की बरकत से वापसी तक ख़ुश ह़ाल और दौलतमन्द रहता । (مسند ابی یعلی، مسند عمرو بن العاص، ۲/۲۶۵، حدیث:۷۳۸۲) ❖ रास्ते की चढ़ाई की त़रफ़ या सीढ़ियों पर चढ़ते हुवे, बस वग़ैरा जब सड़क की ऊंची

जानिब जा रही हो तो **"अल्लाहु अक्बर"** और सीढ़ियों या ढलवान से उतरते हुवे سُبْحٰنَ اللہ कहिये । ❖ मन्ज़िल पर उतरते वक़्त येह पढ़िये : اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ (**तर्जमा : मैं अल्लाह** करीम के कामिल कलिमात के वासित़े से सारी मख़्लूक़ के शर से पनाह मांगता हूं), اِنْ شَآءَ اللہ हर नुक़्सान से बचेगा । (الحصنُ الحصین، ص ۸۲) दौराने सफ़र भी नमाज़ में हरगिज़ कोताही न हो । ❖ रास्ते में बस ख़राब हो जाए तो ड्राईवर या मालिकाने बस वग़ैरा को कोसने और बक बक कर के अपनी आख़िरत दाव पर लगाने के बजाए सब्र से काम लीजिये और जन्नत की त़लब में ज़िक्रो दुरूद में मश्ग़ूल हो जाइये ।

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की छपी हुई दो किताबें : (1) 312 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16** और (2) 120 सफ़्ह़ात की किताब **"सुन्नतें और आदाब"** नीज़ इस के इ़लावा शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत के दो रसाइल **"101 मदनी फूल"** और **"163 मदनी फूल"** हदिय्यतन त़लब कीजिये और पढ़िये ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान नम्बर – 9

हर मुबल्लिग़ा बयान करने से पहले कम अज़ कम तीन बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط

اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه　　وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه　　وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : **अल्लाह** पाक की ख़ातिर आपस में महब्बत रखने वाले जब आपस में मिलें और मुसाफ़ह़ा करें (यानी हाथ मिलाएं) और नबी (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक भेजें तो उन के जुदा होने से पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।

(مُسْنَدُ اَبِيْ يَعْلٰى، ج۳ص۹۵حديث۲۹۵۱)

काबे के बदरुद्दुजा तुम पे करोड़ों दुरूद　　*त़यबा के शम्सुद्दुहा तुम पे करोड़ों दुरूद*

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 264)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(اَلْمُعْجَمُ الْكَبِيْر لِلطَّبَرَانِي ج۶ ص۱۸۵ حديث ۵۹۴۲)

मस्अला :-

नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नोइ़यत के एतिबार से निय्यतों में कमी व बेशी व तब्दीली की जा सकती है।

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी। टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी। ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिये जगह कुशादा करूंगी। धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी। صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوبُوا اِلَى اللّٰه वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिये पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी। इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी। दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी। जो कुछ बयान होगा उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल और बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगी।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दरे रसूल पर ह़ाज़िर होने वाला बख़्शा गया

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ह़र्ब हिलाली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक बार मैं रौज़ए रसूल पर ह़ाज़िर था कि एक आराबी (अ़रब के

देहात का रहने वाला) आया और बारगाहे रिसालत में इस त़रह़ अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** पाक ने आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर जो सच्ची किताब उतारी है, उस में (पारह 5, सूरतुन्निसा की) येह आयत भी मौजूद है :

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا۝۶۴

(پ۵، النسآء: ۶۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ महबूब ! तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों और फिर* ***अल्लाह*** *से मुआफ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअ़त फ़रमाए तो ज़रूर* ***अल्लाह*** *को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं ।*

ऐ मेरे आक़ा ओ मौला ! मैं **अल्लाह** पाक से अपने गुनाहों की मुआफ़ी त़लब करते हुवे ह़ाज़िरे दरबार हूं और आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** पाक की बारगाह में अपने लिये सिफ़ारिश करने वाला बनाता हूं । येह कह कर वोह आ़शिक़े रसूल रोने लगा और उस की ज़बान पर येह अश्आ़र जारी थे :

يَا خَيْرَ مَنْ دُفِنَتْ بِالْقَاعِ اَعْظُمُهٗ   فَطَابَ مِنْ طِيْبِهِنَّ الْقَاعُ وَالْاَكَمُ
رُوْحِي الْفِدَاءُ لِقَبْرٍ اَنْتَ سَاكِنُهٗ   فِيْهِ الْعِفَافُ وَفِيْهِ الْجُوْدُ وَالْكَرَمُ

तर्जमा : *ऐ वोह बेहतरीन ज़ात ! जिस का मुबारक वुजूद इस ज़मीन में दफ़्न किया गया, तो इस की उ़म्दगी और पाकीज़गी से मैदान और टीले ख़ुश्बूदार हो गए । मेरी जान फ़िदा हो इस क़ब्रे अन्वर पर जिस में आप* صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم *आराम फ़रमा हैं, जिस में पाक दामनी, सख़ावत और अ़फ़्वो करम का बहुत बड़ा ख़ज़ाना है ।*

वोह आ़शिके़ रसूल काफ़ी देर तक इन अश्आ़र को दोहराता रहा फिर अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी मांगता हुवा रोती हुई आंखों से वहां से रुख़्सत हो गया। ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ह़र्ब हिलाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब मैं सोया, तो ख़्वाब में सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नसीब हुई। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : उस आराबी से मिलो, उसे ख़ुश ख़बरी सुनाओ कि **अल्लाह** पाक ने मेरी सिफ़ारिश की वज्ह से उस की मग़फ़िरत फ़रमा दी है।

(معجم ابن عساکر، ص۲۰۱، ۲۰۰ملخّصًا)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उस आराबी का रोना, करीम आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबार में तड़पना, रह़ीम आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पुकारना, मेहरबान आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में आंसू बहाना काम आ गया और प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे मग़फ़िरत की ख़ुश ख़बरी अ़ता फ़रमा दी। मालूम हुवा ! बारगाहे मुस्त़फ़ा से आज भी मग़फ़िरत के परवाने तक़्सीम होते हैं, आज भी गुनाहगारों को दामने रह़मत में छुपाया जाता है, आज भी बे सहारों की बिगड़ियां बनती हैं, आज भी ग़म के मारों के ग़म दूर किये जाते हैं और आज भी ख़ाली झोलियां भरी जाती हैं।

दुन्या में आज ऐसे कई लोग मौजूद होंगे जिन के पास बे इन्तेहा मालो दौलत है, जिन्हों ने दुन्या भर की सैर भी की होगी मगर आह ! **"मदीनए मुनव्वरा"** और उस के ह़सीन मक़ामात की ज़ियारत से मह़रूम

होंगे जब कि दूसरी जानिब वोह आ़शिक़ाने रसूल भी होंगे जिन के पास मदीने शरीफ़ जाने के लिये न तो माल था और न ही जाने के अस्बाब मगर ज़ियारते मदीना के लिये उन का रोना, उन की सच्ची तड़प, मुसल्सल दुआ़एं और मुख़्लिसाना कोशिशें रंग लाईं, अस्बाब बनते चले गए और बिल आख़िर उन्हें भी मदीनए पाक और सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद की ज़ियारत का जाम पीना नसीब हो गया।

कहां का मन्सब कहां की दौलत क़सम ख़ुदा की है येह ह़क़ीक़त
जिन्हें बुलाया है मुस्त़फ़ा ने वोही मदीने को जा रहे हैं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मदीनए त़य्यिबा वोह बरकत व अ़ज़मत वाला मुक़द्दस व मोह़तरम मक़ाम है जहां से वापस आने को जी नहीं चाहता क्यूंकि मदीनए त़य्यिबा में हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का रौज़ए अन्वर और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मन्सूब बे शुमार यादगारें मौजूद हैं, मदीनए त़य्यिबा में ऐसा दिली सुकून मिलता है जो दुन्या के किसी शहर और किसी ख़ूब सूरत मक़ाम पर भी नहीं मिलता। लिहाज़ा अगर कभी मदीने शरीफ़ जाते हुवे कोई परेशानी आ जाए या मदीनए त़य्यिबा में कोई तक्लीफ़ इस्तिक़्बाल करे, तो सब्र कर के सआ़दत समझ कर उसे क़बूल कर लेना चाहिये कि वहां तक्लीफ़ पर सब्र करने वालियों के लिये **अल्लाह** पाक के मह़बूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी शफ़ाअ़त की ख़ुश ख़बरी अ़त़ा फ़रमाई है। चुनान्चे,

मदीनए त़य्यिबा की तकालीफ़ पर सब्र की फ़ज़ीलत

रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स मेरी ज़ियारत का इरादा करते हुवे आया, वोह क़ियामत के दिन मेरी ह़िफ़ाज़त में रहेगा । जो शख़्स मदीने में रिहाइश इख़्तियार करेगा और मदीने की तकालीफ़ पर सब्र करेगा, तो मैं क़ियामत के दिन उस की गवाही दूंगा और उस की शफ़ाअ़त करूंगा । जो शख़्स ह़रमैन (यानी मक्के मदीने) में से किसी एक में मरेगा, अल्लाह पाक उस को इस ह़ाल में क़ब्र से उठाएगा कि वोह क़ियामत के ख़ौफ़ से अम्न में रहेगा । (مشکاۃ المصابیح، ۱/۵۱۲، حدیث ۲۷۵۵)

मौत अ़त्तार को मदीने में आए अब तो न जाए घर आक़ा

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 173)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आ़शिक़ाने रसूल के लिये मदीने शरीफ़ के रास्ते का हर कांटा भी फूल की त़रह़ है, लिहाज़ा सफ़रे मदीना के दौरान अगर कोई परेशानी आ जाए, कोई तंग करे, मिज़ाज के ख़िलाफ़ बात कह दे, अचानक कोई ज़मीनी या आस्मानी आफ़त आ जाए, तो उस मौक़ेअ़ पर बे सब्री करना, रोना धोना करना, उलझना, बदला लेना और शिक्वे शिकायात करना बहुत बड़ी मह़रूमी का सबब बन सकता है । यूंही जितना अ़र्सा मदीनए पाक की फ़ज़ाओं में गुज़रे, तो कोशिश कीजिये कि अदबो ताज़ीम का दामन हाथों से छूटने न पाए ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! अल्लाह वाले मदीनए पाक का बहुत ज़ियादा अदबो एह़तिराम बजा लाते हैं । आइये ! एक ज़बरदस्त आ़शिक़े रसूल बुज़ुर्ग की मदीने से मह़ब्बत और वहां के अदब के बारे में दिल नशीन वाक़िआ़ सुनती हैं : चुनान्चे,

मदीने से महब्बत का अन्दाज़

मालिकियों को अज़ीम पेश्वा हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ज़बरदस्त आशिक़े रसूल और मदीनए मुनव्वरा का अदब (Respect) करने वाले थे। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मदीने में रहने के बा वुजूद क़ज़ाए ह़ाजत के लिये ह़रमे मदीना से बाहर तशरीफ़ ले जाते और हुदूदे ह़रम से बाहर जा कर अपनी त़बई ह़ाजत से फ़ारिग़ होते।

(बोस्तानुल मुह़द्दिसीन, स. 19)

यादे त़यबा में गुम रहूं हर दम *तेरा हर दम रहे ख़याल आक़ा*

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 175)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

इमाम मालिक और ताज़ीमे ख़ाके मदीना

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के दरवाज़े पर ख़ुरासान या मिस्र के घोड़े बंधे हुवे देखे, उन से ज़ियादा उ़म्दा घोड़े मैं ने कभी न देखे थे। मैं ने अ़र्ज़ की : येह कितने उ़म्दा घोड़े हैं ! तो आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : मैं येह सब आप को तोह़फ़े (Gift) में देता हूं। मैं ने अ़र्ज़ की : एक घोड़ा आप अपने लिये रख लीजिये। फ़रमाया : मुझे **अल्लाह** पाक से ह़या आती है कि इस मुबारक ज़मीन को अपने घोड़े के क़दमों तले रोंदूं जिस में **अल्लाह** पाक के मह़बूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा हैं।

(इह़याउल उ़लूम, 1 / 114, मुलख़्ख़सन)

हां हां रहे मदीना है ग़ाफ़िल ज़रा तू जाग ओ पाउं रखने वाले येह जा चश्मो सर की है

अल्लाहु अकबर अपने क़दम और येह ख़ाके पाक ह़सरतग मलाइका को जहां वज़्ए सर की है

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 217)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

سُبْحٰنَ اللہ ! आप ने सुना कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ किस क़दर ज़बरदस्त आ़शिके़ रसूल, मदीने शरीफ़ से मह़ब्बत और इस का अदब करने वाले थे। चूंकि आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ आ़लिमे मदीना भी थे, लिहाज़ा अदब आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की त़बीअ़त में कूट कूट कर भरा हुवा था जब कि आज हमारे मुआ़शरे को इ़ल्म व अदब दोनों की बहुत ज़ियादा ज़रूरत है, इ़ल्म की दौलत पास होगी, तो अदब की सआ़दत भी मिलेगी और इ़ल्म से ख़ाली होंगी, तो ख़त़रा है कि बे अदबी की गहरी खाई में जा गिरें। खुसूसन सफ़रे मदीना के दौरान तो फूंक फूंक कर क़दम रखना और ख़ूब ख़ूब अदबो ताज़ीम करना बहुत ही ज़ियादा ज़रूरी है।

याद रहे ! येह वोह बारगाह है जिस का अदब हमारे रब्बे करीम ने हमें सिखाया है, लिहाज़ा इस मुआ़मले में थोड़ी सी सुस्ती का मुज़ाहरा करना भी बहुत बड़े नुक़्सान का सबब है। आइये ! इस बारे में एक इ़ब्रतनाक वाक़िआ़ सुनिये और इ़ब्रत ह़ासिल कीजिये : चुनान्चे,

मदीने के दही की बे अदबी का वबाल

एक शख़्स मदीनए मुनव्वरा में हर वक़्त रोता और मुआ़फ़ी मांगता रहता। जब उस से इस की वज्ह पूछी गई, तो उस ने जवाब दिया : एक दिन मैं ने मदीने शरीफ़ के दही को खट्टा और ख़राब कह दिया। येह कहते ही मेरी विलायत चली गई और मुझ पर ग़ज़ब हुवा कि ऐ दियारे मह़बूब

के दही को ख़राब कहने वाले ! निगाहे महब्बत से देख ! महबूबे करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गली की हर हर चीज़ उम्दा है।

(बहारे मस्नवी, स. 128, माख़ूज़न)

महफ़ूज़ सदा रखना शहा बे अदबों से   और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अदबी हो

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 315)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मदीने जाने वालों की क़िस्मत पर कुरबान ! उन का मुक़द्दर बुलन्दी पर होता है, उन के नसीब चमक रहे होते हैं, वोह सआदतों की मेराज को पहुंच जाते हैं, उन की ख़ुशी देखने वाली होती है, उन पर रहमते इलाही की छमाछम बारिशें बरसती हैं और ऐसा क्यूं न हो कि रौज़ए अन्वर की ज़ियारत का जाम पीने वाले ख़ुश नसीबों को तो रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी सच्ची ज़बान से शफ़ाअत का परवाना अता फ़रमाया है। चुनान्चे,

शफ़ाअत वाजिब हो जाती है

प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ زَارَ قَبْرِیْ وَجَبَتْ لَهٗ شَفَاعَتِیْ जिस ने मेरी क़ब्र की ज़ियारत की, उस के लिये मेरी शफ़ाअत वाजिब हो गई। (دارقطنی، کتاب الحج، ۲/۳۵۱، حدیث: ۲۶۶۹)

سُبْحٰنَ الله ! ज़रा सोचिये तो सही ! वोह कैसा अज़मतों और बरकतों वाला मक़ाम है जिस की ज़ियारत करें, तो शफ़ाअत की ख़ैरात मिले, वहां बरकतें अता हों और अगर वहीं दम निकल जाए, तो शफ़ाअत नसीब हो। इमामे इश्क़ो महब्बत, आला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه लिखते हैं :

त़यबा में मर के ठंडे चले जाओ आंखें बन्द   सीधी सड़क येह शहरे शफ़ाअ़त नगर की है

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 222)

रौज़ए रसूल वोह अ़ज़ीम जगह है जहां सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते सुब्ह़ ह़ाज़िरी देते हैं। सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते शाम को ह़ाज़िरी देते हैं, जिन को एक बार ह़ाज़िरी मिल जाए उन को दोबारा ह़ाज़िरी का शरफ़ नहीं मिलता, लेकिन आ़शिक़ाने रसूल पर **अल्लाह** पाक और प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कितना बड़ा एह़सान है कि उन्हें एक बार नहीं बल्कि बार बार ह़ाज़िरी की इजाज़त अ़त़ा की जाती है, ग़ुलामाने मुस्त़फ़ा चाहे कितने ही बड़े गुनाहगार व ख़त़ाकार हों, मगर फिर भी इस दर से उन्हें ख़ाली हाथ नहीं लौटाया जाता। वोह तो ऐसे करीम आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं जो ग़ुलामों की फ़रियाद सुनते, उन की ख़ाली झोलियों को भरते और उन की ह़ाजत रवाई भी फ़रमाते हैं, चुनान्चे

सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खाना खिलाया

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी رَحۡمَةُ اللّٰهِ عَلَيۡه नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबुल अ़ब्बास अह़मद बिन नफ़ीस तूनिसी رَحۡمَةُ اللّٰهِ عَلَيۡه फ़रमाते हैं : मैं एक बार मदीनए मुनव्वरा में सख़्त भूक के आ़लम में नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं भूका हूं। अचानक आंख लग गई, किसी ने जगा दिया और मुझे साथ चलने की दावत दी। चुनान्चे, मैं उन के साथ उन के घर आया। मेज़बान ने खजूरें, घी और गन्दुम की रोटी पेश कर के कहा : पेट भर कर खा

लीजिये क्यूंकि मुझे मेरे जद्दे अमजद और रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप की मेज़बानी का हुक्म दिया है, आइन्दा भी जब कभी भूक मेह़सूस हो, हमारे पास तशरीफ़ लाया करें। (حُجَّةُ اللهِ عَلَى الْعٰلَمِين، ص ٥٧٣)

मांगेंगे मांगे जाएंगे मुंह मांगी पाएंगे   सरकार में न ला है न ह़ाजत अगर की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 225)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ऐ ज़ाइरे रौज़ए अन्वर ! मग़्फ़िरत याफ़्ता लौट जाओ

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर पर ह़ाज़िरी दे कर येह दुआ की : या **अल्लाह** ! मैं ने तेरे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर की ज़ियारत की, अब तू मुझे ना मुराद न लौटा। आवाज़ आई : ऐ बन्दे ! हम ने तुम्हें अपने मह़बूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पाकीज़ा क़ब्रे अन्वर की ज़ियारत की इजाज़त ही तब दी जब तुम्हें पाक करना मन्ज़ूर किया, अब तुम और तुम्हारे साथ ज़ियारत करने वाले मग़्फ़िरत याफ़्ता लौट जाओ ! बेशक **अल्लाह** पाक तुम से और उन से राज़ी हो गया जिन्हों ने प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर का दीदार किया।

(الروض الفائق، ص ٣٠٦)

रौज़ए पाक के साए में बुला कर आक़ा   आंख दे दीजिये मैं आप का जल्वा देखूं

चूम लूं काश निगाहों से सुनहरी जाली   अश्कबार आंख से मिम्बर का भी जल्वा देखूं

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 260)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि आक़ा करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर की ज़ियारत करना किस क़दर सआ़दत व बरकत का बाइ़स है कि रौज़ए अन्वर की ज़ियारत करने वालों को बारगाहे इलाही से मग़फ़िरत के परवाने तक़्सीम किये जाते हैं, तो कितनी ख़ुश नसीब हैं वोह इस्लामी बहनें जो मदीनए पाक की ह़ाज़िरी का शरफ़ पा चुकीं, जिन्हों ने सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के ह़सीन जल्वों को देख कर अपने कलेजे ठन्डे किये, जिन्हों ने मस्जिदे नबवी के दिलकश मनारों की ज़ियारत का जाम पिया, जिन्हों ने आक़ा करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم के मिम्बरो मेह़राब को अपने सर की आंखों से देखने का एज़ाज़ ह़ासिल किया । यक़ीनन यादे मदीना उन्हें अब भी बे क़रार रखती होगी, जब वोह तसावीर में उन मनाज़िर को देखती होंगी, तो उन की आंखें अश्कबार हो जाती होंगी, दिल बेक़ाबू होने लगता होगा ।

ऐ काश ! रब्बे करीम उन ख़ुश नसीब इस्लामी बहनों के तुफ़ैल हम गुनाहगारों को भी ह़ाज़िरिये मदीना की सआ़दत अ़त़ा फ़रमा दे । **ऐ काश** ! आक़ा करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم हमें भी अपने क़दमों में बुला लें । **ऐ काश** ! हमें भी सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के पुरनूर जल्वे देखना नसीब हो जाएं । **ऐ काश** ! हमें भी सुनहरी जालियों के सामने खड़े हो कर दुरूदो सलाम पढ़ने की सआ़दत नसीब हो जाए । **ऐ काश** ! हमें भी ईमानो आ़फ़िय्यत के साथ मीठे मदीने में मौत और जन्नतुल बक़ीअ़ में दो गज़ ज़मीन नसीब हो जाए ।

याद रहे ! मदीने शरीफ़ में मरना और जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न होना बहुत बड़ी सआ़दत मन्दी की बात है । जैसा कि **:**

मदीने में मरने की फ़ज़ीलत

नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنِ اسْتَطَاعَ اَنْ يَّمُوْتَ بِالْمَدِيْنَةِ فَلْيَمُتْ بِهَا तुम में से जिस से हो सके कि वोह मदीने में मरे, तो मदीने ही में मेरे, فَاِنِّیْ اَشْفَعُ لِمَنْ يَّمُوْتُ بِهَا क्यूंकि मैं मदीने में मरने वाले की शफ़ाअ़त करूंगा।

(ترمذی، کتاب المناقب، باب فی فضل المدینۃ، ۵/۴۸۳، حدیث: ۳۹۴۳)

एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया : (क़ियामत में जब सब को क़ब्रों से उठाया जाएगा) सब से पहले मेरी फिर अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا) की क़ब्रें खुलेंगी फिर मैं जन्नतुल बक़ीअ़ वालों के पास जाऊंगा, तो वोह मेरे साथ जम्अ़ होंगे फिर मैं अहले मक्का का इन्तिज़ार करूंगा, ह़त्ता कि मक्के मदीने के दरमियान उन्हें भी अपने साथ कर लूंगा।

(ترمذی، ابواب المناقب، باب(م:تابع۱۷،ت:۵۶) ... الخ، ۵/۳۸۸، حدیث: ۳۷۱۲)

आ़शिक़े मदीना, अमीरे एहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ मदीने पाक में मरने और बक़ीए़ पाक में दफ़्न होने के जज़्बात का इज़्हार करते हुवे अपने नातिया दीवान "**वसाइले बख़्शिश**" में लिखते हैं कि

अ़त़ा कर दो अ़त़ा कर दो बक़ीए़ पाक में मदफ़न मेरी बन जाए तुर्बत या शहे कौसर मदीने में

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 283)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب !   صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

यादे मदीना

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हम मदीनए पाक के फ़ज़ाइल व खुसूसिय्यात और वहां के मक़ामाते मुक़द्दसा का ज़िक्रे ख़ैर सुन रही हैं।

याद रहे ! ज़िक्रे मदीना आ़शिक़ाने रसूल के लिये दिलो जान को सुकून देता है, दुन्या की जितनी ज़बानों में जिस क़दर कलाम मदीने शरीफ़ की जुदाई और इस के दीदार की आरज़ू में पढ़े गए हैं, उतने दुन्या के किसी और शहर या सर ज़मीन के लिये नहीं पढ़े गए। जिस मुसलमान को एक बार भी मदीने का दीदार हो जाता है वोह अपने आप को ख़ुश क़िस्मत समझता और मदीने में गुज़रे हुवे ख़ूब सूरत लम्ह़ात को हमेशा के लिये यादगार क़रार देता है। आ़शिक़ाने मदीना इस की जुदाई में तड़पते और ज़ियारत के बेह़द मुश्ताक़ रहते हैं। मदीना क्या है ? और मदीने से इ़श्क़ कैसा होना चाहिये ? मदीने से जुदाई के वक़्त हमारे जज़्बात कैसे होने चाहियें ? इस के लिये बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن की सीरत और उन का किरदार हमारे लिये बेहतरीन नुमूना है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! बुज़ुर्गाने दीन के ख़मीर में मदीने और मह़बूब की गलियों का इ़श्क़ कूट कूट कर भरा होता है। मदीने से दूरी और शहरे मह़बूब की जुदाई उन के लिए एक ना क़ाबिले बरदाश्त मरह़ला होता है। उन्हें हरगिज़ येह गवारा नहीं होता कि कोई उन्हें शहरे मह़बूब से जुदा करे, यूं ही बाज़ बुज़ुर्गाने दीन का सफ़र मदीने से वापसी का मन्ज़र भी इन्तेहाई पुरदर्द और क़ाबिले रश्क होता है। मदीने से जुदाई पर येह ह़ज़रात ऐसे फूट फूट कर रोते हैं जैसे कोई बच्चा अपनी मां से जुदाई पर रोता और ह़सरत से बार बार मुड मुड कर उसे देखता है। आइये ! बत़ौरे तरग़ीब बुज़ुर्गों के इ़श्क़ो मह़ब्बत में डूबे हुवे मामूलात के बारे में सुनती हैं ताकि जिन की आंखों ने मदीना देख लिया है उन के दिल में मदीने की यादें ताज़ा हो जाएं और जो वहां की पुर कैफ़ फ़ज़ाओं को देखने के लिये बे क़रार हैं उन की तड़प में मज़ीद इज़ाफ़ा हो जाए, चुनान्चे

मैं छोड़ कर मदीना नहीं जाता, नहीं जाता !

ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से पूछा : क्या आप का कोई घर है ? फ़रमाया : नहीं ! तो उस ने आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में तीन हज़ार दीनार पेश करते हुवे कहा : इन से घर ख़रीद लीजिये। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने दीनार ले कर रख लिये और उन्हें ख़र्च न किया। जब ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद मदीने शरीफ़ से जाने लगा, तो उस ने आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में अ़र्ज़ की : आप को हमारे साथ चलना होगा क्यूंकि मैं ने इरादा किया है कि लोगों को ह़दीसे पाक की मश्हूर किताब **"मुअत्ता"** पर जम्अ़ करूं, जिस त़रह़ अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللهُ عَنْه ने लोगों को एक क़ुरआन पर जम्अ़ किया था। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : लोगों को सिर्फ़ **"मुअत्ता"** पर जम्अ़ करने का तो कोई जवाज़ नहीं क्यूंकि रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बाद सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن मुख़्तलिफ़ शहरों में चले गए, वहां उन्हों ने अह़ादीस बयान फ़रमाई जिस की वज्ह से अब मिस्र के हर शख़्स के पास अह़ादीस का इल्म है और रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी इरशाद फ़रमाया : मेरी उम्मत का इख़्तिलाफ़ **"रह़मत"** है।

(جامع الاصول فی احادیث الرسول لابن اثیر، الباب الرابع فی ذکر الائمۃ، الامام مالک، ۱/۱۲۱)

और रहा मदीना छोड़ कर तुम्हारे साथ जाना, तो इस की भी कोई सूरत नहीं क्यूंकि फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : मदीना उन के लिये बेहतर है, अगर वोह समझें।

(مسلم، کتاب الحج، باب فضل المدینة، حدیث: ۱۳۶۳، ص ۷۱۰)

एक रिवायत में है : मदीना (गुनाहों के) मैल को ऐसे छुड़ाता है जैसे भट्टी लोहे का ज़ंग दूर करती है।

(مسلم، کتاب الحج، باب المدینۃ تنفی شرارھا،حدیث:۱۳۸۱، ص۷۱۶۔حلیۃ الاولیاء، مالک بن انس، ، حدیث: ۸۹۴۲، ج۶، ص۳۶۱)

फिर आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद से फ़रमाया : येह रहे तुम्हारे दीनार ! चाहो तो इन्हें ले लो और चाहो तो छोड़ दो, यानी तुम मुझे इसी वजह से मदीना छोड़ने पर पाबन्द करते हो कि तुम ने मेरे साथ अच्छा सुलूक किया है, तो (सुनो !) मैं मदीने शरीफ़ पर दुन्या को तरजीह़ नहीं देता। (इह़याउल उ़लूम, 1 / 113, मुलख़्ख़सन)

जो यादे मदीना में दिन रात तड़पते हैं दूर उन से मदीने का दरबार नहीं होता

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 124)

जुदाई की घड़ियां

जब मदीनए मुनव्वरा से जुदाई की घड़ियां क़रीब आती हैं तो अमीरे एहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का इज़्तिराब बहुत बढ़ जाता है। आप जुदाई के ग़म में बे चैन हो जाते हैं। मदीने शरीफ़ से जुदाई का मन्ज़र पूरी त़रह़ लफ़्ज़ों में बयान करना बेह़द मुश्किल है। आप ने सिने 1400 हिजरी की ह़ाज़िरी में रुख़्सत के वक़्त अश्कबार आंखों से सुनहरी जालियों के रूबरू मुवाजहा शरीफ़ के सामने अपनी अल वदाई कैफ़िय्यत का जो नक़्शा अश्आ़र की सूरत में खींचा है। आइये ! चन्द अश्आ़र सुनिये :

कूए जानां की रंगीं फ़ज़ाओ ऐ मुअ़त्त़र मुअ़म्बर हवाओ
लो सलाम आख़िरी अब हमारा अल वदाअ़ आह शाहे मदीना
आंख से अब हुवा ख़ून जारी, रूह़ पर भी हुवा रंज त़ारी
जल्द अ़त्त़ार को फिर बुलाना अल वदाअ़ आह शाहे मदीना

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 365-366)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

मदीनए त़य्यिबा के बा बरकत मक़ामात

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आ़शिक़ाने रसूल का मर्कज़ यानी मीठा मीठा मदीना सारे का सारा नूर वाला है और आज भी वहां मुख़्तलिफ़ दिलकश मसाजिद और मुक़द्दस मक़ामात अपनी बरकतें लुटा रहे हैं । मश्हूर मुह़द्दिस, ह़ज़रते अ़ल्लामा शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहल्वी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने इश्क़ो मस्ती में डूब कर कितनी प्यारी बात कही है कि दिल की नज़र रखने वाले येह जानते हैं कि मक्के मदीने के पहाड़ों और वादियों में किस क़दर नूरानिय्यत ज़ाहिर हो रही है । बेशक इस का सबब येही है कि इन तमाम जगहों (Places) में कोई भी ऐसा ज़र्रा नहीं जिस पर नज़्रे मुबारक न पड़ी हो और वोह दीदारे मुस्त़फ़ा से फ़ैज़याब न हुवा हो ।

(जज़्बुल क़ुलूब, स. 148)

आइये ! बरकत ह़ासिल करने के लिये मदीनए पाक की चन्द मसाजिद और मोह़तरम व बरकत वाले मक़ामात का मुख़्तसर ज़िक्र सुनती हैं :

﴾1﴿...मस्जिदे क़ुबा शरीफ़

मदीनए पाक से तक़रीबन 3 किलोमीटर जुनूब मग़रिब की त़रफ़ "**क़ुबा**" नामी एक क़दीमी गांव है जहां येह बरकत वाली मस्जिद (यानी मस्जिदे क़ुबा) बनी हुई है । क़ुरआने करीम और अह़ादीसे मुबारका में इस मस्जिद के फ़ज़ाइल निहायत एहतेमाम से बयान फ़रमाए गए हैं । मस्जिदे नबवी शरीफ़ से दरमियानी चाल से चल कर तक़रीबन 40 मिनट में आ़शिक़ाने रसूल मस्जिदे क़ुबा पहुंच सकते हैं । ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

हर हफ़्ते को कभी पैदल, तो कभी सुवारी पर **मस्जिदे क़ुबा** तशरीफ़ ले जाते थे। (بُخاری،۱/ ۴۰۲،حدیث:۱۱۹۳)

आइये ! मस्जिदे क़ुबा में ह़ाज़िर हो कर नमाज़ पढ़ने के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुनिये, चुनान्चे

मस्जिदे क़ुबा में नमाज़ पढ़ने के फ़ज़ाइल

नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मस्जिदे क़ुबा में नमाज़ पढ़ना "उ़मरे" के बराबर है। एक और मक़ाम पर फ़रमाया : जिस शख़्स ने अपने घर में वुज़ू किया फिर मस्जिदे क़ुबा में जा कर नमाज़ पढ़ी तो उसे "उ़मरे" का सवाब मिलेगा।

2...मस्जिदे ग़मामा

मक्के शरीफ़ या जद्दा शरीफ़ से जब मदीने शरीफ़ आते हैं, तो मस्जिदे नबवी शरीफ़ आने से पहले ऊंचे गुम्बदों वाली एक निहायत ही ख़ूब सूरत मस्जिद आती है, येही "**मस्जिदे ग़मामा**" है। हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने 2 हिजरी में पहली बार ईदुल फ़ित़्र और ईदुल अज़्ह़ा की नमाज़ इस मक़ाम पर खुले मैदान में अदा फ़रमाई, यहीं आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बारिश (Rain) के लिये दुआ़ फ़रमाई, दुआ़ फ़रमाते ही बादल आए और बारिश बरसनी शुरूअ़ हो गई। "**बादल**" को अ़रबी ज़बान में ग़मामा कहते हैं, इसी निस्बत से इसे अब "**मस्जिदे ग़मामा**" कहते हैं। यहां खुला मैदान था, पहली सदी के मुजद्दिद, अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने यहां मस्जिद तामीर करवाई।

आइये अब चन्द मज़ीद मुक़द्दस मक़ामात के बारे में सुनिये, चुनान्चे

❁3❁...जन्नत की कियारी

मदनी आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم के हुजरए मुबारका (जिस में सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم का मज़ारे अन्वर है) और नूरानी मिम्बर (जहां नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुत़्बा इरशाद फ़रमाया करते थे) का दरमियानी ह़िस्सा जिस की लम्बाई 22 मीटर और चौड़ाई 15 मीटर है **"जन्नत की कियारी"** है। चुनान्चे, प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : **مَا بَیۡنَ بَیۡتِیۡ وَمِنۡبَرِیۡ رَوۡضَۃٌ مِّنۡ رِّیَاضِ الۡجَنَّۃِ** मेरे घर और मिम्बर की दरमियानी जगह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है।

(بُخاری،۱/ ۴۰۲،حدیث:۱۱۹۵)

आ़म बोल चाल में लोग इसे **"रियाज़ुल जन्नह"** कहते हैं मगर अस्ल लफ़्ज़ **"रौज़तुल जन्नह"** है।

इस त़रफ़ रौज़े का नूर, उस सम्त मिम्बर की बहार
बीच में जन्नत की प्यारी प्यारी कियारी वाह वाह !

मज़ारे सय्यिदुना ह़म्ज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللہُ عَنۡہ ग़ज़्वए उहुद (3 हिजरी) में शहीद हुवे, आप رَضِیَ اللہُ عَنۡہ का मज़ारे फ़ाइज़ुल अनवार उहुद शरीफ़ के क़रीब वाक़ेअ़ है। साथ ही ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जह़श رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا के मज़ारात भी हैं। ग़ज़्वए उहुद में 70 सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان ने जामे शहादत नोश

किया था उन में से अकसर शुहदाए उहुद भी साथ ही बनी हुई चार दीवारी में आराम फ़रमा हैं।

वोह शहीदों के सरदार ह़म्ज़ा और जितने वहां हैं सह़ाबा
तो सभी के मज़ारों पे जा कर, तू सलाम उन से रो रो के केहना

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 595)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़ुल क़ादतिल ह़राम का मुबारक महीना शुरूअ़ होने वाला है, 2 ज़ुल क़ादतिल ह़राम को सदरुश्शरीअ़ा, बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का उ़र्स मुबारक मनाया जाता है। आइये ! इसी मुनासिबत से सदरुश्शरीअ़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की सीरते मुबारका के गोशों की चन्द झल्कियां मुलाह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे

सीरते मुबारका की झल्कियां

सदरुश्शरीअ़ा, बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अम्जद अ़ली आज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه 1300 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 1882 ईस्वी में मशरिक़ी यूपी (हिन्द) के क़स्बे मदीनतुल उ़लमा घोसी में पैदा हुवे। (तज़्किरए सदरुश्शरीअ़ा, स. 5) आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पेशानी कुशादा, रंग गन्दुमी, घनी दाढ़ी, बदन (Body) सिह़ह़त मन्द और क़द दरमियाना था। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه दोनों हाथ बान्ध कर, आंखें बन्द कर के निहायत तवज्जोह के साथ नात शरीफ़ सुना करते और इस दौरान आप की

आंखों से अश्क जारी हो जाते । (माहनामा अशरफ़िया, सदरुश्शरीआ़ नम्बर, स. 62) आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ तमाम उ़म्र शजरे इस्लाम की आबयारी के लिये कोशां रहे । आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की बारगाह में क़ुरआने पाक का तर्जमा करने की अ़र्ज़ की, आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से सुन सुन कर इम्ला किया और तर्जमए कन्ज़ुल ईमान की सूरत में मुसलमानों को ईमान का ख़ज़ाना अ़ता फ़रमाने का सबब बने, इसी त़रह़ बहारे शरीअ़त जैसी अ़ज़ीमुश्शान किताब तस्नीफ़ फ़रमा कर आ़लमे इस्लाम पर एह़सान फ़रमाया । बिल आख़िर 1367 हिजरी की दूसरी शब 12 बज कर 26 मिनट पर ब मुत़ाबिक़ 6 सितम्बर 1984 को वफ़ात पा गए, मदीनतुल उ़लमा घोसी (ज़िलअ़ आज़मगढ़) में आप का मज़ार ज़ियारत गाहे ख़ासो आ़म है । (तज़किरए सदरुश्शरीआ़, स. 39 ता 41 मुलख़्ख़सन)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आज के बयान में हम ने सुना कि ★ मदीनए मुनव्वरा जाने वालों के गुनाह मुआ़फ़ होते हैं । ★ मदीनए त़य्यिबा के मुबारक सफ़र में कोई तक्लीफ़ पेश आए को उस पर सब्र करना चाहिये । ★ मदीनए त़य्यिबा का अदब करने वालों को दोनों जहां की बरकतें नसीब होती हैं । ★ मह़बूबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह बल्कि गली कूचों से निस्बत रखने वाली चीज़ों की भी ताज़ीम व तकरीम करनी चाहिये । ★ मदीनए मुनव्वरा में रौज़ए रसूल की ज़ियारत करने वालों की **अल्लाह** पाक के मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे ।

★ हमारे बुज़ुर्गाने दीन को जब भी मदीने शरीफ़ की ह़ाज़िरी नसीब होती तो वोह ह़ज़रात बारगाहे आ़ली का ख़ूब अदबो एह़तिराम बजा लाते ।

★ अल्लाह करीम हमें भी मदीने पाक का ख़ूब अदब करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और हमें बार बार मदीने शरीफ़ की बा अदब ह़ाज़िरी नसीब फ़रमाए । آمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत, चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करती हूं । ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा ।

(مشكاة المصابيح، كتاب الايمان، باب الاعتصام بالكتاب والسنة، الفصل الثانى، ۱/۵۵، حديث: ۱۷۵)

मिस्वाक की सुन्नतें और आदाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइये ! अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले **"163 मदनी फूल"** से मिस्वाक की सुन्नतें और आदाब सुनती हैं । पहले 2 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा हों :

1. दो रक्अ़त मिस्वाक कर के पढ़ना, बिग़ैर मिस्वाक की सत्तर रक्अ़तों से अफ़्ज़ल है । (الترغيب والترهيب، ۱/۱۰۲، حديث: ۱۸)

2. मिस्वाक का इस्तिमाल अपने लिये लाज़िम कर लो क्यूंकि इस में मुंह की सफ़ाई और (येह) अल्लाह पाक की रिज़ा का सबब है।

(مسند احمد، مسند عبد اللہ بن عمر، ۲/۴۳۸، حدیث:۵۸۶۹)

❖ ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ عَنۡہُمَا से रिवायत है कि मिस्वाक में दस ख़ूबियां हैं (चन्द येह हैं) : मुंह साफ़ करती, मसूढ़े को मज़बूत़ बनाती है, बीनाई बढ़ाती, बलग़म दूर करती है, मुंह की बदबू ख़त्म करती, सुन्नत के मुवाफ़िक़ है, फ़िरिश्ते ख़ुश होते हैं, रब्बे करीम राज़ी होता है। ❖ मिस्वाक पीलू या ज़ैतून या नीम वग़ैरा कड़वी लक्ड़ी की हो, मिस्वाक की मोटाई छुंगलिया यानी छोटी उंगली के बराबर हो। ❖ मिस्वाक जब ना क़ाबिले इस्तिमाल हो जाए, तो फेंक मत दीजिये कि येह आलए अदाए सुन्नत है, किसी जगह एह़तियात़ से रख दीजिये।

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की छपी हुई दो किताबें (1) **बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16** (312 सफ़ह़ात) (2) 120 सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" नीज़ इस के इलावा अमीरे अहले सुन्नत के दो रिसाले "**101 मदनी फूल**" और "**163 मदनी फूल**" हदिय्यतन त़लब कीजिये और पढ़िये।

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

बयान नम्बर – 10

हर मुबल्लिग़ा बयान करने से पहले कम अज़् कम तीन बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط

اَمَّا بَعْدُ ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ   وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَاحَبِیْبَ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ   وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اَوْلَی النَّاسِ بِیْ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ اَکْثَرُھُمْ عَلَیَّ صَلَاۃً

क़ियामत के दिन लोगों में सब से ज़ियादा मेरे क़रीब वोह शख़्स होगा जो सब से ज़ियादा मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता होगा ।

(ترمذی، ابواب الوتر، باب ماجاء فی فضل الصلاۃ علی النبی، ۲/۲۷، حدیث: ۴۸۴)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ

मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है ।

(اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیْر لِلطَّبَرَانِی ج ۶ ص ۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

मस्अला :-

नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा ।

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नोइ़यत के एतिबार से निय्यतों में कमी व बेशी व तब्दीली की जा सकती है।

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी। टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी। ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिये जगह कुशादा करूंगी। धक्का वगै़रा लगा तो सब्र करूंगी, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी। صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوبُوا اِلَى اللّٰهِ वगै़रा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिये पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी। इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी। दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी। जो कुछ बयान होगा उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल और बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगी।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! याद रखिये ! नर्मी रब्बे करीम की एक बहुत अच्छी नेमत है। जिस ख़ुश नसीब इस्लामी बहन को येह नेमत अ़त़ा की जाती है, उस के अख़्लाक़ बेहतर होते चले जाते हैं और दूसरी इस्लामी बहनें भी उस से मह़ब्बत करती हैं। तो आइये ! आज के इस हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में हम नर्मी के तअ़ल्लुक़ से कुछ वाक़िआ़त व ह़िकायात और अह़ादीस व रिवायात सुनती हैं।

आइये ! पहले नर्मी के तअ़ल्लुक़ से एक ईमान ताज़ा करने वाला वाक़िआ़ सुनती हैं। चुनान्चे,

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नर्मी से क़बूले इस्लाम

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन सअ़ना رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه जो क़बूले इस्लाम से पहले तौरात के आ़लिम थे, उन्हों ने हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से खजूरें खरीदी थीं, खजूरें देने की मुद्दत में अभी एक दो दिन बाक़ी थे कि उन्हों ने भरी मेहफ़िल में हुज़ूरे पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सख़्ती के साथ तक़ाज़ा किया और आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दामन और चादर पकड़ कर तेज़ नज़रों से आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ देखा। येह मन्ज़र देख कर अमीरुल मोमिनीन, हज़रते उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه ने जलाल भरी नज़रों से देख कर कहा : ऐ ख़ुदा के दुश्मन ! तू रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ऐसी गुस्ताख़ी कर रहा है ? ख़ुदा पाक की क़सम ! अगर रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم यहां न होते, तो मैं अभी अपनी तलवार से तेरा सर उड़ा देता। येह सुन कर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ उ़मर ! तुम क्या कह रहे हो ? तुम्हें तो येह चाहिये था कि मुझे क़र्ज़ अदा करने की तरग़ीब दे कर इसे नर्मी के साथ क़र्ज़ का तक़ाज़ा करने का कह कर हम दोनों की मदद करते। फिर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हुक्म दिया : ऐ उ़मर ! इस को इस के ह़क़ के बराबर खजूरें दे दो और कुछ ज़ियादा भी देना। अमीरुल मोमिनीन, हज़रते उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه ने जब ह़क़ से ज़ियादा खजूरें दीं, तो ज़ैद बिन सअ़ना ने कहा : ऐ उ़मर ! मेरे ह़क़ से ज़ियादा क्यूं दे रहे हो ? आप رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया : चूंकि मैं ने टेढ़ी नज़रों से देख कर तुम्हें ख़ौफ़ज़दा कर दिया था, इसी लिये रसूले ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तुम्हारी दिलजोई के लिये तुम्हारे ह़क़ से कुछ ज़ियादा देने का मुझे हुक्म दिया है। येह सुन कर ज़ैद बिन सअ़ना ने कहा : ऐ उ़मर ! क्या तुम मुझे पहचानते हो ? मैं ज़ैद बिन सअ़ना हूं। आप رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया : तुम वोही ज़ैद बिन सअ़ना हो जो तौरात का बहुत बड़ा आ़लिम है ? उन्हों ने कहा : जी हां !

येह सुन कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ عَنۡہ ने पूछा : फिर तुम ने हुज़ूरे पाक صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ऐसी गुस्ताख़ी क्यूं की ? तो ज़ैद बिन सअ़ना ने जवाब दिया : ऐ उ़मर (رَضِیَ اللہُ عَنۡہ) ! अस्ल में बात येह है कि मैं ने तौरात में आख़िरी नबी (صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की जितनी निशानियां पढ़ी थीं, उन सब को मैं ने इन (हुज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की ज़ात में देख लिया मगर दो निशानियों के बारे में मुझे इन का इम्तिह़ान करना बाक़ी रह गया था, **एक** येह कि इन की नर्मी ग़ालिब रहेगी और **दूसरा** जिस क़दर ज़ियादा इन के साथ जहालत व बुराई का सुलूक किया जाएगा, उतनी ही इन की नर्मी बढ़ती जाएगी । चुनान्चे, मैं ने इस तरकीब से इन दोनों निशानियों को भी इन में देख लिया है और **मैं शहादत देता हूं कि यक़ीनन येह सच्चे नबी हैं ।** ऐ उ़मर (رَضِیَ اللہُ عَنۡہ) ! मैं बहुत ही मालदार आदमी हूं, मैं तुम्हें गवाह बनाता हूं कि मैं ने अपना आधा माल प्यारे आक़ा (صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की उम्मत पर सदक़ा कर दिया । फिर येह बारगाहे रिसालत में आए और **कलिमा पढ़ कर मुसलमान हो गए ।**

(دلائل النبوۃ، ۱/۲۳- زرقانی، ۴/۲۵۳ملخصاً)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب!　صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किस क़दर नर्मी फ़रमाया करते थे और बद तमीज़ी करने वालों को मुआ़फ़ी से नवाज़ते थे, येही वज्ह थी कि तौरात का इतना बड़ा आ़लिम भी आप صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के किरदार से मुतअस्सिर हुवे बिग़ैर न रह सका और कलिमा पढ़ कर दाइरए इस्लाम में दाख़िल हो गया । लिहाज़ा नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी सीरत पर अ़मल करते हुवे अपने अन्दर नर्मी जैसी प्यारी आ़दत (Habit) पैदा करने की कोशिश कीजिये, दूसरी इस्लामी बहनों की ग़लत़ियों पर उन्हें मुआ़फ़ करना

सीखिये, कोई कितना ही गुस्सा दिलाए, हमेशा अपनी ज़बान को क़ाबू में रखिये कि इसी में दुन्या ओ आख़िरत की भलाई है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! नर्मी की कितनी अहम्मिय्यत है, इस का अन्दाज़ा इस बात से लगाइये कि जब **अल्लाह** करीम ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को फ़िरऔन की त़रफ़ भेजा कि उसे ईमान की दावत दें, तो **अल्लाह** पाक ने उस के साथ नर्मी से बात करने का हुक्म इरशाद फ़रमाया। चुनान्चे, पारह 16, सूरए طٰهٰ की आयत नम्बर 44 में **अल्लाह** पाक इरशाद फ़रमाता है :

فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهٗ يَتَذَكَّرُ اَوْ يَخْشٰى ﴿۴۴﴾ (پ۱۶، طٰهٰ: ۴۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो उस से नर्म बात कहना इस उम्मीद पर कि वोह ध्यान करे या कुछ डरे।*

बयान कर्दा आयते मुबारका के तह़्त **"तफ़्सीरे ख़ाज़िन"** में लिखा है : यानी जब तुम फ़िरऔन के पास जाओ, तो उसे नर्मी के साथ नसीह़त फ़रमाना। बाज़ मुफ़स्सिरीन (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) के नज़दीक फ़िरऔन के साथ नर्मी का हुक्म इस लिये था कि उस ने बचपन में ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की ख़िदमत की थी और बाज़ मुफ़स्सिरीन (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) ने फ़रमाया : नर्मी से मुराद येह है कि आप उस से वादा करें कि अगर वोह ईमान क़बूल करेगा तो तमाम उ़म्र जवान रहेगा, कभी बुढ़ापा न आएगा, मरते दम तक उस की बादशाहत बाक़ी रहेगी, खाने-पीने की लज़्ज़तें मरने तक बाक़ी रहेंगी और मरने के बाद जन्नत में दाख़िला भी नसीब होगा। जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़िरऔन से येह वादे किये, तो उसे येह बात बहुत पसन्द आई लेकिन वोह किसी काम पर (अपने वज़ीर) हामान से

मश्वरा लिये बिग़ैर फ़ैसला नहीं करता था और उस वक़्त हामान मौजूद न था (इस लिये उस ने कोई फ़ैसला न किया) । जब वोह आया तो फ़िरऔ़न ने उसे येह ख़बर दी और कहा : मैं चाहता हूं कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की हिदायत पर ईमान क़बूल कर लूं । येह सुन कर हामान कहने लगा : मैं तो तुझे समझदार समझता था (लेकिन येह क्या) तू रब है और बन्दा बनना चाहता है, तू माबूद है और आ़बिद बनने की ख़्वाहिश करता है ? फ़िरऔ़न ने कहा : तू ने ठीक कहा (यूं वोह ईमान लाने से मह़रूम रहा) ।

(تفسیرخازن، ۳/۲۵۴، طٰہٰ، تحت الآیۃ: ۴۴)

रह़मते इलाही की झलक

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! "**तफ़्सीरे सिरातु़ल जिनान**" में लिखा है : इस आयत से **अल्लाह** पाक की रह़मत की झलक भी नज़र आती है कि अपनी बारगाह के बाग़ी और ना फ़रमान के साथ किस त़रह़ उस ने नर्मी फ़रमाई और जब अपने ना फ़रमान बन्दे के साथ उस की नर्मी का येह ह़ाल है तो फ़रमां बरदार बन्दे के साथ उस की नर्मी कैसी होगी ? ह़ज़रते यह़्या बिन मुआ़ज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के सामने जब इस आयत की तिलावत की गई, तो आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه रोने लगे और अ़र्ज़ की : (ऐ रब्बे करीम) ! येह तेरी उस बन्दे के साथ नर्मी है जो कहता है कि मैं माबूद हूं । तो उस बन्दे के साथ तेरी नर्मी का क्या ह़ाल होगा जो कहता है कि सिर्फ़ तू ही माबूद है और येह तेरी उस बन्दे के साथ नर्मी है जो कहता है : मैं तुम लोगों का सब से आला रब हूं तो उस बन्दे के साथ तेरी नर्मी का क्या आ़लम होगा जो कहता है : मेरा रब वोह है जो सब से बुलन्द है ।

(सिरातु़ल जिनान, 6 / 202, मुलख़्ख़सन)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

नर्मी के फ़ज़ाइल

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हमें चाहिये कि जब भी नेकी की दावत देने का मौक़अ़ मिले, तो शफ़्क़त व महब्बत और नर्मी के साथ दावत पेश करें, इस अन्दाज़ से नेकी की दावत देने की बरकत से اِنْ شَآءَ اللّٰہ हमारी बात में असर भी पैदा होगा और हम जिसे नसीहत कर रही हैं, वोह हमारी बात तवज्जोह से सुन कर अ़मल की कोशिश भी करेगी ।

कुरआने पाक में **अल्लाह** पाक ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दिल की नर्मी को अपनी रह़मत क़रार दिया है । चुनान्चे, पारह 4, सूरए आले इमरान की आयत नम्बर 159 में **अल्लाह** पाक इरशाद फ़रमाता है :

فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ
(پ۴، آل عمران:۱۵۹)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो कैसी कुछ **अल्लाह** की मेहरबानी है कि ऐ मह़बूब तुम उन के लिये नर्म दिल हुवे ।*

इस आयत में रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के प्यारे अख़्लाक़ (Manners) का बयान किया जा रहा है । चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया : ऐ ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** पाक की आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कितनी बड़ी रह़मत है कि उस ने आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को नर्म दिल, शफ़्क़त फ़रमाने वाला और रह़मो करम फ़रमाने वाला बनाया और आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मिज़ाज में इतना ज़ियादा लुत़्फ़ो करम (पैदा फ़रमाया) और शफ़्क़त व रह़मत पैदा फ़रमाई कि ग़ज़्वए उहुद के दिन आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ग़ुस्से का इज़्हार न फ़रमाया ह़ालांकि आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को उस दिन बहुत ज़ियादा तक्लीफ़ पहुंची थी और अगर आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सख़्त मिज़ाज होते और लोगों से मेल जोल में सख़्ती से काम लेते, तो येह लोग आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दूर हो जाते । ऐ ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप उन की ग़लतियों को मुआ़फ़ कर दें और उन के लिये दुआ़ए मग़फ़िरत फ़रमा दें ताकि आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सिफ़ारिश पर **अल्लाह** पाक भी उन्हें मुआ़फ़ फ़रमा दे । (सिरातुल जिनान, 2 / 80)

नर्मी की अहम्मिय्यत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जिस त़रह़ सोना नर्म हो कर ज़ेवर बनता है, लोहा नर्म हो कर हथयार बन जाता है और मिट्टी नर्म हो कर खेतों की हरयाली का सबब बनती है । इसी त़रह़ इस्लामी तालीमात के मुत़ाबिक़ की जाने वाली **''नर्मी''** एक ऐसी ख़ूबी है जिस की वज्ह से इन्सान के अन्दर रह़मत, शफ़्क़त, आसानी, मुआ़फ़ी और बरदाश्त जैसी दीगर अच्छी ख़ूबियां भी पैदा हो जाती हैं । आइये ! तरग़ीब के लिये नर्मी के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुनिये : चुनान्चे,

1. **इरशाद फ़रमाया :** ऐ आ़इशा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا) ! **अल्लाह** पाक रफ़ीक़ है और रिफ़्क़ यानी नर्मी को पसन्द फ़रमाता है, **अल्लाह** पाक नर्मी की वज्ह से वोह चीज़ें अ़त़ा करता है जो सख़्ती या किसी और वज्ह से अ़त़ा नहीं फ़रमाता ।

(مسلم، کتاب البر والصلۃ والآداب، باب فضل الرفق، ص۱۰۷۲، حدیث:۲۱۰۱)

2. **इरशाद फ़रमाया :** नर्मी जिस चीज़ में भी होती है, वोह उसे ख़ूब सूरत बना देती है और जिस चीज़ से नर्मी निकाल दी जाती है, उसे बद सूरत कर देती है ।

(مسلم، کتاب البر والصلۃ والآداب، باب فضل الرفق، ص۱۰۷۳، حدیث:۲۱۰۲)

3. **इरशाद फ़रमाया :** मोमिन आसानी करने वाला, नर्म होता है जैसे नुकैल वाला ऊंट कि खींचा जाए तो खिंच जाता है और चट्टान पर बिठाया जाए तो बैठ जाए ।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الآداب، باب الرفق والحیاء...إلخ، ۲۳۰/۳، حدیث:۵۰۸۶)

4. इरशाद फ़रमाया : مَنْ یُحْرَمِ الرِّفْقَ یُحْرَمِ الْخَیْرَ जो शख़्स नर्मी से मह़रूम रहा वोह ख़ैर से मह़रूम रहा ।

(مسلم، کتاب البر والصلۃ والآداب، باب فضل الرفق، ص۱۰۷۳)

5. ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا एक सरकश उंट पर सुवार हुईं और उस को चक्कर देने लगीं । रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ आ़इशा नर्मी करो ।

(مسلم، کتاب البر والصلۃ والآداب، باب فضل الرفق، ص ۱۰۷۳)

मज़्कूरा अह़ादीस में नर्मी की वज़ाह़त

अ़ल्लामा वशतानी अबी मालिकी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ कहते हैं कि रफ़ीक़ का माना है वोह जो बहुत रिफ़्क़ और नर्मी करता है । और रिफ़्क़ का माना है तस्हील (किसी चीज़ को आसान और सहल करना) । रिफ़्क़ का एक माना किसी चीज़ की आसानी और सहूलत के असबाब मुहय्या करना भी है । **अल्लाह** पाक की त़रफ़ रिफ़्क़ की निस्बत इस लिये है कि वोह आसानी करने वाला और अ़त़ा करने वाला है । (اکمال اکمال العلم، ۷/۴۰)

बयान कर्दा ह़दीसों में नर्मी की फ़ज़ीलत बयान की गई है । ह़दीसे पाक में फ़रमाया गया कि **अल्लाह** पाक मख़्लूक़ पर मेहरबान है कि उन पर नर्मी फ़रमाता है और हर काम में नर्मी को पसन्द फ़रमाता है । मख़्लूक़ पर मेहरबान होने से मुराद येह है कि **अल्लाह** पाक ना फ़रमानों को सज़ा देने में जल्दी नहीं फ़रमाता बल्कि उन में से जिन के मुक़द्दर में सआ़दत मन्दी लिखी है उन्हें तौबा की तौफ़ीक़ देता है और बदबख़्त को ढील देता है । (دلیل الفالحین، باب فی الحلم والاناۃ والرفق، ۳/۸۹، تحت الحدیث: ۶۳۲ملخصا)

ह़दीस में फ़रमाया गया कि **अल्लाह** पाक नर्मी बरतने पर वोह इन्आ़म देता है जो नर्मी के इ़लावा किसी और चीज़ पर नहीं देता । यानी नर्मी बरतने वाले की दुन्या में भी ख़ूब अच्छाई और तारीफ़ की जाती है और आख़िरत में भी बहुत ज़ियादा अज्रो सवाब मिलेगा और सख़्ती करने वाले का मुआ़मला इस के बर अ़क्स होगा यानी न तो वोह दुन्या में क़ाबिले तारीफ़ होगा न आख़िरत में अज्र पाएगा ।

(دلیل الفالحین، باب فی الحلم والاناۃ والرفق، ۳/۸۹، تحت الحدیث: ۶۳۳ملخصا)

दूसरी ह़दीस में फ़रमाया गया कि नर्मी जिस चीज़ में हो उसे ज़ीनत देती है और जिस चीज़ से निकाल ली जाए उसे ऐबदार कर देती है। यानी नर्मी से उमूर की तक्मील होती है जब कि सख़्ती से बने हुवे काम भी बिगड़ जाते हैं। किसी शाइर ने क्या ख़ूब कहा है :

है फ़लाह़ो कामरानी नर्मी और आसानी में　　हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक रफ़ीक़ यानी करीमो रह़ीम है किसी को उस की त़ाक़त से ज़ियादा हुक्म नहीं देता, गुनाह बख़्शता है, वोह चाहता है कि मेरे बन्दे भी अपने मातह़तों, अपने साथियों पर रह़ीमो करीम हों। ख़याल रहे कि **अल्लाह** पाक को आ़म मुह़ावरे में रफ़ीक़ कहना जाइज़ नहीं येह लफ़्ज़ अस्माए इलाहिय्या में से नहीं है। यहां ह़दीसे मज़्कूर में येह लफ़्ज़ लुग़वी माना में इस्तिमाल हुवा है। नर्मी से दुन्या ओ आख़िरत के वोह काम बन जाते हैं जो सख़्ती से नहीं बनते, अकसर सख़्ती से दोस्त दुश्मन बन जाते हैं, बनते हुवे काम बिगड़ जाते हैं जब कि नर्मी से दुश्मन दोस्त हो जाते हैं और बिगड़ते हुवे काम बन जाते हैं। अगर ह़क़ीर आदमी के दिल में नर्मी हो तो वोह अ़ज़ीज़ बन जाता है और अ़ज़ीमुश्शान आदमी के दिल में सख़्ती हो तो वोह ह़क़ीर हो जाता है। लोहा नर्म हो कर अवज़ार बनता है, सोना नर्म हो कर ज़ेवर, ज़मीन नर्म हो कर क़ाबिले काश्त होती है, इन्सान नर्म हो कर **वली** बन जाता है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 635/636 मुलख़्ख़सन)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि नर्मी की किस क़दर अहम्मिय्यत है। नर्मी **अल्लाह** पाक को बेह़द पसन्द है, जिस चीज़ में नर्मी होती है, उसे ज़ीनत देती है जब कि जो इस्लामी बहन नर्मी जैसी प्यारी ख़ूबी से मेह़रूम होती है, वोह हर वक़्त ग़ुस्से में भरी रहती है, बात

बात पर दूसरों को झिड़कती है, ग़लती करने वाली को सब के सामने ज़लीलो रुस्वा करती है। अब चाहे वोह कितनी ही ज़ियादा इबादत करती हो, तहज्जुद की नमाज़ पढ़ती हो, रोज़े रखने वाली हो, सारी रात नफ़्ल इबादात व तिलावत में मश्ग़ूल रहती हो लेकिन अगर उस के मिज़ाज में सख़्ती होगी और वोह बिला वज्ह इस्लामी बहनों का दिल दुखाती होगी, तो येह अ़मल क़ियामत के दिन उस की पकड़ का सबब बन सकता है।

याद रखिये ! ग़ुस्से में आ कर किसी इस्लामी बहन का दिल दुखाना, सब के सामने किसी को ज़लीलो रुस्वा करना ह़राम और दोज़ख़ में ले जाने वाला काम है। फ़ी ज़माना हमारे मुआ़शरे में ग़ुस्से की ह़ालत या मज़ाक़ करते वक़्त किसी का मज़ाक़ उड़ाना, सब के सामने शर्मिन्दा करना, उस पर तन्क़ीद के तीर बरसाना और उस की बातों पर क़ह्क़हा लगाना बिल्कुल बुरा नहीं समझा जाता, जिस का मज़ाक़ उड़ाया जाता है बसा अवक़ात वोह भी मज़ाक़ उड़ाने वालियों के साथ क़ह्क़हा मार कर हंस रही होती है। ऐसे में शैत़ान यूं मुत़्मइन कर देता है कि इस हंसी मज़ाक़ से येह भी ख़ुश हो रही है ह़ालांकि वोह ख़ुश नहीं होती बल्कि हो सकता है अपनी शर्म मिटाने के लिये हंसती हो और अन्दर ही अन्दर उस के दिल के टुकड़े हो रहे हों, लिहाज़ा हमें हर उस काम से बचना चाहिये जिस से किसी इस्लामी बहन का दिल दुखता है और अगर कोई हमारे लिये भी सख़्त अल्फ़ाज़ इस्तिमाल करे तो फ़ौरन ग़ुस्से में आग बगूला होने के बजाए नर्मी इख़्तियार करते हुवे उस की इस्लाह़ की कोशिश करनी चाहिये। आइये ! इस बारे में एक वाक़िआ़ सुनिये। चुनान्चे,

मीठे बोल की ह़िकायत

ख़ुरासान के एक बुज़ुर्ग رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ को ख़्वाब में हुक्म हुवा : तातारी क़ौम में इस्लाम की दावत पेश करो ! उस वक़्त हलाकू का बेटा

तगूदार इक़्तिदार में था । वोह बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه सफ़र कर के तगूदार के पास तशरीफ़ ले आए । सुन्नतों के पैकर चेहरे पर दाढ़ी सजाए मुसलमान मुबल्लिग़ को देख कर उसे मज़ाक़ सूझा और कहने लगा : मियां ! येह तो बताओ तुम्हारी दाढ़ी के बाल अच्छे या मेरे कुत्ते की दुम ? बात अगर्चे ग़ुस्सा दिलाने वाली थी मगर चूंकि वोह एक समझदार मुबल्लिग़ थे, लिहाज़ा निहायत नर्मी के साथ फ़रमाने लगे : मैं भी अपने रब्बे करीम का कुत्ता हूं, अगर वफ़ादारी से उसे ख़ुश करने में कामयाब हो जाऊं, तो मैं अच्छा, वरना आप के कुत्ते की दुम ही मुझ से अच्छी । चूंकि वोह एक बा अ़मल मुबल्लिग़ थे, ग़ीबत व चुग़ली, ऐ़ब खोलने, बुरा कलाम करने और फ़ुज़ूल गुफ़्तगू वग़ैरा से दूर रहते हुवे अपनी ज़बान ज़िक्रुल्लाह से हमेशा तर रखते थे, लिहाज़ा उन की ज़बान से निकले हुवे मीठे बोल तासीर का तीर बन कर तगूदार के दिल में लगे । जब उस ने अपने ज़हरीले कांटे के जवाब में उस बा अ़मल मुबल्लिग़ की त़रफ़ से ख़ुश्बूदार जवाब पाया तो पानी पानी हो गया और नर्मी से बोला : आप मेरे मेहमान हैं, मेरे ही यहां ठहरिये । चुनान्चे, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه उस के पास ठहर गए । तगूदार रोज़ाना रात आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर होता, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه निहायत ही शफ़्क़त के साथ उसे नेकी की दावत पेश करते । आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की इनफ़िरादी कोशिश ने तगूदार के दिल में इन्क़िलाब पैदा कर दिया, वोही तगूदार जो कल तक इस्लाम को मिटाने का इरादा किये हुवे था, आज इस्लाम का चाहने वाला बन चुका था । इसी बा अ़मल मुबल्लिग़ के हाथों तगूदार अपनी पूरी तातारी क़ौम समेत मुसलमान हो गया, उस का इस्लामी नाम "**अह़मद**" रखा गया । तारीख़ गवाह है कि एक मुबल्लिग़ के "**मीठे बोल**" की बरकत से तातारी हुकूमत इस्लामी हुकूमत से बदल गई ।

(ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 154)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

मीठी ज़बान

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن सामने वाले के कड़वे अन्दाज़ और सख़्त जुम्ले सुन कर भी कभी ग़ुस्से में न आते बल्कि सब्र व बरदाश्त से काम लेते हुवे अच्छे अख़्लाक़ का मुज़ाहरा फ़रमाते हैं, येही वज्ह है कि उन की बातें सामने वाले के दिल में उतर जाती हैं।

याद रखिये ! मीठी ज़बान में ख़र्च कुछ नहीं होता है मगर इस से फ़ाइदा बहुत होता है जब कि सख़्त ज़बान इस्तिमाल करने में सरासर नुक़्सान ही नुक़्सान है। किसी ने क्या ख़ूब अनोखी बात कही कि **"तोता मिर्च खा कर भी मीठे बोल बोलता है और इन्सान मीठा खा कर भी कड़वी बातें करता है।"** येह ह़क़ीक़त है कि मिज़ाज के ख़िलाफ़ बात सुनने पर ग़ुस्सा आ ही जाता है मगर ऐसे में जोश से काम लेने के बजाए होश से काम लेते हुवे सब्र व बरदाश्त का दामन छोड़ने से कोई फ़ाइदा ह़ासिल नहीं होता। आइये ! इस बारे में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मुबारक सीरत का एक वाक़िआ़ सुनती हैं : चुनान्चे,

कमाले ज़ब्त़ का मुज़ाहरा

येह उन दिनों की बात है जब आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दावते इस्लामी का हफ़्तावार सुन्नतों भरा इजतिमाअ़ दावते इस्लामी के सब से पहले मदनी मर्कज़, गुलज़ारे ह़बीब मस्जिद (मुल्के अ़त्तार) में होता था। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इजतिमाअ़ में शिर्कत के लिये इस्लामी भाइयों के साथ जब एक सिनेमा घर के क़रीब से गुज़रे तो एक नौजवान जो फ़िल्म का टिकट लेने की ग़रज़ से क़ित़ार (Line) में खड़ा था, उस ने बुलन्द आवाज़ से अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को मुख़ात़ब कर के कहा : मौलाना ! बड़ी अच्छी फ़िल्म लगी है, आ कर देख

लो (مَعَاذَ الله) । इस से पहले कि आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के साथ मौजूद इस्लामी भाई जज़्बात में आ कर कुछ करते, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने बुलन्द आवाज़ से सलाम किया और क़रीब पहुंच कर बड़ी ही नर्मी के साथ इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे इरशाद फ़रमाया : बेटा ! मैं फ़िल्में नहीं देखता, अलबत्ता आप ने मुझे दावत पेश की, तो मैं ने सोचा कि आप को भी नेकी की दावत पेश करूं, अभी اِنْ شَآءَ الله गुलज़ारे ह़बीब मस्जिद में सुन्नतों भरा इजतिमाअ़ होगा, आप से शिर्कत की दरख़ास्त है, अगर आप अभी नहीं आ सकते, तो फिर कभी ज़रूर तशरीफ़ लाइयेगा । फिर आप ने उसे एक इत्र की शीशी भी तोह़फ़े में पेश की ।

चन्द सालों बाद अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में एक इस्लामी भाई इमामा शरीफ़ सजाए ह़ाज़िर हुवे और कुछ इस त़रह़ अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! चन्द साल पहले एक नौजवान ने आप को (مَعَاذَ الله) फ़िल्म देखने की दावत दी थी और आप ने बरदाश्त व नर्मी फ़रमाते हुवे नाराज़ होने के बजाए इजतिमाअ़ में शिर्कत की दावत पेश की थी, वोह नौजवान मैं ही हूं, मैं आप के अच्छे अख़्लाक़ से बेह़द मुतअस्सिर हुवा और एक दिन इजतिमाअ़ में आ ही गया फिर आप की नज़रे करम हो गई और اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! मैं गुनाहों से तौबा कर के दीनी माहोल से वाबस्ता हो गया ।

(तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत, स. 40, मुलख़्ख़सन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!   صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हम नर्मी पैदा करने के बारे में सुन रही थीं । याद रखिये ! अगर हम अपने घर में दीनी माह़ोल क़ाइम करना चाहती हैं तो हमें अपने अन्दर नर्मी पैदा करनी होगी, वालिद और वालिदा को नेकी की दावत देनी है तो अपने अन्दर नर्मी पैदा करनी होगी, बहन–बेटी को बा पर्दा बनाना है तो उन्हें समझाने के लिये अपने अन्दर

नर्मी पैदा करनी होगी, अपने बेटे को नमाज़ी बनाना है तो उस की इस्लाह़ के लिये अपने अन्दर नर्मी पैदा करनी होगी, सहेलियों को बुरे आमाल से बचाना है तो उन्हें तफ़हीम (समझाने) के लिए अपने अन्दर नर्मी पैदा करनी होगी, अपनी पड़ोसनों को सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में लाना है तो उन्हें तरग़ीब के लिये अपने अन्दर नर्मी पैदा करनी होगी, अपनी मातह़त इस्लामी बहनों को अपना बनाना है तो उन्हें गरवीदा करने के लिये अपने अन्दर नर्मी पैदा करनी होगी, 63 नेक अ़ामाल के अ़ामिल, मद्रसतुल मदीना बालिग़ात और दीगर दीनी कामों के लिये इस्लामी बहनों का ज़ेह्न बनाना है तो उन्हें उभारने के लिये अपने अन्दर नर्मी पैदा करनी होगी। ऐ **अल्लाह** पाक ! तेरे मह़बूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने का सदक़ा हमें नर्मी अ़त़ा फ़रमा। اٰمِيْن بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! येह बात ज़ेह्न नशीन रहे ! जो बहनें सख़्त मिज़ाज होती हैं, दीगर बहनें उन के क़रीब आने और उन से बात करने से कतराती हैं, ऐसी सख़्त मिज़ाज बहनों को मुआ़शरे में इ़ज़्ज़त की निगाह से नहीं देखा जाता, उन की पीठ पीछे त़रह़ त़रह़ की बातें कही जाती हैं, मसलन "**फ़ुलानी से बच कर रहना, बड़ी सख़्त मिज़ाज है**", "**छोटी छोटी बातों पर सब के सामने ज़लील कर देती है**", "**हर वक़्त ग़ुस्से से मुंह फुलाए रहती है**", "**उस के रोब (Gear) की वज्ह से उस के घर वाले भी उस से नाराज़ रहते हैं**" वग़ैरा। ज़रा ग़ौर कीजिये ! कहीं हमारे बारे में भी लोगों के येह तास्सुरात तो नहीं ? कहीं हम भी लोगों पर बिला वज्ह सख़्ती कर के ख़ुद से बद ज़न तो नहीं कर रही हैं ? कहीं हमारे बच्चे भी हमारी शफ़्क़त व मह़ब्बत से मह़रूम तो नहीं रह गए ? अगर ऐसा है तो अभी से अपने मिज़ाज में नर्मी पैदा करने की

कोशिश कीजिये कि जिस का दिल नर्म होता है, उस की इ़ज़्ज़त में इज़ाफ़ा होता है। चुनान्चे,

ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक जिन लोगों पर करम फ़रमाता है, उन के दिलों में नर्मी डाल देता है, वोह लोगों पर नर्मी करते हैं जिस से उन की इ़ज़्ज़त और बढ़ जाती है और जिन लोगों पर **अल्लाह** पाक क़ह्‌र (ग़ज़ब) फ़रमाता है, उन्हें नर्मिये दिल से मह़रूम कर देता है, उन के दिल सख़्त हो जाते हैं, लोगों से सख़्ती से पेश आते हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 654)

याद रखिये ! नर्मी एक बहुत ही प्यारी ख़ूबी है जो इन्सान को रह़्म पर उभारती, ज़ुल्म से रोकती, तकब्बुर से बचाती और आ़जिज़ी पर उक्साती है। ज़िन्दगी का वीरान खन्डर नर्मी के सबब आ़लीशान मह़ल में तब्दील हो सकता है। नर्मी पैदा करने के लिये लाज़िमी है कि दिल को नर्म कीजिये क्यूंकि इन्सान का दिल, आज़ा का बादशाह है, जब येह नर्म हो गया तो हमारे किरदार में खुद ही नर्मी पैदा हो जाएगी। दिल में नर्मी कैसे पैदा हो ? आइये ! इस बारे में चन्द निकात सुनती हैं : चुनान्चे,

《1》...ग़फ़्लत से बचना

अगर हर वक़्त ज़िक्रो दुरूद में मश्ग़ूल रहेंगी, तो इस की बरकत से हमारा दिल नर्म हो जाएगा, वरना यादे इलाही से ग़ाफ़िल रहने की नुहूसत से दिल सख़्त हो सकता है। जैसा कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक के ज़िक्र के इ़लावा ज़ियादा गुफ़्तगू न करो क्यूंकि **अल्लाह** पाक के ज़िक्र के बिग़ैर ज़ियादा गुफ़्तगू करना दिल की सख़्ती (की वज्ह है) और जिस का दिल सख़्त हो, वोह **अल्लाह** पाक से बहुत दूर होता है। (ترمذی، کتاب الزہد، ۶۲-باب منہ، ۴/۱۸۴، حدیث: ۲۴۱۹)

﴾2﴿...गुनाहों से दूर रहना

दिल को नर्म करने के लिये ख़ूब ख़ूब नेक आमाल कीजिये और हर छोटे, बड़े, ज़ाहिरी, बातिनी गुनाह से बचने की कोशिश की जाए क्यूंकि गुनाह करने से दिल सख़्त हो जाता है । लिहाज़ा दिल में नर्मी पैदा करने के लिये अल्लाह पाक का ख़ौफ़ दिल में पैदा कीजिये और गुनाहों के सबब मिलने वाली आख़िरत की तक्लीफ़ें और अ़ज़ाबात को याद कीजिये, اِنْ شَآءَ اللہ दिल की सख़्ती दूर हो जाएगी ।

﴾3﴿...मुआ़फ़ करना

अपने अन्दर नर्मी पैदा करने के लिये खुद को इस बात की आ़दी बनाइये कि जब भी किसी से जाने अन्जाने में कोई तक्लीफ़ पहुंच जाए, तो ईंट का जवाब पथ्थर से देने के बजाए गुस्से को क़ाबू में रखते हुवे मुआ़फ़ कर दीजिये और येह उसूल ज़ेह्न में रखिये कि अगर गन्दगी किसी चीज़ पर लग जाए, तो उसे पानी से पाक किया जाता है, गन्दगी से नहीं ! अगर हम उस गन्दगी को गन्दगी से पाक करने की कोशिश करेंगी, तो वोह पाक होने के बजाए मज़ीद नापाक हो जाएगी । इसी त़रह़ कोई हमारे साथ नादानी में बुरा सुलूक करे और जवाब में हम भी उस के साथ वैसा ही रवय्या इख़्तियार करें या उस से बढ़ कर बुरी त़रह़ पेश आएं, तो बात ख़त्म होने के बजाए मज़ीद बढ़ जाएगी और दुश्मनी व लड़ाई, झगड़े तक नौबत पहुंच जाएगी । हां ! अगर उस के साथ नर्मी व मह़ब्बत भरा सुलूक किया जाए और उस की ग़लती को नज़र अन्दाज़ करते हुवे मुआ़फ़ कर दिया जाए, तो اِنْ شَآءَ اللہ इस के अच्छे (Positive) नतीजे ज़ाहिर होंगे ।

﴾4﴿...क़िल्लते त़आ़म

नर्मी पैदा करने के लिये भूक से कम खाने की आ़दत बनाना भी बेह़द मुफ़ीद है जब कि पेट भर कर खाने से जहां इ़बादत में सुस्ती और

सिह़ह़त ख़राब होती है, वहीं इस का एक नुक़्सान येह भी है कि पेट भर कर खाना दिल की सख़्ती का सबब भी बनता है । जैसा कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا बयान करते हैं, नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ شَبِعَ وَنَامَ قَسٰی قَلْبُہٗ जो पेट भर कर खाना खाए और सो जाए, तो उस का दिल सख़्त हो जाता है । फिर इरशाद फ़रमाया : لِکُلِّ شَیْءٍ زَکَاۃٌ وَزَکَاۃُ الْبَدَنِ الْجُوْعِ हर चीज़ की ज़कात होती है और बदन की ज़कात भूका रहना है ।

(ابن ماجہ، کتاب الصیام، باب فی الصوم زکاۃ الجسد، ۲/ ۳۴۷، حدیث: ۱۷۴۵ ملخصا)

﴾5﴿...अच्छी सोहूबत इख़्तियार करना

नर्मी पैदा करने का एक त़रीक़ा येह भी है कि बुरी सोहूबत से दूर रहा जाए और नेक व परहेज़गार इस्लामी बहनों की सोहूबत इख़्तियार की जाए ।

﴾6﴿ ...यतीम व मिस्कीन की ख़ैर ख़्वाही करना

नर्मी पैदा करने का एक नुस्ख़ा येह भी है कि यतीम (Orphan) व मिस्कीन के साथ ख़ैर ख़्वाही कीजिये कि ह़दीसे पाक में इस की तरग़ीब मौजूद है । चुनान्चे, ह़ज़रते अबू दर्दा رَضِیَ اللہُ عَنْہ से रिवायत है : एक शख़्स ने प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अपने दिल की सख़्ती की शिकायत की तो आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या तुझे येह पसन्द है कि तेरा दिल नर्म हो जाए ? उस ने अ़र्ज़ की : जी हां ! इरशाद फ़रमाया : जब तेरे पास कोई यतीम आए, तो उस के सर पे हाथ फेर और अपने खाने में से उसे भी खिला, तेरा दिल नर्म हो जाएगा और तेरी ह़ाजतें भी पूरी होंगी ।

(مصنف عبد الرزاق، کتاب الجامع، باب اصحاب الاموال، ۱۰/ ۱۳۵، حدیث: ۲۰۱۹۸)

﴾7﴿...दिल की सख़्ती के नुक़्सानात पर ग़ौर करना

दिल की सख़्ती की नुहूसत येह है कि उस पर नसीह़त की कोई बात असर नहीं करती, दिल नेकियों की त़रफ़ माइल नहीं होता, दिल की सख़्ती की वज्ह से इन्सान अल्लाह पाक की नाराज़ी और उस की त़रफ़ से लानत (यानी उस की रह़मत से दूरी) का ह़क़दार हो जाता है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

ज़ीनत की सुन्नतें और आदाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइये ! मक्तबतुल मदीना की किताब **"सुन्नतें और आदाब"** से ज़ीनत की सुन्नतें और आदाब सुनिये।
❖ इन्सान के बालों की चोटी बना कर औ़रत अपने बालों में गूंधे, येह ह़राम है। ह़दीसे मुबारक में उस पर लानत आई बल्कि उस पर भी लानत आई है जिस ने किसी दूसरी औ़रत के सर में इन्सानी बालों की चोटी गूंधी। (درمختار، کتاب الحظر والاباحۃ، باب فی النظر والمس، ۹/۲۱۴تا ۲۱۵) ❖ अगर वोह बाल जिस की चोटी बनाई गई, ख़ुद उस औ़रत के अपने बाल हैं जिस के सर में जोड़ी गई, जब भी नाजाइज़ है। (درمختار، کتاب الحظر والاباحۃ، ج۹، ص۲۱۴تا ۲۱۵)
❖ औ़रतों को हाथ, पाउं में मेहंदी लगाना जाइज़ है। छोटे बच्चों के हाथ, पाउं में मेहंदी लगाना नाजाइज़ है, बच्चियों को मेहंदी लगाने में ह़रज नहीं। (ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی اللبس، ۹/۵۹۹ ملتقطاً) ❖ जिस त़रह़ मर्दों को औ़रतों की नक़्ल जाइज़ नहीं, इसी त़रह़ औ़रतें भी मर्दों की नक़्ल नहीं कर सकतीं। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने लानत फ़रमाई ज़नाना मर्दों पर जो औ़रतों की सूरत बनाएं और मर्दानी औ़रतों पर जो मर्दों की सूरत बनाएं।

(مسند امام احمد، مسند عبد اللہ بن عباس، حدیث: ۲۲۶۳، ۱/۵۴۰)

❖ ख़्वातीन अपने शौहर के लिये जाइज़ अश्या के ज़रीए मगर घर की चार दीवारी में ज़ीनत करें लेकिन मेकअप कर के और बन संवर के घर से बाहर न निकला करें कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : औरत पूरी की पूरी औरत (यानी छुपाने की चीज़) है, जब कोई औरत बाहर निकलती है, तो शैतान उसे झांक झांक कर देखता है ।

(ترمذی، کتاب الرضاع، باب (۱۸)، حدیث: ۱۱۷۶،۲/۳۹۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

तरह तरह की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की छपी हुई दो किताबें (1) **बहारे शरीअत, हिस्सा 16** (312 सफ़हात) (2) 120 सफ़हात की किताब “**सुन्नतें और आदाब**” नीज़ इस के इलावा अमीरे अहले सुन्नत के दो रिसाले “**101 मदनी फूल**” और “**163 मदनी फूल**” हदिय्यतन तलब कीजिये और पढ़िये ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान नम्बर – 11

हर मुबल्लिग़ा बयान करने से पहले कम अज़ कम तीन बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ   وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ   وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

उम्मुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से रिवायत है कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है : مَنْ صَلّٰی عَلَیَّ یَوْمَ الْجُمُعَۃِ کَانَتْ شَفَاعَۃٌ لَّہٗ عِنْدِیْ یَوْمَ الْقِیَامَۃ जो शख़्स जुमुआ़ के दिन मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा, तो क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त मेरे ज़िम्मए करम पर होगी।

(کنزالعمال، کتاب الاذکار، الباب السادس فی الصلاۃ علیہ، الجزء الاول، ۱/۲۵۵، حدیث: ۲۲۳۶)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیْر لِلطَّبَرَانِی ج ۶ ص ۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

मस्अला :-

नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नोइयत के एतिबार से निय्यतों में कमी व बेशी व तब्दीली की जा सकती है।

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी। टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी। ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिये जगह कुशादा करूंगी। धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी। صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوبُوا اِلَى اللّٰه वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिये पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी। इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी। दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी। जो कुछ बयान होगा उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल और बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगी।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आज का ज़माना क़ियामत की निशानियों और इस से पहले ज़ाहिर होने वाले बे शुमार फ़ितनों से भरा हुवा है। प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **अल्लाह** करीम के अ़त़ाकर्दा इल्मे ग़ैब के ज़रीए 1400 साल पहले ही मौजूदा और आइन्दा दौर के फ़ितनों की पेशन गोई फ़रमाते हुवे हमें उन की भड़कती आग से उठने वाले शोलों से अपना दामन बचाने की तरग़ीब दिलाई है। आइये ! इस बारे में चन्द अह़ादीसे मुबारका और इन से ह़ासिल होने वाले नसीह़त के मदनी फूल चुनती हैं। चुनान्चे,

घर वालों के हाथों हलाकत

नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰہُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : लोगों पर एक ज़माना ऐसा आएगा कि उस शख़्स के इ़लावा किसी दीन वाले का दीन मेह़फ़ूज़ न रहेगा जो अपने दीन को ले कर (यानी उस की ह़िफ़ाज़त की ख़ातिर) एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ और एक ग़ार से दूसरे ग़ार की त़रफ़ भागे । उस वक़्त रोज़ी रोटी वग़ैरा का ह़ासिल होना **अल्लाह** पाक को नाराज़ किये बिग़ैर न होगा । जब येह सूरते ह़ाल होगी तो आदमी अपने बीवी बच्चों के हाथों हलाकत में पड़ जाएगा, अगर बीवी बच्चे न होंगे तो वालिदैन के हाथों उस की हलाकत होगी और अगर वालिदैन भी न हों तो उस की हलाकत रिश्तेदारों या पड़ोसियों के हाथों होगी । सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह कैसे होगा ? तो रसूले पाक صَلَّى اللّٰہُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : वोह उसे आमदनी की कमी पर शर्म दिलाएंगे, उस वक़्त वोह अपने आप को हलाकत की जगहों में ले जाएगा ।

(الزھد الکبیر للبیہقی، الجزء الثانی، فصل فی ترک الدنیا۔۔ الخ، ص ۱۸۳، حدیث: ۴۳۹)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान कर्दा ह़दीसे पाक में जिस त़रह़ मर्दों के लिये इ़ब्रत व नसीह़त के मदनी फूल हैं, वहीं उन औ़रतों के लिये भी इस में इ़ब्रत है जो अपने शौहरों को उन की आमदनी पर त़रह़ त़रह़ के कोसने देते हुवे कुछ इस त़रह़ की जली कटी बातें सुनाती हैं कि : फ़ुलां के पास तो कई कई बंगले, फ़ेक्ट्रियां और जाएदादें (Properties) हैं मगर आप ने मुझे किराए के छोटे से मकान में रखा हुवा है, मेरा तो यहां पर दम घुटता है, मुझे खुला घर चाहिये । फ़ुलां को तो देखो ! अपनी फ़ेमेली के साथ आ़लीशान गाड़ियों में घूमता फिरता है लेकिन आप मुझे

बसों, टेक्सियों और रिक्शों के धक्के खिलाते हैं । फ़ुलां ने तो लोड शेडिंग से बचने के लिये जनरेटर लिया हुवा है, आप कम अज़ कम यू.पी.एस (UPS) या चार्जिंग फ़ेन ही ले लीजिये । फ़ुलां ने तो इस ईद पर अपने बच्चों की अम्मी को इतने हज़ार का लिबास या सोने (Gold) का सेट बनवा कर दिया है मगर आप मुझे ईद पर सोने की अंगूठी या ब्रेस्लेट (कंगन) या बालियां ही दिलवा दें । फ़ुलां ने अपने बच्चों की अम्मी को फ़ुलां शॉपिंग मॉल से शॉपिंग करवाई है, लिहाज़ा मुझे भी किसी अच्छे शॉपिंग मॉल से शॉपिंग करवा दीजिये । फ़ुलां को देखो ! कितना ख़ुशह़ाल हो गया है, आप भी तो कुछ कीजिये । फ़ुलां की तनख़्वाह लाखों में है मगर आप इतना अ़र्सा काम करने के बाद भी वहीं के वहीं खड़े हैं वग़ैरा । जब कि बच्चों की फ़रमाइशें इस के इ़लावा हैं । तो आए रोज़ जब बन्दा फ़रमाइशों और त़ानों को सुनता है, तो ज़ेह्नी तक्लीफ़ और मायूसी उसे हर त़रफ़ से घेर लेती है, उसे कुछ समझ नहीं आ रहा होता कि आख़िर वोह करे तो करे क्या ? चूंकि उसे बीवी बच्चों की फ़रमाइशें भी पूरी करनी होती हैं और उस के पास वसाइल भी कम होते हैं, लिहाज़ा वोह उन की जाइज़ व नाजाइज़ फ़रमाइशें पूरी करने के लिये ह़राम व ह़लाल की परवा किये बिग़ैर नाजाइज़ ज़राएअ़ इख़्तियार कर के अपनी क़ब्रो आख़िरत को दाव पर लगा देता है । जैसा कि :

ह़लाल व ह़राम के मुआ़मले में बे परवाई

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ، لَا يُبَالِي الْمَرْءُ مَا اَخَذَ مِنْهُ اَمِنَ الْحَلَالِ اَمْ مِنَ الْحَرَام

लोगों पर एक ज़माना ऐसा आएगा कि आदमी को इस बात की कोई परवा न होगी कि उस ने (माल) कहां से ह़ासिल किया, ह़राम से या ह़लाल से ।

(بخاری، کتاب البیوع، باب من لم یبال من۔۔ الخ، ۲/۷، حدیث: ۲۰۵۹)

हकीमुल उम्मत, हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस हदीस की शर्ह में फ़रमाते हैं : यानी आख़िर ज़माने में लोग दीन से बे परवा हो जाएंगे, पेट की फ़िक्र में हर तरह फंस जाएंगे, आमदनी बढ़ाने, माल जम्अ करने की फ़िक्र करेंगे, हर हराम व हलाल लेने पर दिलेर (यानी बे ख़ौफ़) हो जाएंगे जैसा कि आज कल आम है।

(मिरआतुल मनाजीह, 4 / 229)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हमें चाहिये कि हम अपने घर वालों को आज़माइश में मुब्तला करने से बचें और तरह तरह की बेजा फ़रमाइशों में पड़ कर उन के लिये मुश्किलात खड़ी न करें बल्कि जो कुछ मुयस्सर हो, उस पर राज़ी रह कर हर हाल में सब्र और शुक्र से काम लें, اِنْ شَآءَ الله नफ़्सो शैतान के हीलों से बचने में कामयाबी हासिल हो जाएगी और ज़िन्दगी मुश्किल होने के बजाए मज़ीद आसान लगेगी। याद रहे ! हर हाल में **अल्लाह** करीम का शुक्र अदा करने से **अल्लाह** करीम खुश होता है और नेमतों में मज़ीद इज़ाफ़ा होता है।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! येह बहुत बड़ी बद नसीबी है कि जिस की तमाम नेकियां उस के घर वाले ले जाएं और वोह खुद कंगाल रह जाए। लिहाज़ा मौक़अ ग़नीमत जानते हुवे ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार हो जाना चाहिये, **अल्लाह** पाक और रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी करते हुवे अपनी औलाद की दीनी तरबियत कीजिये, उन्हें क़ुरआने करीम पढ़ना भी सिखाया जाए, इस्लामी आदाब भी सिखाए जाएं, उन के अख़्लाक़ भी संवारने की कोशिश की जाए, **अल्लाह** पाक और नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत सिखाई जाए, आख़िरत की फ़िक्र दिलाई जाए, मौत की तय्यारी करवाई जाए, मुख़्तलिफ़ गुनाहों के बारे में बताया जाए और उन गुनाहों से बचाया भी जाए।

वोह वक़्त जिस की निशान देही रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाई है कि जिस में सुन्नत पर अ़मल करना, दीन पर क़ाइम रहना और इस राह में आने वाली तकालीफ़ पर सब्र करना बहुत मुश्किल होगा। आइये ! इस बारे में 2 **फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनिये और सुन्नतों पर अ़मल की कोशिश कीजिये। चुनान्चे,

सुन्नतें अपनाना, अंगारा थामने की त़रह़ होगा

1. **इरशाद फ़रमाया :** اَلْمُتَمَسِّكُ بِسُنَّتِيْ عِنْدَ اِخْتِلَافِ اُمَّتِيْ كَالْقَابِضِ عَلَى الْجَمْر इख़्तिलाफ़े उम्मत के वक़्त मेरी सुन्नत को मज़बूत़ी से थामने वाला, हथेली में अंगारा रखने वाले की त़रह़ होगा।

(نوادر الاصول، الاصل الثالث عشر، الجزء الاول، ص ۶۸، حدیث: ۸۷)

2. **इरशाद फ़रमाया :** يَاْتِيْ عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ الصَّابِرُ فِيْهِمْ عَلٰى دِيْنِهٖ كَالْقَابِضِ عَلَى الْجَمْرِ लोगों पर एक ज़माना ऐसा आएगा कि उन में अपने दीन पर सब्र करने वाला, अंगारा पकड़ने वाले की त़रह़ होगा।

(ترمذی، کتاب الفتن، باب ماجاء فی النھی عن سب الریاح، ۴/ ۱۱۵، حدیث: ۲۲۶۷)

ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحۡمَةُ اللهِ عَلَيۡه बयान कर्दा दूसरी ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : येह ज़माना क़रीबे क़ियामत होगा जिस की इब्तिदा आज हो चुकी है। फ़ी ज़माना दीनदार बन कर रहना मुश्किल है, आज नमाज़ की पाबन्दी करना मुश्किल हो गया है, सूद से बचना तो क़रीबन ना मुमकिन ही है। मज़ीद फ़रमाते हैं : जैसे हाथ में अंगारा रखना बहुत ही बड़े साबिर (सब्र करने वाले) का काम है, यूंही उस वक़्त मुख़्लिस, कामिल मुसलमान बनना सख़्त मुश्किल हो जावेगा।

(मिरआतुल मनाजीह़, 7 / 172, मुलख़्ख़सन)

दीन पर चलने वालों के लिये आज़माइश

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मुफ़्ती साहिब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने ह़दीसे पाक की येह शर्ह़ अपने दौर में फ़रमाई थी और अब तो इस से कई गुना बढ़ कर बे बाकी और दीन से दूरी है । येह बात किसी से ढकी छुपी नहीं कि अब जो इस्लामी बहनें बुर्क़अ़ पहनतीं, शरई पर्दा करतीं और शरीअ़त व सुन्नत के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारना चाहती हैं, उन के लिये सख़्त तरीन आज़माइश है । इस्लामी बहनें जो नाजाइज़ रस्मों से बचते हुवे शादी की तक़रीब करना चाहती हैं, उन के लिये भी सख़्त आज़माइश है । एक त़रफ़ तो मुआ़शरा (Society) उन को त़रह़ त़रह़ से सताता, उन का दिल दुखाता और उन का ह़ौसला कम करने की कोशिश करता है और दूसरी त़रफ़ नेक आमाल करने में नफ़्सो शैत़ान रुकावट बन जाते हैं ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ख़ुद इन्साफ़ कीजिये !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इन्सान से ग़लत़ियां होती रहती हैं लेकिन अफ़्सोस ! अगर किसी मज़हबी और दीन पर अ़मल करने वाली से कोई ग़लत़ी हो जाए, तो उसे ख़ूब उछाला जाता है । यूंही इस्लाम और शरीअ़त व सुन्नत पर चलने वालों को मीडिया, सोश्यल मीडिया और दीगर ज़राएअ़ का सहारा ले कर त़रह़ त़रह़ से बदनाम करने की कोशिशें की जाती हैं, जिस से लोगों के दिलों में उन के लिये नफ़रत पैदा हो जाती है, नतीजतन लोग उन से बद ज़न होते, उन को अहम्मिय्यत नहीं देते और अपनी दुन्या ओ आख़िरत की बरबादी का सामान करते हैं । ऐसे मुश्किल ह़ालात में दीन पर चलने वाली इस्लामी बहनों को मज़ीद मोह़तात़ होना चाहिये ।

याद रखिये ! मामूली सी बे एह़तियात़ी भी कभी कभी बहुत बड़े नुक़्सान (Loss) का बाइ़स बनती है । अगर हम वाक़ेई़ दीनी काम करना चाहती हैं, तो जब तक शरीअ़त हुक्म न दे, हरगिज़ किसी इस्लामी बहन को अपना मुख़ालिफ़ मत बनाइये, कोई ऐसा काम मत कीजिये कि आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दावते इस्लामी पर उंगली उठे । बहर ह़ाल एह़तियात़ के बा वुजूद मुश्किलात हों, लोग त़ाने दें या घर वाले सुन्नतों के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने में रुकावटें डालें तो फिर भी घबराना नहीं चाहिये कि जिस काम में दुश्वारियां ज़ियादा हों, उस का सवाब भी ज़ियादा होता है ।

आइये ! इस बारे में 2 **फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनिये । चुनान्चे,

1. **इरशाद फ़रमाया :** अफ़्ज़ल तरीन इ़बादत वोह है जिस में तक्लीफ़ ज़ियादा हो । (كشف الخفاء، حرف الهمزة مع الفاء، ١/١٤١)
2. **इरशाद फ़रमाया :** जिस ने मेरी उम्मत के बिगड़ते वक़्त मेरी सुन्नत को मज़बूत़ी से थाम लिया तो उसे सौ शहीदों का सवाब मिलेगा ।

(مشكوة المصابيح، كتاب الايمان، باب الاعتصام بالكتاب والسنة، ١/٥٥، حديث: ١٧٦)

ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه बयान कर्दा दूसरी ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : क्यूंकि शहीद तो एक बार तलवार का ज़ख़्म खा कर पार हो जाता है मगर येह **अल्लाह** (पाक) का बन्दा उ़म्र भर लोगों के त़ाने और ज़बानों के घाव (ज़ख़्म) खाता रहता है, **अल्लाह** (पाक) और रसूल (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ख़ात़िर सब कुछ बरदाश्त करता है, इस का जिहाद, जिहादे अक्बर (नफ़्स के ख़िलाफ़ जिहाद) है । (मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 173)

ज़ाहिर में दोस्त, बातिन में दुश्मन

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइन्दा ज़माने में सर उठाने वाले फ़ितनों के बारे में एक ह़दीस शरीफ़ में है कि रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : आख़िरी ज़माने में कुछ ऐसे लोग भी होंगे जो ज़ाहिर में दोस्त और अन्दर से दुश्मन होंगे। अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह कैसे होगा ? इरशाद फ़रमाया : (अपनी दुन्या को बेहतर बनाने के लिये) एक दूसरे की त़रफ़ रग़बत (लालच) और एक दूसरे से डरने की वज्ह से होगा।

(مسند احمد، مسند الأنصار، ۸/ ۲۴۴، حدیث: ۲۲۱۱۶)

ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه बयान कर्दा ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : क़रीबे क़ियामत ऐसे लोग (ज़ाहिर) होंगे जो अपनी नेकियां अ़लानिया (ज़ाहिर करना) पसन्द करेंगे ताकि लोग उन की "वाह-वाह" करें। तन्हाई (अकेले) में या तो आमाल करेंगे ही नहीं या करेंगे तो मामूली त़रीक़े से। (मज़ीद फ़रमाते हैं) : उन लोगों के दिलों में **अल्लाह** पाक का ख़ौफ़, **अल्लाह** (पाक) से उम्मीद न होगी या कम होगी, लोगों का ख़ौफ़, लोगों से उम्मीद उन पर ग़ालिब होगी। हर अ़मल इख़्लास से क़बूल होता है। इस में वोह भी दाख़िल हैं जो लोगों से ज़ाहिरी मह़ब्बत करें और वोह भी ग़रज़ (मत़लब) के लिये, जब ग़रज़ (मत़लब) निकल जावे, दोस्ती (Friendship) भी ख़त्म हो जावे। (मिरआतुल मनाजीह़, 7 / 140-141)

मेरे लिये क्या अ़मल किया ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मालूम हुवा ! मुसलमान का हर काम **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये होना चाहिये, ह़त्ताकि अगर कोई दोस्ती रखे तो भी **अल्लाह** पाक की रिज़ा की ख़ात़िर और दुश्मनी रखे तो भी **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये। चुनान्चे,

मरवी है, अल्लाह पाक ने एक नबी عَلَيْهِ السَّلَام के पास वह्य भेजी : फ़ुलां ज़ाहिद (यानी दुन्या से बे रग़बती इख़्तियार करने वाले) से कह दो कि तुम्हारा दुन्या से बे रग़बती इख़्तियार करना अपने नफ़्स को सुकून पहुंचाने के लिये है और सब से जुदा हो कर मुझ से तअ़ल्लुक़ रखना, येह तुम्हारी इ़ज़्ज़त है, जो कुछ तुम पर मेरा ह़क़ है उस के मुक़ाबले में क्या अ़मल किया ? अ़र्ज़ की : ऐ रब्बे करीम ! वोह कौन सा अ़मल है ? इरशाद फ़रमाया : क्या तुम ने मेरी वज्ह से किसी से दुश्मनी की ? और मेरे बारे में किसी वली से दोस्ती की ?

(حلية الاولياء، طبقات اهل المشرق، ذكر جماعة من اعلام البغداديين، ۱۰/ ۳۳۷، حديث: ۱۵۳۸۴)

लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि हर क़िस्म के जाइज़ तअ़ल्लुक़ात में रिज़ाए इलाही को पेशे नज़र रखें । जो ख़ुश नसीब इस्लामी बहनें अल्लाह पाक के लिये एक दूसरे से दोस्ती रखती हैं, उन्हें मुबारक हो कि ह़दीसे पाक के मुताबिक़ ऐसे लोग कामिल ईमान वाले हैं और अल्लाह पाक उन को क़ियामत के दिन एक साथ जम्अ़ फ़रमा देगा, वोह ख़ुश नसीब अ़र्श के आस पास याक़ूत (क़ीमती पथ्थर की एक क़िस्म) की कुर्सियों (Chairs) पर होंगे और जन्नत में याक़ूत के सुतूनों पर मुश्तमिल ज़बरजद (क़ीमती पथ्थर की एक क़िस्म) के कमरे उन के ठिकाने होंगे ।

आइये ! इस बारे में 4 **फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनिये । चुनान्चे,

रिज़ाए इलाही के लिये मह़ब्बत करने वालों की जज़ा

1. इरशाद फ़रमाया : जो किसी से अल्लाह पाक के लिये मह़ब्बत रखे, अल्लाह पाक के लिये दुश्मनी रखे और अल्लाह पाक के लिये दे और अल्लाह पाक के लिये मन्अ़ करे, उस ने अपना ईमान कामिल कर लिया ।

(ابوداود، كتاب السنة، باب الدليل على زيادة... الخ، ۴/ ۲۹۰، حديث: ۴۶۸۱)

2. इरशाद फ़रमाया : दो शख़्सों ने **अल्लाह** पाक के लिये आपस में मह़ब्बत की, एक मश्रिक़ में है, दूसरा मग़रिब में । क़ियामत के दिन **अल्लाह** पाक दोनों को जम्अ़ कर देगा और फ़रमाएगा : येही वोह (शख़्स) है जिस से तू ने मेरे लिये मह़ब्बत की थी ।

(شعب الایمان، باب فی مقاربة...الخ، فصل فی المصافحة...الخ، ۶/ ۴۹۲، حدیث: ۹۰۲۲)

3. इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक के लिये मह़ब्बत रखने वाले, अ़र्श के आस पास याक़ूत की कुर्सियों पर होंगे ।

(معجم کبیر، سلیمان بن عطاء...الخ، ۴/ ۱۵۰، حدیث: ۳۹۷۳)

4. इरशाद फ़रमाया : जन्नत में याक़ूत के सुतून हैं, उन पर ज़बरजद के कमरे हैं, वोह ऐसे रौशन हैं जैसे चमकदार सितारे । लोगों ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! उन में कौन रहेगा ? फ़रमाया : वोह लोग जो **अल्लाह** पाक के लिये आपस में मह़ब्बत रखते हैं, एक जगह बैठते हैं, आपस में मिलते हैं ।

(شعب الایمان، باب فی مقاربة...الخ، فصل فی المصافحة...الخ، ۶/ ۴۸۷، حدیث: ۹۰۰۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि जो ख़ुश क़िस्मत मुसलमान **अल्लाह** पाक की ख़ातिर एक दूसरे से मह़ब्बत रखते हैं, **अल्लाह** पाक कल क़ियामत के रोज़ उन्हें कैसे कैसे इन्आ़मात से नवाज़ेगा । अफ़्सोस ! आज कल हमारे मुआ़शरे में मफ़ाद परस्ती इस क़दर आ़म हो चुकी है कि दुन्यवी मुआ़मलात तो एक त़रफ़, अब तो दीनी मुआ़मलात में भी लोग अपनी ग़रज़ और अपना फ़ाइदा तलाश करते फिरते हैं, मसलन सलाम ही को ले लीजिये जो नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत है बल्कि अबुल बशर, ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ السَّلَام की भी सुन्नत है । (मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 313, माख़ूज़न)

मगर बद क़िस्मती से आज कल लोगों की अक्सरिय्यत इस सुन्नत से ग़ाफ़िल नज़र आ रही है । उ़मूमन जिस से जान पहचान न हो, उसे तो सलाम करना गवारा ही नहीं किया जाता । आ़म तौ़र पर हम जान पहचान वालियों से सलाम करती हैं, ऐसा न हो । सब इस्लामी बहनों से सलाम व मुलाक़ात की तरकीब बनाइये । बहर ह़ाल हमें चाहिये कि करीम आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इस प्यारी प्यारी सुन्नत पर अ़मल करते हुवे हर इस्लामी बहन को सलाम किया करें, ख़्वाह हम उसे जानती हों या नहीं । रोज़ाना पाबन्दी के साथ फ़िक्रे मदीना करते हुवे नेक आमाल का रिसाला पुर करना भी सलाम को आ़म करने और सलाम की सुन्नत पर इस्तिक़ामत पाने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ है ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइन्दा ज़माने में सर उठाने वाले फ़ितनों के बारे में एक ह़दीस शरीफ़ में येह मज़्मून भी मौजूद है कि ज़ोह्दो तक़्वा, रिवायती और बनावटी हो कर रह जाएगा । चुनान्चे,

ज़ोह्दो तक़्वा, रिवायती और बनावटी होगा

रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क़ियामत क़ाइम न होगी यहां तक कि दुन्या से बे रग़बती रिवायती और तक़्वा बनावटी तौ़र पर रह जाएगा । (حلية الاولياء، حسان بن ابي سنان، ۳/۱۴۱، حديث: ۳۴۷۳)

अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُ الله عَلَيْه इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : क़िस्सा बयान करने और वाज़ (यानी तक़रीरें) करने वालों की त़रह़ लोग, नेक लोगों के ज़ोह्दो तक़्वा की रिवायतें एक दूसरे को सुना सुना कर रोएंगे और ऐसी ज़बानी कलामी बातें करेंगे जो उन के दिल में न होंगी । (فيض القدير، ۶/۵۴۳، تحت الحديث: ۹۸۵۶)

अल्लाह पाक के साथ एलाने जंग करने वाले कौन ?

हज़रते अ़दी बिन ह़ातिम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत है कि रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन कुछ लोगों को जन्नत की त़रफ़ ले जाने का हुक्म होगा, यहां तक कि जब वोह जन्नत के क़रीब पहुंच कर उस की ख़ुश्बू सूंघेंगे, उस के मह़ल्लात और उस में जन्नतियों के लिये अल्लाह पाक की तय्यार कर्दा नेमतें देख लेंगे, तो एलान किया जाएगा : इन्हें जन्नत से लौटा दो क्यूंकि इन का जन्नत में कोई ह़िस्सा नहीं । (येह एलान सुन कर) वोह ऐसे अफ़्सोस के साथ लौटेंगे कि उस जैसे अफ़्सोस के साथ उन से पहले लोग न लौटे होंगे । फिर वोह अ़र्ज़ करेंगे : ऐ रब्बे करीम ! अगर तू अपना सवाब और अपने वलियों के लिये तय्यार कर्दा नेमतें दिखाने से पहले ही हमें दोज़ख़ में दाख़िल कर देता, तो येह हम पर ज़ियादा आसान होता । अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाएगा : मैं ने अपनी मर्ज़ी से तुम्हारे साथ ऐसा किया है (इस की वज्ह येह है कि) जब तुम अकेले में होते, तो बड़े बड़े गुनाह कर के मेरे साथ एलाने जंग करते और जब लोगों से मिलते, तो आ़जिज़ी के साथ मिलते थे, तुम लोगों को अपनी वोह ह़ालत दिखाते थे जो तुम्हारे दिलों में मेरे लिये नहीं होती थी, तुम लोगों से डरते और मुझ से नहीं डरते थे, तुम लोगों की इ़ज़्ज़त करते और मेरी इ़ज़्ज़त न करते थे, तुम लोगों की वज्ह से बुरा काम करना छोड़ देते लेकिन मेरी वज्ह से बुराई न छोड़ते थे, आज मैं तुम्हें अपने सवाब से मह़रूम करने के साथ साथ अपने अ़ज़ाब का मज़ा भी चखाऊंगा ।

(معجم اوسط، باب المیم، ۴/۱۳۵-۱۳۶، حدیث: ۵۴۷۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

फ़ित्नों से कैसे बचा जाए ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बिला शुबा आज का दौर फ़ितनों से भरपूर है, हर गुज़रते दिन के साथ ही एक नया फ़ितना सर उठा रहा है। अब सुवाल येह पैदा होता है कि हम इन फ़ितनों से अपने आप को कैसे बचा सकती हैं ? तो आइये ! मौजूदा दौर के फ़ितनों से बचने के लिये चन्द त़रीके़ पेशे ख़िदमत हैं, सुनिये और अ़मल की कोशिश कीजिये।

1. फ़ितनों से हि़फ़ाज़त और ईमान की सलामती के लिये अच्छी सोह़बत इख़्तियार की जाए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه इस वक़्त आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दावते इस्लामी अच्छी सोह़बत पाने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه दावते इस्लामी मुसलमानों को फ़ितनों से बचाती, उन्हें ईमान की सलामती का ज़ेह्न देती और उन्हें ह़क़ीक़ी माना में सुन्नतों का पैकर बनाती है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه इस मदनी माह़ोल से वाबस्ता होने की बरकत से अब तक बे शुमार लोगों की इस्लाह़ हुई और ईमान की हि़फ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बना।
2. अपने आप को फ़ितनों से बचाने के लिये ज़रूरत के इ़लावा घर से बाहर निकलने से बचा जाए कि इसी में सलामती है।
3. मौजूदा दौर में सोशल मीडिया (Social Media) फ़ितनों को फैलाने का एक ख़त़रनाक तरीन हथयार बनता जा रहा है। इस्लाम दुश्मन कुव्वतें अपने बुरे मक़ासिद की ख़ाति़र इस का ग़लत़ इस्तिमाल कर के खुल्लम खुल्ला इस्लामी अह़काम का मज़ाक़ उड़ा रही हैं, सोशल मीडिया के ज़रीए़ इस्लाम के ख़िलाफ़ साज़िशें की जा रही हैं, इसी के ज़रीए़ मुसलमानों को बे ह़याई और फ़ह़्ह़ाशी की दलदल में धकेला जा रहा है। लिहाज़ा सोशल मीडिया की तबाहकारियों से अपने आप को और अपनी नस्लों को बचा कर रखिये।
4. आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दावते इस्लामी के तह़त लगने वाले मद्रसतुल मदीना बालिग़ात में पढ़ना या पढ़ाना भी फ़ितनों से

बचने में बहुत मददगार है । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ मद्रसतुल मदीना बालिग़ात की बरकत से नेक इस्लामी बहनों की सोहूबत नसीब होगी और बहुत से शैत़ानी फ़ितनों से हमारी हि़फ़ाज़त रहेगी ।

5. फ़ितनों से बचने, बचाने के लिये 100 फ़ीसद इस्लामी चेनल "**मदनी चेनल**" देखने, दिखाने का मामूल बनाइये । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ मदनी चेनल वोह वाहि़द चेनल है जिस पर दिखाया जाने वाला हर सिलसिला शरीअ़त के मुत़ाबिक़ होता है, मदनी चेनल इ़श्क़े रसूल के जाम पिलाता है, मदनी चेनल पर दुरुस्त इस्लामी तालीमात को दिखाया जाता है, मदनी चेनल मुक़द्दस हस्तियों का अदब सिखाता है । लिहाज़ा खु़द भी मदनी चेनल देखिये और दूसरी इस्लामी बहनों को भी देखने की तरग़ीब दिलाइये ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करती हूं । शहनशाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की, उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की, वोह जन्नत में मेरे साथ होगा ।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، الفصل الثانی، ۱/۵۵، حدیث: ۱۷۵)

सुरमा लगाने की सुन्नतें और आदाब

आइये ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के रिसाले "**101 मदनी फूल**" से सुरमा लगाने की सुन्नतें और आदाब सुनती हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : तमाम सुरमों में बेहतर सुरमा "**इस्मिद**" है कि येह निगाह को रौशन करता और पल्कें उगाता है ।

(ابن ماجہ، کتاب التحفہ، باب الکحل بالاثمد، ۴/ ۱۱۵، حدیث: ۳۴۹۷)

❖ पथ्थर का सुरमा इस्तिमाल करने में ह़रज नहीं ।

(फ़तावा हिन्दिया, 5 / 359)

❖ सुरमा सोते वक़्त इस्तिमाल करना सुन्नत है ।

(मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 180)

❖ सुरमा इस्तिमाल करने के तीन मन्क़ूल त़रीक़ों का ख़ुलासा पेशे ख़िद़मत है : (1) कभी दोनों आंखों में तीन तीन सलाइयां । (2) कभी दाईं (सीधी) आंख में तीन और बाईं (उल्टी) में दो । (3) तो कभी दोनों आंखों में दो, दो और फिर आख़िर में एक सलाई को सुरमे वाली कर के उसी को बारी बारी दोनों आंखों में लगाइये ।

(شعب الایمان، فصل فی الکحل، ۵/ ۲۱۸، حدیث: ۶۴۲۸)

❖ इस त़रह़ करने से اِنْ شَآءَاللہ तीनों पर अ़मल होता रहेगा ।

❖ अदब व ताज़ीम के जितने भी काम होते, सब हमारे प्यारे करीम आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सीधी जानिब से शुरूअ़ किया करते, लिहाज़ा पहले सीधी आंख में सुरमा लगाइये फिर उल्टी आंख में ।

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की छपी हुई दो किताबें (1) **बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16** (312 सफ़ह़ात) (2) 120 सफ़ह़ात की किताब ‘‘**सुन्नतें और आदाब**’’ नीज़ इस के इ़लावा अमीरे अहले सुन्नत के दो रिसाले ‘‘**101 मदनी फूल**’’ और ‘‘**163 मदनी फूल**’’ हदिय्यतन त़लब कीजिये और पढ़िये ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान नम्बर – 12

हर मुबल्लिग़ा बयान करने से पहले कम अज़ कम तीन बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ   وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ   وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जिस ने दिन और रात में मेरी त़रफ़ शौक़ व मह़ब्बत की वज्ह से तीन, तीन मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा, **अल्लाह** पाक पर ह़क़ है कि वोह उस के उस दिन और उस रात के गुनाह बख़्श दे ।

(مُعْجَمِ کبیر، ۱۸/ ۳۶۲، حدیث:۹۲۸)

काबे के बदरुद्दुजा तुम पे करोड़ों दुरूद   *त़यबा के शमसुद्दुह़ा तुम पे करोड़ों दुरूद*

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 264)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हुसूले सवाब की ख़ात़िर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : نِیَّةُ الْمُؤمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِه मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है ।

(اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیْر لِلطَّبْرَانِی ج ۶ ص ۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

मस्अला :-

नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा ।

बयान सुनने की निय्यतें

मौके़अ़ की मुनासबत और नोइ़यत के एतिबार से निय्यतों में कमी व बेशी व तब्दीली की जा सकती है।

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी। टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी। ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिये जगह कुशादा करूंगी। धक्का वगै़रा लगा तो सब्र करूंगी, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी। صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا الله، تُوْبُوْا اِلَى الله वगै़रा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिये पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी। इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी। दौराने बयान मोबाइल के गै़र ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी। जो कुछ बयान होगा उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल और बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगी।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इ़बादत के लिये जागने का अ़जीब अन्दाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन सुलैम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पिन्डलियां नमाज़ में ज़ियादा देर खड़े रहने की वज्ह से सूज गई थीं। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस क़दर कसरत से इ़बादत किया करते थे कि बिल फ़र्ज़ आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से कह दिया जाता कि कल क़ियामत है, तो भी अपनी इ़बादत में कुछ इज़ाफ़ा न कर सकते (यानी उन के पास इ़बादत में इज़ाफ़ा करने के लिये वक़्त की गुन्जाइश ही न थी)। जब सर्दी का मौसिम आता, तो आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मकान की छत पर सोया करते ताकि सर्दी आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को

जगाए रखे और जब गर्मियों का मौसिम आता, तो कमरे में आराम फ़रमाते ताकि गर्मी और तक्लीफ़ के सबब सो न सकें (क्यूंकि A.C. तो दूर की बात है उस ज़माने में बिजली का पंखा भी नहीं होता था) । सजदे की ह़ालत में ही आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का इन्तिक़ाल हुवा । आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه दुआ़ किया करते थे : ऐ **अल्लाह** पाक ! मैं तेरी मुलाक़ात को पसन्द करता हूं, तू भी मेरी मुलाक़ात को पसन्द फ़रमा । (اتحاف السادۃ المتقین، ۱۳/۲۴۷-۲۴۸)

मेरी ज़िन्दगी बस तेरी बन्दगी में ही ऐ काश गुज़रे सदा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 106)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن नेकियां कमाने के मुआ़मले में किस क़दर शौक़ो ज़ौक़ रखने वाले होते हैं कि हर लम्ह़ा इ़बादत में गुज़ारने के बा वुजूद भी **अल्लाह** पाक से डरते हैं, मज़ीद नेकियां करने की कोशिश में रहते हैं, सर्दियों की रातों में छत पर और गर्मियों में बन्द कमरे में इ़बादत करते हैं ताकि ग़फ़्लत की नींद सो कर **अल्लाह** पाक की याद से ग़ाफ़िल न हो जाएं । क़ुरबान जाइये ! रातों की इ़बादत की वज्ह से उन की पिन्डलियां सूज जाती हैं लेकिन इ़बादत में कोई कमी नहीं आती, उन मुक़द्दस हस्तियों की बस येही ख़्वाहिश होती कि जब तक ज़िन्दगी बाक़ी है, इस को ग़नीमत जानते हुवे नेकियां कर के अपनी आख़िरत बेहतर बना ली जाए । अफ़्सोस ! आज लोगों की अक्सरिय्यत को अपनी आख़िरत की कोई फ़िक्र नहीं, दिन भर न जाने कैसे कैसे गुनाहों में मश्ग़ूल रहती हैं, और जब रात आती है, तो दोबारा से नए गुनाहों का सिलसिला शुरूअ़ हो जाता है और फिर गुनाहों में मगन रहते हुवे ग़फ़्लत की नींद सो जाती हैं । रब्बे करीम हमारे ह़ाल पर रह़म फ़रमाए । ज़रा ग़ौर कीजिये हम किस त़रह़ अपनी ज़िन्दगी के क़ीमती लम्ह़ात को **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी और फ़ुज़ूलिय्यात में बरबाद

कर रही हैं । ह़ालांकि ह़दीसे पाक में मोमिन को हर वक़्त नेकियां करने और नेकियों की ह़िर्स रखने का हुक्म दिया गया है जैसा कि रसूले पाक صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِحْرِصْ عَلٰی مَایَنْفَعُکَ وَاسْتَعِنْ بِاللّٰہِ وَلَاتَعْجِزْ उस पर ह़िर्स करो जो तुम्हें नफ़्अ़ दे और **अल्लाह** से मदद मांगो, आ़जिज़ न हो । (مسلم، کتاب القدر، باب فی الامر بالقوۃ...الخ، حدیث: ۲۲۶۴، ص۱۰۹۸)

ह़ज़रते अ़ल्लामा शरफ़ुद्दीन नववी رَحْمَۃُ اللّٰہ عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक की इ़बादत में ख़ूब ह़िर्स करो और इस पर इन्आ़म का लालच भी रखो मगर उस इ़बादत में भी अपनी कोशिश पर भरोसा करने के बजाए **अल्लाह** पाक से मदद मांगो ।

(شرح نووی، جزء ۱۶، ۸/۲۱۵، ملخصاً)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

माल आज़माइश है !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! याद रखिये ! कभी ज़ियादा माल भी इन्सान के लिये आज़माइश का सबब बन जाता है मगर उसे ह़ासिल करने के लिये कितनी ही तक्लीफ़ें (Difficulties) उठानी पड़ें, इस की परवा नहीं की जाती, लोग हर वक़्त दुन्या की दौलत कमाने की फ़िक्र में मसरूफ़ रहते हैं, दिन रात इसी जज़्बे के तह़्त नई नई तरकीबें सोचते रहते हैं कि किन किन त़रीक़ों से ज़ियादा माल ह़ासिल किया जा सकता है, अगर्चे इस को ह़ासिल करने के लिये ह़राम ज़रीआ़ ही क्यूं न इख़्तियार करना पड़े, बस माल आना चाहिये चाहे जिस त़रह़ से भी आए और जहां से भी आए, ह़ालांकि हमें तो उन कामों का लालच करना चाहिये, जिन से **अल्लाह** पाक की रिज़ा, रसूले करीम صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत, आख़िरत को अच्छा बनाने और जन्नत में जाने की ज़मानत मिलती हो ।

अल्लाह पाक पारह 4, सूरए आले इमरान की आयत नम्बर 133 में इरशाद फ़रमाता है :

وَسَارِعُوْۤا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ جَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَ الْاَرْضُۙ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِیْنَۙ(۱۳۳)

(پ۴، آل عمران، ۱۳۳)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और दौड़ो अपने रब की बख़्शिश और ऐसी जन्नत की त़रफ़ जिस की चौड़ान में सब आस्मानो ज़मीन आ जाएं, परहेज़गारों के लिये तय्यार रखी है ।*

बयान कर्दा आयते मुक़द्दसा के तह़त "**तफ़्सीरे सिरात़ुल जिनान**" में लिखा है : गुनाहों से तौबा कर के, **अल्लाह** पाक के फ़राइज़ को अदा कर के, नेकियों पर अ़मल पैरा हो कर और तमाम आमाल में इख़्लास पैदा कर के अपने रब्बे करीम की बख़्शिश और जन्नत की त़रफ़ जल्दी करो । (तफ़्सीरे सिरात़ुल जिनान, 2 / 53)

इसी त़रह़ पारह 5, सूरतुन्निसा की आयत नम्बर 124 में इरशाद होता है :

وَ مَنْ یَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَ هُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓىٕكَ یَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَ لَا یُظْلَمُوْنَ نَقِیْرًا(۱۲۴) (پ۵، النساء: ۱۲۴)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो कुछ भले काम करेगा मर्द हो या औ़रत और हो मुसलमान तो वोह जन्नत में दाख़िल किये जाएंगे और उन्हें तिल भर नुक़्सान न दिया जाएगा ।*

ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस आयते करीमा के तह़त इरशाद फ़रमाते हैं : जो भी इन्सान मर्द हो या औ़रत ब क़दरे त़ाक़त अ़मल करे, नेक और हो वोह मोमिन सह़ीहुल अ़क़ीदा उस की जज़ा येह है कि वोह बादे क़ियामत जन्नत में जाएगा । मुत़ाबिक़े आमाल उसे जन्नत का दरजा मिलेगा और उन पर तिल

बराबर भी ज़ुल्म न होगा कि वोह हों तो बड़े दरजे के मुस्तहिक़ और बिला कुसूर उन का दरजा घटा कर उन्हें अदना दरजे में दाख़िल कर दिया जाए, येह हरगिज़ न होगा। (तफ़्सीरे नईमी, 5 / 433)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　صَلَّی اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّد

अहले जन्नत नेमतों के मज़े लेते हुवे

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मालूम हुवा ! दुरुस्त अक़ीदा रखने वाले मोमिन को उस के अच्छे आमाल के बदले में जन्नत में दाख़िल किया जाएगा और उस के आमाल के बराबर उसे जन्नत में दरजा मिलेगा। कुरआने पाक में कई मक़ामात पर जन्नतियों को मिलने वाली नेमतों को बयान किया गया है। चुनान्चे, पारह 27, सूरतुल वाक़िआ की आयत नम्बर 15 ता 24 में इरशाद होता है :

عَلٰی سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ﴿۱۵﴾ مُّتَّكِـِٕیْنَ عَلَیْهَا مُتَقٰبِلِیْنَ ﴿۱۶﴾ یَطُوْفُ عَلَیْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ﴿۱۷﴾ بِاَكْوَابٍ وَّ اَبَارِیْقَ ۙ وَ كَاْسٍ مِّنْ مَّعِیْنٍ ﴿۱۸﴾ لَّا یُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَ لَا یُنْزِفُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَ فَاكِهَةٍ مِّمَّا یَتَخَیَّرُوْنَ ﴿۲۰﴾ وَ لَحْمِ طَیْرٍ مِّمَّا یَشْتَهُوْنَ ﴿۲۱﴾ وَ حُوْرٌ عِیْنٌ ﴿۲۲﴾ كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ﴿۲۳﴾ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۲۴﴾ (پ۲۷، واقعة: ۱۵تا۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *(जन्नती लोग) जड़ाव तख़्तों पर होंगे, उन पर तक्या लगाए हुवे आमने सामने उन के गिर्द लिये फिरेंगे हमेशा रहने वाले लड़के, कूज़े और आफ़्ताबे और जाम, आंखों के सामने बेहती शराब के उस से न उन्हें दर्दे सर हो न होश में फ़र्क़ आए और मेवे जो पसन्द करें और परिन्दों का गोश्त जो चाहें और बड़ी आंख वालियां हूरें जैसे छुपे रखे हुवे मोती सिला उन के आमाल का।*

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने कि कुरआने पाक की इन मुबारक आयात में अहले जन्नत को दी जाने वाली जन्नती नेमतों की कैसी मन्ज़र कशी की गई है कि अहले जन्नत बाग़ात में आमने सामने तकिया लगाए चैन से बैठे होंगे, उन की ख़िदमत पर मामूर ग़ुलाम छलकते जाम, लबालब कूज़े, और आफ़्ताबे उठाए उन के दाएं बाएं हुक्म के मुन्तज़िर होंगे, सामने बेहती पाकीज़ा शराबें, मन पसन्द ग़िज़ाएं और उ़म्दा मेवाजात से उन की तवाज़ोअ़ होगी, अलग़रज़ जन्नत में अहले जन्नत अपने रब्बे करीम की रह़मत के मज़े ले रहे होंगे और त़रह़ त़रह़ की नेमतों से लुत़्फ़ उठा रहे होंगे । याद रखिये ! जन्नत में मिलने वाली किसी भी नेमत को दुन्या की किसी भी चीज़ से थोड़ी सी निस्बत भी ह़ासिल नहीं है । जन्नत में **अल्लाह** पाक की रह़मत से मिलने वाले इन्आ़मात व इकरामात का दुन्या में मयस्सर आने वाली चीज़ों से कोई भी मुवाज़ना नहीं है ।

अह़ादीसे मुबारका

आइये ! अब **"जन्नत"** के 3 हुरूफ़ की निस्बत से 3 **अह़ादीसे मुबारका** सुनती हैं :

1. **इरशाद फ़रमाया : अल्लाह** पाक इरशाद फ़रमाता है : मैं ने अपने नेक बन्दों के लिये वोह नेमतें तय्यार कर रखी हैं जिन्हें न किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न किसी आदमी के दिल में उन का ख़याल गुज़रा ।

(مسلم، کتاب الجنة وصفة نعیمها واهلها،ص۱۱۶۲،حدیث:۲۸۲۴)

2. **इरशाद फ़रमाया :** जन्नत में 100 दरजे हैं, हर दो दरजों में आस्मानो ज़मीन जितना फ़ासिला है और फ़िरदौस सब से बुलन्द

दरजा है, उस से जन्नत के चार दरया बह रहे हैं और उस के ऊपर अ़र्श है, तो जब तुम **अल्लाह** पाक से सुवाल करो तो फ़िरदौस का सुवाल करो ।

(ترمذی، کتاب صفۃ الجنۃ، باب ماجاء فی...الخ، حدیث: ۲۵۳۹، ۴/۲۳۸)

3. इरशाद फ़रमाया : जन्नत की इतनी जगह जिस में कोड़ा (यानी दुर्रा) रख सकें, दुन्या और जो कुछ इस में है, वोह जगह उन सब से बेहतर है ।

(بخاری، کتاب بدء الخلق، باب ماجاء فی صفۃ الجنۃ...الخ، ۲/۳۹۲، حدیث: ۳۲۵۰)

क़िस्मत में ग़मे दुन्या, जन्नत का क़िबाला हो   तक़्दीर में लिखा हो जन्नत का मज़ा करना

(सामाने बख़्शिश, स. 56)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हमें अपनी बख़्शिश व मग़फ़िरत करवाने और ख़ुद को जन्नत के आला दरजात की ह़क़दार बनाने के लिये ऐसे काम करने चाहियें जिन में हमारी आख़िरत का फ़ाइदा हो मगर अफ़्सोस ! दुन्या की मह़ब्बत और आख़िरत की फ़िक्र से ग़फ़्लत के सबब हमारे मुआ़शरे की भारी अक्सरिय्यत इ़बादत के शौक़ से बहुत दूर और गुनाहों के लालच में मुब्तला होती जा रही है । आज की नौजवान इस्लामी बहन घन्टों स्मार्ट फ़ोन पर वीडियो गेम्ज़ तो खेल लेती है, अ़जीबो ग़रीब वीडियोज़ और म्यूज़िक देखने, सुनने को तो तय्यार है मगर नमाज़ अदा करने से जी चुराती है, कई कई घन्टे रीमोट (Remote) हाथ में पकड़े मुख़्तलिफ़ चेनल्ज़ पर फ़िल्में, ड्रामे देखने के लिये वक़्त मिल जाता है मगर इल्मे दीन सीखने के लिये 100 फ़ीसद इस्लामिक चेनल "**मदनी चेनल**" देखने में शैत़ान रुकावट बन जाता है, रोज़ाना सैंकड़ों लाइनों पर

मुश्तमिल अख़्बार पढ़ने वालियों को कई कई महीने कुरआने करीम की चन्द आयात की तिलावत के लिये फ़ुर्सत नहीं मिलती, बुरी सहेलियों की सोहबत में कई कई घन्टे अपना वक़्त बरबाद करने वाली हफ़्ते में सिर्फ़ एक दिन वोह भी चन्द मिनट के लिये उम्मते मुस्लिमा तक नेकी की दावत आ़म करने के लिये **"अ़लाक़ाई दौरे"** में शिर्कत को तय्यार नहीं होती, ऐसों को **"हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़"** में शिर्कत की दावत दी जाए, तो फ़ौरन घर के काम याद आ जाते हैं । याद रखिये ! ग़फ़्लत और गुनाहों में मुब्तला होने का अन्जाम हलाकत व बरबादी के इलावा कुछ नहीं । इस से पहले कि मौत का पैग़ाम आ जाए और हम इस दुन्या को हमेशा हमेशा के लिये छोड़ कर अन्धेरी क़ब्र में जा पहुंचें, हमें अपनी बक़िया ज़िन्दगी को ग़नीमत जानते हुवे दुन्या की रौनक़ों से मुंह मोड़ कर **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये नेक आमाल में मश्ग़ूल हो जाना चाहिये । आइये ! दुन्या से बे रग़बत और फ़िक्रे आख़िरत में मश्ग़ूल रहने वालों का एक नसीहत आमोज़ वाक़िआ़ सुनती हैं : चुनान्चे,

एक अ़जीबो ग़रीब क़ौम

मन्क़ूल है : ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुलक़रनैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْه एक क़ौम के पास से गुज़रे तो देखा कि उन के पास दुन्यावी सामान न था, उन्हों ने बहुत सी क़ब्रें खोद रखी थीं, सुब्ह़ के वक़्त वहां की सफ़ाई करते, नमाज़ अदा करते फिर सिर्फ़ सब्ज़ियां खा कर पेट भर लेते क्यूंकि वहां कोई जानवर ही मौजूद न था जिस का वोह गोश्त खाते । ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुलक़रनैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْه को उन का सादा तरीन अन्दाज़े ज़िन्दगी देख कर बड़ी ह़ैरत हुई । चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْه ने उन के सरदार से पूछा : मैं ने तुम लोगों को ऐसी ह़ालत में देखा है जिस पर किसी दूसरी क़ौम को नहीं देखा, इस

की क्या वज्ह है ? सरदार ने सुवाल की तफ़्सील पूछी, तो फ़रमाया : मेरा मत़लब येह है कि तुम्हारे पास दुन्या की कोई चीज़ नहीं है, तुम सोने और चांदी से भी फ़ाइदा नहीं उठाते । सरदार कहने लगा : हम ने सोने और चांदी को इस लिये बुरा जाना कि जिस के पास थोड़ा बहुत सोना या चांदी आ जाए, वोह इन्ही के पीछे दौड़ने लगता है । आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने पूछा : तुम लोग क़ब्रें क्यूं खोदते हो ? जब सुब्ह़ होती है, तो उन को साफ़ करते और वहां नमाज़ पढ़ते हो ! बोला : इस लिये कि अगर हमें दुन्या का कोई लालच हो जाए, तो क़ब्रों को देख कर हम इस से बाज़ रहें । आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने पूछा : तुम्हारा खाना सिर्फ़ ज़मीन की सब्ज़ी (Vegetable) क्यूं है ? तुम जानवर क्यूं नहीं पालते ताकि उन का दूध ह़ासिल करो, उन पर सुवारी करो और उन का गोश्त खाओ ? सरदार ने कहा : इस सब्ज़ी से हमारा गुज़ारा हो जाता है, इन्सान को ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये मामूली चीज़ ही काफ़ी है, वैसे भी ह़ल्क़ से नीचे पहुंच कर सब चीज़ें एक जैसी हो जाती हैं और उन का ज़ाइक़ा पेट में मह़सूस नहीं होता । ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुलक़रनैन رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने उस की समझदारी वाली बातें सुन कर पेशकश की : मेरे साथ चलो ! मैं तुम्हें अपना मश्वरा करने वाला बना लूंगा और अपनी दौलत में से भी ह़िस्सा दूंगा मगर उस ने माज़िरत कर ली कि मैं इसी ह़ाल में खुश हूं । (تاریخ مدینہ دمشق، ذکر من اسمہ ذو القرنین، ۱۷/ ۳۵۳ تا ۳۵۵، ملخصاً)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि **अल्लाह** पाक के ऐसे नेक बन्दे भी होते हैं जिन्हें दुन्यावी चीज़ों की कोई फ़िक्र नहीं होती, जो सादा ग़िज़ाओं से पेट भर लेते हैं, जो नेक आमाल करने में मश्ग़ूल रहते हैं और जो दुन्यावी इ़ज़्ज़त व मन्सब की त़रफ़ रग़बत नहीं रखते लेकिन जो लोग बुरे कामों का लालच रखते हैं और इसी की तलाश में मश्ग़ूल रहते

हुवे त़रह़ त़रह़ की ख़्वाहिशात पाल लेते हैं, वोह उन्ही ख़्वाहिशात में मुब्तला हो कर अपनी ज़िन्दगी के क़ीमती लम्ह़ात अल्लाह पाक की ना फ़रमानी और गुनाहों में बरबाद करते चले जाते हैं और उन की ख़्वाहिशात का पियाला कभी भी नहीं भरता। जैसा कि :

ख़्वाहिशात का पियाला

एक बादशाह बड़ी शानो शौकत वाला था, उसे अपनी अ़ज़ीमुश्शान हुकूमत, सोना उगलती ज़मीनों, सोने और जवाहिरात के ख़ज़ानों पर बड़ा नाज़ था, सालों की मेह़नत से उस ने अपने इक़्तिदार को इस क़दर मज़्बूत़ कर लिया था कि अब उसे किसी दुश्मन का ख़त़रा नहीं था। एक रोज़ वोह अपने दारुल हुकूमत में दौरे के लिये निकला, वज़ीर और कुछ दरबारियों के इलावा सीक्यूरिटी गार्ड्ज़ भी साथ थे। बादशाह को शहर का चक्कर लगाना बड़ा पसन्द था, शानो शौकत के मुज़ाहरे के साथ साथ कुछ ग़रीबों की इमदाद करने का मौक़अ़ भी मिल जाता। वापसी पर मह़ल के क़रीब उसे एक फ़क़ीर नज़र आया जो पुराने कपड़े पहने एक त़रफ़ बड़ी बे परवाई से बैठा था। बादशाह ने नर्म लह्जे में पूछा : अपनी कोई ज़रूरत बताओ ताकि मैं उसे पूरा कर सकूं। फ़क़ीर की हंसी निकल गई। बादशाह ने ज़रा सख़्ती से पूछा : इस में हंसने वाली क्या बात है ? अपनी ख़्वाहिश बताओ ! मैं तुम्हें अभी माला माल कर दूंगा। फ़क़ीर ने कहा : बादशाह सलामत ! पेशकश तो आप ऐसे कर रहे हैं जैसे मेरी हर ख़्वाहिश पूरी कर सकते हों ! अब बादशाह ने नाराज़ी से कहा : बेशक मैं तुम्हारी हर बात पूरी कर सकता हूं, मैं बहुत त़ाक़त वाला बादशाह हूं, तुम्हारी कोई ख़्वाहिश ऐसी नहीं जो मैं पूरी न कर पाऊं। फ़क़ीर ने अपनी झोली से एक भीक मांगने वाला पियाला निकाला और कहा : अगर

आप को अपनी दौलत पर इतना ही नाज़ है, तो इस पियाले को भर दीजिये। बादशाह ने ह़ैरत से पियाले को देखा, वोह काले रंग का आ़म सा लकड़ी का ख़ाली पियाला था। उस ने इशारे से एक वज़ीर को क़रीब बुलाया और हुक्म दिया : इस पियाले को सोने की अशरफ़ियों से भर दो, येह फ़क़ीर भी क्या याद करेगा कि किस सख़ी बादशाह से पाला पड़ा था ! वज़ीर ने हुक्म पर अ़मल करते हुवे कमर से बंधी अशरफ़ियों की थैली खोली और पियाले में ख़ाली कर दी लेकिन सिक्के फ़ौरन ग़ाइब हो गए। वज़ीर ने ह़ैरत से पियाले में झांका फिर एक और थैली खोली और पियाले में डाल दी, इस बार भी सिक्के ग़ाइब हो गए, बादशाह के इशारे पर वज़ीर ने सिपाहियों को भेजा कि मह़ल में रखी अशरफ़ियों की कुछ थैलियां ले आएं, वोह थैलियां भी ख़त्म हो गईं मगर पियाला वैसे का वैसा ख़ाली ही रहा। येह मुआ़मला देख कर बादशाह ने ख़ज़ाने से क़ीमती मोतियों से भरी एक बोरी मंगवाई, वोह भी ख़ाली हो गई। अब की बार बादशाह का चेहरा लाल पीला हो गया, उस ने ज़िद्दी लह्जे में वज़ीर से कहा : और बोरियां मंगवा लो ! जो कुछ भी है इस पियाले में डाल दो ! इसे हर ह़ाल में भरना चाहिये। वज़ीर ने ऐसा ही किया। दोपहर हो गई लेकिन पियाला (Bowl) पहले की त़रह़ ख़ाली रहा क्यूंकि जो चीज़ पियाले में डाली जाती, वोह फ़ौरन ही ग़ाइब हो जाती और पियाला वैसे का वैसे ख़ाली रहता। आख़िर शाम होने को आई, तो बादशाह के चेहरे पर बे बसी नज़र आने लगी, ह़ैरानी व परेशानी के आ़लम में उस ने आगे बढ़ कर फ़क़ीर का हाथ थाम लिया, नज़रें झुका कर उस से मुआ़फ़ी मांगी और अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** पाक के बन्दे ! अब तुम ही बताओ इस पियाले में ऐसा क्या राज़ है, जो येह भरता ही नहीं ? फ़क़ीर ने सन्जीदगी से जवाब दिया : इस में कोई

ख़ास राज़ की बात नहीं है, दर अस्ल येह पियाला **इन्सानी ख़्वाहिशात** से बना है, इन्सान की ख़्वाहिशात कभी पूरी नहीं हो सकतीं, जितना चाहो डाल दो, ख़्वाहिशात का पियाला हमेशा ख़ाली रहता और हमेशा मज़ीद की त़लब में खुला रहता है । (हिर्स, स. 172 ता 174, मुलख़्ख़सन)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! वाक़ेई इन्सान चाहे कितना ही अमीर हो जाए या फिर कोड़ी कोड़ी का मोह़ताज हो कर बिल्कुल ग़रीब हो जाए मगर उस की ख़्वाहिशात का पियाला कभी नहीं भरता । हमारे मुआ़शरे के अक्सर अफ़राद अपनी ह़ालत पर मुत़्मइन दिखाई नहीं देते और उन की ख़्वाहिशात के दरख़्त में नई नई शाख़ें निकलती रहती हैं । उ़म्दा घर, फ़ुल एर कन्डीशन्ड बंगले, महंगे तरीन फ़र्नीचर, चमकती दमकती क़ीमती गाड़ियां और नित नए कपड़े, नौकर चाकर रखने वालों में भी कुछ और होना चाहिये कि ख़्वाहिश बाक़ी रहती है, चुनान्चे,

कोई अपनी आमदनी पर राज़ी नहीं

मन्क़ूल है : एक बुज़ुर्ग जिन की दुआ़एं क़बूल होती थीं, उन की ख़िदमत में एक शख़्स आया और अपनी मोह़ताजी का रोना रोते हुवे कहने लगा : ह़ज़रत ! मेरे घर में चार आदमी खाने वाले हैं और मेरी आमदनी सिर्फ़ पांच हज़ार रुपये माहाना है, जिस से मेरे अख़राजात पूरे नहीं होते, आप मेरे ह़क़ में दुआ़ कीजिये कि मेरी आमदनी में कुछ इज़ाफ़ा हो जाए । उन्हों ने दुआ़ कर दी । फिर एक दुकानदार आया और अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! मेरे यहां चार आदमी खाने वाले हैं जब कि कमाने वाला मैं अकेला हूं, मुझे 10 हज़ार रुपये महीने के मिलते हैं, मेरा ख़र्च पूरा नहीं होता, आमदनी में इज़ाफ़े की दुआ़ कर दीजिये । जब वोह चला गया, तो एक ताजिर आया और

इल्तिजा की : ह़ज़रत ! मेरा कुम्बा (Family) 4 अफ़राद पर मुश्तमिल है और मेरी माहाना आमदनी फ़क़त़ 50 हज़ार है, ख़र्चा पूरा नहीं होता, लिहाज़ा मेरे लिये दुआ़ कीजिये । वोह बुज़ुर्ग ह़ाज़िरीन से फ़रमाने लगे : लगता है कि हम में से कोई भी अपनी क़िस्मत पर राज़ी नहीं अगर्चे उस को दूसरे से ज़ियादा मिलता है, अगर इन्सान ख़ुद को दुन्या में ख़ुश और आख़िरत में कामयाब रखना चाहता है, तो उस पर लाज़िम है कि जो कुछ **अल्लाह** पाक ने उसे दिया है, उस पर क़नाअ़त करे और सब्रो शुक्र करता रहे कि इस की बरकत से मालिके करीम उस को ज़ियादा देगा ।

(ह़िर्स, स. 178–179, मुलख़्ख़सन)

रहें सब शाद घर वाले शहा थोड़ी सी रोज़ी पर   अ़त़ा हो दौलते सब्रो क़नाअ़त या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 332)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! वाके़ई फ़ी ज़माना हमारी अ़मली ह़ालत भी कुछ ऐसी ही है अगर किसी को बीस हज़ार मिलते हैं तो वोह तीस की ख्वाहिश रखती है, किसी को तीस मिलते हैं तो वोह पचास के ख़्वाब देखती है, जब किसी से मिलें तो ज़बान पे यही होता है : दुआ़ कीजिये रिज़्क़ में बरकत नहीं, घर के ह़ालात अच्छे नहीं हैं वग़ैरा, याद रखिये ! ना शुक्रा और ह़रीस इन्सान कभी ख़ुश नहीं रहता उसे दुन्या की सारी दौलत और सहूलतें भी मिल जाएं तो उस की ह़िर्स में मज़ीद इज़ाफ़ा ही होगा, जैसा कि रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अगर इब्ने आदम के पास सोने की एक वादी हो, तो चाहेगा कि उस के पास 2 वादियां हों और उस के मुंह को मिट्टी के इलावा कोई चीज़ नहीं भर सकती और जो **अल्लाह** पाक से तौबा करे, तो **अल्लाह** पाक उस की तौबा क़बूल फ़रमाता है ।

(بخاری، کتاب الرقاق، باب مایتقی من فتنۃ المال، ۴/۲۲۹، حدیث: ۶۴۳۹)

नफ़्सो शैत़ान हो गए ग़ालिब इन के चुंगल से तू छुड़ा या रब
नीम जां कर दिया गुनाहों ने   मरज़े इ़स्यां से दे शिफ़ा या रब

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 97)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! याद रखिये ! दुन्या की मह़ब्बत शैत़ान का ऐसा जाल है जिस में फंस कर इन्सान नेक कामों से दूर होता चला जाता है । पहले मुस्तह़बात से दूर होता है फिर सुन्नतों से ग़ाफ़िल होता है, इस के बाद फ़राइज़ो वाजिबात छोड़ने की आ़दत बनती है और गुनाहों के लालच में मुब्तला हो कर इस आ़रज़ी दुन्या की मह़ब्बत में खो कर त़रह़ त़रह़ के ख़्वाब देखने लगता है, दुन्यावी कामों में बहुत मश्ग़ूल रहने वालों की जब ज़ाहिरी आंख बन्द होती है यानी मौत आती है, तो सारे ख़्वाब अधूरे रह जाते हैं क्यूंकि अगर वोह दुन्या की ह़क़ीक़त जान लेते तो कभी भी इस से दिल न लगाते लेकिन उस वक़्त अफ़्सोस के सिवा कुछ हाथ नहीं आता । लिहाज़ा सलामती इसी में है कि हम मौत से पहले ही उस की तय्यारी में मश्ग़ूल हो कर नेकियां करने वाली बन जाएं ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

नेकियों की ह़िर्स बढ़ाने के अस्बाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! एक मुसलमान होने की ह़ैसिय्यत से हमारी ख़्वाहिश येही होनी चाहिये कि **ऐ काश** ! हमारे दिल से दुन्या की मह़ब्बत निकल जाए । **ऐ काश** ! हमारे दिल में फ़िक्रे आख़िरत पैदा हो जाए । **ऐ काश** ! लम्बी लम्बी उम्मीदें बांधने की आ़दत ख़त्म हो जाए और **ऐ काश** ! हमारी गुनाहों की आ़दत ख़त्म हो जाए और नेकियों में दिल लग जाए । आइये ! नेकियों का जज़्बा पाने के लिये चन्द मदनी फूल

सुनती हैं जिन पर अ़मल की बरकत से हमारे दिल में नेकियों की ह़िर्स (लालच) पैदा हो जाएगी । اِنْ شَآءَ اللّٰہ

《1》...बारगाहे इलाही में दुआ़ कीजिये

नेकियों की ह़िर्स पैदा करने का एक त़रीक़ा (Method) येह है कि गुनाहों की ह़िर्स से बचने के लिये दुआ़ की जाए क्यूंकि दुआ़ इन्सान को मुसीबतों और तक्लीफ़ों से बचाती है और दुआ़ मोमिन का हथयार है । रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : اَلدُّعَاءُ سِلَاحُ الْمُؤْمِنِ दुआ़ मोमिन का हथयार है । (مسند ابی یعلی،۲/۲۰۱،حدیث:۱۸۰۶) हम भी इस हथयार को दुन्यवी लालच के ख़िलाफ़ इस्तिमाल करें और दुन्यवी लालच से नजात के लिये बारगाहे इलाही में गिड़गिड़ा कर दुआ़एं मांगें । शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ मालो दौलत और गुनाहों की ह़िर्स से बचने और नेकियों की तमन्ना और रिज़ाए इलाही ह़ासिल करने के लिए बारगाहे इलाही में यूं अ़र्ज़ करते हैं :

ताजो तख़्त व हुकूमत मत दे *कसरते मालो दौलत मत दे*

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 123)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

《2》...रोज़ाना कुछ न कुछ नेकियों का हदफ़ बना लीजिये

नेकियों की ह़िर्स पैदा करने के लिये रोज़ाना फ़राइज़ के साथ साथ तिलावते क़ुरआने पाक, ज़िक्रो अवराद और दीगर नेक आमाल करने की आ़दत बनाई जाए, اِنْ شَآءَ اللّٰہ इस की बरकत से नेकियों का मज़ीद शौक़ पैदा होगा । अपनी आख़िरत बेहतर बनाने के लिये हमें रोज़ाना कुछ न कुछ नेक आमाल करने का हदफ़ बना लेना चाहिये ताकि नेक आमाल की आ़दत पुख़्ता हो जाए । इस का एक आसान त़रीक़ा येह भी है कि अच्छी

अच्छी निय्यतों के साथ नेक आमाल पर अ़मल और रोज़ाना जाइज़े के ज़रीए़ नेक आमाल का रिसाला पुर किया जाए।

اَلْحَمْدُلِلّٰه नेक आमाल रोज़ाना नेकियां कमाने का वोह अ़ज़ीम मदनी नुस्ख़ा है जिस के ज़रीए़ सुब्ह़ से ले कर रात सोने तक नेकियां करने के कसीर मवाके़अ़ मिलते हैं। हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن भी रोज़ाना नेक आमाल करने का एक हदफ़ बना कर उस पर अ़मल करने की भरपूर कोशिश फ़रमाते और हदफ़ मुकम्मल होने के बाद भी इ़बादत में मसरूफ़ रहते थे। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन अ़ब्दे क़ैस رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपने ज़माने के आ़बिदों में सब से अफ़्ज़ल थे। उन्हों ने अपने ऊपर येह बात लाज़िम कर ली थी कि मैं रोज़ाना एक हज़ार (One Thousand) नवाफ़िल पढूंगा। चुनान्चे, वोह इश्राक़ से ले कर अ़स्र तक (दिन का अक्सर हि़स्सा) नवाफ़िल में मश्गूल रहते फिर जब घर आते तो उन की पिन्डलियां और क़दम सूजे हुवे होते, ऐसा लगता जैसे अभी फट जाएंगे। इतनी इ़बादत के बा वुजूद आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की आ़जिज़ी का येह आ़लम था कि अपने नफ़्स को मुख़ात़ब कर के कहते : ऐ बुराइयों पर उभारने वाले नफ़्स ! तू इ़बादत के लिये पैदा किया गया है, ख़ुदा ए पाक की क़सम ! मैं इतने नेक आमाल करूंगा कि तुझे एक पल भी सुकून नसीब न होगा और तू बिस्तर से बिल्कुल दूर रहेगा, मैं तुझे हर वक़्त अ़मल में मसरूफ़ रखूंगा। (उ़यूनुल हि़कायात, 1 / 154)

मेरी ज़िन्दगी बस तेरी बन्दगी में ही ऐ काश गुज़रे सदा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 106)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

﴾3﴿...बुज़ुर्गाने दीन की सीरत का मुतालआ कीजिये

नेकियों की हिर्स पैदा करने के लिये बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की सीरत पर चलते हुवे ज़िन्दगी गुज़ारने का मामूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ الله इस की बरकत से नेकियों का जज़्बा बढ़ेगा और इस रास्ते में पेश आने वाली तक्लीफ़ों को बरदाश्त करने का हौसला (Courage) पैदा होगा । येह नेक हस्तियां आम लोगों की त़रह़ अपनी दुन्या बेहतर बनाने की फ़िक्र में मश्ग़ूल नहीं रहतीं बल्कि इन्हें तो हर वक़्त अपनी आख़िरत बेहतर बनाने की फ़िक्र खाए जाती है और इसी वज्ह से इन का हर हर लम्ह़ा नेकियों में गुज़रता है । आइये ! इन नेक लोगों के नेक आमाल के लालच के वाक़िआत सुनती हैं : चुनान्चे,

आख़िरी वक़्त तिलावते क़ुरआन

ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ज़िन्दगी के आख़िरी लम्ह़ात में क़ुरआने पाक पढ़ रहे थे । इन से पूछा गया : इस वक़्त में भी तिलावत ? इरशाद फ़रमाया : मेरा नामए आमाल लपेटा जा रहा है तो जल्दी जल्दी इस में इज़ाफ़ा कर रहा हूं । (صید الخاطر لابن الجوزی، ص۲۲۷)

इबादत की मिठास

मन्क़ूल है : कुछ लोग अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की इयादत के लिये ह़ाज़िर हुवे, जिन के साथ एक दुब्ला पतला नौजवान भी था । ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने उस से पूछा : ऐ नौजवान ! मैं तुम्हें इतना कमज़ोर क्यूं देख रहा हूं ? उस ने अ़र्ज़ की : अमीरुल मोमिनीन ! चन्द बीमारियों की वज्ह से । आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : तुम्हें **अल्लाह** पाक का वासित़ा सब कुछ सच सच बताओ । उस ने कहा : ऐ मोमिनों के

अमीर ! मैं ने दुन्यवी चमक दमक देखी, तो उसे मज़ा ख़राब करने वाला पाया, मेरी नज़र में इस की रौनक़ और मिठास कम तर हो गई, इस का सोना और पथ्थर बराबर हो गए, अब मेरी ह़ालत ऐसी है कि मैं अ़र्शे इलाही को देख रहा हूं, लोगों को जन्नत और जहन्नम की त़रफ़ जाते हुवे देख रहा हूं, बस इसी वज्ह से मैं दिन में रोज़े रखता हूं और रात को इ़बादत करता हूं फिर भी मेरा येह अ़मल **अल्लाह** पाक की जानिब से दिये जाने वाले सवाब व अ़ज़ाब के लिये बहुत कम है।

(احیاء علوم الدین، کتاب المراقبۃ والمحاسبۃ، ۵/۱۴۳)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

हमारे अस्लाफ़ और हम !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुना आप ने कि **अल्लाह** वालों की ज़िन्दगी का मक़्सद येह था कि ख़ूब नेकियां कर के **अल्लाह** पाक को राज़ी करें और अपनी आख़िरत को संवार लें। यक़ीनन हमारे बुज़ुर्गाने दीन भी दिन भर रिज़्क़े ह़लाल के लिये तिजारत करते थे लेकिन उन की रातें हमारी त़रह़ फ़ुज़ूल कामों में बरबाद नहीं होतीं बल्कि वोह नेक लोग सारी सारी रात इ़बादत व तिलावत में मश्ग़ूल रहते थे। हमारे बुज़ुर्गाने दीन तो अपने आख़िरी दम तक नेकियां कमाने की धुन में मगन रहा करते थे हमारे बुज़ुर्गाने दीन तो नमाज़ों की ऐसी पाबन्दी फ़रमाते कि कभी उन की तक्बीरे ऊला फ़ौत न होती जब कि हम कई कई महीनों नमाज़ की सआ़दत से मह़रूम नज़र आती हैं। हमारे बुज़ुर्गाने दीन तो प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों के ऐसे दीवाने थे कि उन का हर अ़मल सुन्नत के मुत़ाबिक़ हुवा करता था जबकि हम फ़ेशन की आफ़त में फंस चुकी हैं, हमारे अस्लाफ़ न सिर्फ़ ख़ुद नेकियां करते बल्कि दूसरों को

भी नेकी की दावत दिया करते जब कि हम न तो खुद गुनाहों से बचती हैं बल्कि दूसरों को भी गुनाहों के मवाक़ेअ़ फ़राहम करती हैं, याद रखिये ! अ़न क़रीब हमें मरना है, अन्धेरी क़ब्र में उतरना है और अपनी करनी का फल भुगतना है । लेहाज़ा अपनी सांसों को ग़नीमत जानते हुवे ग़फ़्लत से बेदार हो जाइये और दावते इस्लामी के मदनी माहौल से वाबस्ता हो कर गुनाहों से बचते हुवे नेकियों में मश्ग़ूल हो जाइये, इल्मे दीन सीखने के लिये दावते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत को अपना मामूल बना लीजिये, और नेक आमाल पर पाबन्दी से अ़मल कीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰہ इन की बरकत से ढेरों नेकियां करने के कसीर मवाक़ेअ़ मयस्सर आएंगे

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

नियत की सुन्नतें और आदाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइये ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे निय्यत की चन्द सुन्नतें और आदाब सुनने की सआ़दत ह़ासिल करती हैं ।

पहले 2 **फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा कीजिये :

(1) फ़रमाया : اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّیَّات यानी आमाल का दारो मदार निय्यतों पर है । (بخاری،۱/۵، حدیث:۱)

(2) फ़रमाया : نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है । (معجم کبیر،۶/۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲)

❖ हर जाइज़ काम में एक से ज़ियादा अच्छी निय्यतें की जा सकती हैं । (बहारे निय्यत, स. 10) ❖ नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा मिलता है । ❖ नेक अ़मल में अच्छी

निय्यत का मत़लब येह है कि दिल अ़मल की त़रफ़ मुतवज्जेह हो और वोह अ़मल रिज़ाए इलाही के लिये किया जा रहा हो । (बहारे निय्यत, स. 10) ❖ निय्यत दिल के इरादे को कहते हैं, दिल में निय्यत होते हुवे ज़बान से भी कह लेना ज़ियादा बेहतर है । (बहारे निय्यत, स. 10) ❖ निय्यत से इ़बादत को एक दूसरे से अलग करना या इ़बादत और आ़दत में फ़र्क़ करना मक़्सूद होता है । (बहारे निय्यत, स. 11) ❖ दिल में निय्यत न हो तो ज़बान से निय्यत के अल्फ़ाज़ अदा कर लेने से निय्यत नहीं होगी । (बहारे निय्यत, स. 10) ❖ निय्यतों की आ़दत बनाने के लिये इन की अहम्मिय्यत पर नज़र रखते हुवे सन्जीदगी के साथ पहले अपना ज़ेहन बनाना पड़ेगा । (सवाब बढ़ाने के नुस्ख़े, स. 3) ❖ ह़ज़रते नुऐ़म बिन ह़म्माद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते थे : हमारी पीठ का कोड़ों की मार खाना, हमारे लिये अच्छी निय्यत करने से ज़ियादा आसान है । (تنبیہ المغترین،ص۲۵) ❖ अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللهُ عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : बन्दे को अच्छी निय्यत पर वोह इन्आ़मात दिये जाते हैं जो अच्छे अ़मल पर भी नहीं दिये जाते क्यूंकि निय्यत में दिखलावा नहीं होता । (जहन्नम में ले जाने वाले आमाल, स. 152)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ عَلٰی مُحَمَّد

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की छपी हुई दो किताबें (1) **बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16** (312 सफ़ह़ात) (2) 120 सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" नीज़ इस के इ़लावा अमीरे अहले सुन्नत के दो रिसाले "**101 मदनी फूल**" और "**163 मदनी फूल**" हदिय्यतन त़लब कीजिये और पढ़िये ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ عَلٰی مُحَمَّد

बयान नम्बर – 13

हर मुबल्लिग़ा बयान करने से पहले कम अज़् कम तीन बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط

اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है : مَنْ صَلّٰی عَلَیَّ فِیْ یَوْمٍ اَلْفَ مَرَّۃٍ لَمْ یَمُتْ حَتّٰی یَرٰی مَقْعَدَہٗ مِنَ الْجَنَّۃِ जो मुझ पर एक दिन में एक हज़ार मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा, वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक जन्नत में अपना मक़ाम न देख ले ।

(الترغیب والترھیب، کتاب الذکر والدعاء، الترغیب فی اکثار الصلاۃ علی النبی، ۲/ ۳۲۶، حدیث: ۲۵۹۰)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है ।

(اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیْر لِلطَّبَرانی ج ۶ ص ۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

मस्अला :-

नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा ।

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नोइ़यत के एतिबार से निय्यतों में कमी व बेशी व तब्दीली की जा सकती है।

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी। टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी। ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिये जगह कुशादा करूंगी। धक्का वगै़रा लगा तो सब्र करूंगी, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी। صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب، اُذْكُرُوا الله، تُوبُوا اِلَى الله वगै़रा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिये पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी। इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी। दौराने बयान मोबाइल के गै़र ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी। जो कुछ बयान होगा उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल और बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगी।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!　　صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! اِنْ شَآءَ الله आज के इस हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में हम रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक करने के बारे में आयात व अह़ादीस और वाक़िआ़त व ह़िकायात सुनेंगी :

पहले एक सबक़ आमोज़ ह़िकायत सुनती हैं। चुनान्चे,

जैसी करनी, वैसी भरनी

दावते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की नसीह़त व इब्रत के मदनी फूलों से भरपूर ह़िकायात पर मुश्तमिल बहुत ही प्यारी किताब “**जैसी करनी, वैसी भरनी**” में लिखा है : दो सगी बहनों ने

अपनी औलाद के रिश्ते आपस में तै़ किये, लड़की की नज़र कमज़ोर थी जिस की वज्ह से वोह चश्मा लगाती थी। कुछ अ़र्से बाद दोनों बहनों के दरमियान इख़्तिलाफ़ात ने सर उठाया, बात यहां तक पहुंची कि एक बहन दूसरी से कहने लगी : मैं अपने सह़ीह़ सलामत बेटे की शादी तुम्हारी अन्धी बेटी (Blind Daughter) से नहीं कर सकती। येह सुन कर दूसरी बहन के दिल पर गोया तीरों की बरसात हो गई कि ऐ़ब निकालने वाली कोई और नहीं उस की सगी बहन ही थी। बहर ह़ाल त़ाना देने वाली रिश्ता तोड़ कर जा चुकी थी। दूसरी त़रफ़ जब वोह घर पहुंची तो उसे ख़याल आया कि लोहे के पाइप नीचे सेहन में रखे हुवे हैं उन्हें छत पर मुन्तक़िल कर देती हूं। उस ने अपने बेटे को भी इस काम में शामिल कर लिया। ख़ुदा की करनी ऐसी हुई कि अचानक लोहे का पाइप उस के हाथ से छूट कर सीधा बेटे की आंख पर जा लगा और उस की आंख पपोटे समेत बाहर निकल पड़ी, उस के दिल पर क़ियामत गुज़र गई और उस के ज़ेह्न में अपनी सगी बहन को कहे गए अल्फ़ाज़ गूंजने लगे कि मैं अपने सह़ीह़ सलामत बेटे की शादी तुम्हारी अन्धी लड़की से नहीं कर सकती। अब उसे अपने अन्दाज़ पर शर्मिन्दगी होने लगी लेकिन अब क्या फ़ाइदा ! बेटे की आंख तो जा चुकी थी। (जैसी करनी, वैसी भरनी, स. 47-48)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि जो लोग छोटी छोटी बातों को बुन्याद बना कर बिला वज्ह रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ तोड़ डालती हैं, उन की इ़ज़्ज़त ख़राब करती हैं और उन की दिल आज़ारी के गुनाह में मुब्तला होती हैं तो उन्हें किस क़दर ज़िल्लतो रुस्वाई का सामना

करना पड़ता है। अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! आज हमारे मुआ़शरे में रिश्तेदारी गोया कच्चे धागे की त़रह़ नाज़ुक व ह़ुसास हो चुकी है, अपनी नफ़्सानी ज़िद्द की ख़ात़िर रिश्तेदार आपस में ही एक दूसरे के ख़ून के प्यासे हो चुके हैं, मामूली नोक झोंक के सबब मंगनियां तोड़ दी जाती हैं, मालदार रिश्तेदारों से तो सब मिलना पसन्द करते हैं मगर बेचारे ग़रीब रिश्तेदारों को कोई पूछने वाला नहीं होता। औलाद अपने वालिदैन से मुंह मोड़े बैठी है, भाइयों में मह़ब्बतें ख़त्म हो रही हैं, सगी बहनों की आपस में ठनी हुई है, सगे बहन, भाइयों में नफ़रतों का तूफ़ान बरपा है, ह़ालांकि हमें हमारे रब्बे करीम ने रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक करने का हुक्म इरशाद फ़रमाया है। चुनान्चे, पारह 21, सूरतुर्रूम की आयत नम्बर 38 में **अल्लाह** करीम इरशाद फ़रमाता है :

فَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَ الْمِسْكِیْنَ وَ ابْنَ السَّبِیْلِؕ ذٰلِكَ خَیْرٌ لِّلَّذِیْنَ یُرِیْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ٘ وَ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ(۳۸)
(پ۲۱، الروم:۳۸)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : *तो रिश्तेदार को उस का ह़क़ दो और मिस्कीन और मुसाफ़िर को भी, येह उन लोगों के लिये बेहतर है जो* ***अल्लाह*** *की रिज़ा चाहते हैं और वोही लोग कामयाब होने वाले हैं।*

पारह 1, सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 83 में **अल्लाह** पाक इरशाद फ़रमाता है :

وَ بِالْوَالِدَیْنِ اِحْسَانًا وَّ ذِی الْقُرْبٰى وَ الْیَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِیْنِ (پ۱، البقرة:۸۳)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : *और मां-बाप के साथ भलाई करो और रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों के साथ (अच्छा सुलूक करो)।*

बयान कर्दा दूसरी आयते मुक़द्दसा के तह़त ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने जो बयान फ़रमाया है उस का ख़ुलासा मदनी फूलों की सूरत में सुनती हैं : (1) आयत में अपने रिश्तेदारों से एह़सान करने का हुक्म है । (2) सब से ज़ियादा ह़क़ मां-बाप का है कि उन के साथ एह़सान किया जाए, बाक़ी रिश्तेदार इन के बाद हैं । (3) ज़िल क़ुर्बा वोह लोग हैं जिन का रिश्ता वालिदैन के ज़रीए़ हो, उन्हें **"ज़ी रेह़्म"** भी कहते हैं । (4) ज़ी रेह़्म तीन त़रह़ के हैं : एक बाप के रिश्तेदार जैसे दादा, दादी, चचा, फूफी वग़ैरा । दूसरे मां के रिश्तेदार जैसे नाना, नानी, मामूं, ख़ाला । तीसरे दोनों के रिश्तेदार जैसे ह़क़ीक़ी भाई, बहन । (5) ज़ी मह़रम में जिस का रिश्ता मज़बूत़ हो, उस का ह़क़ भी ज़ियादा होगा । बहन, भाई का रिश्ता चचा और मामूं से ज़ियादा मज़बूत़ है, लिहाज़ा पहला ह़क़ इन का होगा । (तफ़्सीरे नईमी, 1 / 447, मुलख़्ख़सन)

﴾1﴿...किस रिश्तेदार से क्या बरताव करे ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! रिश्तों की नौइय्यत बदलने के साथ रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक करने के दरजात भी बदलेंगे । रिश्तों में सब से बढ़ कर मर्तबा वालिदैन का है फिर जिन से नसब की वज्ह से निकाह़ हमेशा के लिये ह़राम हो उन का मर्तबा है फिर इन के बाद बाक़ी रिश्तेदार अपने रिश्ते के ह़िसाब से अच्छे सुलूक के ह़क़दार होंगे ।

(ردُّالمُحتار، ۹/۶۷۸ملخصاً)

﴾2﴿...रिश्तेदार से अच्छे सुलूक की सूरतें

याद रहे ! सिलए रेह़्म (यानी मह़रम रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक करने) की मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं, इन को हदिय्या व तोह़्फ़ा देना, अगर

इन को किसी जाइज़ बात में तुम्हारी इमदाद की ज़रूरत हो, तो इस काम में इन की मदद (Help) करना, इन्हें सलाम करना, इन की मुलाक़ात को जाना, इन के पास उठना, बैठना, इन से बात चीत करना, इन के साथ लुत्फ़ व मेहरबानी से पेश आना। (کتاب الدرر الحکام، ۱/۳۲۳)

﴾3﴿...ख़ानदान को मुत्तहिद होना चाहिये

तमाम क़बीले और ख़ानदान को मुत्तहिद होना चाहिये, जब ह़क़ उन के साथ हो यानी वोह ह़क़ पर हों तो दूसरों से मुक़ाबला और ह़क़ को ज़ाहिर करने में सब मुत्तहिद हो कर काम करें। (کتاب الدرر الحکام، ۱/۳۲۳) दौरे ह़ाज़िर की सहूलत से फ़ाइदा उठाते हुवे फ़ोन के ज़रीए भी दिलजूई की जाए।

﴾4﴿...रिश्तेदार ह़ाजत पेश करे तो रद्द कर देना गुनाह है

जब अपना कोई (महरम) रिश्तेदार कोई ह़ाजत पेश करे तो उस की ह़ाजत पूरी करे, उस को रद्द कर देना (यानी ह़ैसिय्यत होने के बा वुजूद मदद न करना) रिश्ता तोड़ना है। (کتاب الدرر الحکام، ۱/۳۲۳)

याद रहे ! (रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक करना वाजिब है और रिश्ता तोड़ना गुनाह, ह़राम और दोज़ख़ में ले जाने वाला काम है)

﴾5﴿...सिलए रेह़्म येह है कि वोह तोड़े, तब भी तुम जोड़ो

रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक इसी का नाम नहीं कि वोह सुलूक करे, तो तुम भी करो, येह चीज़ तो ह़क़ीक़त में अदला बदला (Reciprocation) करना है कि उस ने तुम्हारे पास चीज़ भेज दी, तुम ने उस के पास भेज दी, वोह तुम्हारे यहां आया, तुम उस के पास चले गए।

हक़ीक़त में रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक येह है कि वोह काटे और तुम जोड़ो, वोह तुम से जुदा होना चाहता है, ला परवाई करता है और तुम उस के साथ रिश्ते के हुक़ूक़ की रिआ़यत करो। (ردُّالمحتار،٩/١٧٨)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

अच्छा गुमान रखने का त़रीक़ा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान कर्दा मदनी फूल निहायत तवज्जोह के क़ाबिल हैं, बिल ख़ुसूस पांचवां मदनी फूल जिस में "**अदले बदले**" का ज़िक्र है। इस के बारे में अ़र्ज़ है कि आज कल उ़मूमन यही "**अदला बदला**" हो रहा है। एक रिश्तेदार अगर इस को शादी की दावत (Invitation) देता है जभी येह उस को दावत देता है, अगर वोह न दे, तो येह भी नहीं देता, अगर उस एक ने इस को ज़ियादा अफ़राद की दावत दी और येह अगर उस को कम अफ़राद की दावत दे, तो इस का ठीक ठाक नोटिस लिया जाता, ख़ूब तन्क़ीदें और ग़ीबतें की जाती हैं। बद क़िस्मती से इ़ल्मे दीन से दूरी की वज्ह से आज कल मुआ़शरे में येह माह़ोल भी आ़म होता जा रहा है कि किसी मौक़ेअ़ पर लेन देन के मुआ़मलात में भी येही अन्दाज़ इख़्तियार किया जाता है कि जितने पैसे फ़ुलां ने दिये, हम भी उतने ही देंगे, एक दूसरे की ख़ुशी और ग़म में शरीक नहीं होते क्यूंकि छोटी छोटी नाराज़ियों के सबब येह एक दूसरे के दुश्मन बन चुके होते हैं। इसी त़रह़ जो रिश्तेदार इस के यहां किसी तक़रीब में शिर्कत नहीं करता, तो येह उस के यहां होने वाली तक़रीब का बाईकॉट कर देता है और यूं फ़ासिले मज़ीद बढ़ाए जाते हैं, ह़ालांकि कोई हमारे यहां शरीक न हुवा हो, तो उस के बारे में अच्छा गुमान रखने के कई पहलू निकल सकते हैं। वोह अपनी

गै़र हाज़िरी का सबब बताए या न बताए, हमें अच्छा गुमान रख कर सवाब कमाना और जन्नत में जाने का सामान करना चाहिये।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** है حُسْنُ الظَّنِّ مِنْ حُسْنِ الْعِبَادَةِ अच्छा गुमान, बेहतरीन इ़बादत से है।

(ابوداود، کتاب الادب، باب فی حسن الظن، ۴/۳۸۸، حدیث: ۴۹۹۳)

ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के मुख़्तलिफ़ मत़ालिब बयान करते हुवे लिखते हैं **:** यानी मुसलमानों से अच्छा गुमान करना, उन पर बद गुमानी न करना, येह भी अच्छी इ़बादात में से एक इ़बादत है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 621)

जन्नत का मह़ल उस को मिलेगा जो...

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अगर हमारे रिश्तेदार हमारे साथ बुरा सुलूक भी करें फिर भी हमें बड़ा हौसला रखते हुवे तअ़ल्लुक़ात बर क़रार रखने चाहियें। ह़ज़रते सय्यिदुना उबैय बिन कअ़्ब رَضِیَ اللهُ عَنْهُ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है **:** जिसे येह पसन्द हो कि उस के लिये (जन्नत में) मह़ल बनाया जाए और उस के दरजात बुलन्द किये जाएं, उसे चाहिये कि जो इस पर ज़ुल्म करे, येह उसे मुआ़फ़ करे, जो इसे मह़रूम करे, येह उसे अ़त़ा करे और जो इस से तअ़ल्लुक़ तोड़े, येह उस से तअ़ल्लुक़ जोड़े।

(مُستدرَک للحاکم، کتاب التفسیر، ۳/۱۲، حدیث: ۳۲۱۵)

दुश्मनी छुपाने वाले रिश्तेदार को सदक़ा देना अफ़्ज़ल सदक़ा है

बहर ह़ाल कोई हमारे साथ अच्छा सुलूक करे या न करे, हमें उस के साथ अच्छा सुलूक जारी रखना चाहिये। ह़दीसे पाक में है **:** सब से अफ़्ज़ल सदक़ा वोह है जो दिल में दुश्मनी रखने वाले रिश्तेदार को दिया

जाए, इस की वज्ह येह है कि दिल में दुश्मनी रखने वाले रिश्तेदार को सदक़ा देने में सदक़ा भी है और रिश्ता तोड़ने वाले से अच्छा सुलूक करना भी । (مستدرک، کتاب الزکاۃ، باب افضل الصدقۃ..الخ، ۲/ ۲۷، حدیث:۱۵۱۵)

अल्लाह पाक हम सभी को अपने रिश्तेदारों से हमेशा अच्छा सुलूक करते रहने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए । اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

बहन का ह़क़ अदा नहीं किया !

दावते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की किताब **''आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात मअ़ मक्के मदीने की ज़ियारतें''** के सफ़ह़ा नम्बर 77 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद बिन यह़्या बल्ख़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक ख़ुरासानी शख़्स साठ साल से मक्के शरीफ़ में रहता था, रब्बे करीम की बहुत ज़ियादा इ़बादत और दुन्या से बे रग़बती इख़्तियार करने वाला शख़्स था, दिन को क़ुरआने करीम पढ़ता और सारी रात त़वाफ़ करता था । एक नेक आदमी की उस ख़ुरासानी से दोस्ती (Friendship) थी । (एक मरतबा) उस आदमी ने अपने ख़ुरासानी दोस्त को दस हज़ार दीनार अमानत के त़ौर पर दिये और सफ़र पर चला गया, जब सफ़र से लौटा, तो पता चला कि उस का ख़ुरासानी दोस्त फ़ौत हो चुका है, येह उस के वारिसों के पास गया और अपनी अमानत मांगी, उन्हों ने ला इ़ल्मी का इज़्हार किया । उस नेक शख़्स ने मक्के शरीफ़ के उ़लमा से इस वाक़िए़ का ज़िक्र किया । उन्हों ने फ़रमाया : हमें उम्मीद है कि मर्ह़ूम ख़ुरासानी जन्नती होगा और जन्नतियों की रूह़ ज़मज़म के कुंवें में होती है, तुम आधी रात के बाद ज़मज़म के कुंवें के अन्दर झांक कर इस त़रह़ आवाज़ देना : ऐ ख़ुरासानी ! मैं ने तुम्हें अमानत

दी थी, वोह कहां है ? वोह जवाब दे देगा । उस ने ऐसा ही किया मगर ज़मज़म के कुंवें से जवाब न आया । उस ने फिर मक्के शरीफ़ के उ़लमा से राबित़ा किया । उन्हों ने अफ़्सोस का इज़्हार करते हुवे कहा : शायद वोह जन्नतियों में से नहीं, अब तुम यमन में बरहूत नामी कुंवें पर जा कर उसी त़रह़ बुलाओ । वोह कुंवां जहन्नम के किनारे पर है, वहां दोज़ख़ियों की रूह़ें होती हैं । चुनान्चे, येह यमन पहुंचा और बरहूत नामी कुंवें में झांक कर आवाज़ दी : ऐ ख़ुरासानी ! मैं ने तुम्हें अमानत दी थी, वोह कहां है ? उस नेक शख़्स का बयान है : कुछ ही देर बाद मैं ने मर्हूम ख़ुरासानी दोस्त की आवाज़ सुनी और उस से पूछा : तुम यहां कैसे ? तुम तो बहुत ज़ियादा इ़बादते इलाही और दुन्या से बे रग़बती इख़्तियार करने वाले थे ? ख़ुरासानी ने कहा : मेरी एक माज़ूर बहन थी जिस से मैं ने ला परवाई की और रिश्ता तोड़े रखा जिस की वज्ह से मेरी सारी इ़बादत तबाह हो गई और अब अ़ज़ाब में मुब्तला हूं । उस ने पूछा : मेरी अमानत कहां है ? ख़ुरासानी ने कहा : मेरे मकान के फ़ुलां कोने में दफ़्न है, जा कर निकाल लो । चुनान्चे, वोह नेक शख़्स ख़ुरासानी के मकान पर गया, वहां से अपनी रक़म निकाली और फिर उस की बहन के पास पहुंचा, उस की ज़रूरिय्यात पूरी कीं, वोह ख़ुश हो गई । नेक शख़्स ने मक्के शरीफ़ ह़ाज़िर हो कर ज़मज़म के कुंवें में झांक कर आवाज़ दी । मर्हूम ख़ुरासानी ने जवाब दिया : اَلْحَمْدُلِلّٰہ बरहूत कुंवें से नजात मिल गई है और अब मैं ज़मज़म के कुंवें में अम्न व चैन से हूं । (आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात, स. 77-79, मुलख़्ख़सन)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि रिश्तेदारों बिल ख़ुसूस भाई, बहनों के साथ अच्छा सुलूक न करना और उन के ह़ुक़ूक़ से

ला परवाई इख़्तियार करना किस क़दर हलाकत व बरबादी का बाइ़स है, जिस की नुहूसत के सबब बन्दे के नेक आमाल बरबाद हो जाते हैं। बयान कर्दा हि़कायत में बिल ख़ुसूस उन इस्लामी बहनों के लिये इ़ब्रत के मदनी फूल मौजूद हैं जो नमाज़, रोज़ों की तो ख़ूब पाबन्दी करती हैं, ह़ज व उ़मरे की सआ़दतें भी पाती हैं, राहे ख़ुदा में भी दिल खोल कर ख़र्च करती हैं, ख़ूब दीनी काम करती हैं, सुब्ह़ो शाम नेकी की दावत देने में गुज़ारती हैं, ग़रीबों और मिस्कीनों की भलाई में भी पेश पेश रहती हैं, अपनी सहेलियों पर ख़र्च करने, उन की भलाई चाहने और बुरे वक़्त में उन के काम आने में भी उन का कोई सानी नहीं होता, येह ख़ुद भी ऐ़शो राह़त की ज़िन्दगी गुज़ारती, अपनी औलाद को भी महंगी तरीन गाड़ियां, बंगले, स्कूटर, कम्प्यूटर्ज़, लेपटॉप (Laptop), आई-पेड (I.Pad), टेब्लेट्स (Tablets), स्मार्ट फ़ोन्ज़ और दीगर ऐ़शो राह़त का साज़ो सामान फ़राहम करवाती हैं, उन की भारी फ़ीसें भी ख़ुशी से भरती हैं, अपनी औलाद की शादियों पर भी पानी की त़रह़ पैसा बहाती हैं मगर **आह** ! मोहूताज व ज़रूरत मन्द रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक करना, उन की ज़रूरिय्यात को पूरा करना उन्हें गवारा नहीं होता । यक़ीनन येह इस्लामी तालीमात के बिल्कुल ख़िलाफ़ है। इस मुआ़मले में नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पाकीज़ा किरदार हमारे लिये लाइक़े अ़मल है। नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी रज़ाई (यानी दूध शरीक) बहन के साथ किस क़दर शफ़्क़त भरा सुलूक फ़रमाया। आइये ! इस की चन्द ईमान अफ़रोज़ झल्कियां मुलाह़ज़ा कीजिये। चुनान्चे,

रज़ाई बहन से हुस्ने सुलूक

दावते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना से जारीकर्दा अप्रेल 2017 के "**माहनामा फ़ैज़ाने मदीना**" के सफ़्ह़ा नम्बर 46 पर लिखा है : नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी रज़ाई (यानी दूध शरीक) बहन ह़ज़रते शैमा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا के साथ यूं अच्छा सुलूक फ़रमाया : (1) उन के लिये खड़े हुवे। (سبل الھدی والرشاد، ۵/۳۳۳ملتقطاً وملخصاً) (2) अपनी मुबारक चादर बिछा कर उस पर बिठाया और (3) येह इरशाद फ़रमाया : मांगो ! तुम्हें अ़ता किया जाएगा, सिफ़ारिश करो ! तुम्हारी सिफ़ारिश क़बूल की जाएगी। (دلائل النبوۃ للبیہقی، ۵/۱۹۹ملتقطاً)

इस मिसाली करम नवाज़ी के दौरान आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक आंखों से आंसू बह रहे थे। (4) येह भी इरशाद फ़रमाया : अगर चाहो, तो इ़ज़्ज़त व तकरीम के साथ हमारे पास रहो। (5) वापस जाने लगीं, तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तीन ग़ुलाम, एक लोन्डी और एक या दो ऊंट भी अ़ता फ़रमाए। (6) जब मक़ामे जिअ़राना में दोबारा इन्ही रज़ाई बहन से मुलाक़ात हुई, तो भेड़ बकरियां भी अ़ता फ़रमाईं। (سبل الھدی والرشاد، ۵/۳۳۳ملتقطاً وملخصاً)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّد

शैत़ान का जाल

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! याद रहे ! दुन्या की महब्बत शैत़ान का ऐसा जाल (Trap) है कि इस में फंस कर ख़्वातीन नेक कामों से दूर होती चली जाती हैं, मसलन पहले तो मुस्तह़ब्बात से दूर होती हैं फिर सुन्नतों से ग़ाफ़िल होती हैं, इस के बाद फ़राइज़ व वाजिबात छोड़ने की आ़दत बनती है और फिर आहिस्ता आहिस्ता ह़राम कामों की आ़दी बन

जाती हैं। झूट बोलने, ग़ीबत करने, दूसरों का दिल दुखाने, गाने बाजे सुनने और त़रह़ त़रह़ के ह़राम और नाजाइज़ कामों में ज़िन्दगी गुज़रने लगती है। इस के इ़लावा येह भी देखा गया है कि उ़मूमन दुन्या में बहुत मश्ग़ूल रहने वालियां अपनों को भुला बैठती हैं, दुन्या में बहुत मश्ग़ूल रहने वालियां मुख़्लिस सहेलियों से मह़रूम हो जाती हैं, दुन्या में बहुत मश्ग़ूल रहने वालियां ग़रीबों को कमतर समझने लगती हैं, दुन्या में मश्ग़ूल रहने वालियां कन्जूस हो जाती हैं, दुन्या में मश्ग़ूल रहने वालियां तकब्बुर की आफ़त में मुब्तला हो जाती हैं, दुन्या में बहुत मश्ग़ूल रहने वालियों पर नसीह़त असर नहीं करती, दुन्या में बहुत मश्ग़ूल रहने वालियां ह़लाल व ह़राम में तमीज़ नहीं कर पातीं, दुन्या में बहुत मश्ग़ूल रहने वालियां **अल्लाह** पाक के ह़ुक़ूक़ के साथ साथ बन्दों के ह़ुक़ूक़ से भी ग़ाफ़िल हो जाती हैं, दुन्या में बहुत मश्ग़ूल रहने वालियां चोरों, लुटेरों और डाकूओं का शिकार हो जाती हैं, दुन्या में बहुत मश्ग़ूल रहने वालियां त़रह़ त़रह़ की आफ़ात में मुब्तला रहती हैं। अल ग़रज़ ! दुन्या में बहुत मश्ग़ूल रहने वालियां अगर दुन्या की ह़क़ीक़त को जान लेतीं, तो कभी भी इस से दिल न लगातीं। क़ुरआने करीम की मुख़्तलिफ़ आयाते मुक़द्दसा में दुन्या की ह़क़ीक़त को बयान किया गया है। चुनान्चे, पारह 27, सूरतुल ह़दीद की आयत नम्बर 20 में इरशाद होता है :

اِعْلَمُوْۤا اَنَّمَا الْحَیٰوةُ الدُّنْیَا لَعِبٌ وَّ لَهْوٌ وَّ زِیْنَةٌ وَّ تَفَاخُرٌۢ بَیْنَكُمْ وَ تَكَاثُرٌ فِی الْاَمْوَالِ وَ الْاَوْلَادِؕ (پ۲۷،الحدید:۲۰)

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : *जान लो कि दुन्या की ज़िन्दगी तो सिर्फ़ खेल कूद और ज़ीनत और आपस में फ़ख़्रो ग़ुरूर करना और माल और औलाद में एक दूसरे पर ज़ियादती चाहना है।*

बयान कर्दा आयते मुक़द्दसा के तह़्त **"तफ़्सीरे सिरातुल जिनान"** में लिखा है : इस आयत में दुन्या की ह़क़ीक़त बयान की जा रही है ताकि मुसलमान उस की त़रफ़ राग़िब न हों क्यूंकि दुन्या बहुत कम नफ़्अ़ (फ़ाइदा) वाली और जल्द ख़त्म हो जाने वाली है । इस आयत में **अल्लाह** पाक ने दुन्या के बारे में पांच चीज़ें बयान फ़रमाई हैं : (1, 2) दुन्या की ज़िन्दगी तो सिर्फ़ खेल कूद है जो कि बच्चों का काम है और सिर्फ़ इस को ह़ासिल करने में मेह़नत व मशक़्क़त करते रहना वक़्त ज़ाएअ़ करने के इ़लावा कुछ नहीं । (3) दुन्या की ज़िन्दगी ज़ीनत व आराइश का नाम है । (4, 5) दुन्या की ज़िन्दगी आपस में फ़ख़्रो ग़ुरूर करने और माल और औलाद में एक दूसरे पर ज़ियादती चाहने का नाम है और जब दुन्या का येह ह़ाल है और इस में ऐसी बुराइयां मौजूद हैं, तो इस में दिल लगाने और इस को ह़ासिल करने की कोशिश करते रहने की बजाए उन कामों में मश्ग़ूल हो जाना चाहिये जिन से उख़रवी ज़िन्दगी बेहतर हो सकती है । (सिरातुल जिनान, 9 / 740-741, मुलख़्ख़सन)

दुन्या और माले दुन्या की मह़ब्बत में अन्धे हो कर रिश्ते नाते तोड़ डालने वालों को क़ियामत के दिन किस क़दर ज़िल्लतो रुस्वाई का सामना करना पड़ेगा । आइये ! इस बारे में 2 इ़ब्रत आमोज़ ह़िकायत सुनिये और इ़ब्रत से सर धुनिये । चुनान्चे,

नीली आंखों वाली बद सूरत बुढ़िया

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ कहते हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ عَنْھُمَا ने फ़रमाया : क़ियामत के दिन एक नीली आंखों वाली निहायत बुरी सूरत वाली बुढ़िया जिस के दांत

आगे की त़रफ़ निकले होंगे, लोगों के सामने ज़ाहिर होगी और उन से पूछा जाएगा : इस को जानते हो ? लोग कहेंगे : हम इस की पहचान से **अल्लाह** पाक की पनाह चाहते हैं। कहा जाएगा : येह वोही दुन्या है जिस पर तुम नाज़ किया करते थे, इसी की वज्ह से रिश्तेदारियां काटते थे, इसी के सबब एक दूसरे से ह़सद और दुश्मनी करते थे। फिर उस (बुढ़िया जैसी दुन्या) को दोज़ख़ में डाला जाएगा। वोह पुकारेगी : ऐ मेरे मालिक ! मेरी पैरवी करने वाले और मेरी जमाअ़त कहां है ? **अल्लाह** पाक फ़रमाएगा : उन को भी इस के साथ कर दो।

(موسوعۃ لابن ابی الدنیا، ۵/ ۷۲، رقم: ۱۲۳)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ग़ौर कीजिये ! जिन्हों ने दुन्या की ख़ात़िर ढेरों गुनाह किये, जो दुन्या की ख़ात़िर नेकियों से दूर रहीं, जिन्हों ने दुन्या की ख़ात़िर अच्छे आमाल से मुंह मोड़े रखा, जो दुन्या की ख़ात़िर ह़सद और ग़ीबत जैसे गुनाहों में मुब्तला रहीं, जिन्हों ने दुन्या की ख़ात़िर झूट बोला और वादा ख़िलाफ़ियां कीं, जो दुन्या की ख़ात़िर धोका देने में मुब्तला हुई, जो दुन्या की ख़ात़िर नफ़रत और दुश्मनी की आग में जलती रहीं, दुन्या की ख़ात़िर जो आपस की रिश्तेदारियां ख़त्म कर बैठीं, जिन्हों ने दुन्या की ख़ात़िर फ़राइज़ व वाजिबात छोड़े, जिन्हों ने दुन्या की ख़ात़िर ह़लाल व ह़राम की परवा न की और जिस दुन्या की ख़ात़िर अच्छी और नेक मुसलमान न बन सकीं, क़ियामत के दिन उसी दुन्या के साथ उन बद नसीबों को भी आग की नज़्र कर दिया जाएगा। **अल्लाह** पाक दुन्या की मह़ब्बत को हमारे दिलों से निकाल कर नमाज़, रोज़े की मह़ब्बत अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! दुन्या और माले दुन्या की मह़ब्बत किस क़दर तबाह कुन है जो इन्सान को रिश्तेदारी तोड़ने पर मजबूर कर देती है । लिहाज़ा अभी भी वक़्त है, होश में आ जाना चाहिये, दुन्या और माले दुन्या की मह़ब्बत से पीछा छुड़ा लेना चाहिये, ज़रा ज़रा सी बात पर रिश्तेदारों से रूठने की ग़ैर मुनासिब आ़दत को अपने अन्दर से निकाल देना चाहिये । रिश्तेदारों के लिये अपने दिल में नर्म गोशा रखिये, कोई इस्लामी बहन हम से मुआ़फ़ी मांगे, तो अपनी दौलत या मन्सब पर नाज़ करने के बजाए उसे मुआ़फ़ी से नवाज़ने में देर नहीं करनी चाहिये, नाराज़ रिश्तेदारों से खुद आगे बढ़ कर सुल्ह़ कर के सवाबे आख़िरत की ह़क़दार बन जाइये, उन के ह़ुक़ूक़ अदा करने में ग़फ़्लत से काम न लीजिये, बिला वज्हे शरई़ रिश्ता काटने से हमेशा के लिये सच्ची तौबा कीजिये और येह सोच पाने के लिये आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दावते इस्लामी के माह़ोल से वाबस्ता हो कर ज़ैली ह़ल्क़े के 8 दीनी कामों को अपना मामूल बना लीजिये ।

सुल्ह़ करने तशरीफ़ ले गए

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ, सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अह़ादीसे मुबारका बयान फ़रमा रहे थे । इस दौरान आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने फ़रमाया : हर वोह शख़्स जो रिश्तेदारी तोड़ने वाला हो, वोह हमारी मह़फ़िल से उठ जाए । एक नौजवान उठ कर अपनी फूफी के हां गया जिस से उस का कई साल पुराना झगड़ा था । जब दोनों एक दूसरे से राज़ी हो गए, तो फूफी ने उस नौजवान से कहा : तुम जा कर इस का सबब पूछो, आख़िर ऐसा क्यूं हुवा ? (यानी सय्यिदुना अबू हुरैरा

رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के एलान की क्या ह़िक्मत है ?) नौजवान ने ह़ाज़िर हो कर जब पूछा, तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से येह इरशाद सुना है : जिस क़ौम में रिश्तेदारी तोड़ने वाला मौजूद हो, उस क़ौम पर **अल्लाह** करीम की रह़मत नहीं उतरती । (الزواجر،قطع الرحم،۲/۱۵۳)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि पहले के मुसलमान किस क़दर ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले हुवा करते थे ! ख़ुश नसीब नौजवान ने **अल्लाह** करीम के डर के सबब फ़ौरन अपनी फूफी के पास ख़ुद ह़ाज़िर हो कर सुल्ह़ की तरकीब कर ली । सभी इस्लामी बहनें ग़ौर करें कि ख़ानदान में किस किस से नाराज़ी है, जब मालूम हो जाए, तो अब अगर शरई उ़ज़्र न हो, तो फ़ौरन नाराज़ मह़ारिम रिश्तेदारों से **"सुल्ह़ व सफ़ाई"** की तरकीब शुरूअ़ कर दें, अगर झुकना भी पड़े, तो बेशक रिज़ाए इलाही के लिये झुक जाएं, اِنْ شَآءَ اللّٰہ बुलन्दी पाएंगी ।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : **مَنْ تَوَاضَعَ لِلّٰہِ رَفَعَہُ اللّٰہُ** जो **अल्लाह** पाक के लिये आ़जिज़ी करता है, **अल्लाह** करीम उसे बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाता है । (شعب الایمان،باب فی حسن الخلق،۶/۲۷۶،حدیث: ۸۱۴۰) रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक करने की दीनी सोच पाने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दावते इस्लामी के प्यारे दीनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाना भी है ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

सिलए रेह़्मी के मदनी फूल

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइये ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सिलए रेह़्मी के बारे में चन्द मदनी फूल सुनने की सआ़दत ह़ासिल करती हैं। पहले दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा कीजिये :

1. हर अच्छा सुलूक सदक़ा है, मालदार के साथ हो या फ़क़ीर के साथ।

(مجمع الزوائد، کتاب الزکوۃ، باب کل معروف صدقۃ، ۳/ ۳۳۱، رقم: ۴۷۵۴)

2. जिस ने वालिदैन से अच्छा सुलूक किया, उसे मुबारक हो कि **अल्लाह** पाक ने उस की उ़म्र बढ़ा दी।

(مستدرک، کتاب البر والصلۃ، باب من بر والدیہ...الخ، ۵/ ۲۱۳، حدیث: ۷۳۳۹)

❖ सिलए रेह़्म (रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक करना) वाजिब है और क़त़ए़ रेह़्म (बिला वज्ह रिश्ता तोड़ना) ह़राम और जहन्नम (दोज़ख़) में ले जाने वाला काम है। (बहारे शरीअ़त, 3 / 558) ❖ रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक इसी का नाम नहीं कि वोह सुलूक करे, तो तुम भी करो, येह चीज़ तो ह़क़ीक़त में अदला बदला करना है कि उस ने तुम्हारे पास चीज़ भेज दी, तुम ने उस के पास भेज दी, वोह तुम्हारे यहां आया, तुम उस के पास चले गए। ह़क़ीक़त में सिलए रेह़्मी येह है कि वोह काटे और तुम जोड़ो, वोह तुम से जुदा होना चाहता है और तुम उस के साथ रिश्ते के ह़ुक़ूक़ की रिआ़यत व लिह़ाज़ करो। (ردالمحتار، ۹/ ۶۷۸) ❖ सिलए रेह़्मी की मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं : उन को (यानी मह़ारिम रिश्तेदारों को) तोह़्फ़ा देना और अगर उन्हें किसी बात में तुम्हारी इमदाद की ज़रूरत हो, तो इस काम में उन की

मदद करना, उन्हें सलाम करना, उन की मुलाक़ात को जाना, उन के पास उठना, बैठना, उन से बाच चीत करना, उन के साथ मेहरबानी से पेश आना । (کتاب الدُّرر الحکام،۱/۳۲۳) ❖ ह़क़ और जाइज़ बातों में क़बीले और ख़ानदान वालों को मुत्तह़िद होना चाहिये, यानी अगर रिश्तेदार ह़क़ पर हों, तो दूसरों से मुक़ाबले और इज़्हारे ह़क़ में सब मुत्तह़िद हो कर काम करें ।

(کتاب الدُّرر الحکام،۱/۳۲۳)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की छपी हुई दो किताबें (1) **बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16** (312 सफ़ह़ात) (2) 120 सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" नीज़ इस के इ़लावा अमीरे अहले सुन्नत के दो रिसाले "**101 मदनी फूल**" और "**163 मदनी फूल**" हदिय्यतन त़लब कीजिये और पढ़िये ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

बयान नम्बर – 14

हर मुबल्लिग़ा बयान करने से पहले कम अज़ कम तीन बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط

اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَاحَبِیْبَ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : क़ियामत के दिन लोगों में सब से ज़ियादा मेरे क़रीब वोह शख़्स होगा जो सब से ज़ियादा मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता होगा ।

(ترمذی، ابواب الوتر، باب ماجاء فی فضل الصلاۃ...الخ، ۲/۲۷، حدیث: ۴۸۴)

ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक के तह़्त इरशाद फ़रमाते हैं : क़ियामत में सब से आराम में वोह होगा जो हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के साथ रहे और हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की हमराही नसीब होने का ज़रीआ़ दुरूद शरीफ़ की कसरत है । इस से मालूम हुवा कि दुरूद शरीफ़ बेहतरीन नेकी है कि तमाम नेकियों से जन्नत मिलती है और इस से बज़्मे जन्नत के दूल्हा (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) मिलते हैं । (मिरआतुल मनाजीह़, 2/100) इसी लिये तो इमामे एहले सुन्नत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

लौट जाऊं पा के वोह दामाने आ़ली हाथ में
ह़श्र में क्या क्या मज़े वारफ़्तगी के लूं रज़ा

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 104)

मुख़्तसर वज़ाहत

ऐ रज़ा ! मैदाने ह़श्र में **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब अपने उ़श्शाक़ और दीवानों पर फ़ज़्लो करम फ़रमा रहे होंगे तो उस आ़लम में मेरी बे ख़ुदी का आ़लम कैसा होगा ? बस मैं तो सरकारे वाला तबार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दामन थाम लूंगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير لِلطَّبَرَانِي ج ٦ ص ١٨٥ حديث ٥٩٤٢)

मस्अला :-

नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नोइ़यत के एतिबार से निय्यतों में कमी व बेशी व तब्दीली की जा सकती है।

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी। टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी। ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिये जगह कुशादा करूंगी। धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी। صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا الله، تُوْبُوْا اِلَى الله वग़ैरा सुन कर

सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिये पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी । इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी । दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी । जो कुछ बयान होगा उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल और बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगी ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! कुरबानी के अय्याम क़रीब क़रीब हैं, लिहाज़ा आज के बयान में हम कुरबानी की अहम्मियत इस की तारीफ़ और फ़ज़ाइल सुनेंगी, बद क़िस्मती से कई बद नसीब लोग जानवरों पर ज़ुल्म करते हैं, उस ज़ुल्म की मिसालें बयान की जाएंगी और जो ख़ुश नसीब जानवरों पर रह़म करते हैं इस के क्या क्या फ़वाइद हैं येह भी पेश किये जाएंगे, किसी ने कुत्ते को पानी पिलाया तो उस की बख़्शिश हो गई, येह वाक़िआ़ भी बयान किया जाएगा । **अल्लाह** करे कि दिल जमई के साथ हम अव्वल ता आख़िर अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ साथ बयान सुनने की सआ़दत ह़ासिल करें ।

क़ुरबानी की अहम्मियत व फ़ज़ीलत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! **अल्लाह** पाक का बेह़द फ़ज़्लो करम है कि उस ने हमें त़रह़ त़रह़ की नेमतों से नवाज़ा, उन बेशुमार नेमतों में से एक नेमत जानवर भी हैं कि इन्सान ह़लाल जानवरों के गोश्त, दूध और बालों वग़ैरा से कसीर फ़वाइद ह़ासिल करता है, इन पर अपनी ज़रूरत का सामान लाद कर एक जगह से दूसरी जगह ले जाता है, इन के ज़रीए़ सफ़र भी तै़ कर लेता है और बत़ौरे कारोबार इन्हें फ़रोख़्त कर के अपने

लिये रिज़्के हलाल कमाने का ज़रीआ भी बनाता है। अल ग़रज़ इन जानवरों से हमें बहुत सी नेमतें मयस्सर आती हैं जिन के शुक्राने में शरीअत ने साल में सिर्फ़ एक मरतबा हम से येह मुतालबा किया है कि इस्तिताअत होने की सूरत में इन हलाल जानवरों को **अल्लाह** पाक की रिज़ा हासिल करने और सुन्नते इब्राहीमी पर अमल करने के लिये कुरबान किया जाए। लिहाज़ा कुरबानी वाजिब होने की सूरत में खुश दिली के साथ इस हुक्मे शरीअत पर अमल करते हुवे कुरबानी करनी चाहिये क्यूंकि इस में हमारे लिये बड़ा अज्रो सवाब है। जैसा कि :

अमीरुल मोमिनीन, हज़रते अली رَضِیَ اللہُ عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ फ़ातिमा ! उठो और अपनी कुरबानी का जानवर ले कर आओ ! क्यूंकि उस के खून का पहला क़तरा गिरते ही तुम्हारे तमाम गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे और क़ियामत के दिन उस का खून और उस का गोश्त सत्तर गुना इज़ाफ़े के साथ तुम्हारे मीज़ान में रखा जाएगा। हज़रते अबू सईद رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या येह बिशारत सिर्फ़ आले मुहम्मद صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ खास है क्यूंकि येह हर खैर के साथ खास किये जाने के अहल हैं या येह बिशारत आले मुहम्मद के लिये खास है और तमाम मुसलमानों के लिये आम है ? आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : आले मुहम्मद के लिये खास और दीगर मुसलमानों के लिये आम है। (سنن کبرٰی للبیہقی، کتاب الضحایا، باب مایستحب للمرء... الخ، ۹/۴۷۶، حدیث:۱۹۱۶۱)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि कुरबानी करने वाली के लिये कैसा अज्रो सवाब है कि जानवर के खून का क़तरा ज़मीन पर गिरने से पहले ही कुरबानी करने वाली की मग़फ़िरत हो जाती है और

क़ियामत के दिन जानवर के ख़ून और गोश्त को सत्तर गुना इज़ाफ़े के साथ अ़मल के तराज़ू में रखा जाएगा। लिहाज़ा जिस इस्लामी बहन पर अगर कुरबानी वाजिब हो जाए, तो उस की अदाएगी में सुस्ती से काम लेने के बजाए खुश दिली और रिज़ाए इलाही के लिये कुरबानी करनी चाहिये। याद रहे कुरबानी करना ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की मुबारक सुन्नत है, जो इस उम्मत के लिये बाक़ी रखी गई। (बहारे शरीअ़त, 3 / 327)

कुरबानी की तारीफ़

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मख़्सूस जानवर को मख़्सूस दिन में ब निय्यते सवाब ज़ब्ह़ करना "**कुरबानी**" कहलाता है। (बहारे शरीअ़त, 3 / 327) चूंकि इस कुरबानी के फ़रीज़े से ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की **अल्लाह** पाक के हुक्म पर अ़मल करने की याद ताज़ा होती है कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام, **अल्लाह** पाक के हुक्म पर अ़मल करते हुवे बेटे की कुरबानी के लिये तय्यार हुवे और ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام भी हुक्मे इलाही पर अ़मल का मुज़ाहरा करते हुवे कुरबान होने के लिये राज़ी हो गए। जो इस्लामी बहनें इस सुन्नते इब्राहीमी पर अ़मल करते हुवे अपनी त़ाक़त के मुत़ाबिक़ कुरबानी करती हैं, वोह बारगाहे इलाही से बहुत बड़े सवाब की ह़क़दार होती हैं।

आइये ! कुरबानी के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल 3 **फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनती हैं। चुनान्चे,

कुरबानी के फ़ज़ाइल

1. **इरशाद फ़रमाया :** कुरबानी करने वाले को कुरबानी के जानवर के हर बाल के बदले में एक नेकी मिलती है।

(تِرمِذی، کتاب الاضاحی، باب ماجاء فی فضل الاضحیة، ۳/۱۶۲، حدیث: ۱۴۹۸)

2. **इरशाद फ़रमाया :** जिस ने खुश दिली से, सवाब की निय्यत से कुरबानी की, तो वोह कुरबानी दोज़ख़ की आग और उस के दरमियान रुकावट होगी। (مُعْجَم کبیر، ۳/۸۴،حدیث:۲۷۳۶ملخصاً)

इरशाद फ़रमाया : इन्सान बक़रह ईद के दिन कोई ऐसी नेकी नहीं करता जो **अल्लाह** पाक को (जानवर का) ख़ून बहाने से ज़ियादा प्यारी हो। येह कुरबानी क़ियामत में अपने सींगों, बालों और खुरों के साथ आएगी और कुरबानी का ख़ून ज़मीन पर गिरने से पहले **अल्लाह** पाक के हां क़बूल हो जाता है, लिहाज़ा खुश दिली से कुरबानी करो।

(ترمذی، ۳/۱۶۲،حدیث:۱۴۹۸)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जो इस्लामी बहनें कुरबानी की ताक़त रखने के बा वुजूद अपनी वाजिब कुरबानी अदा नहीं करतीं, उन के लिये लम्हए फ़िक्रिय्या है, येही नुक़्सान क्या कम था कि कुरबानी न करने से इतने बड़े सवाब से मह़रूम हो गईं, मज़ीद येह कि गुनहगार भी हुईं।

"**फ़तावा अमजदिय्या**" जिल्द 3, सफ़ह़ा नम्बर 315 पर लिखा है : अगर किसी पर कुरबानी वाजिब है और उस वक़्त उस के पास रुपये नहीं हैं, तो क़र्ज़ (Loan) ले कर या कोई चीज़ फ़रोख़्त कर के कुरबानी करे। (फ़तावा अमजदिय्या, 3 / 315)

अल्लाह करीम हमें कुरबानी जैसे अ़ज़ीम फ़रीज़े की अदाएगी करने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए और सारी जि़न्दगी रब्बे करीम की फ़रमां बरदारी में गुज़ारने की सआ़दत नसीब फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

जानवरों की पैदाइश का मक़्सद

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! **अल्लाह** करीम ने अपनी तमाम मख़्लूक़ को किसी न किसी मक़्सद (Purpose) के लिये पैदा फ़रमाया है। इसी त़रह़ ह़ैवानात की पैदाइश का भी मक़्सद है। इन जानवरों से हमें गोश्त और दूध ह़ासिल होता है और दूध से दही, मक्खन, घी वग़ैरा मुफ़ीद चीज़ें ह़ासिल होती हैं, इन की खाल से गर्म लिबास और जूते बनाए जाते हैं, इस के इ़लावा इन की ख़रीदो फ़रोख़्त से कारोबार भी किया जाता है और उन जानवरों की मदद से सामान एक जगह से दूसरी जगह ले जाया जाता है और येही जानवर हमारी सुवारी के काम भी आते हैं। अल ग़रज़ ! जानवरों की पैदाइश में बहुत सी ह़िक्मतें हैं। चुनान्चे, **अल्लाह** पाक ह़ैवानात की पैदाइश का मक़्सद बयान करते हुवे पारह 14, सूरतुन्नह़्ल की आयत नम्बर 8 में इरशाद फ़रमाता है :

وَّ الْخَیْلَ وَ الْبِغَالَ وَ الْحَمِیْرَ لِتَرْكَبُوْهَا وَ زِیْنَةًؕ-وَ یَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ(۸)

(پ۱۴، النحل، آیت:۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और घोड़े और ख़च्चर और गधे कि उन पर सुवार हो और निय्यत के लिये और वोह पैदा करेगा जिस की तुम्हें ख़बर नहीं।*

तफ़्सीरे सिरात़ुल जिनान जिल्द 5 सफ़्ह़ा 284 पर है : **अल्लाह** पाक ने घोड़े, ख़च्चर और गधे भी तुम्हारे नफ़्अ़ के लिये पैदा किये ताकि तुम उन पर सुवारी करो और उन में तुम्हारे लिये सुवारी और दीगर जो फ़वाइद हैं उन के साथ साथ येह तुम्हारे लिये ज़ीनत हैं। उ़लमाए किराम كَثَّرَهُمُ الله फ़रमाते हैं : हमें ऊंट, गाए, बकरी, घोड़ा और ख़च्चर वग़ैरा जानवरों का मालिक बना देना, उन्हें हमारे लिये नर्म कर देना, उन जानवरों

को अपना ताबेअ़ करना और उन से नफ़्अ़ उठाना हमारे लिये मुबाह़ कर देना **अल्लाह** पाक की हम पर रह़मत है।

(तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पारह 14 अन्नह़्ल, तह़्तुल आयह)

लिहाज़ा हमें उन बे ज़बान जानवरों को उन्ही मक़ासिद के लिये इस्तिमाल करना चाहिये जिन के लिये उन्हें पैदा किया गया है और साथ ही साथ उन के चारे पानी वग़ैरा का भी ख़ास ख़याल रखना चाहिये क्यूंकि इन्सान अगर भूका प्यासा हो तो अपनी ज़बान से खाना पानी मांग सकता है मगर येह बे ज़बान अपनी भूक प्यास की शिकायत किसी से नहीं कर सकते इस लिये वक़्तन फ़ वक़्तन उन के सामने चारा और पानी रख देना चाहिये। इसी त़रह़ उन पर सुवार होने या सामान लादते वक़्त भी उन की त़ाक़त के मुत़ाबिक़ ही वज़्न डाला जाए जिसे वोह ब आसानी उठा सकें, ऐसा न हो कि वज़्न की वज्ह से बेचारे जानवर को चलने में शदीद दुश्वारी हो और हम मुत़मइन रहें कि वज़्न उठा कर चल तो रहा है आराम देने के लिये किसी मुनासिब मक़ाम पर रोक लेंगे। कुछ देर बाद हम अपनी सोच के मुत़ाबिक़ जानवर को आराम पहुंचाने के लिये रोक तो देते हैं मगर उस पर लदा हुवा सामान तो जूं का तूं रखा हुवा है जिस की वज्ह से बेचारे जानवर को खड़ा रहने में शदीद तक्लीफ़ होती होगी। याद रखिये ! जानवरों पर ज़ुल्म करना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। अह़ादीसे करीमा में उन पर बिला ज़रूरत सुवार होने से मन्अ़ किया गया है, चुनान्चे

जानवरों को कुर्सी न बना लो

इरशाद फ़रमाया : जानवरों पर अच्छी त़रह़ सुवारी करो और (जब ज़रूरत न हो तो) उन से उतर जाओ, रास्तों और बाज़ारों में गुफ़्तगू करने के

लिये उन्हें कुर्सी न बना लो क्यूंकि कई सुवारी के जानवर अपने सुवार से बेहतर और उस से ज़ियादा **अल्लाह** पाक का ज़िक्र करने वाले होते हैं।

(جامع الاحادیث،۱/۴۰۴، حدیث:۲۷۶۵)

गाए ने शिकायत की

इरशाद फ़रमाया : एक शख़्स गाए पर सुवार हो कर उसे हांके जा रहा था। उस ने गाए को मारा तो वोह बोल पड़ी : हमें सुवारी के लिये नहीं बल्कि काश्तकारी के लिये पैदा किया गया है।

(بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، ۲/۴۶۲حدیث:۳۴۷۱)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान कर्दा अह़ादीसे करीमा से मालूम हुवा कि जानवरों को जिस मक़्सद के लिये पैदा किया गया है उन्हें उसी काम के लिये इस्तिमाल करना चाहिये। **अल्लाह** पाक हमारे दिलों को नर्म फ़रमाए, बे ज़बानों पर ज़ुल्मो सितम करने से मह़फ़ूज़ फ़रमाए और जिन मक़ासिद के लिये उन जानवरों को हमारे लिये बनाया है उन्ही कामों में उन का इस्तिमाल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाया। वरना याद रखिये ! उन पर ज़ुल्म करने की वज्ह से आख़िरत में उस का बदला भी देना पड़ेगा, चुनान्चे

गधे की नसीह़त

ह़ज़रते अबू सुलैमान दारानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक दफ़्आ़ मैं गधे पर सुवार था, मैं ने उसे दो, तीन मरतबा मारा, तो उस ने अपना सर उठा कर मेरी त़रफ़ देखा और कहने लगा : ऐ अबू सुलैमान ! क़ियामत के दिन इस मारने का बदला लिया जाएगा, अब तुम्हारी मर्ज़ी है, कम मारो या ज़ियादा। तो मैं ने कहा : अब मैं किसी को भी नहीं मारूंगा।

(الزواجر عن اقتراف الکبائر، ۲/۱۷۴)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! कुरबानी के मौक़अ़ पर जानवर ज़ब्ह़ करना बड़ी सआ़दत की बात है । मगर याद रखिये ! कुरबानी से पहले या ज़ब्ह़ करते वक़्त जानवर पर कोई ज़ुल्मो सितम न किया जाए क्यूंकि हमें उन जानवरों की इ़ज़्ज़त करने का हुक्म दिया गया है ह़त्ताकि उन्हें सुवारी के लिये इस्तिमाल करना या उन पर सामान वग़ैरा लादना भी मन्अ़ है जैसा कि **बहारे शरीअ़त**, जिल्द 3, सफ़ह़ा नम्बर 347 पर है कि : कुरबानी के जानवर पर कोई चीज़ लादना या उस को उजरत (किराए) पर देना, ग़रज़ ! उस से मनाफ़ेअ़ (Benefits) (फ़ाइदे) ह़ासिल करना मन्अ़ है । तो जब सामान लादने की मुमानअ़त है, तो फिर उस पर ज़ुल्म करना कितना बड़ा गुनाह होगा । आज हमारे मुआ़शरे में कुरबानी के जानवर पर ज़ुल्म किया जाता है । आइये ! सितम्बर 2017 के "**माहनामा फ़ैज़ाने मदीना**" से जानवरों पर ज़ुल्म की कुछ मिसालें सुनती हैं ताकि हम अपने घर के मह़ारिम को भी इस ह़वाले से तरग़ीब दें कि जानवरों पर ज़ुल्म से बचें ।

कुरबानी के जानवरों पर होने वाले ज़ुल्म की मिसालें !

आ़म तौ़र पर ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम के क़रीब आते ही कुरबानी के जानवरों की ख़रीदो फ़रोख़्त के लिये मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर मन्डियां लगाई जाती हैं, जिस से ख़रीदारों को सहूलत रहती है लेकिन उन्ही मन्डियों में बे ज़बान जानवरों को तक्लीफ़ देने के कई मनाज़िर भी देखने में आते हैं, मसलन : (1) दूर दराज़ अ़लाक़ों से लाए जाने वाले जानवरों को दौराने सफ़र मुनासिब ख़ूराक नहीं दी जाती । (2) छोटी गाड़ी में बड़ा जानवर या कम जगह में कई कई जानवर यूं सुवार कर दिये जाते हैं कि

वोह थक जाने की सूरत में बैठ भी नहीं सकते। (3) बहुत से लोग जानवर को सुवार करते वक़्त गाड़ी में रेत या भूसा वग़ैरा नहीं डालते, जिस की वज्ह से बसा अवक़ात जानवर अपनी ही गन्दगी से फिसल कर गिरते हैं, जिस की वज्ह से बाज़ अवक़ात उन की टांग टूट जाती है या वोह ज़ख़्मी हो जाते हैं। (4) मन्डी में पहुंचने वाले जानवरों को गाड़ी से उतारने या चढ़ाने के लिये मुनासिब जगह का इन्तिज़ाम नहीं होता, तो अपनी आसानी के लिये गाड़ी से छलांग लगवा दी जाती है, जिस से कई बार जानवर ज़ख़्मी भी हो जाते हैं और क़ुरबानी के क़ाबिल नहीं रहते। (5) मन्डी में ख़र्चा बचाने के लिये भी बे ज़बान जानवरों को भूका रखा जाता है। एक मरतबा किसी ने ऊंट ख़रीदा, तो बेचने वाले ने उस के कान में कहा कि येह कई दिन से भूका है, इस को चारा खिला देना। (6) मन्डी जाने वालों में तमाशा देखने वालों की भी एक तादाद होती है, जो बिला वज्ह जानवरों के दांत देखने का तक़ाज़ा करते हैं (जिस पर जानवर का मालिक उस के मुंह को बड़ी बे दर्दी से खोलता है और बिकने से पहले जानवर ग़ालिबन दरजनों बार इस तक्लीफ़ से गुज़रता है), बैठे हुवे जानवर को ठोकर या छड़ियां मार कर उठाते हैं, ख़्वाह म-ख़्वाह भीड़ लगा कर शोर मचा कर जानवर को ख़ौफ़ज़दा करते हैं। (7) जब जानवर मन्डी से ख़रीद कर घर लाया जाता है, तो उतारते वक़्त बच्चे और बड़े शोर कर के जानवर को परेशान करते और उस के उछलने, कूदने से लुत्फ़ उठाते हैं, जिस से बाज़ अवक़ात तो जानवर डर कर भाग जाता है, किसी को ज़ख़्मी कर देता है या गढ़े वग़ैरा में गिर कर अपनी टांग तुड़वा बैठता है। (8) जानवर को घुमाने के नाम पर बच्चे और बड़े बिला वज्ह उस का कान मरोड़ते, दुम घुमाते,

शोर मचाते हैं जिस से जानवर बिदकते और डरते हैं। जानवरों पर ज़ुल्म करने वाले सम्भल जाएं कि बरोज़े क़ियामत इस का ह़िसाब क्यूंकर दे सकेंगे ?

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! शरीअ़त ने फ़ाइदा ह़ासिल करने के लिये अगर्चे जानवरों को ज़ब्ह़ करने की इजाज़त दी है लेकिन इस में भी हर उस काम से मन्अ़ किया गया है जो बिला वज्ह जानवर के लिये तक्लीफ़ का बाइ़स बने या उस की तक्लीफ़ में इज़ाफ़ा करे। चुनान्चे,

क़ुरबानी के जानवरों पर रह़म करना

1. नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक ने हर चीज़ के साथ नेकी करने का हुक्म दिया है, लिहाज़ा जब तुम (क़ुरबानी के जानवर) ज़ब्ह़ करो, तो ख़ूब उ़म्दा त़रीक़े से ज़ब्ह़ करो और तुम अपनी छुरी को अच्छी त़रह़ तेज़ कर लिया करो और ज़बीह़ा को आराम दिया करो।

(مُسلِم، کتاب الصید والذبائح، باب الامر باحسان الذبح والقتل۔۔الخ، ۸۲۳، حدیث: ۵۰۵۵)

2. एक मरतबा एक सह़ाबी رَضِیَ اللهُ عَنْه ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे बकरी ज़ब्ह़ करने में रह़म आता है। फ़रमाया : अगर उस पर रह़म करोगे, तो **अल्लाह** पाक भी तुम पर रह़म फ़रमाएगा।

(مُسندِ احمد، مسند المکیین، حدیث معاویۃ بن قرۃ، ۵/ ۳۰۴، حدیث: ۱۵۵۹۲)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

जानवरों पर रह़म की अपील

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मालूम हुवा ! ज़ब्ह़ के वक़्त रिज़ाए इलाही की निय्यत से जानवर पर रह़म खाना सवाब का काम है मगर हमारे मुआ़शरे में ज़ब्ह़ के वक़्त भी बड़ा ज़ुल्म किया जाता है। हमें चाहिये कि हम अपने घर के मह़ारिम को इस ह़वाले से बताएं कि जानवर को ज़ब्ह़ करने में बिला वज्ह तक्लीफ़ न दें, जो ऐसा करते हैं उन को ज़ुल्म से रोकने और उन की इस्लाह़ करने के लिये अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास क़ादिरी دامت برکاتہم العالیہ ने अपने रिसाले **"अब्लक़ घोड़े सुवार"** के सफ़ह़ा 15 पर चन्द निकात बयान फ़रमाए हैं **:** गाए वग़ैरा को गिराने से पेहले ही क़िब्ले का तअ़य्युन कर लिया जाए, लिटाने के बाद बिल खुसूस पथरीली ज़मीन पर घिसट कर क़िब्ला रुख़ करना बे ज़बान जानवर के लिये सख़्त अज़िय्यत का बाइ़स है। ज़ब्ह़ करने में इतना न काटें कि छुरी गर्दन के मोहरे (हड्डी) तक पहुंच जाए कि येह बे वज्ह की तक्लीफ़ है फिर जब तक जानवर मुकम्मल त़ौर पर ठन्डा न हो जाए न उस के पाउं काटें न खाल उतारें, ज़ब्ह़ कर लेने के बाद जब तक रूह़ न निकल जाए छुरी कटे हुवे गले पर मस करें न ही हाथ। बाज़ क़स्साब जल्द ठन्डी करने के लिये ज़ब्ह़ के बाद तड़पती गाए की गर्दन की ज़िन्दा खाल उधेड़ कर छुरी घोंप कर दिल की रगें काटते हैं, इसी त़रह़ बकरे को ज़ब्ह करने के फ़ौरन बाद बेचारे की गर्दन चटख़ा देते हैं, बे ज़बानों पर इस त़रह़ के मज़ालिम न किये जाएं। याद रखिये ! जिस त़रह़ क़ुरबानी के जानवरों को तक्लीफ़ देना मन्अ़ है इसी त़रह़ दीगर जानवरों और ह़ैवानात को मारना, क़ैद कर के भूका प्यासा रखना, उन की ज़रूरियात पूरी न करना, उन से त़ाक़त से ज़ियादा काम लेना, उन्हें डन्डों और पथ्थरों

से मार कर ज़ख़्मी कर देना या उन्हें जला देना भी बहुत बड़ा ज़ुल्म और ना जाइज़ व ह़राम काम है । याद रखिये ! हम तो इन्सान हैं अगर दुन्या में किसी त़ाक़तवर जानवर ने भी किसी कमज़ोर को मारा होगा या ज़ख़्मी किया होगा तो बरोज़े क़ियामत उन से भी बदला लिया जाएगा जैसा कि

रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे पाक है : क़ियामत के दिन सब जानवरों को लाया जाएगा जब कि लोग खड़े होंगे फिर उन के दरमियान फ़ैसला किया जाएगा, यहां तक कि सींगों वाली बकरी से बिग़ैर सींगों वाली बकरी के लिये बदला लिया जाएगा और च्यूंटी से च्यूंटी का बदला लिया जाएगा, फिर कहा जाएगा : मिट्टी हो जाओ ।

(موسوعۃ لابن ابی الدنیا، کتاب الاھوال، ذکر الحساب ... الخ، حدیث: ۲۲۴، ۶/ ۲۳۱)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ग़ौर कीजिये जब क़ियामत के दिन एक जानवर से दूसरे जानवर का बदला दिलवाया जाएगा, तो फिर अगर कोई इन्सान किसी जानवर पर ज़ुल्म करे, उसे मारे, पीटे, भूका, प्यासा रखे, तो वोह किस क़दर अ़ज़ाब का ह़क़दार होगा । जो लोग जानवरों पर ज़ुल्म करते हैं, सिर्फ़ तफ़रीह़ (Enjoyment) के लिये भगाते फिरते हैं, बैठे हुवे जानवर को तंग कर के उठा देते हैं, बेचने के लिये जानवरों के दांत निकाल देते हैं, बार बार ज़ोर से लगाम खींचने की वज्ह से जानवरों के मुंह में ज़ख़्म कर देते हैं और जानवरों को आपस में लड़वा कर ज़ख़्मी कर देते हैं, उन्हें डर जाना चाहिये कि क़ियामत के दिन अगर बदला ले लिया गया और इस ज़ुल्म के सबब जन्नत में जाने से रोक दिया गया, तो उस वक़्त क्या करेंगे ? लिहाज़ा ख़ुद भी जानवरों पर ज़ुल्म करने से बचिये और अपनी औलाद को ज़ुल्म करती देखें, तो उन्हें भी आख़िरत के अ़ज़ाब से डराते हुवे रोकने की कोशिश कीजिये । हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن

के सामने किसी जानवर पर ज़ुल्म होता, तो फ़ौरन उसे रोक दिया करते थे। जैसा कि :

ज़ब्ह़ के लिये टांग मत घसीटो !

एक मरतबा अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने एक शख़्स को देखा जो बकरी को ज़ब्ह़ करने के लिये उसे टांग से पकड़ कर घसीट रहा है। आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : तेरे लिये ख़राबी हो ! इसे मौत की त़रफ़ अच्छे अन्दाज़ में ले कर जाओ।

(مُصَنَّف عَبْدُ الرَّزَّاق، باب سنة الذبح، ۴/ ۳۷۶، حدیث: ۸۶۳۶)

जानवर को बांध कर निशाना बनाना

इसी त़रह़ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا कुरैश के चन्द नौजवानों के पास से गुज़रे जो एक परिन्दे (Bird) को बांध कर उस पर (तीरों से) निशाना बाज़ी कर रहे थे, जब उन्हों ने आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ को आते देखा, तो इधर उधर हो गए। आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने पूछा : येह किस ने किया है ? **अल्लाह** पाक ऐसा करने वाले पर लानत करे, बेशक रसूले अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किसी जानदार को तीर अन्दाज़ी का निशाना बनाने वाले पर लानत फ़रमाई है। (مُسلم، ص۱۰۸۲، حدیث:۱۹۵۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

जानवरों को जला देना

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : हम रसूले अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ एक सफ़र में थे, आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़ज़ाए ह़ाजत के लिये तशरीफ़ ले गए, तो हम ने एक चिड़िया (Sparrow) देखी जिस के दो बच्चे थे, हम ने उन्हें पकड़ लिया, चिड़िया

आई और फड़फड़ाने लगी । मेहरबान आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और पूछा : किस ने इसे इस के बच्चों के मुआमले में तक्लीफ़ पहुंचाई है ? इस के बच्चे इसे लौटा दो ! फिर आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने च्यूंटियों का एक बिल देखा जिसे हम ने जला दिया था । तो फ़रमाया : इसे किस ने जलाया है ? हम ने अ़र्ज़ की : हम ने । आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : आग के मालिक यानी **अल्लाह** पाक के इ़लावा किसी के लिये आग के ज़रीए़ तक्लीफ़ देना जाइज़ नहीं ।

(ابو داود، کتاب الجهاد، باب فی کراهیة حرق العدو بالنار، ۳/۷۵، حدیث: ۲۶۷۵)

परिन्दों और जानवर को मारना कैसा ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हमें अपने बुज़ुर्गों की सीरत पर चलते हुवे जानवरों को ज़ालिमों के ज़ुल्म से नजात दिलाने की कोशिश करनी चाहिये । किसी को ज़ुल्म करता देखे तो इस्तित़ाअ़त के मुत़ाबिक़ ऐसे लोगों को ज़ुल्म से बाज़ रखने की कोशिश करनी चाहिये । आज कल देखा जाता है कि गली, मह़ल्लों में बच्चे और कई नौजवान बिल्ली, कुत्ते, गधे और दीगर जानवरों को बिला वज्ह मार रहे होते हैं बल्कि बाज़ अ़लाक़ों में चिड़िया, कबूतर, तो़ते और दीगर छोटी छोटी मख़्लूक़ को पकड़ कर क़ैद कर दिया जाता है या उन्हें बांध कर ख़ूब खेल तमाशा बनाया जाता है । वालिदैन को चाहिये कि अपनी औलाद को ऐसे काम करने से मन्अ़ करें और उन्हें बताएं कि मदनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जानवरों को क़त्ल करने के लिये क़ैद करने से मन्अ़ फ़रमाया ।

(مسلم، کتاب الصید، باب النهی عن...الخ، حدیث: ۵۰۵۷، ص ۸۳۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

जानवरों पर रह़म करने के फ़वाइद

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! याद रहे ! ज़रूरत के पेशे नज़र अगर्चे जानवर पालना मन्अ़ नहीं मगर उन के चारे, पानी का ख़याल रखना, सर्दी व गर्मी में उन की देख भाल करना बहुत अहम मुआ़मला है, अक्सर लोग इस बात का ख़याल नहीं रखते, बस अपना शौक़ पूरा करते हैं और उन बे ज़बान जानवरों को बिला वज्ह तक्लीफ़ पहुंचाते रहते हैं। इसी मुआ़शरे में ऐसे रह़म दिल लोग भी मौजूद हैं जो इन बे ज़बान जानवरों पर रह़म करते हैं और भूके, प्यासे परिन्दों को दाना, पानी देते हैं। इस त़रह़ जानवरों के साथ अच्छा सुलूक करना बहुत बड़ी नेकी है जो हमारी बख़्शिश व मग़्फ़िरत का सबब बन सकती है।

आइये ! इस बारे में दो वाक़िआ़त सुनिये। चुनान्चे,

कुत्ते को पानी पिलाने वाला

मन्क़ूल है : रास्ता चलते हुवे एक शख़्स पर प्यास का ग़लबा हुवा, तो उस को एक कुंवां मिला, उस ने कुंवें में उतर कर पानी पी लिया फिर जब वोह कुंवें में से निकला, तो देखा कि एक कुत्ता (Dog) ज़बान निकाले हुवे गीली मिट्टी चाट रहा है। उस आदमी ने दिल में येह सोचा कि जैसी प्यास मुझ को लगी थी, ऐसी ही प्यास इस कुत्ते को भी लगी है। लिहाज़ा वोह कुंवें में उतर कर अपने मोज़े में पानी भर कर लाया फिर कुत्ते को पिलाया। उस का येह अ़मल रब्बे करीम को पसन्द आ गया और उस की बख़्शिश व मग़्फ़िरत फ़रमा कर जन्नत में दाख़िल फ़रमा दिया। येह सुन कर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या हमारे लिये चौपायों के साथ एह़सान करने में सवाब है ? इरशाद फ़रमाया : हां ! हर जानदार के साथ भलाई करने में सवाब है।

(بخاری، کتاب المظالم، باب الآبار علی الطرق...الخ، ۲/۱۳۳، حدیث: ۲۴۶۶)

इस ह़दीसे पाक से मालूम हुवा ! **अल्लाह** पाक फ़ाइले मुख़्तार है, वोह चाहे तो एक बहुत ही अदना (छोटे) से नेक अ़मल करने वाले को अपने फ़ज़्लो करम से बख़्श दे, उस के दरबार में अ़मल के वज़्न और मिक़्दार (Quantity) को नहीं देखा जाता बल्कि उस की बारगाह में अच्छी निय्यत और इख़्लास की क़द्र है । बहुत ही मामूली अ़मल अगर बन्दा इख़्लास व अच्छी निय्यत के साथ करे, तो वोह रब्बे करीम उस अ़मल के सवाब में बन्दे को अपनी रिज़ा और मग़फ़िरत की नेमतों से सरफ़राज़ फ़रमा कर उस को जन्नतुल फ़िरदौस का ह़क़दार बना देता है । किसी ने क्या ख़ूब कहा कि ख़ुदा पाक की रह़मत बन्दों को बख़्शने का बहाना ढूंढती है, ख़ुदा पाक की रह़मत बन्दों से मग़फ़िरत की क़ीमत नहीं त़लब करती ।

(मुन्तख़ब ह़दीसें, स. 142, मुलख़्ख़सन)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

मक्खी पर रह़म करना बाइसे मग़फ़िरत हो गया

किसी शख़्स ने ख़्वाब में हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते इमाम ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ को देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ؟ यानी **अल्लाह** पाक ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? जवाब दिया : **अल्लाह** पाक ने मुझे बख़्श दिया, पूछा : मग़फ़िरत का क्या सबब बना ? फ़रमाया : एक मक्खी सियाही (*Ink*) पीने के लिये मेरे क़लम पर बैठ गई, मैं लिखने से रुक गया यहां तक कि वोह फ़ारिग़ हो गर उड़ गई ।

(لطائف المنن والاخلاق، ص ۳۰۵)

मक्खी को मारना कैसा ?

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ अपने रिसाले "अब्लक़ घोड़े सुवार" में फ़रमाते हैं :

याद रखिये ! मक्खियां तंग करती हों तो उन को मारना जाइज़ है ताहम जब भी फ़ाइदा ह़ासिल करने या नुक़्सान दूर करने के लिये मक्खी या किसी भी बे ज़बान की जान लेनी पड़े तो उस को आसान से आसान त़रीक़े पर मारा जाए ख़्वाह म ख़्वाह उस को बार बार ज़िन्दा कुचलते रहने या एक वार में मार सकते हों फिर भी ज़ख़्म खा कर पड़े हुवे पर बिला ज़रूरत ज़र्बें लगाते रहने या उस के बदन के टुकड़े टुकड़े कर के उस को तड़पाने वग़ैरा से गुरेज़ किया जाए । अक्सर बच्चे नादानी के सबब च्यूंटियों को कुचलते रहते हैं उन को इस से रोका जाए । च्यूंटी बहुत कमज़ोर होती है चुटकी में उठाने या हाथ या झाड़ू से हटाने से उ़मूमन ज़ख़्मी हो जाती है, मौक़अ़ की मुनासबत से उस पर फूंक मार कर भी काम चलाया जा सकता है ।

(अब्लक़ घोड़े सुवार, स. 21 मुलख़्ख़सन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب!　صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन ने जहां हर मुआ़मले में हमारी रहनुमाई फ़रमाई वहीं जानवरों पर शफ़्क़त करने के ह़वाले से भी हमें ज़ेहन दिया, जानवरों के बुन्यादी हुक़ूक़ अदा करने की तरग़ीब दिलाई और उन पर उन की त़ाक़त से ज़ियादा बोझ डालने से मन्अ़ फ़रमाया । आइये ! जानवरों पर शफ़्क़त करने के मुआ़मले में ह़ज़रते अह़मद कबीर रिफ़ाई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के बारे में सुनती हैं, चुनान्चे

मच्छर, टिड्डी और बिल्ली पर शफ़्क़त

आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के जिस्म पर अगर मच्छर बैठ जाता तो उसे न ही खुद उड़ाते और न किसी को उड़ाने देते बल्कि फ़रमाते : **अल्लाह** पाक ने जो ख़ून उस के ह़िस्से में लिख दिया है वोही पी रहा है और जब

आप धूप में चल रहे होते और कोई टिड्डी आप के कपड़ों में सायादार जगह पर बैठ जाती तो जब तक उड़ न जाती आप رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ उसी जगह ठहरे रहते और फ़रमाते : इस ने हम से साया ह़ासिल किया है । इसी त़रह़ जब आस्तीन पर बिल्ली सो जाती और नमाज़ का वक़्त हो जाता तो आस्तीन को काट देते मगर बिल्ली को न जगाते, और नमाज़ से फ़राग़त के बाद आस्तीन दोबारा सी लेते । (फ़ैज़ाने सय्यिद अह़मद कबीर रिफ़ाई, स. 10)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुना आप ने कि ह़ज़रते अह़मद कबीर रिफ़ाई رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ मच्छर मक्खी और टिड्डियों जैसे मामूली जानवरों की ख़ात़िर ख़ुद तक्लीफ़ बरदाश्त कर लेते मगर उन्हें उड़ाना गवारा न करते । लिहाज़ा हमें भी उन की सीरत पर अ़मल करते हुवे जानवरों का ख़याल रखना चाहिये और उन पर किसी भी त़रह़ का ज़ुल्म नहीं करना चाहिये । मिरआतुल मनाजीह़ जिल्द 5 सफ़्ह़ा नम्बर 162 पर है कि उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं कि जानवर पर ज़ुल्म करना इन्सान पर ज़ुल्म करने से ज़ियादा गुनाह है क्यूंकि इन्सान तो किसी से अपना दुख दर्द कह सकता है बे ज़बान जानवर किस से कहे उन का **अल्लाह** पाक के सिवा फ़रियाद सुनने वाला कौन है, भूके प्यासे ऊंटों ने हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अपने मालिकों की शिकायत कीं और सरकार صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के आला इन्तिज़ामात फ़रमाए । (مرآۃ المناجیح،۵/۱۶۲)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदी क़ुत़्बे मदीना की सीरत की चन्द झल्कियां

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! माहे ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम बहुत ही बरकत वाला महीना है । इस महीने में बहुत से बुज़ुर्गाने दीन رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن का उ़र्स मनाया जाता है । उन्हीं नेक सीरत लोगों में से

एक बहुत ही मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्सिय्यत आफ़ताबे रज़विय्यत, पीरे त़रीक़त, रहबरे शरीअ़त, ख़लीफ़ए आला ह़ज़रत, कुत़्बे मदीना, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ज़ियाउद्दीन अह़मद मदनी क़ादिरी रज़वी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه भी हैं। आज 2 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम सय्यिदी कुत़्बे मदीना رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का उ़र्स शरीफ़ है। आइये ! इन की मुबारक सीरत की चन्द झल्कियां मुलाह़ज़ा करती हैं। चुनान्चे,

नाम व नसब व तारीख़े पैदाइश

हुज़ूर सय्यिदी कुत़्बे मदीना رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का नाम "**ज़ियाउद्दीन अह़मद**" है। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه खुद इरशाद फ़रमाते थे कि मेरा पैदाइशी नाम "**अह़मद मुख़्तार**" है, मेरे दादा ह़ज़रते शैख़ कुत़्बुद्दीन क़ादिरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने बाद में मेरा नाम "**ज़ियाउद्दीन**" रख दिया था। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه पीर शरीफ़ के दिन रबीउ़ल अव्वल सिने 1294 हि. ब मुत़ाबिक़ सिने 1877 ई. को ब मक़ाम क़स्बा कलास वाला, ज़िल्अ़ सियालकोट में पैदा हुवे।

(सय्यिदी ज़ियाउद्दीन अह़मद अल क़ादिरी, 1 / 164, मुल्तक़त़न)

आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इब्तिदाई तालीम अपने दादा जान से ह़ासिल की फिर सियालकोट के मश्हूर आ़लिमे दीन, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद हुसैन नक़्शबन्दी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से पढ़ा, इस के बाद मश्हूर मुह़द्दिस, ह़ज़रते अ़ल्लामा वसी अह़मद मुह़द्दिसे सूरती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के ह़ल्क़ए दर्स में शामिल हो गए और तक़रीबन चार साल तक उन से तालीम ह़ासिल करने का सिलसिला जारी रहा।

(सय्यिदी ज़ियाउद्दीन अह़मद अल क़ादिरी, 1 / 167, मुलख़्ख़सन)

अख़्लाक़ व आ़दात

सय्यिदी क़ुत़्बे मदीना رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ निहायत ही पसन्दीदा ख़ूबियों और बेहतरीन अख़्लाक़ वाले थे, हमेशा यादे ख़ुदा में डूबे रहते, रातों को जाग कर इ़बादत करने वाले और तहज्जुद पढ़ने वाले बुज़ुर्ग थे, इश्राक़, चाश्त और अव्वाबीन की नमाज़ें अदा करना आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ का मामूल था, कमज़ोरी और बुढ़ापे के बा वुजूद हर इस्लामी महीने की 13, 14, 15 तारीख़ के रोज़े नहीं छोड़ते थे।

(सय्यिदी ज़ियाउद्दीन अह़मद अल क़ादिरी, 1 / 486, मुलख़्ख़सन)

विसाले पुर मलाल और तद्फ़ीन

बिल आख़िर 4 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम सिने 1401 हि., ब मुत़ाबिक़ 2 अक्तूबर सिने 1981 ई. बरोज़ जुमुआ़ मस्जिदे नबवी शरीफ़ में आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। ग़ुस्ल शरीफ़ के बाद आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ के कफ़न को उस मुबारक पानी से धोया गया जिस पानी से सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर को ग़ुस्ल दिया गया और मुख़्तलिफ़ तबर्रुकात रखे गए फिर कफ़न शरीफ़ बांधा गया। बाद नमाज़े अ़स्र दुरूदो सलाम और क़सीदए बुरदा शरीफ़ की गूंज में जनाज़ए मुबारका उठाया गया और आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ को उन की आरज़ू के मुत़ाबिक़ जन्नतुल बक़ीअ़ में अहले बैते अत़्हार عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के क़ुर्ब में सिपुर्दे ख़ाक किया गया। (सय्यिदी क़ुत़्बे मदीना, स. 17)

मुझ को दे दो बक़ीए ग़र्क़द में — अपने क़दमों में जा ज़ियाउद्दीन

मुस्त़फ़ा का पड़ोस जन्नत में — मुझ के ह़क़ से दिला ज़ियाउद्दीन

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 563)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआदत ह़ासिल करती हूं। ताजदारे रिसालत صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की, उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की, वोह जन्नत में मेरे साथ होगा। (مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، الفصل الثانی، ۱/۵۵، حدیث:۱۷۵)

क़ुरबानी की सुन्नतें और आदाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइये ! क़ुरबानी की चन्द सुन्नतें और आदाब के बारे में सुनती हैं। पहले दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा कीजिये :

1. **फ़रमाया :** क़ुरबानी करने वाले को क़ुरबानी के जानवर के हर बाल के बदले में एक नेकी मिलती है।

(ترمذی، کتاب الاضاحی، باب ما جاء فی فضل الضحیۃ، ۳/۱۶۲، حدیث: ۱۴۹۸)

2. **फ़रमाया :** जिस शख़्स में क़ुरबानी करने की गुन्जाइश हो फिर भी वोह क़ुरबानी न करे, तो वोह हमारी ईदगाह के क़रीब न आए।

(ابن ماجہ، کتاب الاضاحی، باب الاضاحی واجبۃ ام لا؟، ۳/ ۵۲۹، حدیث: ۳۱۲۳)

❖ हर बालिग़, मुक़ीम, मुसलमान मर्द व औ़रत, मालिके निसाब पर क़ुरबानी वाजिब है। (फ़तावा हिन्दिया, 5 / 292) ❖ अगर किसी पर क़ुरबानी वाजिब है और उस वक़्त उस के पास रुपये नहीं हैं, तो क़र्ज़ ले कर या कोई चीज़ फ़रोख़्त कर के क़ुरबानी करे। (फ़तावा अमजदिय्या, 3 / 315, मुलख़्ख़सन) ❖ ना बालिग़ की त़रफ़ से अगर्चे वाजिब नहीं मगर कर देना बेहतर है (और इजाज़त भी ज़रूरी नहीं)। (अब्लक़ घोड़े सुवार, स. 9)

❖ **क़ुरबानी के जानवर की उ़म्र :** ऊंट पांच साल का, बकरा (इस में बकरी, दुम्बा, दुम्बी और भेड़ नर व मादा दोनों शामिल हैं) एक साल का, इस से कम उ़म्र हो, तो क़ुरबानी जाइज़ नहीं, ज़ियादा हो, तो जाइज़ बल्कि अफ़्ज़ल है। (बहारे शरीअ़त, 3 / 340, हिस्सा : 15, मुलख़्ख़सन) ❖ **क़ुरबानी** का जानवर बे ऐ़ब होना ज़रूरी है, अगर थोड़ा सा ऐ़ब हो (मसलन कान में चीरा या सूराख़ हो), तो क़ुरबानी मक्रूह होगी और ज़ियादा ऐ़ब हो, तो क़ुरबानी नहीं होगी। (बहारे शरीअ़त, 3 / 340, हिस्सा : 15, मुलख़्ख़सन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की छपी हुई दो किताबें (1) **बहारे शरीअ़त, हिस्सा 16** (312 सफ़ह़ात) (2) 120 सफ़ह़ात की किताब **''सुन्नतें और आदाब''** नीज़ इस के इ़लावा अमीरे अहले सुन्नत के दो रिसाले **''101 मदनी फूल''** और **''163 मदनी फूल''** हदिय्यतन त़लब कीजिये और पढ़िये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

बयान नम्बर :- 15

हर मुबल्लिग़ा बयान करने से पहले कम अज़ कम तीन बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَ اَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَ اَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : मेरा जो उम्मती इख़्लास के साथ मुझ पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ेगा, **अल्लाह** पाक उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाएगा, उस के दस दरजात बुलन्द फ़रमाएगा, उस के लिये दस नेकियां लिखेगा और उस के दस गुनाह मिटा देगा। (سنن کبرٰی، کتاب عمل الیوم گ الخ، باب ثواب الصلاۃ...الخ، ۲۱/۶، حدیث: ۹۸۹۲)

मेरी ज़बान तर रहे ज़िक्रो दुरूद से
बेजा हंसूं कभी, न करूं गुफ़्तगू फ़ुज़ूल

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 243)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ'' मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (معجم کبیر، ۶/۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲)

मस्अला : नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नोइय्यत के एतिबार से निय्यतों में कमी व बेशी व तब्दीली की जा सकती है।

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी। टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी। ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिये जगह कुशादा करूंगी। धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी। صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوْبُوْا اِلَى اللّٰه वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिये पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी। इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी। दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी। जो कुछ बयान होगा उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल और बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगी।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! اِنْ شَآءَ الله आज हम **"वालिद के साथ अच्छा सुलूक"** करने के बारे में सुनेंगी, इस बारे में आयाते कुरआनी और उन की तफ़्सीर भी सुनेंगी, कई अह़ादीसे मुबारका में भी वालिद के साथ अच्छा सुलूक करने की तरग़ीबात मौजूद हैं, उन्हें भी सुनने की सआ़दत ह़ासिल करेंगी, वालिद के साथ अच्छा सुलूक करने की बरकतों के मुतअ़ल्लिक़ भी सुनेंगी, वालिद के साथ बुरा सुलूक करने के चन्द इब्रतनाक वाक़िआ़त भी बयान किए जाएंगे, औलाद की दुरुस्त तरबियत न की जाए, तो इस के क्या क्या नुक़्सानात सामने आते हैं, येह

भी सुनेंगी । **अल्लाह** करे कि दिलजम्ई के साथ हम अव्वल ता आख़िर अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ बयान सुनने की सआ़दत ह़ासिल करें ।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उ़मूमन हमारे मुआ़शरे में मां की तो बहुत क़द्र की जाती है, मां की शानो अ़ज़मत और उस के ह़ुक़ूक़ को तो अ़ज़ीमुश्शान त़रीक़े से बयान किया जाता है मगर बाप की शान, बाप के मक़ामो मर्तबे और उस के ह़ुक़ूक़ पर ख़ुसूसिय्यत के साथ बहुत ही कम कलाम होता है, ह़ालांकि इस्लाम ने बाप जैसी मोह़तरम हस्ती के भी बहुत से ह़ुक़ूक़ बयान फ़रमाए हैं और हमें बाप जैसी मेहरबान ज़ात के साथ भी ह़ुस्ने सुलूक बजा लाने का वाज़ेह़ ह़ुक्म इरशाद फ़रमाया है । लिहाज़ा जिस त़रह़ हम अपनी मां की ख़िदमत करती हैं, उस के ह़ुक़ूक़ की रिआ़यत करती हैं और उस के साथ ह़ुस्ने सुलूक बजा लाती हैं, इसी त़रह़ हमें चाहिए कि हम अपने वालिद की भी क़द्र करें, उन के ह़ुक़ूक़ बजा लाएं, उन का अदब करें और उन की ख़िदमत करते रहने की हर मुमकिन कोशिश करें ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! बाप की ख़िदमत करना बहुत ही बड़ी सआ़दत मन्दी की बात और रिज़ाए इलाही के ह़ुसूल का ज़रीआ़ है । बाप की ख़िदमत करने के बदले में **अल्लाह** पाक औलाद को कैसे कैसे इन्आ़मो इकराम से नवाज़ता है । आइए ! इस ज़िम्न में एक ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत सुनिये और उस से ह़ासिल होने वाले निकात को अपने दिल के मदनी गुलदस्ते में सजाइए । चुनान्चे,

वालिद की ख़िदमत का सिला

दावते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब "**अल्लाह वालों की बातें**" जिल्द 4, सफ़ह़ा नम्बर 14 पर है : एक शख़्स के 4 बेटे थे,

वोह बीमार हुवा तो उन में से एक ने कहा : या तो तुम तीनों वालिद की तीमारदारी करो और उन की मीरास से अपने लिये कुछ ह़िस्सा न लो या मैं उन की तीमारदारी करता हूं और उन की मीरास से कुछ ह़िस्सा नहीं लेता। तीनों ने कहा : तुम तीमारदारी करो और मीरास से कुछ ह़िस्सा न लो। चुनान्चे, वोह वालिद की तीमारदारी करता रहा, ह़त्ता कि वालिद का इन्तिक़ाल हो गया, लिहाज़ा उस ने मीरास में से कुछ ह़िस्सा न लिया। एक रात उस ने ख़्वाब में किसी कहने वाले को येह कहते सुना : फ़ुलां जगह जाओ और वहां से 100 दीनार ले लो। लड़के ने पूछा : क्या उस में बरकत है ? जवाब मिला : नहीं ! सुब्ह़ हुई, तो उस ने ख़्वाब अपनी बीवी को सुनाया। बीवी ने कहा : तुम उन दीनारों को ले लो, उन की बरकत येह है कि हम उन से कपड़े बनवाएं और ज़िन्दगी गुज़ारें। लड़के ने इन्कार कर दिया। अगली रात फिर उस ने ख़्वाब में किसी को कहते सुना : फ़ुलां जगह जाओ और वहां से 10 दीनार ले लो। उस ने पूछा : क्या उन में बरकत है ? जवाब मिला : नहीं ! सुब्ह़ उस ने अपनी बीवी को ख़्वाब सुनाया, तो बीवी ने पेहले की त़रह़ कहा मगर उस ने फिर लेने से इन्कार कर दिया। तीसरी रात फिर उस ने ख़्वाब में सुना : फ़ुलां जगह जाओ और एक दीनार ले लो। उस ने पूछा : क्या उस में बरकत है ? जवाब मिला : हां ! चुनान्चे, लड़का गया और दीनार ले कर बाज़ार रवाना हो गया। उसे एक आदमी मिला जो दो मछलियां उठाए हुवे था। लड़के ने कहा : इन की क़ीमत क्या है ? उस ने कहा : एक दीनार। लड़के ने दीनार के बदले दोनों मछलियां लीं और चल दिया। घर आ कर उन का पेट चाक किया, तो दोनों में से हर एक के पेट से एक ऐसा मोती निकला जिस की मिस्ल लोगों ने न देखा था। उधर बादशाह ने एक शख़्स को ऐसा ही मोती तलाश करने और ख़रीदने भेजा, तो वोह मोती उस लड़के के पास मिला,

लिहाज़ा उस ने वोह मोती सोने से लदे हुवे 30 ख़च्चरों के बदले बेच दिया। जब बादशाह ने मोती देखा, तो कहा : इस का फ़ाएदा उसी सूरत में है कि इस जैसा एक और भी हो। लिहाज़ा बादशाह ने ख़ुद्दाम से कहा : इस जैसा एक और तलाश करो अगर्चे क़ीमत दुगनी देनी पड़े। चुनान्चे, वोह उसी लड़के के पास आए और कहा : जो मोती हम ने तुम से ख़रीदा था, उस की मिस्ल और भी हो तो हमें दे दो, हम तुम्हें दुगनी रक़म देंगे। लड़के ने पूछा : क्या तुम वाक़ेई इतना दोगे ? उन्हों ने कहा : हां ! चुनान्चे, लड़के ने दूसरा मोती दुगनी क़ीमत (यानी सोने से लदे हुवे 60 ख़च्चरों के बदले) फ़रोख़्त कर दिया। (अल्लाह वालों की बातें, 4 / 14)

बड़े भाई, बहन का मैं कहा माना करूं हर दम
करूं मां-बाप की दिन रात ख़िदमत या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 331)

سُبْحٰنَ اللّٰه ! क़ुरबान जाइए उस सआदत मन्द और अक़्लमन्द बेटे की समझदारी पर ! बिला शुबा अगर वोह चाहता तो अपने दीगर ना लाइक़ भाइयों की त़रह़ अपने ह़िस्से का माल ले कर वालिदे मोह़तरम की शफ़्क़तों और उन की ख़िदमत के बदले मिलने वाले बहुत बड़े सवाब से अपने आप को मह़रूम कर लेता मगर वोह एक ख़ुद्दार, वफ़ादार, ग़ैरतमन्द और समझदार बेटा था जिसे फ़ानी दुन्यवी मालो दौलत से कोई सरोकार न था, वोह बाप के मक़ामो मर्तबे और उस के ह़ुक़ूक़ से पूरी त़रह़ आगाह था, बाप के एह़सानात को वोह भुला नहीं पाया था, उसे पता था कि बाप की ख़िदमत करने से **अल्लाह** पाक व रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा ह़ासिल होती है। हां ! हां ! येही वोह मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्सिय्यत है जिस की ख़िदमत औलाद को जन्नत का ह़क़दार बना देती है। वोह येह भी जानता था कि दौलत तो आने जाने वाली चीज़ बल्कि हाथों का मैल है, माल

जाता है तो जाए मगर बाप का दामन हाथों से हरगिज़ न छूटने पाए। लिहाज़ा उस बा कमाल व वफ़ादार बेटे ने फ़ानी मालो दौलत को ठुकरा कर अपने बीमार वालिद का सहारा बनने को तरजीह़ दी और आख़िरी दम तक उन की देखभाल करने में मश्ग़ूल रहा, ह़त्ताकि उस का बाप दुन्या से रुख़्सत हो गया। **अल्लाह** पाक को उस लाइक़ बेटे का अपने वालिद की ख़िदमत करने का अ़मल इस क़दर पसन्द आया कि उस ने उस वफ़ा शिआ़र बेटे से राज़ी हो कर दुन्या में ही अपनी नेमतों की बरसात फ़रमा दी। **अल्लाह** करीम हर मुसलमान को अपने वालिद का मुत़ीओ़ फ़रमां बरदार बनाए और उन की ख़िदमत करते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! याद रखिए ! बाप के अपनी औलाद पर इस क़दर एह़सानात हैं कि अगर औलाद को एक तो क्या, कई ज़िन्दगियां भी मिल जाएं तब भी वोह अपने बाप के एह़सानात का बदला न चुका सके। बाप क़ुदरत का अनमोल तोह़फ़ा है। बाप ख़ानदान में औलाद की पेहचान का ज़रीआ़ है। बाप को राज़ी रखना औलाद पर लाज़िम है। बाप के ह़ुक़ूक़ से आज़ाद होना ना मुमकिन है। बाप सुब्ह़ सवेरे काम काज के लिये घर से निकल पड़ता और सारा दिन मेह़नत मज़दूरी कर के औलाद का पेट भरता है। बाप औलाद की तरक़्क़ी के लिये हमेशा कुढ़ता रहता है। बाप अपनी औलाद से कभी ह़सद नहीं करता। बाप अपने एह़सानात का कभी बदला नहीं मांगता। बाप बीमार औलाद को कभी अकेला नहीं छोड़ता। बाप बीमार औलाद की ख़ात़िर सख़्त सर्दियों में भी सारी सारी रात जाग कर गुज़ारता है। बाप औलाद की ख़ात़िर महंगे हस्पतालों के चक्कर लगाता और महंगी दवाएं भी ख़रीद

लेता है। बाप औलाद के मुस्तक़्बिल को संवारने के लिये अपनी तमाम तर तवानाइयां औलाद के लिये वक़्फ़ कर देता है। बाप औलाद के लिये सायादार दरख़्त की त़रह़ होता है। बाप ख़ुद गर्मी बरदाश्त कर के औलाद को आराम व सुकून पहुंचाता है। बाप औलाद को छांव में बिठा कर ख़ुद कड़कती धूप सेह लेता है। बाप औलाद के नाज़ नख़रे उठाता है। बाप क़र्ज़ ले कर भी औलाद की ख़्वाहिशात को पूरा करता है। बाप अपनी बीवी की वफ़ात के बाद औलाद को उन की मां की कमी मेह़सूस नहीं होने देता। बाप औलाद की पैदाइश से पेहले, पैदाइश के दौरान और बाद के अख़राजात को बरदाश्त करता है। औलाद से अपने एह़सानात और परवरिश का बदला नहीं मांगता। बाप औलाद को अच्छा इन्सान बनाता है। बाप औलाद के ह़क़ में बख़ील नहीं होता। बाप औलाद को हर त़रह़ की आसाइश मुहय्या करता है। बाप औलाद की तालीम का ख़र्चा बरदाश्त करता है। बाप औलाद को मायूसी के दलदल से निकालने में अपना किरदार अदा करता है। बाप औलाद के ह़क़ में हमेशा अच्छा ही सोचता है। बाप अपनी औलाद की औलाद को भी वैसा ही प्यार देता है जैसा वोह अपनी औलाद को देता है। बाप वक़्तन फ़ वक़्तन अपनी औलाद को मुफ़ीद मश्वरों से नवाज़ता है। बाप औलाद को अपनी ज़िन्दगी के तजरिबात से आगाह करता है। बाप औलाद को मौजूदा और आइन्दा आने वाले ख़त़रात व फ़ितनों से बा ख़बर करता है। बाप औलाद को काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने के उसूल सिखाता है। बाप औलाद को अपने, पराए का फ़र्क़ बताता है। बाप औलाद को ख़ुश देख कर ख़ुश होता और औलाद को दुख, तक्लीफ़ में मुब्तला देख कर बे क़रार हो जाता है। बाप औलाद की जली कटी बातें सुन कर भी ख़ामोश रहता है। बाप औलाद के चेहरे से ही उन की ह़ाजात व परेशानियां भांप लेता है। बाप मुश्किलात में औलाद की हिम्मत बंधाता है। बाप माज़ूर औलाद को भी बे सहारा नहीं छोड़ता। बाप

ना फ़रमान औलाद के लिये भी अपनी महब्बतों के दरवाज़े खुले रखता है। बाप न हो तो घर वीरान हो जाता है और बाप से हुस्ने सुलूक करने का हुक्म कुरआने करीम व अहादीसे करीमा में बयान हुवा है।

चुनान्चे, पारह 15, सूरए बनी इसराईल की आयत नम्बर 23 और 24 में **अल्लाह** पाक इरशाद फ़रमाता है :

وَ قَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّاۤ اِیَّاهُ وَ بِالْوَالِدَیْنِ اِحْسَانًاؕ اِمَّا یَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَاۤ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَاۤ اُفٍّ وَّ لَا تَنْهَرْهُمَا وَ قُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِیْمًا ﴿۲۳﴾ وَ اخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَ قُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّیٰنِیْ صَغِیْرًاؕ ﴿۲۴﴾

(پ۱۵، اسرائیل: ۲۳-۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : *और तुम्हारे रब ने हुक्म फ़रमाया कि उस के सिवा किसी की इबादत न करो और मां-बाप के साथ अच्छा सुलूक करो। अगर तेरे सामने उन में से कोई एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जाएं, तो उन से उफ़ तक न कहना और उन्हें न झिड़कना और उन से ख़ूबसूरत, नर्म बात केहना और उन के लिये नर्म दिली से आजिज़ी का बाज़ू झुका कर रख और दुआ कर कि ऐ मेरे रब ! तू इन दोनों पर रह़म फ़रमा जैसा इन दोनों ने मुझे बचपन में पाला।*

बयान कर्दा आयाते मुबारका के तह़त ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुफ़्ती मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब वालिदैन पर ज़ौफ़ (कमज़ोरी) का ग़लबा हो, आज़ा में कुव्वत न रहे और जैसा तू बचपन में उन के पास बे ताक़त था, ऐसे ही वोह आख़िरे उ़म्र में तेरे पास नातुवां (कमज़ोर) रह जाएं, तो कोई ऐसी बात ज़बान से न निकालना जिस से येह समझा जाए कि उन की त़रफ़ से त़बीअ़त पर कुछ गिरानी (बोझ) है, न उन्हें झिड़कना, न तेज़ आवाज़ से बात करना बल्कि

कमाले हुस्ने अदब (निहायत अच्छे अदब) के साथ मां-बाप से इस त़रह़ कलाम कर जैसे गुलाम व ख़ादिम (अपने) आक़ा से करता है, उन से नर्मी व तवाज़ोअ़ से पेश आ और उन के साथ थके वक़्त में शफ़्क़तो मह़ब्बत का बरताव कर कि उन्हों ने तेरी मजबूरी के वक़्त तुझे मह़ब्बत से परवरिश किया था और जो चीज़ उन्हें दरकार हो, वोह उन पर ख़र्च करने में दरेग़ (बुख़्ल) न कर। मुद्दआ़ (मत़लब) येह है कि दुन्या में बेहतर सुलूक और ख़िदमत में कितना भी मुबालग़ा किया जाए लेकिन वालिदैन के एह़सान का ह़क़ अदा नहीं हो सकता। इस लिये बन्दे को चाहिए कि बारगाहे इलाही में उन पर फ़ज़्लो रह़मत फ़रमाने की दुआ़ करे और अ़र्ज़ करे कि या रब ! मेरी ख़िदमतें उन के एह़सान की जज़ा (बदला) नहीं हो सकतीं, तू उन पर करम कर कि उन के एह़सान का बदला हो।

(तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पा. 15, इसरा, तह़्तुल आयत : 23-24)

पीरो मुर्शिद पर, मेरे मां-बाप पर
हो सदा रह़मत ऐ नानाए हुसैन !

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 258)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

हुस्ने सुलूक की अहमिय्यत पर फ़रामीने मुस्त़फ़ा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! अब अह़ादीसे मुबारका की रौशनी में बाप की शान और बाप से हुस्ने सुलूक करने की अहमिय्यत पर मुश्तमिल 6 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुनिये। चुनान्चे,

1. इरशाद फ़रमाया : बाप जन्नत का दरमियानी दरवाज़ा है, तेरी मर्ज़ी है उस की हि़फ़ाज़त कर या उसे छोड़ दे।

(ترمذی، کتاب البر والصلة، باب: ماجاء من الفضل فی رضا الوالدین، ۳/ ۳۵۹، حدیث: ۱۹۰۶)

2. इरशाद फ़रमाया : बेटा अपने बाप का ह़क़ अदा नहीं कर सकता, यहां तक कि बेटा अपने बाप को ग़ुलाम पाए और उसे ख़रीद कर आज़ाद कर दे । (مسلم، کتاب العتق، باب فضل عتق الوالد، ص۶۲۴، حدیث:۳۷۹۹)

3. इरशाद फ़रमाया : रब की रिज़ा, बाप की रिज़ामन्दी में है और रब की नाराज़ी, बाप की नाराज़ी में है ।

(ترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ما جاء من الفضل فی رضا الوالدین، ۳/۳۶۰، حدیث: ۱۹۰۷)

4. इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक की इत़ाअ़त, वालिद की इत़ाअ़त करने में है और **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी, वालिद की ना फ़रमानी करने में है । (معجم اوسط، ۱/۶۱۴، حدیث: ۲۲۵۵)

5. इरशाद फ़रमाया : जिस ने अपने वालिदैन या उन में से किसी एक को पाया और उन से हुस्ने सुलूक न किया, वोह **अल्लाह** करीम की रह़मत से दूर हुवा और ग़ज़बे ख़ुदा का मुस्तह़िक़ हुवा ।

(معجم کبیر، ۱۲/۶۶، حدیث: ۱۲۵۵۱)

6. इरशाद फ़रमाया : तुम में से कोई अपने बाप को हरगिज़ गाली न दे । सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! कोई शख़्स अपने बाप को कैसे गाली दे सकता है ? इरशाद फ़रमाया : येह किसी शख़्स के बाप को गाली देगा, तो वोह इस के बाप को गाली देगा ।

(مسلم، کتاب الایمان، باب الکبائر و اکبرہا، ص۶۰، حدیث: ۲۶۳، ملخصاً)

आइए ! बारगाहे इलाही में दुआ़ करते हैं :

मुत़ीअ़ अपने मां-बाप का कर मैं उन का
हर इक हुक्म लाऊं बजा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 101)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुना आप ने ! **अल्लाह** पाक ने बाप को कैसी ऊंची शान का मालिक बनाया है कि **अल्लाह** पाक ने अपनी रिज़ा ओ फ़रमां बरदारी को बाप की रिज़ा ओ फ़रमां बरदारी पर मौक़ूफ़ फ़रमा दिया । होना तो येह चाहिए था कि हम **अल्लाह** पाक व रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रामीन पर लब्बैक कहती हुई दिलो जान के साथ वालिद की ख़िदमत कर के उन से दुआएं लेतीं, उन के हुक़ूक़ को पूरा करतीं, उन के हर जाइज़ हुक्म की बजा आवरी करतीं, उन की पुकार पर लब्बैक कहती हुई उन की बारगाह में दौड़ी दौड़ी आतीं, उन की ज़रूरियात को अपनी ज़रूरियात पर मुक़द्दम रखतीं, उन की ना फ़रमानी और बुराई करने से अपने आप को बचातीं, मुश्किल हालात, बीमारी और बुढ़ापे में उन का सहारा बनतीं, अल ग़रज़ ! हर तरह से उन्हें राज़ी रखने की कोशिश करतीं मगर आह ! सद हज़ार आह ! इल्मे दीन से दूरी के बाइस आज बाप मज़्लूम तरीन लोगों की सफ़ में शामिल हो चुका है ।

अफ़्सोस ! अग़यार की देखा देखी अब बाप जैसी अज़ीम हस्ती के साथ नौकरों वाला सुलूक किया जा रहा है, बाप के साथ बद सुलूकी के वाक़िआत में इज़ाफ़ा दर इज़ाफ़ा होता चला जा रहा है, घर के सारे काम बाप से करवाए जा रहे हैं । पहले के दौर में बच्चे डरते थे कि कहीं बाप नाराज़ न हो जाए मगर अब हाल येह है कि बाप डरता है कि कहीं बच्चे नाराज़ न हो जाएं, बाप नसीहत कर दे तो झिड़क कर उस की बात को सुनी अनसुनी कर दिया जाता है, बाप औलाद की बेहतरी के लिये कुछ सख़्त कलिमात कह दे, तो पेशानी पर बल आ जाते हैं और नादान औलाद ज़बान दराज़ी पर उतर आती है, बाप जब तक कमाने की मशीन बना रहे, तो बहुत अच्छा लगता है लेकिन अगर बीमार हो जाए, काम काज के लाइक़ न रहे, ख़र्चा न दे पाए या बुढ़ापे की देहलीज़ को पहुंच जाए तो

औलाद के नज़्दीक उस की अहमिय्यत किसी बेकार चीज़ से कम नहीं रेह जाती । बच्चों की अम्मी के इन्तिक़ाल के बाद उ़मूमन बाप की दुन्या बे रौनक़ सी हो जाती है, उसे तन्हाइयां चुभती हैं, ऐसे में उसे औलाद की हमदर्दी की ज़ियादा ज़रूरत होती है मगर औलाद के पास बाप का ह़ाल पूछने के लिये चन्द लम्ह़ात भी नहीं निकल पाते । मश्हूर कहावत है : "**जैसी करनी, वैसी भरनी** !" तो आज अगर हम अपने बाप के साथ इस त़रह़ का नाज़ेबा सुलूक करेंगी तो मुमकिन है कि कल को हमारे बच्चे भी हमारे साथ इसी त़रह़ का सुलूक करें । जैसा कि :

जैसा करोगे, वैसा भरोगे

ह़दीसे पाक में है : كَمَا تَدِيْنُ تُدَانُ जैसा करोगे, वैसा भरोगे ।

(مصنف عبدالرزاق، کتاب الجامع، باب الاغتیاب والشتم، ۱۰/ ۱۸۹، حدیث: ۲۰۴۳۰)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस "كَمَا تَدِيْنُ تُدَانُ" की वज़ाह़त में लिखते हैं : यानी जैसा तुम काम करोगे, वैसा तुम्हें उस का बदला मिलेगा, जो तुम किसी के साथ करोगे, वोही तुम्हारे साथ होगा ।

(التیسیر بشرح الجامع الصغیر، حرف الکاف، ۲/۲۲۲)

आइए ! अब दिल थाम कर बाप से बद सुलूकी करने के इ़ब्रतनाक अन्जाम पर मुश्तमिल 3 फ़िक्र अंगेज़ ह़िकायात सुनिये और इ़ब्रत ह़ासिल कीजिये : चुनान्चे,

(1) बाप के साथ बद सुलूकी का अन्जाम

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुस्लिम बिन क़ुतैबा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब "**अर्दशीर**" नामी बादशाह ने अपनी ह़ुकूमत को मुस्तह़्कम कर लिया, तो छोटे छोटे बादशाहों ने उस के ताबेअ़ रेहने का इक़रार कर लिया । अब

उस की नज़र बहुत बड़ी क़रीबी सल्तनत **"सुरयानिय्या"** की त़रफ़ थी। चुनान्चे, अर्दशीर ने उस मुल्क पर चढ़ाई कर दी। वहां का बादशाह एक बड़े शहर में क़ल्आ़ बन्द था। अर्दशीर ने शहर का मुह़ासरा कर लिया लेकिन काफ़ी अ़र्सा गुज़रने के बा वुजूद भी वोह उस शहर को फ़त्ह़ न कर सका। एक दिन बादशाह की बेटी क़ल्ए़ की दीवार पर चढ़ी, तो अचानक उस की नज़र अर्दशीर पर पड़ी। शेहज़ादी उस की मह़ब्बत में गिरिफ़्तार हो गई और इश्क़ की आग में जलने लगी। बिल आख़िर नफ़्स के हाथों मजबूर हो कर उस ने एक तीर पर येह इ़बारत लिखी : ऐ ह़सीनो जमील बादशाह ! अगर तुम मुझ से शादी करने का वादा करो, तो मैं तुम्हें ऐसा ख़ुफ़्या रास्ता बताऊंगी जिस के ज़रीए़ तुम थोड़ी सी मशक़्क़त के बाद ब आसानी इस शहर को फ़त्ह़ कर लोगे। फिर शहज़ादी ने वोह तीर अर्दशीर बादशाह की जानिब फेंक दिया। उस ने तीर पर लिखी इ़बारत पढ़ी और एक तीर पर येह जवाब लिखा : अगर तुम ने ऐसा रास्ता बता दिया, तो तुम्हारी ख़्वाहिश ज़रूर पूरी की जाएगी, येह हमारा वादा है। और तीर शहज़ादी की जानिब फेंक दिया। शहज़ादी ने येह इ़बारत पढ़ी तो फ़ौरन ख़ुफ़्या रास्ते का पता लिख कर तीर बादशाह की त़रफ़ फेंक दिया। शहवत के हाथों मजबूर होने वाली उस बे मुरव्वत शहज़ादी के बताए हुवे रास्ते से अर्दशीर बादशाह ने बहुत जल्द उस शहर को फ़त्ह़ कर लिया। ग़फ़्लत व बे ख़बरी के आ़लम में बहुत सारे सिपाही हलाक हो गये और शहर का बादशाह यानी उस शहज़ादी का बाप भी क़त्ल कर दिया गया।

ह़स्बे वादा अर्दशीर ने शहज़ादी से शादी कर ली, शहज़ादी को न तो बाप की हलाकत का ग़म था और न ही अपने मुल्क की बरबादी की कोई परवाह, बस अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ होने वाली शादी पर वोह बेह़द ख़ुश थी। दिन गुज़रते रहे, उस की ख़ुशियों में इज़ाफ़ा होता

रहा । एक रात जब शहज़ादी बिस्तर पर लेटी काफ़ी देर तक उसे नींद न आई, वोह बेचैनी से बार बार करवटें बदलती रही । अर्दशीर ने उस की येह ह़ालत देखी तो कहा : क्या बात है ? तुम्हें नींद क्यूं नहीं आ रही ? शहज़ादी ने कहा : मेरे बिस्तर पर कोई चीज़ है जिस की वज्ह से मुझे नींद नहीं आ रही । अर्दशीर ने जब बिस्तर देखा, तो चन्द धागे एक जगह जम्अ़ थे, उन की वज्ह से शहज़ादी का इन्तिहाई नर्मो नाज़ुक जिस्म बेचैन हो रहा था । अर्दशीर को उस के जिस्म की नर्मी व नज़ाकत पर बड़ा तअ़ज्जुब हुवा । उस ने पूछा : तुम्हारा बाप तुम्हें कौन सी ग़िज़ा खिलाता था जिस की वज्ह से तुम्हारा जिस्म इतना नर्मो नाज़ुक है ? शहज़ादी ने कहा : मेरी ग़िज़ा मक्खन, हड्डियों का गूदा, शह्द और मग़्ज़ हुवा करती थी । अर्दशीर ने कहा : तेरे बाप की त़रह़ आसाइशो आराम तुझे कभी किसी ने न दिया होगा, तू ने उस के एह़सान और क़राबत का इतना बुरा बदला दिया कि उसे क़त्ल करवा डाला, जब तू अपने शफ़ीक़ बाप के साथ भलाई न कर सकी, तो मैं भी अपने आप को तुझ से मह़फ़ूज़ नहीं समझता । फिर अर्दशीर ने हुक्म दिया : इस के सर के बालों को त़ाक़तवर घोड़े की दुम से बांध कर घोड़े को तेज़ी से दौड़ाया जाए । चुनान्चे, हुक्म की तामील हुई और चन्द ही लम्ह़ों में उस नफ़्स परस्त शहज़ादी का जिस्म टुकड़े टुकड़े हो गया ।

(उ़यूनुल हि़कायात, 2 / 231)

(2) येह उसी का बदला है

ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : किसी मक़ाम पर एक आदमी अपने बाप को मार रहा था । लोगों ने उसे मलामत

की, कि ऐ ना हन्जार ! येह क्या कर रहा है ? इस पर बाप बोला : इसे छोड़ दो क्यूंकि मैं भी इसी जगह अपने बाप को मारा करता था, येही वज्ह है कि मेरा बेटा भी मुझे इसी जगह मार रहा है, येह उसी का बदला है, इसे मलामत मत करो । (تنبیہ الغافلین، باب حق الولد علی الوالد، ص۲۹)

(3) कल येही अन्जाम मेरा होगा

कहते हैं : एक जवान अपने बूढ़े बाप से तंग आ कर उस को दरया में फेंकने गया । बाप ने कहा : बेटा ! मुझे ज़रा और आगे गेहराई में जा कर फेंको । बेटे ने कहा : यहां किनारे पे क्यूं नहीं और वहां गेहराई में क्यूं ? बाप ने जवाब दिया : इस लिये कि यहां तो मैं ने अपने बाप को फेंका था । येह सुन कर बेटा कांप उठा कि कल येही अन्जाम मेरा होगा । वोह बाप को घर ले आया और उस की ख़िदमत शुरूअ़ कर दी ।

(जैसी करनी, वैसी भरनी, स. 90)

दिल दुखाना छोड़ दे मां-बाप का
वरना है इस में ख़सारा आप का

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 713)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

आज कल औलाद की तरबियत का मेयार

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उ़मूमन वालिदैन की येह देरीना ख़्वाहिश होती है कि हमारी औलाद हमारी फ़रमां बरदार रहे, हमारे साथ अच्छा सुलूक करे । नेक, मुत्तक़ी व परहेज़गार बने, मुआ़शरे में इ़ज़्ज़तदार

और पाकीज़ा किरदार वाली हो मगर अक्सर नतीजा इस के उलट ही आता है। क्यूं ? इस लिये कि जो वालिदैन तरबियते औलाद के बुन्यादी इस्लामी उसूलों से ही ना वाक़िफ़, बे अ़मल और अच्छे माहोल की बरकतों से मह़रूम होंगे तो भला वोह क्यूंकर अपनी औलाद की अच्छी तरबियत कर पाएंगे ? शायद इसी वज्ह से आज औलाद की तरबियत का मेयार येह बन चुका है कि बच्चा अगर काम काज न करे, स्कूल या कोचिंग सेन्टर की छुट्टी कर ले या इस मुआ़मले में सुस्ती का शिकार हो, किसी तक़रीब में जाने का या मख़्सूस लिबास व जूते पेहनने का कहा जाए और वोह इस पर राज़ी न हो, इसी त़रह़ दीगर दुन्यवी मुआ़मलात में वोह "अगर मगर" और "चूंकि चुनान्चे" से काम ले या हटधर्मी का मुज़ाहरा करे, तो उस का ठीक ठाक नोटिस लिया जाता है, खरी खरी सुनाई जाती है, घन्टों घन्टों लेकचर दिए जाते हैं, ह़त्ताकि मारपीट से भी गुरेज़ नहीं किया जाता लेकिन अगर वोही बच्चा नमाज़ें क़ज़ा करे या जमाअ़त से नमाज़ न पढ़े, मद्रसे या जामिआ़ की छुट्टी कर ले या ताख़ीर से जाए, पूरी पूरी रात आवारा गर्दी करे, मोबाइल और सोश्यल मीडिया (Social Media) के ज़रीए़ ना मह़रमों से नाजाइज़ तअ़ल्लुक़ात क़ाइम करे, मोबाइल या नेट का ग़लत़ इस्तिमाल करे, इ़श्क़े मजाज़ी की आफ़त में गिरफ़्तार हो जाए, फ़िल्में ड्रामे देखे, गाने बाजे सुने, नित नए फ़ैशन अपनाए, ह़राम व ह़लाल की परवा न करे, शराब पिए, जुवा खेले, झूट बोले, ग़ीबतें करे, रिश्वतों का लेन देन करे, बद अ़क़ीदा लोगों की सोह़बत में बैठे, फ़ुज़ूल कामों में पैसा बरबाद करे, अल ग़रज़ ! त़रह़ त़रह़ की बुराइयों में मुब्तला हो जाए मगर इन मुआ़मलात में उस से पूछगछ करना तो दूर की बात है, वालिदैन की पेशानी पर बल तक नहीं आते। कोई इस्लाह़ करे भी तो वालिदैन कहते हैं **: "अभी तो येह बच्चा है" "नादान है" "आहिस्ता आहिस्ता समझ जाएगा" "बच्चों पर इतनी भी सख़्ती नहीं करनी चाहिए"** वग़ैरा। इस्लामी तरबियत से

महरूम, हद से ज़ियादा लाड प्यार और ढील देने के सबब वोही बच्चा जब वालिदैन, ख़ानदान और मुआशरे की बदनामी का सबब बनता है, डांट डपट करने या पैसे न देने पर वालिदैन को आंखें दिखाता, झाड़ता या वालिदैन पर हाथ उठाता है तो उस वक़्त वालिदैन को ख़ैर ख़्वाहों की नसीहतें याद आने लगती हैं, अब वालिदैन उस की इस्लाह के लिये कुढ़ते, दुआएं करते और करवाते हैं मगर इस्लाह की कोई सूरत नज़र नहीं आती, उस वक़्त पानी सर से बहुत ऊंचा हो चुका होता है और सिवाए पछताने के कुछ हाथ नहीं आता।

देखे हैं येह दिन अपनी ही ग़फ़्लत की बदौलत
सच है कि बुरे काम का अन्जाम बुरा है

औलाद की सहीह तरबियत न करने और उन्हें हद से ज़ियादा ढील देने के सबब वालिदैन को कैसे कैसे दिन देखने पड़ते हैं। आइए ! इस बारे में 2 सबक़ आमोज़ हिकायात सुनिये और औलाद की इस्लामी तरीक़े के मुताबिक़ तरबियत करने की निय्यत कीजिये : चुनान्चे,

औलाद की इस्लामी तरबियत न करने का नुक़्सान

एक शख़्स ने अपने बाप से कहा : आप ने मेरे बचपन में (इस्लामी तालीमात के मुताबिक़ तरबियत न कर के) मुझे ज़ाएअ किया, लिहाज़ा अब मैं आप के बुढ़ापे में आप को ज़ाएअ करूंगा। (فیض القدیر، ۱/۲۹۲، تحت الحدیث:۳۱۱)

बे औलाद को जब औलाद मिली !

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ तहरीर फ़रमाते

हैं : एक मालदार शख़्स के यहां औलाद न थी, उस ने इस के लिये बड़े जतन किए मगर कामयाबी न मिली, किसी ने मश्वरा दिया कि मक्कए मुकर्रमा ह़ाज़िर हों और मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ के अन्दर मक़ामे इब्राहीम के पास दुआ़ मांगिए, اِنْ شَآءَ الله आप का काम हो जाएगा। उस ने ऐसा ही किया और **अल्लाह** करीम ने उसे चांद सा बेटा दिया। उस ने बड़े नाज़ से उस की परवरिश की। इकलौते बच्चे को ज़रूरत से ज़ियादा प्यार मिला और दुरुस्त तरबियत न की गई, जिस के सबब वोह आवारा और उड़ाव ख़र्च हो गया। बाप को बहुत देर में होश आया, उस ने अपने बिगड़े हुवे बेटे को पैसे देने बन्द कर दिए, इस से वोह अपने बाप का मुख़ालिफ़ हो गया और जहां उस के बाप ने औलाद के लिये दुआ़ मांगी थी जिस का येह समर (यानी नतीजा) था, वहीं यानी मक्कए मुकर्रमा ह़ाज़िर हो कर मक़ामे इब्राहीम के पास येह ना लाइक़ बेटा अपने बाप के मरने की दुआ़एं मांगने लगा ताकि बाप की मौत की सूरत में इसे तर्के (यानी विरसे) में उस की दौलत हाथ आ जाए। (नेकी की दावत, स. 577)

तरबियते औलाद के बारे में मज़ीद मालूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की किताब "**तरबियते औलाद**" और रिसाला "**औलाद के हुक़ूक़**" का मुत़ालआ़ करना इन्तिहाई मुफ़ीद है।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! माहे ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम का मुबारक महीना अपनी बरकतें लुटा रहा है, इस महीने की 14 तारीख़ को शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के वालिदे मोह़तरम का यौम मनाया जाता है। आइए ! इसी मुनासबत से आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की सीरत के चन्द पहलूओं के बारे में सुनिये : चुनान्चे,

अबू अत्तार رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का ज़िक्रे ख़ैर

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के वालिदे माजिद, हाजी अब्दुर्रहमान क़ादिरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नेक सीरत, तक्वा ओ तहारत और शरीअतो सुन्नत के पैकर थे, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की आदत थी कि अक्सर निगाहें नीची रख कर चला करते, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के दिल में दुन्यवी मालो दौलत जम्अ करने का लालच बिल्कुल न था, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मसाजिद से महब्बत और उन की ख़ूब ख़िदमत किया करते । 1979 हिजरी में जब शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه कोलम्बो (सीलंका) तशरीफ़ ले गए, तो वहां के लोगों को आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के वालिद साहिब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से बहुत मुतास्सिर पाया क्यूंकि उन्हों ने वहां की आलीशान हनफ़ी मैमन मस्जिद के इन्तेज़ामात संभाले थे और उस मस्जिद की काफ़ी ख़िदमत भी की थी । आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه सिलसिलए आलिय्या क़ादिरिय्या में बैअत थे और क़सीदए ग़ौसिय्या का विर्द फ़रमाते थे । कोलम्बो में क़ियाम के दौरान अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ख़ालू ने दौराने गुफ़्तगू आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को बताया कि मैं ने ख़ुद अपनी आंखों से देखा है कि जब कभी चारपाई पर बैठ कर आप के वालिद साहिब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه क़सीदए ग़ौसिया पढ़ते तो उन की चारपाई ज़मीन से बुलन्द हो जाती थी ।

सफ़रे हज में विसाल

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه आलमे शीर ख़्वारगी (यानी दूध पीने की उम्र) में ही थे कि आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के वालिदे मोहतरम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه 1370 हिजरी में सफ़रे हज पर रवाना हुवे । अय्यामे हज में मिना में सख़्त लू चलने की वज्ह से कई हुज्जाजे किराम फ़ौत हो गये थे,

अबू अ़त्तार, ह़ाजी अ़ब्दुर्रह़मान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ भी मुख़्तसर अ़लालत (बीमार रहने) के बाद 14 ज़ुल हिज्जतिल ह़राम 1370 हिजरी को इस दुन्या से रुख़्सत हो गये। (तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत, स. 11)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

घर में मदनी माह़ोल बनाने के अहम निकात

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान को इख़्तेताम की त़रफ़ लाते हुवे आइए ! घर में मदनी माह़ोल बनाने के अहम निकात सुनने की सआ़दत ह़ासिल करती हैं :

पहले 2 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा कीजिये :

1. फ़रमाया : अपने घरों को क़ब्रिस्तान मत बनाओ, बेशक जिस घर में सूरए बक़रह पढ़ी जाती है, शैत़ान उस घर से भाग जाता है।

(مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین، باب استحباب صلاۃ النافلۃ فی بیتہ۔۔۔ الخ، ص٣٠٦، حدیث: ١٨٢٤)

2. फ़रमाया : जिस घर में **अल्लाह** पाक का ज़िक्र किया जाता है और जिस घर में **अल्लाह** पाक का ज़िक्र नहीं किया जाता, उन की मिसाल ज़िन्दा और मुर्दा की है।

(بخاری، کتاب الدعوات، باب فضل ذکر اللہ، ۴/ ۲۲۰، حدیث: ۶۴۰۷)

❖ घर में आते, जाते बुलन्द आवाज़ से सलाम करें। ❖ वालिद या वालिदा को आते देख कर ताज़ीमन खड़ी हो जाएं। ❖ दिन में कम से कम एक बार इस्लामी बहनें मां का हाथ और पाउं चूमा करें। ❖ वालिदैन के सामने आवाज़ धीमी रखें, उन से आंखें हरगिज़ न मिलाएं। ❖ उन का सौंपा हुवा हर वोह काम जो ख़िलाफ़े शरअ़ न हो, फ़ौरन कर डालें। ❖ मां बल्कि घर (और बाहर) के एक दिन के बच्चे को भी **आप** कह कर ही मुख़ात़ब हों। ❖ **काश** ! तहज्जुद में आंख खुल जाए, वरना कम अज़ कम नमाज़े फ़ज्र तो ब आसानी मुयस्सर आए और फिर काम काज में

भी सुस्ती न हो । ❖ घर में अगर नमाज़ों की सुस्ती, बे पर्दगी, फ़िल्मों, ड्रामों और गाने, बाजों का सिलसिला हो तो बार बार न टोकें । ❖ घर में कितनी ही डांट बल्कि मार भी पड़े, सब्र, सब्र और सब्र कीजिये, अगर आप ज़बान चलाएंगी तो मदनी माह़ोल बनने की कोई उम्मीद नहीं बल्कि मज़ीद बिगाड़ पैदा हो सकता है । ❖ बेजा सख़्ती करने से बसा अवक़ात शैत़ान लोगों को ज़िद्दी बना देता है । लिहाज़ा ग़ुस्सा, चिड़चिड़ापन और झाड़ने वग़ैरा की आ़दत बिल्कुल ख़त्म कर दें । ❖ घर में रोज़ाना **"फ़ैज़ाने सुन्नत"** का दर्स ज़रूर ज़रूर दें या सुनें । ❖ अपने घरवालों की दुन्या ओ आख़िरत की बेहतरी के लिये दिलसोज़ी के साथ दुआ़ भी करती रहें कि दुआ़ मोमिन का हथयार है । ❖ सुसराल में रहने वालियां जहां घर का ज़िक्र है वहां सुसराल और जहां वालिदैन का ज़िक्र है, वहां सास और सुसर के साथ वोही ह़ुस्ने सुलूक बजा लाएं जबकि कोई मानेए़ शरई न हो । (जन्नत की तय्यारी, स. 116 ता 118) ❖ घरवालों को गुनाहों भरे चेनल्ज़ से छुटकारा दिला कर सिर्फ़ और सिर्फ़ मदनी चैनल दिखाने का इन्तेज़ाम कीजिये । (फ़ैज़ाने दाता अ़ली हजवेरी, स. 7)

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की छपी हुई दो किताबें **:** **(1)** 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16** और **(2)** 120 सफ़ह़ात की किताब **"सुन्नतें और आदाब"** नीज़ इस के इ़लावा शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत के दो रसाइल **"101 मदनी फूल"** और **"163 मदनी फूल"** हदिय्यतन त़लब कीजिये और पढ़िये ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान नम्बर :- 16

हर मुबल्लिग़ा बयान करने से पहले कम अज़् कम तीन बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰی اٰلِكَ وَ اَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللّٰه وَعَلٰی اٰلِكَ وَ اَصْحٰبِكَ یَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने राहत निशान है : مَنْ صَلّٰی عَلَیَّ بَلَغَتْنِی صَلَاتُهُ، وَصَلَّیْتُ عَلَیْهِ، وَكُتِبَتْ لَهُ سِوٰی ذٰلِكَ عَشْرُ حَسَنَاتٍ जो मुझ पर दुरूद पढ़ता है, उस का दुरूद मुझ तक पहुंच जाता है, मैं उस के लिए इस्तिग़फ़ार करता हूं और इस के इलावा उस के लिए दस नेकियां लिखी जाती हैं।

(معجم اوسط، ۱/ ۴۴۶، حدیث: ۱۶۴۲)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिए पेहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''نِیَّةُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِه'' मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (معجم کبیر، ۶/ ۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲)

मस्अला : नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नोइ़यत के एतिबार से निय्यतों में कमी व बेशी व तब्दीली की जा सकती है।

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी । टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी । ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिये जगह कुशादा करूंगी । धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी । صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوبُوا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिये पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी । इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी । दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी । जो कुछ बयान होगा उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल और बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगी ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आज हम तीसरे ख़लीफ़ए राशिद, अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की सीरत के चन्द ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़त सुनने की सआ़दत ह़ासिल करेंगी । पेहले एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ सुनती हैं । चुनान्चे,

ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी की शाने सख़ावत

ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से मरवी है : मैं बारगाहे नबवी में ह़ाज़िर था और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को **"जैशे उ़स्रत"** यानी ग़ज़वए तबूक की तय्यारी के लिए तरग़ीब इरशाद फ़रमा रहे थे । ह़ज़रते उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने उठ कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! पालान और दीगर मुतअ़ल्लिक़ा सामान समेत 100 ऊंट मेरे ज़िम्मे हैं । नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम

عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان को फिर तरग़ीब दी । तो ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ عَنۡہ दोबारा खड़े हुवे और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! मैं तमाम सामान समेत 200 ऊंट ह़ाज़िर करने की ज़िम्मेदारी लेता हूं । नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان को फिर तरग़ीब दी । तो ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ عَنۡہ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! मैं सामान समेत 300 ऊंट अपने ज़िम्मे क़बूल करता हूं । रावी केहते हैं : मैं ने देखा कि हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह सुन कर मिम्बरे मुनव्वर से नीचे तशरीफ़ ला कर दो मरतबा फ़रमाया : आज से उ़स्मान जो कुछ करे, उस पर पूछगछ नहीं ।

(ترمذی، کتاب المناقب، مناقب عثمان بن عفان، ۵/۳۹۱، حدیث: ۳۷۲۰)

ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : ख़याल रहे ! येह तो उन का एलान था मगर ह़ाज़िर करने के वक़्त आप (رَضِیَ اللہُ عَنۡہ) ने 950 ऊंट, 50 घोड़े और 1000 अशरफ़ियां पेश कीं फिर बाद में 10 हज़ार अशरफ़ियां और पेश कीं । ख़याल रहे ! आप رَضِیَ اللہُ عَنۡہ ने पेहली बार में 100 का एलान किया, दूसरी बार 100 ऊंट के इ़लावा और 200 का, तीसरी बार और 300 का, कुल 600 ऊंट (पेश करने) का एलान फ़रमाया ।

(मिरआतुल मनाजीह़, 8 / 395)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

आइए ! अब अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ عَنۡہ का मुख़्तसर तआ़रुफ़ सुनिए : चुनान्चे,

ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी का मुख़्तसर तआ़रुफ़

अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का नाम "**उ़स्मान**" और कुन्यत "**अबू अ़म्र**" है, "**अमीरुल मोमिनीन**" (यानी मुसलमानों के अमीर) "**ज़ुन्नूरैन**" (यानी दो नूर वाला) "كَامِلُ الْحَيَاءِ وَالْاِيْمَان" (यानी ह़या और ईमान में कामिल), "**जामेउ़ल क़ुरआन**" (यानी क़ुरआन जम्अ़ करने वाले), "**सय्यिदुल अस्ख़िया**" (यानी सख़ावत करने वालों के सरदार), "**उ़स्माने बा ह़या**" वग़ैरा आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के मश्हूर अल्क़ाबात हैं। (करामाते उ़स्माने ग़नी, स. 3, 5, 11) मगर आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के तमाम अल्क़ाबात में से "**ज़ुन्नूरैन**" (यानी दो नूर वाला) ज़ियादा मश्हूर है। इस लक़ब की ज़ियादा मश्हूर वज्ह येह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के निकाह़ में यके बाद दीगरे हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की 2 शेहज़ादियां ह़ज़रते रुक़य्या और ह़ज़रते उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا आईं, इसी वज्ह से आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को "**ज़ुन्नूरैन**" (यानी दो नूर वाला) कहा जाता है। (تہذیب الاسماء، باب العین و الثاء المثلثۃ،۱/۲۹۷) आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ख़ुलफ़ा ए राशिदीन में तीसरे ख़लीफ़ा हैं। (जन्नती ज़ेवर, स. 182, मुलख़्ख़सन) आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ, अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की कोशिशों से इस्लाम लाए और इस्लाम क़बूल करने वालों में आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का शुमार चौथे नम्बर पर होता है। जैसा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ख़ुद इरशाद फ़रमाते हैं : اِنِّیْ لَرَابِعُ اَرْبَعَةٍ فِی الْاِسْلَامِ मैं इस्लाम क़बूल करने वाले चार अफ़राद में से चौथा हूं। (معجم کبیر،۱/۸۵، حدیث:۱۲۴، اسد الغابۃ،عثمان بن عفان،۳/۶۰۶ملخصاً)

ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को जुम्अ़तुल मुबारक के दिन, 35 हिजरी, ह़ज के महीने में शहीद किया गया। ह़ज़रते ज़ुबैर बिन मुत़्इम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न किए गए।

(اسد الغابۃ،عثمان بن عفان،۳/ ۶۱۴-۶۱۶ ملخصاً)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ عَنْہُ का शुमार उन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में होता है जिन पर इस्लाम क़बूल करने के बाद ज़ुल्म के पहाड़ तोड़े गए, त़रह़ त़रह़ से सताया गया और बहुत ही दर्दनाक सुलूक किया गया मगर क़ुरबान जाइए रह़मते आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस अ़ज़ीम सह़ाबी के पक्के इरादों पर ! जो इस क़दर ज़ुल्म बरदाश्त कर के भी बात़िल के आगे डटे रहे और दीने इस्लाम से एक इंच भी पीछे हटने के लिए तय्यार न हुवे ।

जूलाई / अगस्त 2018 के "**माहनामा फ़ैज़ाने मदीना**" के सफ़ह़ा नम्बर 4 पर लिखा है **:** ईमान, नेक आमाल, गुनाहों से बचने पर डटे रेहना "**इस्तिक़ामत**" केहलाता है । यूं भी केह सकते हैं कि इस्तिक़ामत येह है कि ईमान ज़ाएअ़ न हो, नेक आमाल मसलन नमाज़, रोज़ा, ह़ज, ज़कात न छूटे, तिलावत, ज़िक्र, दुरूद, तस्बीह़ातो अज़्कार, सदक़ातो ख़ैरात, दूसरों की ख़ैर ख़्वाही वग़ैरा नेक काम हमेशा किए जाएं, तमाम गुनाहों से बचने की आ़दत पुख़्ता रहे, येह तमाम चीज़ें इस्तिक़ामत में दाख़िल हैं । अलबत्ता हर इस्तिक़ामत का हुक्म जुदा है, जैसे सह़ीह़ अ़क़ाइद पर जमे रेहना सब से बड़ा फ़र्ज़ है ।

फ़राइज़ की पाबन्दी भी फ़र्ज़ है, गुनाहों से बचते रेहना भी लाज़िम है और मुस्तह़बात की पाबन्दी भी आला दरजे का मुस्तह़ब है । इस एतिबार से इस्तिक़ामत की 3 क़िस्में बनती हैं **:** (1) ईमान पर इस्तिक़ामत, जैसे ह़ज़रते बिलाल, ह़ज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी और दीगर कसीर सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن जिन्हें ईमान लाने के बाद शदीद आज़माइशों से गुज़रना पड़ा लेकिन वोह ईमान पर डटे रहे और आज ईमान पर इस्तिक़ामत का नाम आते ही इन मुबारक हस्तियों का तसव्वुर ज़ेह्न में आ जाता है ।

(2) फ़राइज़ पर इस्तिक़ामत येह है कि कभी न छोड़े जाएं, जैसे नमाज़ ।
(3) मुस्तह़बात पर इस्तिक़ामत, यानी उन को हमेशा किया जाए, जैसे तिलावत, ज़िक्र, दुरूद, सदक़ा, अच्छे अख़्लाक़, नर्मी और तहज्जुद वग़ैरा पर इस्तिक़ामत । येह इस्तिक़ामत भी **अल्लाह** पाक को बहुत मह़बूब है ।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस्तिक़ामत का लफ़्ज़ हम कई बार सुनती, पढ़ती हैं लेकिन अपनी ज़ात पर ग़ौर भी करना चाहिए कि क्या हमें नेकियां करने और गुनाहों से बचने पर इस्तिक़ामत ह़ासिल है ? वक़्ती त़ौर पर जज़्बात में आ कर नवाफ़िल, तिलावत, ज़िक्रो दुरूद और दर्स व मुत़ालआ़ सब शुरूअ़ करती हैं लेकिन चन्द ही दिनों बाद अ़मल में या तो सुस्ती पैदा हो जाती है या फिर अ़मल छोड़ देती हैं, यूंही माहे रमज़ान में या इजतिमाअ़ में या बैअ़त होते वक़्त गुनाह छोड़ने का पक्का इरादा करती हैं और चन्द दिन खुद को गुनाहों से बचा भी लेती हैं लेकिन थोड़े दिनों बाद वोही गुनाहों का बाज़ार गर्म हो जाता है और गुनाहों में मुब्तला हो जाती हैं ।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस में दर्से इस्तिक़ामत है हर एक इस्लामी बहन और बिल खुसूस ज़िम्मेदार इस्लामी बहनों के लिए जो नेकी की दावत को आ़म करने की कोशिशें करती हैं मगर सामने से भरपूर तआ़वुन न मिलने की वज्ह से जल्द परेशान हो जाती हैं और हिम्मत हार कर नेकी की दावत छोड़ कर अपने आप को सवाब से मह़रूम कर लेती हैं । इस नाज़ुक दौर में अगर्चे कैसी ही मुश्किलात व परेशानियां आ जाएं लेकिन ऐसी नहीं होंगी जैसी सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان ने बरदाश्त की हैं, उन मुसीबतों और तकालीफ़ का तसव्वुर ही दिल देहला देने के लिए काफ़ी है । चाहे कैसा ही मुश्किल वक़्त आ जाए, **अल्लाह** करे कि हम दीने इस्लाम का दामन हरगिज़ न छोड़ें ।

अगर हम तारीख़ के सफ़हात पलटें तो पता चलता है कि ईमान लाने की वज्ह से बाज़ पाकीज़ा ख़्वातीन को भी घरवालों, रिश्तेदारों और बिरादरी वालों ने हर त़रह़ से सताया लेकिन कु़रबान जाइए उन की दीने इस्लाम पर साबित क़दमी पर ! जिन्हों ने अपने ईमान को बचाने के लिए हर त़रह़ का ज़ुल्म तो बरदाश्त किया मगर इस्लाम व ईमान से मुंह मोड़ना गवारा न किया, इन्हीं पाकीज़ा ख़्वातीन में एक पेहली शहीदए इस्लाम, ह़ज़रते सुमय्या बिन्ते ख़ुब्बात़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا भी हैं । जब आप दौलते इस्लाम से मुशर्रफ़ हुईं तो आप को किन किन मुसीबतों का सामना करना पड़ा, आइए ! सुनती हैं : चुनान्चे,

इस्लाम की पेहली शहीदा

ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सुमय्या رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا को लोग इस्लाम लाने की वज्ह से तक्लीफ़ें देते थे ताकि वोह **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इन्कार कर दें और इस्लाम छोड़ दें मगर आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا दीने इस्लाम पर साबित क़दम रहीं, यहां तक कि उन्हों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا को शहीद कर दिया । रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, ह़ज़रते सुमय्या رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا, उन के शौहर, ह़ज़रते यासिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ और बेटे ह़ज़रते अ़म्मार رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को मक्का शरीफ़ के तपते सह़रा में मक़ामे अबत़ह़ पर तक्लीफ़ें पाते देखते तो इरशाद फ़रमाते : ऐ आले यासिर ! सब्र करो ! तुम्हारे लिए जन्नत का वादा है ।

(اصابۃ، سمیہ بنت خباط، ۸/ ۲۰۹، رقم ۱۱۳۴۲)

एक मरतबा अबू जहल ने नेज़ा तान कर इन्हें धमकी दी और कहा : तू कलिमा मत पढ़ ! वरना मैं तुझे येह नेज़ा मार दूंगा । ह़ज़रते बीबी सुमय्या رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ने सीना तान कर ज़ोर ज़ोर से कलिमा पढ़ना शुरूअ़ कर

दिया। अबू जहल ने गुस्से में भर कर इन की नाफ़ के नीचे इतनी ज़ोर से नेज़ा मारा कि वोह ख़ून में लतपत हो कर गिर पड़ीं और शहीद हो गईं।

हज़रते सुमय्या बिन्ते ख़ुब्बात् رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ने मज़्लूमाना शहादत के इलावा और भी सख़्तियां बरदाश्त की थीं, मसलन इन को लोहे की ज़िरह पेहना कर सख़्त धूप में खड़ा कर दिया जाता ताकि धूप की गर्मी से लोहा तपने लगे, यहां तक कि इन्हों ने सब से बड़े दुश्मने इस्लाम, अबू जह्ल के हाथों शहादत को क़बूल कर लिया मगर इस्लाम से मुंह न मोड़ा। (اسد الغابۃ، سمیہ ام عمار، ۷/ ۱۵۳، رقم ۷۰۲۱) **अल्लाह** पाक इन मुक़द्दस हस्तियों के सदक़े में हमें भी ईमान व इस्लाम पर इस्तिक़ामत नसीब फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! नेकी की दावत देना और बुराई से मन्अ़ करना बहुत ज़रूरी है, इस के लिए हमें हौसला बुलन्द रखना होगा और पेहले से येह ज़ेह्न बनाए रखना होगा कि दीन की राह में तकालीफ़ आती हैं, मुझे इस से घबरा कर पीछे नहीं हटना बल्कि इस्तिक़ामत के साथ जानिबे मन्ज़िल अपना सफ़र जारी रखना है। आइए ! तरग़ीब के लिए अमीरुल मोमिनीन, हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ की ईमान पर इस्तिक़ामत के तअ़ल्लुक़ से एक फ़िक्र अंगेज़ हिकायत सुनती हैं : चुनान्चे,

दुन्या छोड़ सक्ता हूं, पर ईमान नहीं !

अमीरुल मोमिनीन, हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ जब इस्लाम लाए तो न सिर्फ़ अपने घरवालों बल्कि पूरे ख़ानदान (Family) की शदीद मुख़ालफ़त का सामना करना पड़ा। आप को मारा पीटा गया, यहां तक कि आप का चचा, ह़कम बिन अबुल आ़स तो इस क़दर नाराज़ हुवा कि आप

को पकड़ कर एक रस्सी से बांध कर केहने लगा : तुम ने अपने बाप दादा का दीन छोड़ कर दूसरा मज़हब इख़्तियार कर लिया है ! जब तक तुम नए मज़हब को नहीं छोड़ोगे, हम तुम्हें नहीं छोड़ेंगे, इसी त़रह़ बांध कर रखेंगे। येह सुन कर ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने फ़रमाया : ख़ुदा ए पाक की क़सम ! मैं इस्लाम को कभी नहीं छोड़ सकता। ह़कम बिन अबुल आ़स ने जब आप का येह जज़्बा देखा तो मजबूर हो कर आप को क़ैद से आज़ाद कर दिया। (تاریخ ابن عساکر، عثمان بن عفان، ۳۹/۲۶)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि ईमान लाने के बाद अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ عَنْہ पर आप के चचा ने किस क़दर ज़ुल्म किए मगर आप ज़ुल्म को बरदाश्त करते हुवे ईमान पर साबित क़दम रहे। इस वाक़िए़ में ऐसे लोगों के लिए ईमान पर साबित क़दम रेहने के लिए ज़बरदस्त सबक़ है जो इस्लामी तालीमात से मुतास्सिर हो कर दाइरए इस्लाम में दाख़िल हो गए मगर उन के घरवालों पर अभी तक इस्लाम का ह़क़ होना वाज़ेह़ नहीं हुवा, जिस की वज्ह से वोह उन पर ज़ुल्मो ज़ियादती करते हैं, त़रह़ त़रह़ से सताते हैं ताकि किसी त़रह़ مَعَاذَاللہ येह दीने इस्लाम को छोड़ दें और इन के दिल ईमान से ख़ाली हो जाएं मगर याद रखिए ! हर ह़ालत में ईमान की ह़िफ़ाज़त इन्तिहाई ज़रूरी है, चाहे कैसी ही आफ़त आ पड़े, दौलते ईमान हाथ से नहीं जानी चाहिए, ईमान पर इस्तिक़ामत के लिए **अल्लाह** पाक की बारगाह में दुआ़ करनी चाहिए।

ईमान पर ख़ातिमे के लिए **"शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या ज़ियाइय्या अ़त्तारिय्या"** में एक बहुत ही प्यारा वज़ीफ़ा लिखा है कि जो कोई सुब्ह़ो शाम 3, 3 मरतबा उस को पढ़ेगी, اِنْ شَآءَ اللہ पढ़ने वाली का ख़ातिमा ईमान पर होगा। वोह प्यारा वज़ीफ़ा शजरह शरीफ़ के सफ़ह़ा नम्बर 15 पर मौजूद है। आइए ! वोह वज़ीफ़ा सुन लीजिए :

اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ نُّشْرِكَ بِكَ شَيْئًا نَّعْلَمُهٗ وَنَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا نَعْلَمُهٗ ط

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** करीम ! हम तेरी पनाह मांगती हैं इस बात से कि किसी चीज़ को तेरा शरीक बनाएं जानबूझ कर और हम बख़्शिश मांगती हैं तुझ से उस की जिस को हम नहीं जानती ।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सीरते उ़स्माने ग़नी में उन इस्लामी बहनों के लिए भी सीखने को बहुत कुछ है जिन्हें घरवालों या दीगर रिश्तेदारों की त़रफ़ से सुन्नतों की ख़िदमत करने के सबब त़रह़ त़रह़ से सताया जाता है, तो वोह हिम्मत हार कर दीनी माह़ोल की बरकतों से अपने आप को मह़रूम कर लेती हैं । उन्हें चाहिए कि वोह इस त़रह़ की रुकावटों के सबब हरगिज़ दिल बरदाश्ता न हों बल्कि अम्बिया ए किराम عَلَيۡهِمُ السَّلَام और बुज़ुर्गाने दीन رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن ख़ुसूसन शुहदाए करबला رَضِیَ اللہُ عَنۡہُمۡ اَجۡمَعِیۡن पर आने वाली मुसीबतों पर इन की साबित क़दमी को पेशे नज़र रखें, सुन्नतों की ख़िदमत के सिलसिले को जारी रखें और आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दावते इस्लामी के दीनी माह़ोल के साथ मज़बूत़ी के साथ जुड़ी रहें क्यूंकि अच्छे माह़ोल से वाबस्ता रेहना भी ईमान पर इस्तिक़ामत पाने का बेहतरीन ज़रीआ़ है । **अल्लाह** करीम हमें ईमान और नेक आमाल पर इस्तिक़ामत के साथ साथ दावते इस्लामी से वाबस्ता रेहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए । اٰمِیۡن بِجَاہِ النَّبِیِّ الۡاَمِیۡن صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب !　　صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ عَنۡہ की पाकीज़ा सीरत का एक रौशन पेहलू येह भी है कि आप रात रब्बे काइनात की बारगाह में इ़बादत की ह़ालत में गुज़ार दिया करते, आख़िरत से डरते और अपने रब्बे करीम की रह़मत से उम्मीद लगाए रखते थे, दिन के अवक़ात राहे ख़ुदा में ख़र्च करने और रोज़े की ह़ालत में गुज़रते तो रातें बारगाहे इलाही में सजदा व इ़बादत में कटती थीं ।

आइए ! आप के शौक़े इ़बादत और ज़ौक़े तिलावत पर मुश्तमिल 4 रिवायात सुनिए और सबक़ ह़ासिल कीजिए : चुनान्चे,

उ़स्माने ग़नी का शौक़े इ़बादत व तिलावत

1. ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से रिवायत है : अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللهُ عَنْه हमेशा रोज़ा रखते और इब्तिदाई रात में कुछ आराम कर के फिर सारी रात इ़बादत में गुज़ार देते।

(مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب صلاۃ التطوع۔۔۔الخ، باب من کان یامر۔۔۔الخ، ۲/۱۷۳، حدیث:۶)

2. ह़ज़रते मसरूक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه, अश्तर (जिस ने उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ عَنْه को शहीद किया उस) से मिले, तो पूछा : क्या तू ने अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ عَنْه को शहीद किया है ? उस ने कहा : हां ! तो आप رَضِیَ اللهُ عَنْه ने फ़रमाया : **अल्लाह** पाक की क़सम ! तू ने रोज़ादार और इ़बादत गुज़ार शख़्स को शहीद किया है।

(معجم کبیر، ۱/۸۱، حدیث: ۱۱۴)

3. जब अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ عَنْه को शहीद किया गया तो आप की ज़ौजा ने क़ातिलों से फ़रमाया : तुम ने उस शख़्स को शहीद किया है जो सारी रात इ़बादत करता और एक रक्अ़त में पूरा क़ुरआने करीम ख़त्म करता है।

(الزھد للامام احمد، زھد عثمان بن عفان، ص ۱۵۳، حدیث: ۶۷۳)

4. ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान तैमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे एक बार मक़ामे इब्राहीम पर रात हो गई, मैं इ़शा की नमाज़ अदा कर के मक़ामे इब्राहीम पर पहुंचा, यहां तक कि मैं उस में खड़ा हुवा, तो इतने में एक शख़्स ने मेरे कन्धों (*Shoulders*) के दरमियान हाथ

रखा, मैं ने देखा तो वोह अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ थे । कुछ देर बाद आप ने सूरए फ़ातिह़ा से कु़रआने करीम की तिलावत शुरूअ़ की, यहां तक कि पूरा कु़रआने करीम ख़त्म कर लिया ।

(الزھدلابن المبارک،باب فضل ذکر اللہ، ص ۴۵۲، حدیث: ۱۲۷۶ملخصاً)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़रा सोचिए तो सही ! वोह सह़ाबिए रसूल जिन्हें **अल्लाह** पाक के प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दो शहज़ादियों का यके बादे दीगर शौहर बनने की सआ़दत मिली, जिन को नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी मुबारक ज़बान से जन्नत की ख़ुश ख़बरी सुनाई, उन की इ़बादत से मह़ब्बत और तिलावते कु़रआन के ज़ौक़ का येह आ़लम था कि दिन रात इ़बादत और तिलावते कु़रआन करते करते गुज़रते थे । दूसरी जानिब हमारा ह़ाल है कि अक्सर वक़्त फ़ुज़ूलियात में बरबाद हो जाता है, दिन रात ग़फ़्लतों की नज़्र हो रहे हैं, हमारे पास न तो इ़बादत के लिए वक़्त है और न ही तिलावते कु़रआन के लिए । हां ! दुन्यावी मुआ़मलात के लिए वक़्त ही वक़्त है । हम सोश्यल मीडिया का इस्तिमाल और मोबाइल फ़ोन पर वीडियो गेम्ज़ खेल कर अपना क़ीमती वक़्त बरबाद करती हैं बल्कि बाज़ तो مَعَاذَ اللّٰہ नमाज़े फ़ज्र के वक़्त ग़फ़्लत की नींद सो जाती हैं । बाज़ नादान मोबाइल व इन्टरनेट इस्तिमाल करने में इस क़दर मश्ग़ूल हो जाती हैं कि उन्हें वक़्त का पता ही नहीं चल पाता । **आह** ! फ़राइज़ो वाजिबात की अदाएगी, नफ़्ल इ़बादात की बजा आवरी, नमाज़ की अदाएगी और तिलावते कु़रआन करने के ह़वाले से इन्तिहाई ग़फ़्लत व सुस्ती का आ़लम है ।

आइए ! अपने अन्दर इ़बादतो तिलावत का ज़ौक़ो शौक़ बेदार करने के लिए 2 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनिए और इ़बादातो तिलावत करने की आ़दत बनाइए। चुनान्चे,

1. इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक इरशाद फ़रमाता है : ऐ इन्सान ! तू मेरी इ़बादत के लिए फ़ारिग़ हो जा, मैं तेरा सीना मालदारी से भर दूंगा और तेरी मोह़ताजी का दरवाज़ा बन्द कर दूंगा। अगर तू ऐसा नहीं करेगा, तो मैं तेरे दोनों हाथ मसरूफ़िय्यात से भर दूंगा और तेरी मोह़ताजी का दरवाज़ा बन्द नहीं करूंगा।

(ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ والرقائق والورع، ۳۰-باب، ۲۱۱/۴،حدیث: ۲۴۷۴)

2. इरशाद फ़रमाया : बेशक लोगों में से कुछ **अल्लाह** वाले हैं। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! वोह कौन लोग हैं ? फ़रमाया : क़ुरआन पढ़ने वाले ! कि येही लोग **अल्लाह** वाले और ख़ास लोगों में शामिल हैं।

(ابنِ ماجہ، کتاب السنۃ، باب فی فضل من تعلم القرآن وعلمہ، ۱/ ۱۴۰،حدیث: ۲۱۵)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　　　صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी का इ़श्क़े रसूल

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मह़ब्बते रसूल एक ऐसा ख़ज़ाना है, जिसे येह ख़ज़ाना अ़त़ा हो जाता है, उस के तो वारे ही नियारे हो जाते हैं। अगर हम अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की सीरत का मुत़ालआ़ करें, तो हम पर येह ह़क़ीक़त वाज़ेह़ हो जाएगी कि रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अ़ज़ीम सह़ाबी, ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه को भी येह अ़ज़ीम ख़ज़ाना अ़त़ा हुवा था। आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه एक सच्चे मुह़िब्बे रसूल

बल्कि महब्बते मुस्त़फ़ा के बुलन्द दरजे पर पहुंच चुके थे, गोया महब्बते रसूल में जीना और मरना ही आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ की ज़िन्दगी का ह़क़ीक़ी मक़्सद बन गया था, महब्बते रसूल की मिठास आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ की रग रग में इस क़दर समा चुकी थी कि मेहरबान आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बढ़ कर आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ को कुछ भी अ़ज़ीज़ न था। आइए ! अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ का महब्बते रसूल पर मुश्तमिल एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ सुनिए और झूमिए। चुनान्चे,

अपने आक़ा से पेहले त़वाफ़ नहीं करूंगा !

जब नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते फ़ारूके़ आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ के मश्वरे पर ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ को सुल्ह़े हुदैबिया का पैग़ाम दे कर मक्के शरीफ़ में क़ुरैश की त़रफ़ रवाना फ़रमाया, तो कई सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان इस बात पर रश्क कर रहे थे कि ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ को मक्के शरीफ़ जाने का शरफ़ ह़ासिल हुवा है, अब वोह बैतुल्लाह शरीफ़ की ज़ियारत और त़वाफ़े काबा करेंगे। जब सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان ने अपने इस रश्क भरे जज़्बात का इज़्हार बारगाहे रिसालत में किया, तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मुझे यक़ीन है ! जब तक हम क़ैद में हैं, उ़स्मान काबे का त़वाफ़ नहीं करेंगे। सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! उन्हें इस ह़वाले से किसी रुकावट का सामना नहीं करना पड़ा फिर अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ को त़वाफ़े काबा से कौन सी चीज़ रोक रखेगी ? नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان की इस उल्झन को दूर करने के लिए इरशाद फ़रमाया : **"मुझे यक़ीन है कि वोह हमारे बिग़ैर ख़ानए काबा का त़वाफ़ नहीं करेंगे।"**

जब अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ عَنْہ वापस आए, तो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ से पूछा : ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! त़वाफ़े काबा करने के बाद आप इत़मीनान मह़सूस कर रहे होंगे ! अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : आप ह़ज़रात ने मेरे बारे में ग़लत़ अन्दाज़ा लगाया है। फिर आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने जो कलिमात इरशाद फ़रमाए, उस में हमारे लिए कई अहम निकात मौजूद हैं। फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! अगर मक्के शरीफ़ में मेरा ठेहरना साल भर भी होता, तो मैं रह़मते आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बिग़ैर त़वाफ़ न करता जबकि कुरैश ने मेरे लिए त़वाफ़े काबा करने में किसी क़िस्म की कोई रुकावट खड़ी नहीं की थी।

(دلائل النبوۃ للبیہقی، باب ارسال النبی...الخ، ۴/۱۳۳-۱۳۴ ملتقطاً)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ عَنْہ, नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कैसी सच्ची मह़ब्बत करने वाले थे ! जिन की हर हर अदा से मह़ब्बते रसूल ज़ाहिर होती थी मगर **आह** ! आज हम भी मह़ब्बते रसूल का दावा तो करती हैं मगर रसूले पाक صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को खुश करने वाले काम करते हुवे शर्म मह़सूस करती हैं। रसूले अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : جُعِلَتْ قُرَّۃُ عَیْنِیْ فِی الصَّلٰوۃِ मेरी आंखों की ठन्डक नमाज़ में है।

(معجم کبیر، ۲۰/۴۲۰، حدیث: ۱۰۱۲)

ज़रा सोचिए ! क्या हम नमाज़ की पाबन्दी करती हैं ? येह कौन सी मह़ब्बत है कि रसूले पाक صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रमज़ानुल मुबारक के रोज़ों की ताकीद फ़रमाएं और हम रोज़े न रखें ? क्या येही मह़ब्बते रसूल है ? यक़ीनन नहीं ! और हरगिज़ नहीं।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

सीरते "सदरुल अफ़ाज़िल" की चन्द झलकियां

सदरुल अफ़ाज़िल, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुफ़्ती मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की विलादते मुबारका 21 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सिने 1300 हि. ब मुत़ाबिक़ यकुम जनवरी सिने 1883 ई. पीर शरीफ़ को हिन्द के शहर "**मुरादाबाद**" में हुई। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ का नाम "**मुह़म्मद नईमुद्दीन**" रखा गया। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के वालिदे माजिद, ह़ज़रते मौलाना सय्यिद "**मुह़म्मद मुईनुद्दीन नुज़्हत**" और जद्दे अमजद (यानी दादाजान) ह़ज़रते मौलाना सय्यिद "**अमीनुद्दीन रासिख़**" अपने अपने दौर में उर्दू और फ़ारसी के उस्ताज़ माने गए। सिने 1320 हि., ब मुत़ाबिक़ सिने 1902 ई. में 20 साल की उ़म्र में आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की दस्तारबन्दी हुई, बिल आख़िर 19 ज़ुल ह़िज्जा सिने 1367 हि. को इस दुन्या से रुख़्सत हो गए। **जामिअ़ा नईमिया** (मुरादाबाद, हिन्द) की मस्जिद के उल्टी त़रफ़ वाले गोशे में आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की आख़िरी आराम गाह है।

इन्तिक़ाले पुर मलाल

ख़लीफ़ए सदरुल अफ़ाज़िल, ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती सय्यिद ग़ुलाम मुईनुद्दीन नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ का बयान है : ग्यारह बजे का वक़्त था, सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने अपने कमरे के तीनों दरवाज़े बन्द करा दिए, कमरे में मेरे और ह़ज़रत के सिवा कोई न था। थोड़ी देर मुझ से गुफ़्तगू फ़रमाई, इस के बाद आप ख़ामोश हो गए। तक़रीबन साढ़े ग्यारह बजे फ़रमाया : पंखा खोल दो। मैं ने खोल दिया। फिर फ़रमाया : कम कर दो। मैं ने कम कर दिया। फिर फ़रमाया : और कम कर दो। मैं ने फिर कम कर दिया। कुछ वक़्फ़े के बाद फ़रमाया : और कम कर दो। अब मैं ने पंखे का

रुख़ दीवार की त़रफ़ कर दिया ताकि दीवार से टकरा कर हवा पहुंचे। कुछ वक़्फ़े के बाद फ़रमाया : बन्द कर दो। इस के बाद फ़रमाने लगे : मेरा बाज़ू दबाओ। चुनान्चे, मैं चारपाई की सीधी जानिब बैठ कर बाज़ू और कमर दबाने लगा, देखा कि ज़बाने अक़्दस से कुछ फ़रमा रहे हैं और चेहरए अक़्दस पर बेह़द पसीना है। मैं ने रूमाल से चेहरे का पसीना ख़ुश्क किया। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने नज़रे मुबारक उठा कर मेरी त़रफ़ मुलाह़ज़ा फ़रमाया फिर आवाज़ से कलिमए पाक لَآاِلٰہَ اِلَّااللہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللہ पढ़ना शुरूअ़ किया। आवाज़ हल्की होती चली गई। ठीक 12 बज कर 25 मिनट पर मुझे फेफड़ों की ह़रकत बन्द होती मालूम हुई। ख़ुद ही आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने क़िब्ले की जानिब हो कर अपने हाथ–पैर सीधे कर लिए। यूं 19 ज़ुल ह़िज्जा सिने 1367 हिजरी को कलिमा शरीफ़ पढ़ते हुवे आप का इन्तिक़ाल हो गया।

आइए ! मक्तबतुल मदीना के रिसाले "**तज़्किरए सदरुल अफ़ाज़िल**" की रौशनी में सदरुल अफ़ाज़िल, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुफ़्ती मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की दीनी ख़िदमात के बारे में सुनती हैं।

सदरुल अफ़ाज़िल की दीनी ख़िदमात

❖ सदरुल अफ़ाज़िल, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुफ़्ती मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने दर्से निज़ामी (आ़लिम कोर्स) मुकम्मल करने के बाद पढ़ाना शुरूअ़ किया और कई मश्हूर उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम को ख़िदमते दीन के लिए तय्यार किया। ❖ आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़न्ने त़िब और कुतुबो रसाइल तह़रीर करने के शोबे से भी

वाबस्ता रहे । ❖ 20 साल की उ़म्र में अपने दौरे त़ालिबे इ़ल्मी में रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इ़ल्मे ग़ैब के सुबूत पर दलाइल से आरास्ता एक किताब तह़रीर फ़रमाई । ❖ आप दारुल इफ़्ता से भी वाबस्ता रहे और कई सुवालात के जवाबात तह़रीर फ़रमाए । ❖ आप बिग़ैर किताबों को देखे सुवालों के जवाबात तह़रीर फ़रमाते थे । ❖ आप का सब से अ़ज़ीम कारनामा "**तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" है ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

मिस्वाक करने की सुन्नतें और आदाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "**163 मदनी फूल**" से मिस्वाक की सुन्नतें और आदाब सुनती हैं : पेहले दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनिए :

1. दो रक्अ़त मिस्वाक कर के पढ़ना, बिग़ैर मिस्वाक की सत्तर रक्अ़तों से अफ़्ज़ल है ।

(اَلتَّرغِیب وَالتَّرہِیب، کتاب الطھارۃ، باب الترغیب فی السواک---الخ، ۱/۱۰۲، حدیث:۱۸)

2. मिस्वाक का इस्तिमाल अपने लिए लाज़िम कर लो क्यूंकि इस में मुंह की सफ़ाई और रब्बे करीम की रिज़ा का सबब है ।

(مُسندِ اِمام احمد، عبداللّٰہ بن عمر بن الخطاب، ۲/۴۳۸، حدیث: ۵۸۶۹)

❖ ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है : मिस्वाक में दस ख़ूबियां हैं । मुंह साफ़ करती, मसूढ़े को मज़बूत़ बनाती है, बीनाई बढ़ाती, बल्ग़म दूर करती है, मुंह की बदबू ख़त्म करती, सुन्नत के मुवाफ़िक़ है, फ़िरिश्ते ख़ुश होते हैं, रब्बे करीम राज़ी होता है, नेकी बढ़ाती और मेदा दुरुस्त करती है । (جمع الجوامع، ۵/۲۴۹، حدیث:۱۴۸۶۷) ❖ मिस्वाक पीलू या ज़ैतून या नीम वग़ैरा

कड़वी लकड़ी की हो। ❖ मिस्वाक की मोटाई छोटी उंगली के बराबर हो। ❖ मिस्वाक एक बालिश्त से ज़ियादा लम्बी न हो, वरना उस पर शैतान बैठता है। ❖ इस के रेशे नर्म हों कि सख़्त रेशे दांतों और मसूढ़ों के दरमियान ख़ला का बाइस बनते हैं। ❖ मिस्वाक ताज़ा हो तो ख़ूब (यानी बेहतर), वरना कुछ देर पानी के ग्लास में भिगो कर नर्म कर लीजिए। ❖ मुनासिब है कि इस के रेशे रोज़ाना काटते रहिए कि रेशे उस वक़्त तक कारआमद रेहते हैं जब तक उन में तल्ख़ी बाक़ी रहे। ❖ दांतों की चौड़ाई में मिस्वाक कीजिए। ❖ जब भी मिस्वाक करनी हो तो कम से कम 3 बार कीजिए। ❖ हर बार मिस्वाक धो लीजिए। ❖ मिस्वाक सीधे हाथ में इस तरह लीजिए कि छोटी उंगली उस के नीचे और बीच की 3 उंगलियां ऊपर और अंगूठा सिरे पर हो। ❖ पेहले सीधी तरफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर उल्टी तरफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर सीधी तरफ़ नीचे फिर उल्टी तरफ़ नीचे मिस्वाक कीजिए। ❖ मुठ्ठी बन्द कर के मिस्वाक करने से बवासीर हो जाने का अन्देशा है।

मिस्वाक के फ़ज़ाइल और फ़वाइद के ह़वाले से मज़ीद मालूमात ह़ासिल करने के लिए अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले **"मिस्वाक शरीफ़ के फ़ज़ाइल"** का मुत़ालआ़ कीजिए।

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की छपी हुई दो किताबें : (1) 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16** और (2) 120 सफ़ह़ात की किताब **"सुन्नतें और आदाब"** नीज़ इस के इलावा शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत के दो रसाइल **"101 मदनी फूल"** और **"163 मदनी फूल"** हदिय्यतन त़लब कीजिये और पढ़िये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान नम्बर :– 17

हर मुबल्लिग़ा बयान करने से पहले कम अज़् कम तीन बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ   وَعَلٰی اٰلِكَ وَ اَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ   وَعَلٰی اٰلِكَ وَ اَصْحٰبِكَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : जिस ने कुरआने पाक की तिलावत की और **अल्लाह** पाक की ह़म्द बयान की और फिर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ पढ़ कर अपने रब्बे करीम से मग़फ़िरत त़लब की तो यक़ीनन उस ने भलाई को अपनी जगह से तलाश कर लिया। (شعب الایمان، باب فی تعظیم القرآن، ۲/ ۳۷۳، حدیث: ۲۰۸۴)

उन पर दुरूद जिन को कसे बेकसां कहें
उन पर सलाम जिन को ख़बर बे ख़बर की है

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 209)

मुख़्तसर वज़ाह़त : यानी हम अपने प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजते हैं जो हर बे सहारे का सहारा और आसरा हैं और हम अपने उस प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर सलाम भेजते हैं जो हम ग़ाफ़िलों की ख़ैर ख़बर रखते हैं।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइये ! **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये पेहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है । (معجم کبیر، ۶/۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲)

मस्अला : नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा ।

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नोइय्यत के एतिबार से निय्यतों में कमी व बेशी व तब्दीली की जा सकती है ।

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी । टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी । ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिये जगह कुशादा करूंगी । धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी । صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا الله، تُوْبُوْا اِلَى الله वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिये पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी । इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी । दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी । जो कुछ बयान होगा उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल और बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगी ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हमारा आज का मौज़ूअ़ है **"तवक्कुल व क़नाअ़त ।"** आज हम **अल्लाह** पाक पर तवक्कुल के

ह़वाले से आयाते मुबारका, अह़ादीसे त़य्यिबा और बुज़ुर्गाने दीन के वाक़िआ़त सुनेंगी और साथ ही क़नाअ़त की फ़ज़ीलत, इस के दीनी व दुन्यवी फ़वाइद भी सुनेंगी । आइये ! सब से पहले तवक्कुल करने वाले एक बुज़ुर्ग की ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत सुनती हैं ।

रोज़ी का वसीला

मन्क़ूल है कि मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ (यानी मक्कए मुकर्रमा) में एक इ़बादत गुज़ार शख़्स रात भर इ़बादत में मश्ग़ूल रहा करता, दिन को रोज़ा रखता, रोज़ाना शाम को एक शख़्स उसे दो रोटियां दे जाता, वोह उस से इफ़्त़ार कर लेता और फिर दूसरे दिन तक के लिये इ़बादत में मश्ग़ूल हो जाता । एक रोज़ उस के दिल में ख़याल आया कि येह कैसा तवक्कुल है ? कि मैं तो एक इन्सान की दी हुई रोटी पर भरोसा कर के बैठा हूं और मख़्लूक़ के रज़्ज़ाक़ पर भरोसा नहीं किया । शाम को जब रोटियां ले कर आने वाला आया, तो आ़बिद ने वापस कर दीं । इसी त़रह़ तीन दिन गुज़ार दिये । जब भूक का ग़लबा हुवा, तो अपने रब से फ़रयाद की । शब को ख़्वाब में देखा कि वोह **अल्लाह** पाक की बारगाह में ह़ाज़िर है और **अल्लाह** पाक फ़रमाता है : मैं अपने बन्दे के ज़रीए़ जो कुछ भेजता था, तू ने उसे क्यूं लौटा दिया ? आ़बिद ने अ़र्ज़ की : मौला ! मेरे दिल में ख़याल आया कि तेरे सिवा दूसरे पर भरोसा कर बैठा हूं । **अल्लाह** करीम ने इरशाद फ़रमाया : वोह रोटियां कौन भेजा करता था ? आ़बिद ने अ़र्ज़ की : ऐ करीम रब ! तू ही भेजने वाला है । हुक्म हुवा : अब मैं भेजूं, तो वापस न लौटाना । उसी ख़्वाब के दौरान येह भी देखा कि रोटियां लाने वाला शख़्स **अल्लाह** पाक के दरबार में ह़ाज़िर है । **अल्लाह** पाक ने उस से पूछा : तू ने इस आ़बिद को रोटियां देनी क्यूं बन्द कर दीं ? उस ने अ़र्ज़

की : ऐ मालिको मौला ! तुझे ख़ूब मालूम है । फिर पूछा : ऐ बन्दे ! वोह रोटियां तू किसे देता था ? उस बन्दे ने अ़र्ज़ की : मैं तो तुझे (यानी तेरी ही राह में) देता था । इरशाद हुवा : तू अपना अ़मल जारी रख, मेरी त़रफ़ से तेरे लिये इस के इवज़ में जन्नत है । (روض الرياحين، الحكاية الثانية بعد المئة، ص۱۳۳ ملخصا)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस ह़िकायत से जहां येह मालूम हुवा कि **अल्लाह** पाक की रिज़ा के पेशे नज़र किया जाने वाला सदक़ा जन्नत में दाख़िले का सबब बन जाता है, वहीं येह भी मालूम हुवा कि **अल्लाह** पाक के नेक और परहेज़गार बन्दे उस पर तवक्कुल के आला मक़ाम पर फ़ाइज़ होते हैं । वोह इ़बादत गुज़ार शख़्स शब भर इ़बादत में मसरूफ़ रहता, दिन को रोज़ा रखता, यूं रात दिन इ़बादत में बसर करता । उसे यक़ीन (*Believe*) था कि वोह ज़ात कि जिस की मैं इ़बादत में मसरूफ़ हूं, रोज़ी देना और अपने बन्दों का पेट पालना उसी का काम है, मैं उस के काम में मसरूफ़ हूं और उस की इ़बादत कर रहा हूं, तो वोही मेरी रोज़ी के अस्बाब भी बना देगा और ऐसा ही होता, रोज़ाना एक बन्दा शाम के वक़्त आ कर उसे दो रोटियां दे जाता जिस से वोह रोज़ा इफ़्त़ार करता और फिर से इ़बादत पर कमर बस्ता हो जाता । यक़ीनन **अल्लाह** पाक की ज़ात पर इस त़रह़ का तवक्कुल करना उस के मह़बूब बन्दों का त़रीक़ा है ।

इस ह़िकायत से तवक्कुल के साथ साथ क़नाअ़त की तरग़ीब भी मिलती है । ग़ौर कीजिये कि हम जब रमज़ान के फ़र्ज़ रोज़े रखती हैं, तो इफ़्त़ार में अपने खाने के लिये त़रह़ त़रह़ की उ़म्दा और आ़लीशान नेमतें जम्अ़ करती हैं, एक मरग़ूब चीज़ भी कम हो जाए, तो ख़फ़ा होती हैं जबकि **अल्लाह** पाक का वोह इ़बादत गुज़ार बन्दा रोज़ाना रोज़ा रखता मगर इफ़्त़ार में फ़क़त़ दो रोटियों पर ही इक्तिफ़ा करता, वोह अपने नफ़्ल रोज़ों के लिये हमारे फ़र्ज़ रोज़ों से भी ज़ियादा उ़म्दा और बेहतरीन इफ़्त़ार का

एहतिमाम करने के बजाए क़नाअ़त इख़्तियार करता । क़ुरबान जाइये उस की आ़लीशान क़नाअ़त पर ! कि रोज़ाना दो ही रोटियों से इफ़्त़ार करता और उन्हें अपने लिये काफ़ी समझता । हमें भी क़नाअ़त (Contentment) की आ़दत अपनानी चाहिये । आज एक तादाद रिज़्क़ में कमी और माल में बे बरकती की शिकार नज़र आती है, ऐसी इस्लामी बहनों को चाहिये कि रिज़्क़ में इज़ाफ़े और बरकत के साथ साथ अपने लिये क़नाअ़त की दौलत मिलने की दुआ़ भी किया करें क्यूंकि जिस को क़नाअ़त नसीब हो जाए, उसे दुन्या व माफ़ीहा (यानी दुन्या और जो कुछ इस में है उस) से बे नियाज़ कर देती है । क़नाअ़त ग़ैर के दरवाज़े पर झुकने और किसी के सामने दस्ते सुवाल दराज़ करने से बचा कर सिर्फ़ रज़्ज़ाक़े ह़क़ीक़ी पर भरोसा करना सिखाती है । क़नाअ़त ख़ुद्दारी और ग़ैरत पैदा करती है जबकि ख़्वाहिशात की पैरवी इन्सान को ग़ुलाम बना कर रख देती है ।

ज़रूरत से ज़ियादा मालो दौलत का नहीं त़ालिब
रहे बस आप की नज़रे इनायत या रसूलल्लाह !
रहें सब शाद घर वाले शहा थोड़ी सी रोज़ी पर
अ़त़ा हो दौलते सब्रो क़नाअ़त या रसूलल्लाह !

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 332)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

क़नाअ़त की तारीफ़

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! क़नाअ़त कहते किसे हैं ? इस की तारीफ़ बयान करते हुवे ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आज़मी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इन्सान को जो कुछ ख़ुदा पाक की त़रफ़ से मिल जाए, उस पर राज़ी हो कर ज़िन्दगी बसर करते हुवे ह़िर्स और लालच के छोड़ देने को

"**क़नाअ़त**" कहते हैं। क़नाअ़त की आ़दत इन्सान के लिये ख़ुदा पाक की बहुत बड़ी नेमत है। क़नाअ़त पसन्द इन्सान सुकून की दौलत से मालामाल रहता है जबकि ह़रीस और लालची इन्सान हमेशा परेशान रहता है।

(जन्नती ज़ेवर, स. 136, मुलख़्ख़सन)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! यक़ीनन क़नाअ़त आला तरीन इन्सानी सिफ़ात में से एक बहुत ही प्यारी सिफ़त है। क़नाअ़त करने वाली अपनी ख़्वाहिशात को रोकने में काम्याब हो जाती है जबकि क़नाअ़त से मुंह मोड़ने वाली नफ़्स के हाथों हमेशा इधर उधर भटकती रहती है। क़नाअ़त करने वाली को **अल्लाह** पाक का शुक्र बजा लाने की तौफ़ीक़ मिलती है जबकि अगर क़नाअ़त से मुंह मोड़ने वाली की अगर एक भी ख़्वाहिश पूरी न हो, तो वोह शिक्वा शिकायत पर उतर आती है। क़नाअ़त करने वाली मज़ीद की ख़्वाहिश के बजाए सब्र के दामन में पनाह लेती है। क़नाअ़त बुलन्द हिम्मती, आ़ली सोच, बुज़ुर्गी, तक़्वा और सब्र की अ़लामत बनती है जबकि ख़्वाहिशात की पैरवी नफ़्स परस्ती, ह़िर्स, बुख़्ल और इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह से दूरी का सबब बनती है। क़नाअ़त की अहमिय्यत जानने के लिये इतना काफ़ी है कि **अल्लाह** पाक अपने नेक और मुक़र्रब बन्दों को ही येह पाकीज़ा आ़दत अ़ता फ़रमाता है। क़नाअ़त का जज़्बा बेदार करने के लिये तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और औलियाए इ़ज़्ज़ाम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की ज़िन्दगियां हमारे लिये बेहतरीन नुमूना हैं।

मुस्त़फ़ा की क़नाअ़त पे लाखों सलाम !

हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सारी ज़िन्दगी सब्रो क़नाअ़त से भरी हुई है। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़याते त़य्यिबा में कहीं भी आराम,

ऐश और राह़त का सामान नज़र नहीं आता और न कभी आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन चीज़ों के ह़ुसूल की कोशिश की । आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को माले ग़नीमत पर मुश्तमिल बड़े बड़े ख़ज़ाने मिलते मगर आप वोह सब मुसलमानों में तक़्सीम फ़रमा देते ।

सह़ाबिये रसूल, ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के घरवालों ने तीन दिन तक कभी भी पेट भर खाना नहीं खाया, यहां तक कि आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस दुन्या से तशरीफ़ ले गए । (بخاری، کتاب الاطعمہ، باب وقول اللہ تعالی: کلوا...الخ، ۵۲۰/۳،حدیث: ۵۳۷۴)

आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه, प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़नाअ़त को नज़रानए अ़क़ीदत पेश करते हुवे अ़र्ज़ करते हैं :

कुल जहां मिल्क और जव की रोटी ग़िज़ा
उस शिकम की क़नाअ़त पे लाखों सलाम

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 304)

मुख़्तसर वज़ाह़त : सारा जहां जिन की मिल्किय्यत व इख़्तियार में है, उन की ग़िज़ा की सादगी का येह आ़लम था कि जव की रोटी पर गुज़ारा किया करते थे, उन के शिकमे अत़्हर की क़नाअ़त पर लाखों सलाम ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　　صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सादगी पसन्द थी, दो जहां के सरदार होने के बा वुजूद आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सादगी का येह आ़लम था कि चटाई पर आराम फ़रमा लेते, कभी ख़ाक ही पर सो जाते और अपने हाथ मुबारक का सिरहाना बना लेते । **''सीरते मुस्त़फ़ा''** में है कि आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी लज़ीज़ और पुर तकल्लुफ़ खानों की ख़्वाहिश ही नहीं फ़रमाई, यहां तक कि कभी

आप ने चपाती नहीं खाई, जव की मोटी मोटी रोटियां अक्सर गिज़ा में इस्तिमाल फ़रमाते। (सीरते मुस्तफ़ा, स. 585, 586, मुलख़्ख़सन)

सदरुल अफ़ाज़िल, हज़रते अल्लामा सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ाते ज़ाहिरी तक हुज़ूर के अहले बैते अत्हार عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने कभी जव की रोटी भी दो दिन बराबर न खाई। येह भी ह़दीस में है कि पूरा पूरा महीना गुज़र जाता था, दौलत सराए अक्दस (यानी मकाने आलीशान) में (चूल्हे में) आग न जलती थी, चन्द खजूरों और पानी पर गुज़र की जाती थी।

हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه से मरवी है : आप (रसूले खुदा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं कि (ऐ लोगो !) मैं चाहता, तो तुम से अच्छा खाना खाता और तुम से बेहतर लिबास (*Dress*) पहनता लेकिन मैं अपना ऐश व राहत अपनी आख़िरत के लिये बाक़ी रखना चाहता हूं। (तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पा. 28, अल अहक़ाफ़, तह़्तुल आयत : 20)

खाना तो देखो जव की रोटी — बे छना आटा, रोटी भी मोटी
वोह भी शिकम भर रोज़ न खाना — صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم
कौनो मकां के आक़ा हो कर — दोनों जहां के दाता हो कर
हैं फ़ाक़े से शाहे दो आलम — صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم
क़ब्ज़े में जिस के सारी ख़ुदाई — उस का बिछौना एक चटाई
नज़रों में कितनी हैच है दुन्या — صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हमारे प्यारे आक़ा, हबीबे किब्रिया, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दोनों जहां के ख़ज़ानों के मालिक हो कर भी क़नाअत से भरपूर ज़िन्दगी बसर की है। हमें भी चाहिये कि हम भी अपने मक्की आक़ा, मदनी दाता صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नक़्शे क़दम पर

चलें, इन्ही की इत्तिबाअ़ करें और क़नाअ़त करने वाली बनें। क़नाअ़त के कई दुन्यवी व उख़्रवी फ़वाइद हैं। आइये ! उन में से कुछ सुनती हैं।

क़नाअ़त के फ़वाइद और इत्तिबाए ख़्वाहिशात के नुक़्सानात

1. क़नाअ़त दिल से दुन्या की मह़ब्बत ख़त्म कर देती है जबकि ख़्वाहिशात की पैरवी करने वाली दुन्या की मह़ब्बत में गिरिफ़्तार होती चली जाती है और एक वक़्त पर दुन्या को ही सब कुछ समझ बैठती है जो कि दीन के लिये ज़ह्रे क़ातिल है।
2. क़नाअ़त करने वाली अस्बाब से ज़ियादा ख़ालिक़े अस्बाब यानी **अल्लाह** पाक पर नज़र रखती है, इस त़रह़ वोह ग़ैरों की मोह़ताजी से बच जाती है जबकि क़नाअ़त से आ़री अस्बाब पर नज़रें जमा कर इन्हीं को सब कुछ समझ बैठती है। इसी त़रह़ वोह दुन्या वालों से उम्मीदें बांधती और उन से तवक़्क़ोआ़त वाबस्ता कर लेती है।
3. क़नाअ़त हमें ख़्वाहिशात की पैरोकार बनने से बचा लेती है और इस की बरकत से ज़िन्दगी सुकून और इत़्मीनान (Satisfaction) से बसर होती है जबकि ख़्वाहिशात की पैरवी बे सुकूनी और ज़ेह्नी दबाव को जन्म देती है।
4. क़नाअ़त से ह़िर्स व लालच और बुख़्ल जैसी बुरी आ़दतें ख़त्म होती हैं, **अल्लाह** पाक की रिज़ा पर राज़ी रहने, राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का जज़्बा पैदा करने में क़नाअ़त बेह़द मुअस्सिर है जबकि क़नाअ़त न हो, तो ह़िर्स और बुख़्ल जैसी बुरी आ़दतें पैदा हो सकती हैं नीज़ ऐसी इस्लामी बहन किसी ख़्वाहिश के पूरा न होने पर مَعَاذَاللّٰہ **अल्लाह** पाक की अ़त़ा पर एतिराज़ करने लगती है।

5. सब से बढ़ कर क़नाअ़त का फ़ाइदा येह है कि इस से **अल्लाह** पाक और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा ह़ासिल होती है। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : उस शख़्स के लिये ख़ुश ख़बरी है जो इस्लाम की हिदायत पाए और उस की रोज़ी ब क़दरे ज़रूरत हो और वोह उस पर क़नाअ़त करे। (ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی الکفاف والصبر علیہ، ۴/۱۵۶، حدیث: ۲۳۵۵)

रहें सब शाद घरवाले शहा ! थोड़ी सी रोज़ी पर
अ़त़ा हो दौलते सब्रो क़नाअ़त या रसूलल्लाह !

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

क़नाअ़त, तवक्कुल का ज़ीना है !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! क़नाअ़त की त़रह़ तवक्कुल भी उन सिफ़ात में से है जो इन्सान के अख़्लाक़ को बेहतरीन बनाती हैं। क़नाअ़त और तवक्कुल का आपस में गहरा तअ़ल्लुक़ (Connection) है। क़नाअ़त, तवक्कुल की सीढ़ी है, क़नाअ़त इन्सान को तवक्कुल पर उभारती है और बन्दा कम माल पर इक्तिफ़ा करते हुवे रब्बे करीम पर भरोसा करता है। **अल्लाह** पाक पर तवक्कुल ईमान के वाजिबात व फ़राइज़ में से एक अहम फ़रीज़ा है। आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक पर तवक्कुल करना **फ़र्ज़े ऐन** है। (फ़ज़ाइले दुआ़, स. 287)

जिस के दिल में तवक्कुल का नूर नहीं, उस का ईमान कामिल नहीं और उस का दिल अन्धेर नगरी के सिवा कुछ नहीं। तवक्कुल ईमान की रूह़ है, तवक्कुल ऐसा अ़मल है जो बन्दे को **अल्लाह** पाक के क़रीब और लोगों से दूर करता है, मुश्किलात और परेशानियों में तवक्कुल ही

बन्दे को इस्तिक़ामत के साथ इन के मुक़ाबले की क़ुव्वत (Power) देता है, मुसीबतों में तवक्कुल ही इन्सान की उम्मीदें जगाने का बाइस बनता है।

तवक्कुल का माना व मफ़्हूम

मक्तबतुल मदीना की तफ़्सीर "**सिरातुल जिनान**" जिल्द 3, सफ़हा 520 पर है : हज़रते इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : तवक्कुल का येह माना नहीं कि इन्सान अपने आप को और अपनी कोशिशों को बेकार और फ़ुज़ूल समझ कर छोड़ दे जैसा कि बाज़ जाहिल कहते हैं बल्कि तवक्कुल येह है कि इन्सान ज़ाहिरी अस्बाब को इख़्तियार करे लेकिन दिल से उन अस्बाब पर भरोसा न करे बल्कि **अल्लाह** पाक की मदद, उस की ताईद और उस की हिमायत पर भरोसा करे।

(تفسیر کبیر، اٰل عمران، تحت الآیۃ: ۱۵۹، ۳/۴۱۰)

इस बात की ताईद इस ह़दीसे पाक से भी होती है कि हज़रते अनस رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं, एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं अपने ऊंट को बांध कर तवक्कुल करूं या उसे खुला छोड़ कर तवक्कुल करूं ? इरशाद फ़रमाया : तुम उसे बांधो फिर तवक्कुल करो। (ترمذی، کتاب صفۃ یوم القیامۃ، باب (ت: ۱۲۵)، ۴/۲۳۲، حدیث: ۲۵۲۵) यानी तवक्कुल इस चीज़ का नाम है कि किसी भी काम के करने में अस्बाब सुन्नते मुस्त़फ़ा समझ कर इख़्तियार किये जाएं, इस के बाद नतीजा **अल्लाह** पाक पर छोड़ देना चाहिये। आला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : तवक्कुल तर्के अस्बाब का नाम नहीं बल्कि अस्बाब पर एतिमाद का तर्क **तवक्कुल** है। (फ़तावा रज़विय्या, 24 / 379, मुलख़्ख़सन) यानी अस्बाब को छोड़ देना तवक्कुल नहीं बल्कि अस्बाब पर एतिमाद न करने और रब्बे करीम की ज़ात पर एतिमाद करने का नाम **तवक्कुल** है।

लोगों के ज़रीए रिज़्क़ पहुंचाना अल्लाह को पसन्द है !

मरवी है कि एक ज़ाहिद (बहुत नेक आदमी) आबादी से कनारा कशी कर के पहाड़ के दामन में बैठ गया और कहने लगा : जब तक **अल्लाह** पाक मुझे मेरा रिज़्क़ न देगा, मैं किसी से कुछ नहीं मांगूंगा । एक हफ़्ता गुज़र गया और रिज़्क़ न आया । जब मरने के क़रीब हो गया, तो बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : ऐ मेरे रब ! तू ने मुझे पैदा किया है, लिहाज़ा मेरी तक़्दीर में लिखा हुवा रिज़्क़ मुझे अ़ता कर दे, वरना मेरी रूह़ क़ब्ज़ कर ले । ग़ैब से आवाज़ आई : मेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं तुझे रिज़्क़ नहीं दूंगा ! यहां तक कि तू आबादी में जाए और लोगों के दरमियान बैठे । वोह नेक शख़्स आबादी में गया और बैठ गया । कोई खाना ले कर आया, तो कोई पानी लाया । उस ने ख़ूब खाया और पिया लेकिन दिल में शक (*Doubt*) पैदा हो गया, तो ग़ैब से आवाज़ आई : क्या तू अपने दुन्यावी ज़ोहद से मेरा त़रीक़ा बदल देना चाहता है ? क्या तू नहीं जानता कि अपने दस्ते क़ुदरत से लोगों को रिज़्क़ देने के बजाए मुझे येह ज़ियादा पसन्द है कि लोगों के हाथों से लोगों तक रिज़्क़ पहुंचाऊं ।

(احیاء العلوم، کتاب التوحید والتوکل، الفن الاول فی جلب النافع، ۳۲۹/۴)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मालूम हुवा कि रिज़्क़ ह़ासिल करने के लिये ज़रूरी है कि अस्बाब को इख़्तियार किया जाए, हाथ पर हाथ धरे अस्बाब इख़्तियार करने से बे नियाज़ हो कर सिर्फ़ तवक्कुल तवक्कुल की रट लगाना तवक्कुल नहीं है । इसी त़रह़ सिर्फ़ अपनी तदबीर को सब कुछ समझ बैठना या सिर्फ़ अस्बाब पर ही तक्या कर के बैठ जाना, येह भी तवक्कुल नहीं है । ह़क़ीक़ी तवक्कुल येह है कि अस्बाब इख़्तियार किये जाएं, अपनी त़ाक़त व क़ुव्वत के मुत़ाबिक़ कोशिश की जाए और तदबीर

के दरवाज़े पर दस्तक दी जाए और फिर इन अस्बाब पर भरोसा न किया जाए बल्कि **अल्लाह** करीम की ज़ात पर भरोसा किया जाए क्यूंकि दुन्या का क़ानून है कि तमाम काम किसी न किसी सबब से ही वाक़ेअ़ होते हैं। पेट तभी भरता है जब बन्दा खाना खाता है, खाना खाए बिग़ैर पेट नहीं भर सकता, बारिश तभी होगी जबकि बादल मौजूद होंगे, बिग़ैर बादलों के बारिश नहीं होती।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

तवक्कुल क़ुरआने पाक की रौशनी में

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! **अल्लाह** पाक की ज़ात पर कामिल भरोसा करना और अपने तमाम उमूर के अन्जाम को उसी के सिपुर्द कर देना एक बेहतरीन सिफ़त है। **अल्लाह** पाक की ज़ात पर हमारा ऐसा कामिल भरोसा होना चाहिये कि जब भी किसी नेक व जाइज़ काम का इरादा या आग़ाज़ करें, तो सिर्फ़ अस्बाब पर नज़र रखने के बजाए ख़ालिक़े अस्बाब, यानी **अल्लाह** पाक की रह़मत पर नज़र होनी चाहिये क्यूंकि अस्बाब तो आ़रज़ी और फ़ानी होते हैं। जो मुसलमान बीमारियों, परेशानियों, आफ़तों, बलाओं, मुसीबतों बल्कि अपने हर मुआ़मले में **अल्लाह** पाक की ज़ात पर भरोसा करता है, तो उस के वारे ही नियारे हो जाते हैं क्यूंकि तवक्कुल की बरकत से **अल्लाह** पाक न सिर्फ़ उस का ह़ामियो नासिर होता है बल्कि इस की बरकत से वोह **अल्लाह** करीम उसे इन्आ़मो इकराम से भी नवाज़ता है। **अल्लाह** पाक (पारह 28, सूरए त़लाक़ की आयत नम्बर 3 में) इरशाद फ़रमाता है **:**

وَ مَنْ یَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ (پ۲۸، طلاق:۳) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो **अल्लाह** पर भरोसा करे, तो वोह उसे काफ़ी है।

और (पारह 4, सूरए आले इमरान की आयत नम्बर 159 में) इरशादे रब्बानी है :

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ﴿۱۵۹﴾
(پ۴، آلِ عمران:۱۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तवक्कुल वाले **अल्लाह** को प्यारे हैं।

हज़रते इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इन आयाते मुबारका के बाद फ़रमाते हैं : वोह मक़ाम कितना अज़ीम है जिस पर फ़ाइज़ शख़्स को **अल्लाह** पाक की महब्बत हासिल हो और उस को **अल्लाह** पाक की तरफ़ से किफ़ायत की ज़मान भी हासिल हो, तो जिस शख़्स के लिये **अल्लाह** पाक किफ़ायत फ़रमाए, उस से महब्बत करे और उस की रिआयत फ़रमाए, उस ने बहुत बड़ी काम्याबी (*Success*) हासिल की क्यूंकि जो महबूब होता है, उसे न तो अज़ाब होता है, न दूरी होती है और न ही वोह पर्दे में होता है।

(احیاء العلوم، کتاب التوحید والتوکل، بیان فضیلۃ التوکل، ۴/۳۰۰)

क़ुरआने करीम में एक और मक़ाम पर तवक्कुल करने वालों को मोमिने कामिल बताया गया है। चुनान्चे, **अल्लाह** करीम पारह 9, सूरतुल अन्फ़ाल, आयत नम्बर 2 में इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَ اِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّ عَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿۲﴾ (پ۹، الانفال:۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ईमान वाले वोही हैं कि जब **अल्लाह** याद किया जाए, उन के दिल डर जाएं और जब उन पर उस की आयतें पढ़ी जाएं, उन का ईमान तरक़्क़ी पाए और अपने रब ही पर भरोसा करें।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ग़ौर कीजिये ! इस आयते करीमा में ईमान में सच्चे और कामिल लोगों के तीन औसाफ़ बयान हुवे हैं : (1) जब **अल्लाह** पाक को याद किया जाए, तो उन के दिल डर जाते हैं।

(2) **अल्लाह** पाक की आयात सुन कर उन के ईमान में इज़ाफ़ा हो जाता है।
(3) वोह अपने रब पर ही भरोसा करते हैं।

(तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पा. 9, अल अन्फ़ाल, तह़्तुल आयत : 2, 3 / 519, मुल्तक़त़न)

अफ़्सोस ! आज हम तवक्कुल से बहुत दूर होती जा रही हैं, माल ह़ासिल करने की धुन हम पर ऐसी ग़ालिब आ चुकी है कि तवक्कुल का कश्कोल हाथ से छूट चुका है।

तवक्कुल और अह़ादीसे त़य्यिबा

अह़ादीसे त़य्यिबा में कई मक़ामात पर तवक्कुल की अहमिय्यत बताई गई है। ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में तवक्कुल की तरग़ीब इरशाद फ़रमाई है। आइये ! तवक्कुल के 4 ह़ुरूफ़ की निस्बत से 4 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनती हैं :

1. इरशाद फ़रमाया : अगर तुम **अल्लाह** पाक पर उस त़रह़ भरोसा करो जैसे उस पर भरोसा करने का ह़क़ है, तो वोह तुम्हें उस त़रह़ रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाएगा जैसे परिन्दे को अ़त़ा फ़रमाता है कि वोह सुब्ह़ के वक़्त ख़ाली पेट निकलता और शाम को सैर हो कर लौटता है। (ترمذی، کتاب الزھد، باب فی التوکل علی اللہ، ۴/ ۱۵۴، حدیث: ۲۳۵۱)
2. इरशाद फ़रमाया : चार चीज़ें **अल्लाह** पाक अपने मह़बूब बन्दे ही को अ़त़ा फ़रमाता है : (1) ख़ामोशी और येही इ़बादत की इब्तिदा है। (2) तवक्कुल। (3) तवाज़ोअ़। (4) और दुन्या से बे रग़बती। (اتحاف السادۃ المتقین، کتاب ذم الکبر، ۱۰/ ۲۵۶)
3. इरशाद फ़रमाया : जिस को येह बात पसन्द हो कि वोह लोगों में सब से ज़ियादा त़ाक़तवर हो जाए, तो वोह **अल्लाह** पाक पर

तवक्कुल करे और जिस को येह बात पसन्द हो कि वोह (ज़माने में) बा इ़ज़्ज़त हो जाए, तो उसे चाहिये कि तक़्वा इख़्तियार करे और जिस को येह बात पसन्द हो कि सब लोगों से ज़ियादा दौलतमन्द हो जाए, तो उसे चाहिये कि अपने पास मौजूद चीज़ से ज़ियादा उस चीज़ पर एतिमाद करे जो **अल्लाह** पाक के दस्ते क़ुदरत में है।

(मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 104)

4. इरशाद फ़रमाया : मुझे तमाम उम्मतें दिखाई गईं, (मैं ने देखा) कि कोई नबी अपनी उम्मत को लिये जा रहा है, कोई गिरोह को, कोई दस अफ़राद को, कोई पांच को और कोई नबी अकेला ही जा रहा है फिर एक बहुत बड़ी जमाअ़त पर मेरी नज़र पड़ी। तो मैं ने जिब्राईल से पूछा : ऐ जिब्राईल ! क्या येह मेरी उम्मत है ? तो जिब्राईल ने कहा : नहीं ! बल्कि आप आसमान की त़रफ़ देखें ! जब मैं ने आसमान की त़रफ़ नज़र की, तो मुझे एक बहुत बड़ी जमाअ़त नज़र आई। तो जिब्राईल ने कहा : आप की उम्मत येह है ! इन में से सत्तर हज़ार आदमी ह़िसाब किताब के बिग़ैर ही सब से पहले जन्नत में दाख़िल होंगे। तो मैं ने कहा : इस की क्या वज्ह है ? तो जिब्राईल ने कहा : येह वोह लोग हैं जो न (ज़ख़्म पर गर्म लोहे वग़ैरा से) दाग़ लगवाते हैं (यानी अगर्चे ज़ख़्म दाग़ना जाइज़ है मगर चूंकि ज़मानए जाहिलिय्यत में दाग़ को मरज़ दूर करने के लिये मुस्तक़िल इ़ल्लत माना जाता था, इस लिये ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस को तवक्कुल के ख़िलाफ़ क़रार दिया), न जन्तर मन्तर करते हैं (यानी कुफ़्फ़ार के झाड़ फूंक से बचते हैं, वरना क़ुरआनी आयात, दुआ़ए मासूरा से दम करना सुन्नत है) और न ही (शुगून लेने के लिये) परिन्दे उड़ाते हैं और

येह लोग सिर्फ़ अपने रब पर तवक्कुल करते हैं। ह़ज़रते उ़क्काशा बिन मिह़सन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने खड़े हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे लिये दुआ़ फ़रमाइये कि **अल्लाह** पाक मुझे भी उन (ख़ुश नसीब) लोगों में से कर दे। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ फ़रमाई : या **अल्लाह** पाक ! उ़क्काशा को भी उन में से कर दे। फिर एक और शख़्स ने खड़े हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ! मेरे लिये भी दुआ़ फ़रमाइये कि **अल्लाह** पाक मुझे भी उन में से कर दे। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : (इस दुआ़ में) उ़क्काशा तुम पर सब्क़त ले गए।

(بخاری، کتاب الرقاق، باب یدخل الجنۃ سبعون الفا بغیر حساب، ۲۵۸/۴، حدیث: ۶۵۴۱)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّد

मुतवक्किलीन के वाक़िआ़त

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस ह़दीसे पाक का मक़्सद येह है कि हम तवक्कुल की आ़दी बन जाएं और **अल्लाह** पाक के फ़ज़्ल से बे ह़िसाब जन्नत में दाख़िल हो जाएं। जिसे तवक्कुल की नेमत मिल जाए वोह बड़ी ख़ुश नसीब है, **अल्लाह** पाक के नेक बन्दे और नेक बन्दियां तवक्कुल की सिफ़त से मुत्तसिफ़ होते हैं। आइये ! तवक्कुल का जज़्बा बढ़ाने के लिये तवक्कुल करने वालों की दो ह़िकायात सुनती हैं।

शैत़ान मेरा ख़ादिम है

ह़ज़रते अय्यूब ह़म्माल رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه से मन्क़ूल है कि हमारे अ़लाक़े में एक मुतवक्किल नौजवान रहता था, वोह इबादतो रियाज़त और तवक्कुल के मुआ़मले में बहुत मश्हूर था, लोगों से कोई चीज़ न लेता, जब भी खाने

की ह़ाजत होती, अपने सामने सिक्कों से भरी एक थैली पाता, इसी त़रह़ वोह अपने शबो रोज़ इबादते इलाही में गुज़ारता और उसे ग़ैब से रिज़्क़ दिया जाता। एक दफ़्आ़ लोगों ने उस से कहा : ऐ नौजवान ! तू सिक्कों की वोह थैली लेने से डर ! हो सकता है शैत़ान तुझे धोका दे रहा हो और वोह थैली उसी की त़रफ़ से हो। नौजवान ने कहा : मेरी नज़र तो अपने पाक परवर दगार की रह़मत की त़रफ़ होती है, मैं उस के इ़लावा किसी से कोई चीज़ नहीं मांगता, जब मेरा मौला मुझे रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाता है, तो मैं क़बूल कर लेता हूं। बिलफ़र्ज़ अगर वोह सिक्कों की थैली मेरे दुश्मन **शैत़ान** की त़रफ़ से हो, तो इस में मेरा क्या नुक़्सान ? बल्कि मुझे फ़ाइदा ही है कि मेरा दुश्मन मेरे क़ाबू में कर दिया गया है। अगर वाक़ेई ऐसा है, तो **अल्लाह** पाक उसे मेरा ख़ादिम बनाए रखे। इस से ज़ियादा अच्छी बात और क्या हो सकती है कि मेरा सब से बड़ा दुश्मन, ख़ादिम बन कर मेरी ख़िदमत करे और मैं उस की त़रफ़ नज़र न रखूं बल्कि येह समझूं कि मेरा परवर दगार मुझे दुश्मन के ज़रीए़ रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमा रहा है और वाक़ेई तमाम जहानों को वोही ख़ालिक़े काइनात रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाता है जो मेरा **माबूद** है। मुतवक्किल नौजवान की येह बात सुन कर लोग ख़ामोश हो गए और समझ गए कि इस को वाक़ेई ग़ैब से रिज़्क़ दिया जाता है।

(उ़यूनुल ह़िकायात, 2 / 105)

इसी त़रह़ तवक्कुल से मुतअ़ल्लिक़ एक और बहुत प्यारी ह़िकायत सुनिये। चुनान्चे,

अनोखी शहज़ादी

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मायानाज़ तालीफ़ "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" सफ़ह़ा 501 पर है : ह़ज़रते शैख़ शाह किरमानी

رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की शहज़ादी जब शादी के लाइक़ हो गई और पड़ोसी मुल्क के बादशाह के यहां से रिश्ता आया, तब आप ने (वोह रिश्ता) ठुकरा दिया और मस्जिद मस्जिद घूम कर किसी पारसा नौजवान को तलाश करने लगे। एक नौजवान पर उन की निगाह पड़ी जिस ने अच्छी त़रह़ नमाज़ अदा की और गिड़गिड़ा कर दुआ़ मांगी। शैख़ ने उस से पूछा : तुम्हारी शादी हो चुकी है ? उस ने नफ़ी में जवाब दिया। फिर पूछा : क्या निकाह़ करना चाहते हो ? लड़की क़ुरआने मजीद पढ़ती है, नमाज़, रोज़े की पाबन्द है और ख़ूब सीरत है। उस ने कहा : भला मेरे साथ कौन रिश्ता करेगा ? शैख़ ने फ़रमाया : मैं करता हूं ! लो येह कुछ दिरहम, एक दिरहम की रोटी, एक दिरहम का सालन और एक दिरहम की ख़ुश्बू ख़रीद लाओ। इस त़रह़ शैख़ किरमानी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने अपनी दुख़्तरे नेक अख़्तर का निकाह़ उस से पढ़ा दिया। दुल्हन जब दुल्हा के घर आई, तो उस ने देखा पानी की सुराही़ पर एक रोटी रखी हुई है। उस ने पूछा : येह रोटी कैसी है ? दुल्हे ने कहा : येह कल की बासी रोटी है, मैं ने इफ़्त़ार के लिये रखी है। येह सुन कर वोह वापस होने लगी। येह देख कर दुल्हा बोला : मुझे मालूम था कि शैख़ किरमानी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की शहज़ादी मुझ ग़रीब इन्सान के घर नहीं रुक सकती। दुल्हन बोली : मैं आप की मुफ़्लिसी की वज्ह से नहीं जा रही बल्कि इस लिये लौट कर जा रही हूं कि रब्बुल आ़लमीन पर आप का यक़ीन बहुत कमज़ोर नज़र आ रहा है, जभी तो कल के लिये रोटी बचा कर रखते हैं, मुझे तो अपने बाप पर ह़ैरत है कि उन्हों ने आप को पाकीज़ा ख़स्लत और सालेह़ कैसे कह दिया ! दुल्हा येह सुन कर बहुत शर्मिन्दा हुवा और उस ने कहा : इस कमज़ोरी से माज़िरत ख़्वाह हूं। दुल्हन ने कहा : अपना उ़ज़्र आप जानें, अलबत्ता मैं ऐसे घर में नहीं रुक सकती जहां एक वक़्त की ख़ूराक जम्अ़ रखी हो, अब या तो मैं रहूंगी या

रोटी। दुल्हे ने फ़ौरन जा कर रोटी ख़ैरात कर दी और ऐसी दरवेश ख़स्लत अनोखी शहज़ादी का शौहर बनने पर **अल्लाह** पाक का शुक्र अदा किया।

(روض الریاحین، الحکایۃ الثانیۃ والتسعون بعد المائۃ، ص ۱۹۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! मुतवक्किलीन की भी क्या ख़ूब अदाएं होती हैं ! शहज़ादी होने के बा वुजूद ऐसा ज़बरदस्त तवक्कुल कि कल के लिये खाना बचाना गवारा ही नहीं ! येह सब यक़ीने कामिल की बहारें हैं कि जिस **अल्लाह** पाक ने आज खिलाया है, वोह आइन्दा कल भी खिलाने पर यक़ीनन क़ादिर है। चरिन्दे, परिन्दे वग़ैरा कौन सा बचा कर रखते हैं ! एक वक़्त का खा लेने के बाद दूसरे वक़्त के लिये बचा कर रखना उन की फ़ित्रत में ही नहीं। मुर्ग़ी का तवक्कुल मुलाहज़ा हो **:** उस को पानी दीजिये, ह़स्बे ज़रूरत पी चुकने के बाद पियाले पर पाउं रख कर पानी बहा देगी, गोया येह मुर्ग़ी ख़ामोश मुबल्लिग़ा है और हमें नसीह़त कर रही है कि ऐ लोगो ! बरसों का जम्अ़ कर लेने के बा वुजूद भी तुम्हें क़रार नहीं आता ! जबकि मैं एक बार पी लेने के बाद दोबारा के लिये बे फ़िक्र हो जाती हूं कि जिस ने अभी पानी पिलाया है, वोह बाद में भी पिला देगा। **काश** ! कि हमें भी तवक्कुल की नेमत नसीब हो जाए।

अफ़्सोस ! आज कल हम तवक्कुल तो दूर, फ़क़त् एक लुक़्मे के लिये बाज़ अवक़ात क़त्लो ग़ारत गरी तक पहुंच जाती हैं, ढेरों ढेर मालो दौलत और उ़म्दा ग़िज़ाएं होने के बा वुजूद दूसरों के मालों पर नज़रें जमी होती हैं, रहने की अच्छी जगहें होने के बा वुजूद दूसरों के बंगलों और कोठियों पर नज़र रखती हैं। इन सब बातों का बुन्यादी सबब **अल्लाह** पाक पर तवक्कुल न होना है, ह़ालांकि एक मुसलमान के लिये येही बात

काफ़ी होनी चाहिये कि जितना उस के नसीब में है, उसे ज़रूर मिल कर रहेगा, वोह रब्बे करीम जो पथ्थरों में मौजूद कीड़ों को रिज़्क़ देने पर क़ादिर है, वोह मेरे पेट के लिये भी अस्बाब बना देगा । **अल्लाह** पाक के नेक बन्दे दूसरों से उन का माल छीनना तो दूर, दूसरों पर भरोसा करने से भी कतराते हैं । चुनान्चे,

हज़रते अबू सईद ख़राज़ رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं एक जंगल में पहुंचा, तो ज़ादे राह कुछ न था, मुझे शदीद भूक का एह़सास हुवा, तो दूर एक बस्ती नज़र आई, मैं खुश हो गया लेकिन फिर अपने ऊपर यूं ग़ौरो फ़िक्र किया कि मैं ने दूसरों पर भरोसा (*Trust*) किया है और दूसरों से सुकून ह़ासिल करना चाहा, लिहाज़ा मैं ने क़सम खाई कि बस्ती में उस वक़्त तक दाख़िल न होऊंगा जब तक उठा कर न ले जाया जाए । आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने एक गढ़ा खोद कर उस की रेत में अपने जिस्म को सीने तक छुपा लिया । आधी रात को एक बुलन्द आवाज़ आई : ऐ बस्ती वालो ! **अल्लाह** पाक के वली ने अपने आप को रेत में छुपा लिया है, तुम उन के पास जाओ । लोग आए और मुझे रेत से निकाला और उठा कर बस्ती में ले गए । (احیاء العلوم، کتاب التوحید والتوکل، الفن الاول فی جلب النافع، ۴/ ۳۳۵ بتغیر قلیل)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ग़ौर कीजिये ! हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़राज़ رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ को **अल्लाह** पाक की ज़ात पर कैसा पुख़्ता यक़ीन और कामिल भरोसा था कि भूक की शिद्दत में एक बस्ती के नज़र आने पर खुश होने को भी तवक्कुल के ख़िलाफ़ समझा, तवक्कुल का येह आला मर्तबा इन्ही का ह़िस्सा था । हमें चाहिये कि अस्बाब को इख़्तियार करने के बाद **अल्लाह** पाक की ज़ात पर भरोसा करें और उस पर कामिल यक़ीन रखें । तवक्कुल की सिफ़त पैदा करने से जहां इस दुन्या की बे शुमार आलूदगियों से बचा जा सकता है, वहीं आख़िरत में काम्याबी के लिये भी

तवक्कुल की सिफ़त बहुत काम आती है। आइये ! इसी से मुतअ़ल्लिक़ एक हि़कायत सुनती हैं। चुनान्चे,

तवक्कुल बेहतरीन चीज़ है

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि मुझ से ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया कि आइये ! हम और आप येह अ़ह्द करें कि हम दोनों में से जो भी पहले विसाल करे, वोह ख़्वाब में आ कर अपना ह़ाल दूसरे को बता दे। मैं ने कहा कि क्या ऐसा हो सकता है ? तो उन्हों ने फ़रमाया कि हां ! मोमिन की रूह़ आज़ाद रहती है, रूए ज़मीन में जहां चाहे जा सकती है। इस के बाद ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का विसाल हो गया फिर मैं एक दिन क़ैलूला (दोपहर के खाने के बाद कुछ देर के लिये आराम) कर रहा था, तो अचानक ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ मेरे सामने आ गए और बुलन्द आवाज़ से उन्हों ने कहा : اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ। मैं ने जवाब में : وَعَلَیْکُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ कहा और उन से दरयाफ़्त किया कि विसाल के बाद आप पर क्या गुज़री ? और आप किस मर्तबे पर हैं ? तो उन्हों ने फ़रमाया कि मैं बहुत ही अच्छे ह़ाल में हूं और मैं आप को येह नसीह़त (*Advise*) करता हूं कि आप हमेशा **अल्लाह** पाक पर तवक्कुल करते रहें क्यूंकि तवक्कुल बेहतरीन चीज़ है, तवक्कुल बेहतरीन चीज़ है, तवक्कुल बेहतरीन चीज़ है। इस जुम्ले को उन्हों ने तीन मरतबा इरशाद फ़रमाया। (شواھد النبوۃ، رکن سادس در بیان شواھد ودلایلی...الخ، ص۲۸۷)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　　　صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मालूम हुवा कि तवक्कुल दुन्या व आख़िरत दोनों के लिये मुफ़ीद है। आइये ! इस के मज़ीद दुन्यवी व उख़रवी फ़वाइद सुनती हैं। चुनान्चे,

तवक्कुल के फ़वाइद

1. तवक्कुल करने वाली परेशानियों से महफ़ूज़ हो जाती हैं। जैसा कि हुज़ूर दाता गन्ज बख़्श अ़ली हजवेरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : एक दिन मेरे मुर्शिदे बरह़क़ ने बैतुल जिन्न से दिमश्क़ जाने का इरादा फ़रमाया। बारिश की वज्ह से मुझे कीचड़ में चलने में दुश्वारी हो रही थी मगर जब मैं ने अपने मुर्शिद की त़रफ़ देखा, तो आप के कपड़े और जूतियां ख़ुश्क थीं। मैं ने आप की बारगाह में अ़र्ज़ की (और इस ह़ैरत अंगेज़ वाक़िए की ह़िक्मत दरयाफ़्त की), तो आप ने जवाबन इरशाद फ़रमाया : हां ! जब से मैं ने तवक्कुल की राह में अपने इरादे को ख़त्म कर के बात़िन को लालच की वह़शत से मह़फ़ूज़ (*Safe*) किया है, उस वक़्त से **अल्लाह** पाक ने मुझे कीचड़ से बचा लिया है। (कश्फ़ुल मह़जूब, स. 255) यानी तवक्कुल की बरकत से दुन्यवी मुसीबतों से मुझे आज़ादी दे दी गई है।
2. तवक्कुल मख़्लूक़ की मोह़ताजी से बचा लेता है बल्कि तवक्कुल अगर कामिल हो, तो लोग तवक्कुल करने वाले के मोह़ताज हो जाते हैं। जैसा कि ह़ज़रते सुलैमान ख़व्वास رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ ने फ़रमाया : अगर कोई शख़्स सच्ची निय्यत से **अल्लाह** पाक पर तवक्कुल करे, तो अमीर और ग़रीब सब उस के मोह़ताज हो जाएंगे और वोह किसी का मोह़ताज नहीं होगा क्यूंकि उस का मालिक ग़नियो ह़मीद है।

(मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 104)

3. **प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो** ! हमारी काम्याबी में सब से बड़ा किरदार ज़ेह्नी और क़ल्बी सुकून का होता है और इस की बदौलत ही इन्सान दुन्या व आख़िरत में सुर्ख़रू होता है। यक़ीनन ज़ेह्नी व क़ल्बी सुकून मालो दौलत से ज़ियादा बेश क़ीमत ख़ज़ाना है और येह तवक्कुल की

बरकत से ह़ासिल कर के दौलतमन्द बना जा सकता है। एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं, मेरे शैख़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अक्सर फ़रमाया करते थे : अपनी तदबीर उस ज़ात के ह़वाले कर दे जिस ने तुझे पैदा फ़रमाया, तू राह़त पाएगा। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 113)

4. तवक्कुल की बे शुमार बरकतों में सब से बड़ी बरकत येह है कि इस की बदौलत ईमान की ह़िफ़ाज़त होती है क्यूंकि शैत़ान जब किसी के ईमान पर ह़म्ला (*Attack*) करता है, तो सब से पहले उस का **अल्लाह** पाक पर यक़ीन और भरोसा कमज़ोर कर देता है, लिहाज़ा अगर हम अपने ईमान की ह़िफ़ाज़त करना चाहती हैं, तो **अल्लाह** पाक पर कामिल भरोसा रखें। एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : मेरे एक दोस्त ने मुझ से ज़िक्र किया कि मेरी एक नेक आदमी से मुलाक़ात हुई, तो मैं ने पूछा : क्या ह़ाल है ? उस ने जवाब दिया : ह़ाल तो उन का है जिन का ईमान मह़फ़ूज़ है और वोह सिर्फ़ **मुतवक्किलीन** ही हैं जिन का ईमान मह़फ़ूज़ है। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 106)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हम ने तवक्कुल के फ़वाइद सुने। तवक्कुल परेशानियों से ह़िफ़ाज़त, मख़्लूक़ की मोह़ताजी से बचने, ज़ेह्नी व क़ल्बी सुकून के ह़ुसूल के साथ साथ ईमान की सलामती का बाइ़स भी है। इसी त़रह़ तवक्कुल न करने से परेशानियों में मुब्तला होने, मख़्लूक़ की मोह़ताजी, ज़ेह्नी व क़ल्बी बेचैनी में रहने के साथ साथ ईमान से हाथ धो बैठने का ख़त़रा (*Risk*) है। इस लिये हमें हर वक़्त अपने रह़ीम, करीम रब की ज़ात पर भरोसा करना चाहिये, उस से अच्छी उम्मीद रखनी चाहिये और हर वक़्त उस से तवक्कुल, क़नाअ़त की दौलत मिलने की दुआ़ मांगते रहना चाहिये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करती हूं । ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की, उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की, वोह जन्नत में मेरे साथ होगा ।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ،۱/۹۷، حدیث:۱۷۵)

नाख़ुन काटने की सुन्नतें और आदाब

आइये ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ के रिसाले **"101 मदनी फूल"** से नाख़ुन काटने की सुन्नतें और आदाब सुनिये : ❖ जुम्अ़ा के दिन नाख़ुन (Nails) काटना मुस्तह़ब है । हां ! अगर ज़ियादा बढ़ गए हों, तो जुम्अ़ा का इन्तिज़ार न कीजिये । (در مختار ،کتاب الحظر و الاباحۃ،باب الاستبراء وغیرہ،۹/۶۶۸ ماخوذا) सदरुश्शरीअ़ा, मौलाना अमजद अ़ली आज़मी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं, मन्क़ूल है : जो जुम्अ़ा के रोज़ नाख़ुन तरश्वाए (काटे), **अल्लाह** करीम उस को दूसरे जुम्अ़ा तक बलाओं से मह़फ़ूज़ रखेगा और तीन दिन ज़ाइद यानी दस दिन तक । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, 3 / 583, معجم اوسط،۳/۳۲۸،حدیث:۴۷۴۶) एक रिवायत में येह भी है कि जो जुम्अ़ा के दिन नाख़ुन तरश्वाए (काटे), तो रह़मत आएगी और गुनाह जाएंगे । (عمدۃ القاری، کتاب اللباس،باب تقلیم الاظفار،۱۵/۹۰) ❖ हाथों के नाख़ुन काटने के मन्क़ूल त़रीक़े का ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है : पहले सीधे हाथ की शहादत की उंगली से शुरूअ़ कर के तरतीब वार छुंगलिया (यानी छोटी उंगली) समेत नाख़ुन काटे जाएं मगर अंगूठा छोड़ दीजिये, अब उल्टे हाथ

की छुंगलिया (यानी छोटी उंगली) से शुरूअ़ कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाख़ुन काट लीजिये, अब आख़िर में सीधे हाथ के अंगूठे का नाख़ुन काटा जाए । (احیاء العلوم، کتاب اسرار الطھارۃ، القسم الثالث فی النظافۃ...الخ، ۱/۱۹۳) ❖ पाउं के नाख़ुन काटने की कोई तरतीब मन्क़ूल नहीं, बेहतर येह है कि सीधे पाउं की छुंगलिया (यानी छोटी उंगली) से शुरूअ़ कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाख़ुन काट लीजिये फिर उल्टे पाउं के अंगूठे से शुरूअ़ कर के छुंगलिया समेत नाख़ुन काट लीजिये । (احیاء العلوم، کتاب اسرار الطھارۃ، القسم الثالث فی النظافۃ...الخ، ۱/۱۹۳)

❖ जनाबत की ह़ालत (यानी ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने की सूरत) में नाख़ुन काटना मक्रूह है । (فتاویٰ ہندیہ، کتاب الکراھیۃ، الباب التاسع عشر فی الختان...الخ، ۵/۳۵۸) ❖ दांत से नाख़ुन काटना मक्रूह है और इस से बर्स यानी कोढ़ के मरज़ का अन्देशा है । (فتاویٰ ہندیہ، کتاب الکراھیۃ، الباب التاسع عشر فی الختان...الخ، ۵/۳۵۸) ❖ नाख़ुन काटने के बाद उन को दफ़्न कर दीजिये । (فتاویٰ ہندیہ، کتاب الکراھیۃ، الباب التاسع عشر فی الختان...الخ، ۵/۳۵۸)

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की छपी हुई दो किताबें : (1) 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16** और (2) 120 सफ़ह़ात की किताब “**सुन्नतें और आदाब**” नीज़ इस के इ़लावा शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत के दो रसाइल “**101 मदनी फूल**” और “**163 मदनी फूल**” हदिय्यतन त़लब कीजिये और पढ़िये ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد